अमृतलाल नागर कृत

अमृत और विष

एक प्रामाणिक अध्ययन

[उपन्यास-कला, हिन्दी-उपन्यास का विकास, पाठ्य उपन्यास का आलोचनात्मक एवं व्याख्यात्मक अध्ययन]

लेखक

डॉ० जनार्दन राय एम० ए०, पी० एच० डी०

प्रकाशन केन्द्र, न्यू बिल्डिंग्स, अमीनाबाद, लखनऊ

6.00

प्रकाशक :
प्रकाशन केन्द्र
न्यू बिल्डिंग्स, अमीनाबाद, लखनऊ

लेखक
डॉ० जनार्दन राव
एम० ए०, पी० एच० डी०

• •

मुद्रक :
श्याम मुद्रणालय
खातीपाड़ा, लोहामंडी, आगरा–२

अपनी बात

'अमृत और विष' उपन्यास में लेखक ने संसार की बुराई-भलाई—विष-अमृत—दोनों पक्षों को प्रस्तुत कर फल की आशा किये बिना निरन्तर कर्म करने की प्रेरणा दी है। इस आलोचनात्मक पुस्तक में पाठ्य उपन्यास की आत्मा को परखते हुए परीक्षा की दृष्टि से सरलतम अध्ययन प्रस्तुत करना मेरा ध्येय रहा है। आशा है कि यह पुस्तक छात्रों के लिए सर्वथा उपयोगी सिद्ध होगी।

—डॉ० जनार्दन राय एम० ए०, पी० एच० डी०

अनुक्रमण

प्रश्न | पृष्ठ

( )

( )

(   )

( )

नागरजी और उपन्यास-कला

हिन्दी-उपन्यास

प्रश्न १—उपन्यास की परिभाषा देते हुए उसके स्वरूप और शिल्प-विधान पर विचार कीजिये।

अथवा

प्रश्न २—उपन्यास जन-साधारण के जीवन का महाकाव्य है।" इस कथन की व्याख्या करते हुए उपन्यास के स्वरूप और भेदों का विश्लेषण कीजिये।

स्मृति सकेत

१. प्रेमचन्द के अनुसार मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके मूल रहस्यों को खोलना ही उपन्यास है।

२. उपन्यास मानव-जीवन का महाकाव्य है।

३. विषयवस्तु के आधार पर उपन्यास निम्न प्रकार के होते हैं—

१. ऐतिहासिक उपन्यास, २. सांस्कृतिक उपन्यास, ३ सामाजिक उपन्यास, ४. मनोरंजन प्रधान उपन्यास, ५. प्रकृतवादी उपन्यास, ६. आंचलिक उपन्यास, ७. आंचलिक और ऐतिहासिक उपन्यास।

४. उपन्यास के तत्वों के आधार पर उपन्यासों का निम्न प्रकार वर्गीकरण किया जा सकता है—

१. घटना-प्रधान उपन्यास।

२. चरित्र-प्रधान उपन्यास।

५. रचना-शैली की दृष्टि से उपन्यासों को निम्न वर्गों में रखा जा सकता है—

१. वर्णात्मक शैली के उपन्यास, २. आत्मकथा शैली के उपन्यास, ३. डायरी शैली के उपन्यास, ४. पत्रात्मक शैली के उपन्यास।

उत्तर—हिन्दी का उपन्यास शब्द अँग्रेजी के 'नावेल' का पर्यायवाची है। 'नावेल' का अर्थ है—'नया'। फ्रांस में 'नोवास' शब्द का प्रयोग होता था, जिसका अर्थ यथार्थ-चित्रण होता है। इटली में उपन्यास के लिये 'नोविले' शब्द का प्रयोग होता था। हिन्दी में उपन्यास शब्द अँग्रेजी से आया। इसे

'फिक्सन' भी कहा जाता है। 'फिक्सन' का अर्थ गल्प होता है, जो जीवन की रंगीनियों से युक्त यथार्थ से असम्बद्ध होता है। इसलिये कुछ लोगों ने इसे रोमांस भी कहा है, परन्तु रोमांस में जहाँ असम्भव और दुलभ कल्पनाएँ रहती हैं, वहाँ उपन्यास सम्भव और सुलभ कल्पना पर आश्रित होता है। क्लारा रीव ने उपन्यास के लिये कहा है—

"उपन्यास अपने युग का चित्रण करता है। रोमांस उदात्त भाषा में उसका वर्णन करता है जो न घटित है और न घटायमान। उपन्यास दैनिक जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन करता है। जिनका हमारे और हमारे मित्रों के जीवन में घटित होना सम्भव हो।"

परिभाषा

उपन्यास-साहित्य की एक स्वतन्त्र विधा है। इसमें मानव-जीवन का कल्पनापरक यथार्थ चित्रण रहता है। उपन्यास दो शब्दों से मिलकर बना है—उप+न्यास—'उप' का अर्थ सामने या पास, और 'न्यास' का अर्थ है 'स्थापन' अर्थात् विषय का स्थापन करना उपन्यास है। उपन्यास जीवन की गुत्थियों तथा आन्तरिक ग्रन्थियों का स्पष्ट रूप पाठकों के समक्ष खोल देता है। इस प्रकार उपन्यास का जीवन से सम्बन्ध हो जाता है। 'न्यू इंगलिश डिक्शनरी' में उपन्यास की परिभाषा निम्न प्रकार दी गई है—

बृहद् आकार, गद्य आख्यान या वृतान्त, जीवन के प्रतिनिधित्व का दावा करने वाले पात्रों और कार्यों को कथानक में चित्रित किया जाता है, उपन्यास कहते है।

क्रोसे के अनुसार, "उपन्यास से अभिप्राय उस गद्यमय गल्प-कथा का है, जिसमें वास्तविक जीवन का यथाथ चित्रण रहता है।"

आर-बर्टन ने उपन्यास की परिभाषा निम्न प्रकार की है—

"उपन्यास गद्य में रचित लेखक के समकालीन जीवन का अध्ययन है, जिसकी रचना लेखक समाज के उत्थान-पतन की भावना से अनुप्राणित होकर करता है। इसके लिये वह प्रेमतत्व की प्रधानता ग्रहण करता है, क्योंकि अपने सामाजिक सम्बन्धो मे मानव परस्पर में इसी से बँधे हुए हैं।"

बेनस्टर ने उपन्यास की परिभाषा करते हुए लिखा है :—

"उपन्यास एक ऐसा कल्पित विशालकाय तथा गद्यमय आख्यान है, जिसमें एक ही कथानक के अन्तर्गत यथार्थ जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्रों और उनके क्रिया-कलापों का चित्रण रहता है।"

ऊपर की नई परिभाषाओ में बर्टन की परिभाषा से स्पष्ट है कि उपन्यास प्रेमतत्व प्रधान है, इसलिये वह नाटक और कहानी की प्रकृति से युक्त होता है।

भारतीय विद्वानो में डा० श्यामसुन्दरदास के अनुसार "उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।"

प्रेमचन्द ने उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्रण मानते हुए लिखा है—

"मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके मूल रहस्यो को खोलना ही उपन्यास है।"

उपन्यास का स्वरूप

ऊपर जो पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों की परिभाषाएँ दी गई हैं उनके वश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि "उपन्यास जीवन का कल्पना-परक यथार्थ चित्रण है।" इसमें मनुष्य के अतिरिक्त अन्य पदार्थों का भी वर्णन होता है, परन्तु इसका मुख्य विषय मानव-जीवन होता है। इसी कारण उपन्यास को "मानव-जीवन का महाकाव्य" कहा जाता है। उपन्यास में यथार्थ घटनाएँ कल्पना के द्वारा नवीन रूप में ग्रहण की जाती हैं, परन्तु उपन्यास की घटनायें जीवन से सम्बन्धित होने के कारण यथार्थ, वास्तविक और स्वाभाविक हो लगती है।

उपन्यासकार युग-निर्माता और मानव-जीवन का व्याख्याता होता है। वह पात्रों के द्वारा और कथानक की घटनाओ के द्वारा अपने विचार तथा धारणाये व्यक्त करता है।

उपन्यासों का वर्गीकरण

उपन्यासों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जाता है, वर्गीकरण का आधार प्राय: विषयवस्तु, तत्व और रचना-शैली का आधार माना जाता है। विषयवस्तु के आधार पर उपन्यासों का वर्गीकरण नितान्त स्थूल होता है।

ऐतिहासिक उपन्यास— ऐतिहासिक उपन्यासो की कथावस्तु इतिहास से ली जाती है। इसमें कल्पना भी इतिहास-पुष्ट रहती है। वृन्दावनलाल वर्मा के 'माधवजी सिंधिया', महारानी दुर्गावती', और 'झाँसी की रानी' ऐतहासिक उपन्यास हैं।

सांस्कृतिक उपन्यास—इस प्रकार के उपन्यासों की विषयवस्तु की पृष्ठ-भूमि ऐतिहासिक होती है, परन्तु इनमें प्रमुख रूप से तत्कालीन संस्कृति का चित्रण रहता है। भगवतीचरण वर्मा का 'चित्रलेखा' और चतुरसेन शास्त्री का 'वैशाली की नगर वधू' सांस्कृतिक उपन्यास हैं।

सामाजिक उपन्यास—सामाजिक उपन्यासो में जन-जीवन की परम्पराओ, प्रथाओं और सामाजिक रीतियों का चित्रण रहता है। प्रेमचन्द और भगवती प्रसाद बाजपेयी के उपन्यास इसी वर्ग के है।

मनोरंजन प्रधान उपन्यास—हिन्दी के प्रारम्भिक उपन्यास इसी श्रेणी के हैं। तिलस्मी, ऐय्यारी, जासूसी उपन्यास मनोरंजन-प्रधान ही है। इनमे कथावस्तु काल्पनिक और कौतूहल-प्रधान रहती है। देवकीनन्दन खत्री और गहमरीजी के उपन्यास इसी श्रेणी में आते है।

प्रकृतवादी उपन्यास—इस वर्ग के उपन्यासों का विषयवस्तु वस्तुपरक अतिवास्तविक और प्रकृत व्यापारों से युक्त होती है। इनका आधार यथाथ नही होता। 'दिल्ली के दलाल', चन्द हसीनो क खतूत', 'दुराचार के अड्डे', आदि इसी वर्ग के उपन्यास है।

आंचलिक उपन्यास—ऐसे उपन्यासो को विषयवस्तु का सम्बन्ध अचल (ग्राम-प्रान्त) विशेष से होता है। फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला आंचल' और 'परती परिकथा' ऐसे ही उपन्यास है।

तत्त्वों के आधार पर वर्गीकरण :

कथावस्तु, पात्र, सम्वाद, वातावरण, भाषा-शैली और उद्देश्य उपन्यास के प्रमुख तत्त्व हैं। किसी उपन्यास मे घटनाओ की प्रधानता होती है और किसी में चरित्र-प्रधान रहता है। इस प्रकार तत्त्वों के आधार पर उपन्यासों के प्रमुख दो भेद किये जा सकते हैं—

१. घटना प्रधान उपन्यास ।

२. चरित्र-प्रधान उपन्यास ।

घटना-प्रधान उपन्यास—घटना-प्रधान उपन्यासों में कथा-तत्व अर्थात् घटनाओं की प्रधानता रहती है। लेखक पात्रों के माध्यम से कथा का विकास करता है। इस प्रकार घटनाओं की प्रधानता और पात्रों की गौणता रहती है। पात्रों के चरित्र विकास पर लेखक का ध्यान नहीं रहता। ऐतिहासिक, मनोरंजन प्रधान और काल्पनिक विषयवस्तु वाले उपन्यास प्रायः घटना-प्रधान होते हैं।

चरित्र-प्रधान उपन्यास—चरित्र-प्रधान उपन्यासों में लेखक का ध्यान घटनाओं के स्थान पर चरित्र-चित्रण और चरित्र-विकास की ओर अधिक रहता है। सामाजिक उपन्यासों में चरित्र की प्रधानता रहती है। प्रेमचन्द और भगवती प्रसाद वाजपेयी के उपन्यास चरित्र-प्रधान ही है। ऐसे उपन्यासों में पात्रों के कार्य ही घटनाओं की सृष्टि करके कथानक को आगे बढ़ाते हैं।

रचना-शैली के अनुसार वर्गीकरण

रचना-शैली की दृष्टि से उपन्यासों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

वर्णात्मक शैली के उपन्यास—इस प्रकार के उपन्यासों में लेखक घटनाओं, तथ्यों और पात्रों के चरित्र का स्वयं वर्णन करता है। प्रेमचन्द के उपन्यास वर्णात्मक हैं।

आत्मकथा शैली के उपन्यास—इस प्रकार के उपन्यासों में कोई पात्र स्वयं अपनी कहानी कहता है या कई पात्र अपनी-अपनी कहानी कहते हैं।

डायरी शैली के उपन्यास– इस प्रकार के उपन्यासों में एक या कई पात्रों की डायरियों से ही कथानक का विकास होता है।

पत्रात्मक शैली के उपन्यास—इस प्रकार के उपन्यासों में पात्रों के माध्यम से कथा विकसित होती है।

अन्य वर्गीकरण

सामान्य दृष्टि से उपन्यास को निम्नलिखित तीन वर्गों में विभाजित

किया जा सकता है—बहिर्मुखी उपन्यास, अन्तर्मुखी उपन्यास और समन्वित उपन्यास।

बहिर्मुखी उपन्यास—इस प्रकार के उपन्यासों में जन-जीवन का बाह्यपक्ष प्रधान रहता है। ये उपन्यास १. नीति-प्रधान, २. घटना-प्रधान और ३. इतिहास-प्रधान होते हैं। नीति प्रधान उपन्यासों में लेखक उपदेशक के रूप में सामने आता है। घटना-प्रधान उपन्यासों में घटनाओं की प्रधानता रहती है। एक के पश्चात् दूसरी घटनायें इस प्रकार आती जाती हैं कि पाठक उनसे उलझकर रह जाता है।

इतिहास प्रधान उपन्यासों में कथावस्तु ऐतिहासिक होती है, उनमें कल्पना का प्रयोग भी इतिहास पुष्ट होता है।

अन्तर्मुखी उपन्यास—अन्तर्मुखी उपन्यासों में पात्रों के हृदय का निरीक्षण रहता है। उनकी प्रवृतियों, भावनाओं और दुर्बलताओं को अनावरण करना ही ऐसे उपन्यासों का उद्देश्य होता है। अन्तर्मुखी उपन्यासों के दो भेद किये जा सकते हैं—१. मनोविश्लेषण प्रधान उपन्यास और २. सिद्धान्त प्रधान उपन्यास।

प्रश्न ३—उपन्यासों के तत्वों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—"उपन्यास में नाम तथा तिथियों के अतिरिक्त सब बातें सच्च होती हैं और इतिहास में नामों तथा तिथियों के अतिरिक्त कुछ भी सच नहीं होता।"

उपन्यास के तत्व—उपन्यास के तत्व निम्नलिखित हैं—

१. कथावस्तु
२. पात्र और उनका चित्रण
३. संवाद या कथोपकथन
४. वातावरण या देश-काल का वर्णन
५. भाषा और शैली
६. उद्देश्य

अब हम इन पर अलग-अलग विचार करेंगे :—

कथावस्तु—उपन्यास की पहली आवश्यकता है—'एक कथा'। कथा बहुत सी घटनाओं से मिलकर बनती है अर्थात् कथा में एक से अधिक, घटनायें होती है। उपन्यास में कथा के रूप में मनुष्य-जीवन का चित्र होता है। उपन्यास की कथा काल्पनिक होती है, पर वह संभाव्य होती है, असंभव नहीं। यह सत्य नहीं होती, परन्तु सत्य हो सकती है।

कथा में द्वन्द्व—जीवन बहुत विस्तृत है, उसके अनेक रूप हैं। अतः उपन्यास की कथा किसी भी प्रकार की हो सकती है। उपन्यास की कथा का सम्बन्ध मनुष्य के आर्थिक जीवन से भी हो सकता है, धार्मिक जीवन से भी, राजनैतिक जीवन से भी और सामाजिक जीवन से भी। उपन्यास एक ऐसे मनुष्य की कथा है जो संघर्ष में लगा होता है। मनुष्य का यह संघर्ष प्रकृति से भी हो सकता है (जैसे हेमिग्वे के उपन्यास 'सागर और मनुष्य' में), समाज से भी हो सकता है (प्रेमचन्द के उपन्यासों में) और अपने आप से भी हो सकता है (जैनेन्द्र के उपन्यासों में)। अतः उपन्यास की कथा में संघर्ष होता है।

कथा के गुण—उपन्यास की कथा की रचना करते समय अनेक बातों का ध्यान रखना होता है। सारमेट साँम ने उपन्यास की कथा के निम्न गुण माने हैं—

"कहानी क्रमबद्ध और विश्वासनीय होनी चाहिए। इसका आरम्भ, मध्य और अन्त होना चाहिए और अन्त आरम्भ का स्वाभाविक परिणाम होना, चाहिए और वे केवल कथा को ही विकसित करने वाले नहीं होने चाहिए अपितु कथा से ही उत्पन्न भी होने चाहिए।"

सफल कथा के लिए आवश्यक है कि—

१. उपन्यास की कथा संभव और विश्वसनीय हो।

२. उपन्यास की कथा सुगठित और सुविकसित हो।

३. उपन्यास की कथा मौलिक हो।

यथार्थवाद—उपन्यास में काल्पनिक कथा के माध्यम से मानव-जीवन का चित्रण होता है, पर यह काल्पनिक कथा सत्य के निकट होती है। उपन्यास का विकास रोमांस कथाओं से हुआ है दोनों का अन्तर यही है। रोमांस कथाओं

की कथा सर्वथा काल्पनिक होती है और उस पर सहज ही विश्वास नहीं होता है, पर उपन्यास की कथा काल्पनिक होते हुए भी सहज विश्वसनीय होती है। उपन्यास में यथार्थ का आधार अधिक ग्रहण होता है। महाकाव्य में भावना की प्रधानता होती है, पर उपन्यास में यथार्थ की। यदि उपन्यास को यथार्थ से अलग कर दिया जाय तो उपन्यास, उपन्यास न रह कर रोमांश कथा बन जायगा।

क्रम—एडविन म्यूर (Edwin Muir) ने 'The Structure of the Novel' में उपन्यास की कथा पर विचार किया है। कथा की परिभाषा उसने 'the story which records a succession of event' (कथा जो कि घटनाओं का क्रमिक वर्णन करती है) दी है। उपन्यास के लिए म्यूर यह आवश्यक मानता है—"In every Novel things must happen and in a certain order." (प्रत्येक उपन्यास में वस्तुयें घटित होनी चाहिये और एक निश्चित क्रम में घटित होनी चाहिये। म्यूर के इन वाक्यों से कथा में क्रमबद्धता और गठन का महत्व स्पष्ट है। उपन्यास एक संगठित और सुविकसित रचना है। वह मानव-जीवन में निरन्तर विकास करता है, अतः उपन्यास की कथा में भी विकास आवश्यक है और यह विकास एक निश्चित क्रम के अनुसार होना चाहियें, मनमाने ढंग से नहीं।

रोचकता—उपन्यास के लिये रोचकता अत्यावश्यक है। यह उपन्यास की मुख्य शक्ति है और यही पाठक को उपन्यास तक लाती है। अतः उपन्यास की कथा का रोचक होना भी आवश्यक है। मनुष्य में जिज्ञासा-वृत्ति सहज है। वह अज्ञात को जानने का सदा इच्छुक रहता है और प्रयत्न भी करता है, यदि उसे किसी प्रकार की आपत्ति की आशंका न हो तो यह जिज्ञासा ही मनुष्य में कौतूहल की भावना उत्पन्न करती है। जो उपन्यास मनुष्य की कौतूहल-वृत्ति को जाग्रत कर देता है, उसे मनुष्य रोचकता के साथ पढ़ता जाता है। अतः उपन्यास की कथा पाठक के मन की जिज्ञासा-वृत्ति को जगाने वाली होनी चाहिए।

मौलिकता—अन्त में उपन्यास की कथा को मौलिक होना चाहिये। मौलिकता का अर्थ सम्पूर्ण नवीनता नहीं है। सम्पूर्ण नवीनता बड़ी दुर्लभ वस्तु है और मौलिकता की इस कसौटी पर सभी ऐतिहासिक उपन्यास असफल हो

जायेंगे। मौलिकता का अर्थ है प्रस्तुत करने की नवीनता। समस्यायें एक हो सकती हैं कथावस्तु का मूल रूप भी एक हो सकता है, पर प्रत्येक लेखक का प्रस्तुतीकरण अवश्य नवीन होना चाहिये।

पात्र और उनका चरित्र-चित्रण—उपन्यास मानव-जीवन का चित्रण है। उपन्यास की यह मूल विशेषता ही उपन्यास में पात्रों के महत्व को स्पष्ट कर देती है। बिना पात्रों के न तो उपन्यास की ही कल्पना की जा सकती है और न कथा की ही। पात्र मानव होने आवश्यक हैं, क्योंकि उपन्यास मानव-जीवन का चित्रण है।

पात्र-भेद-प्रवृत्तियाँ—उपन्यास के पात्र अनेक प्रकार के हो सकते हैं। चरित्र की प्रवृत्तियों के आधार पर उन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रेमचन्द के पात्र प्रतिनिधि (Type character) है। 'गोदान' का नायक होरी भारत के समस्त किसानों का चित्रण है। जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी आदि मनोवैज्ञानिक कथाकारों के लिए यह बात नहीं कही जा सकती। उनके पात्र व्यक्तिगत है। वे किसी समूह या वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

पात्र-भेद और विकास – विकास की दृष्टि से भी पात्रों के दो भेद किये जा सकते है। कुछ पात्र परिवर्तनशील होते हैं। परिस्थितियों से प्रभावित होकर उनमें अनेक परिवर्तन आ जाते हैं, पर कुछ पात्र स्थिर होते हैं। उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। वे सूर्य के समान उदय होने पर भी लाल रहते है और अस्त होते समय भी लाल रहते हैं।

पात्र भेद और स्वभाव—स्वभाव की दृष्टि से भी पात्रों के कुछ भेद किये जा सकते हैं। कुछ देव-स्वभाव के होते है, बुराई उनको छूती नही और कुछ दुष्ट स्वभाव के होते हैं, पर संसार में दोनों ही कोटियाँ दुर्लभ है। अधिकांशतः मिश्रित स्वभाव के व्यक्ति ही मिलते हैं। पत्थरों के नीचे भी शीतल जल की धारा बहती पायी जाती है।

उपन्यास में पात्रों का चित्रण चार प्रकार से किया जा सकता है—

१. लेखक अपने पात्रों का स्वयं परिचय दे।

२. पात्र स्वयं अपना परिचय प्रस्तुत करे।

३. एक पात्र दूसरे पात्र का परिचय दे ।

४. पात्र के कार्यों से उसका चरित्र स्पष्ट हो ।

उपन्यासों में चरित्र-चित्रण के लिये अन्तिम ढंग ही श्रेष्ठ माना जाता है, क्योंकि यह विश्वसनीय होता है और स्वभाविक होता है । लेखक के अपनी ओर से किये गये वर्णन बोझिल और नीरस हो जाते है। पात्रों के स्वतन्त्र अस्तित्व के लिये भी यह आवश्यक है कि लेखक अपनी ओर से उनकी सीमायें निश्चित नहीं करे बल्कि उनके कार्यों के साथ चरित्र का क्रमशः उद्घाटन होता रहे ।

मौलिकता का प्रश्न—एक और प्रश्न पात्रों की मौलिकता का है । प्रसिद्ध उपन्यासकार सामर सेट मांस का इस विषय में कथन है कि प्रत्येक पात्र वैयक्तिक होना चाहिये । मौलिकता के स्थान पर वे वैयक्तिकता का प्रयोग करते हैं । इस विषय में उन्होंने लिखा है—

"उपन्यासकार से यह आशा रखना कि बिल्कुल नवीन पात्र की रचना करे बहुत अधिक है । उसकी विषयवस्तु मानव-स्वभाव है और यद्यपि मनुष्य के अनेक रूप और दशायें हैं, पर ये रूप संख्या में असीमित नहीं हैं और उपन्यास, कहानी, नाटक, महाकाव्य इतने अधिक समय से लिखे जा रहे हैं कि एक लेखक पूर्णतः नवीन पात्र की रचना कर सके ।"

अतः जिस प्रकार कथा के प्रस्तुतीकरण का नवीन ढंग ही होना आवश्यक है, उसी प्रकार यही बात पात्रों के विषय में भी कही जा सकती है ।

संवाद या कथोपकथन—"जिस प्रकार व्यवहार चरित्र से विकसित होना चाहिए उसी प्रकार कथन भी । एक फैशनेबिल स्त्री को फैशनेबिल स्त्री के रूप में ही बात करनी चाहिए और गलियों में घूमने वाले को उसी रूप में । संवाद न तो विश्रृंखलित ही होने चाहिये और न लेखक के लिए अपने विचार प्रकट करने के साधन । इन्हें पात्रों का चरित्र-चित्रण करना चाहिए और कथा को आगे बढ़ाना चाहिये ।"

संवाद के गुण—इस कथन में संवादों के विषय में निम्न बातें स्पष्ट होती हैं—

१. संवाद परस्पर सम्बन्धित और क्रमबद्ध होने चाहिए।
२. संवादों द्वारा लेखक को अपने विचार नहीं प्रकट करने चाहिए।
३. संवाद पात्र के चरित्र के अनुसार होने चाहिए। स्वाभाविकता की दृष्टि से यह आवश्यक है।
४. संवादों का कार्य पात्रों के चरित्र को स्पष्ट करना और कथा को आगे बढ़ाना है।

देश-काल वर्णन—उपन्यास लिखते समय देश-काल के वर्णन का भी ध्यान रखना आवश्यक है। ऐतिहासिक उपन्यास में तो यह और भी जरूरी हो जाता है। देश-काल के विरुद्ध यदि कोई भी बात लिख दी जाती है तो उपन्यास का सारा प्रभाव ही नष्ट हो जाता है। जिस प्रकार चित्र का प्रभाव सुन्दर पृष्ठ-भूमि से बढ़ जाता है, उसी प्रकार उपन्यास का प्रभाव भी देशकाल के सुन्दर वर्णन से बढ़ जाता है। आधुनिक युग में आंचलिकता के प्रचलन से वातावरण-वर्णन का महत्व और भी अधिक बढ़ गया। मनोविज्ञान के प्रचार के कारण उपन्यासों में मानसिक वातावरण का चित्रण भी किया जाने लगा है।

भाषा और शैली—भाषा के विषय में संवादों पर विचार करते समय यह कहा जा चुका है कि संवाद पात्रों के अनुसार होने चाहिए। उसका स्वाभाविक अर्थ यह भी है कि भाषा का स्तर पात्रों के व्यक्तित्व के अनुसार होना चाहिए। भाषा विचार का वाहन है, अतः भाषा में स्पष्टता और शक्ति का होना भी आवश्यक है। प्रवाहमयी भाषा उपन्यास के आकर्षण को और अधिक बढ़ा देती है और क्लिष्ट भाषा उपन्यास के प्रभाव को कम कर देती है।

उपन्यास की शैली में स्पष्टता और प्रभाव के साथ-साथ मधुरता और शक्ति भी होनी चाहिए। उपन्यास मानव-जीवन के विविध रूपों का चित्रण करता है, अतः शैली को विविधरूपा भी होना चाहिए। अवसर के अनुकूल शैली में परिवर्तन आवश्यक है।

उद्देश्य—कुछ उपन्यास केवल मनोरंजन के लिए लिखे जाते हैं। पर श्रेष्ठ उपन्यास का उद्देश्य केवल मनोरजन ही नहीं होता है। उपन्यास रोचक और मन को रमाने वाला अवश्य होना चाहिए, पर यह उसकी सफलता है, सार्थकता

नहीं है। श्रेष्ठ उपन्यास में कहीं उच्च वस्तु अवश्य होती है। यह उच्च वस्तु मानव-जीवन का चित्रण भी हो सकती है और जीवन-संदेश भी। पर उपन्यास में संदेश अप्रत्यक्ष होना चाहिए, प्रत्यक्ष नहीं। सन्देश की प्रत्यक्षता उपन्यास की कलात्मकता को नष्ट कर देती है।

उपसंहार—पर इस सब विवेचन के बाद भी एक बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है। उपन्यास एक प्रगतिशील कला है। आधुनिक समय में यह कला बहुत विकसित हो गई है। आधुनिक उपन्यास से इन सब बातों की माग करना ठीक नहीं होगा। हेमिग्वें के 'सागर और मनुष्य' (The Old Men and the Sea) में केवल इतनी सी कथा है कि एक बुड्ढा नाव लेकर मछली पकड़ने जाता है। उसके काँटे में एक बड़ा शार्क फँस जाता है। दोनों एक-दूसरे को खींचने का प्रयत्न करते है और बुड्डा सफल होकर वापिस आ जाता है। अल्बर्ट काम् के उपन्यास 'पतन' में कथा-तत्व का और भी अभाव है। उसमे केवल एक व्यक्ति अपने जीवन के विषय मे बतलाता रहता है। न्यूट हेमसन का "भूख" (Tbe Hunger) नामक उपन्यास भी ऐसा ही है। तीनों ही उपन्यास-कार नोवल पुरस्कार-विजेता है।

आधुनिक उपन्यास में कथा और पात्रो का महत्व घट गया है। उसमें मनुष्य के कुछ ही क्षणों का ही चित्रण होता है और मानसिक द्वन्द्व, पूर्व स्मृतियाँ, कुंठा एवं मनोदशाओं की प्रधानता होती है। उपन्यास के ये तत्व क्लासिक उपन्यास के लिए हैं, आधुनिक उपन्यासों के लिए नहीं हैं।

हिन्दी उपन्यास का विकास

प्रश्न ४—हिन्दी-उपन्यास-साहित्य के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालते हुए, उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों और धाराओं का उल्लेख कीजिए।

स्मृति-संकेत

१. पूर्वपीठिका, २. उपन्यास साहित्य का विकास, ३ प्रथम चरण ४. द्वितीय चरण, ५. तृतीय चरण, ६. उपन्यास में टैकनीक के नये प्रयोग, ७. निष्कर्ष।

उत्तर—पूर्वपीठिका

हिन्दी-उपन्यास अपनी शैलीगत विशिष्टता की दृष्टि से भले ही पाश्चात्य साहित्य, विशेषकर अँग्रेजी साहित्य के सम्पर्क और प्रभाव से आधुनिक काल की उपज, हो, किन्तु अपनी कथा-तत्त्व की प्रमुखता की दृष्टि से उसकी भारतीय परम्परा भी अत्यन्त प्राचीन है। कथा-कहानियों के प्रति मनुष्य की रुचि अत्यन्त ही आदिम है। सम्भवतः तब से, जब मनुष्य ने लिखना भी न सीखा हो। वेदों में वर्णित अनेक कथाएँ प्राचीन मानव की कथा के प्रति रुचि की परिचायक हैं। पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथों में एक नहीं अनेक कथाओं का भण्डार है, जो अनेक उपन्यासों की सामग्री प्रस्तुत करते हैं। आज अनेक उपन्यासकारों ने उनमें से कथाओं को लेकर स्वतन्त्र उपन्यासों का सृजन भी किया है।

उन प्राचीन कथाओं में सम्वाद कथा, चरित्र-चित्रण आदि औपन्यासिक तत्त्वों की भी प्राप्ति हो जाती है। वेदों में शुनःशेप की कथा, यम-यमी-संवाद, पुरुरवा-उर्वशी-सम्वाद आदि में पर्याप्त कथा-तत्त्व हैं। उनके बाद ब्राह्मण ग्रंथों और पुराणों में अनेक महापुरुषों की कथाओं का वर्णन है। उन्हें इतिहास नहीं कहा जा सकता। उनके वर्णन में कल्पना और रोचकता का गुण उन्हें उपन्यास के ही अधिक निकट ला देता है। एतरेय और शतपथ ब्राह्मण अनेक कथाओं से भरे हुए है, उपनिषद् भी कथाओं से वंचित नहीं। याज्ञवल्क्य,

मैत्रेयी और नचिकेता आदि की कथाएँ उनमें भरी पड़ी हैं। उसके बाद पंचतन्त्र, हितोपदेश, कथा सरित्सागर तथा बृहत्कथा, जातक कथाएँ आदि अनेक कथाएँ प्राकृत, अपभ्रंश आदि मे भी मिलती हैं। दण्डी का दशाकुमार चरित तथा बाणभट्ट का कादम्बरी भी अपने ढंग का उपन्यास ही है।

कहने का अभिप्राय यह है कि प्राचीन भारतीय साहित्य में चाहे वह सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश किसी का भा हो। कथा-साहित्य का अभाव नहीं है।

इस सब कथा-साहित्य के द्वारा प्राचीन कथाकारों ने मानव-जीवन के अनेक रहस्यों, सत्यों और उलझनों को चित्रित किया है। उनमें हमें प्राचीन जीवन को एक झलक मिल जाती है। प्राचीन आचार-विचार, सस्कृति, जीवन-दशन आदि का ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार यह कथाएँ आधुनिक उपन्यासों की उद्देश्यपरकता से समता रखती है। उनमें जीवन के लिए एक उद्देश्य निहित होता था, जो आज के उपन्यासों में निहित उद्देश्य की अपेक्षा अधिक स्थूल और उपदेशात्मक होता था, इसमें सन्देह नहीं, पर साथ ही अधिक महान् भी होता था।

प्राचीन साहित्याचार्यों ने साहित्य के इस महत्वपूर्ण अंग की महत्ता को परखा था और उसका महाकाव्य और नाटक की ही भाँति शास्त्रीय विवेचन भी किया था। इसके दो विभाग किये थे—उपाख्यान और कथा-साहित्य।

यदि हिन्दी-साहित्य के जन्म के साथ आरम्भ से ही गद्य और पद्य-साहित्य का समान रूप से विकास हुआ होता, तो सम्भवत: हिन्दी का उपन्यास-साहित्य अपने जन्म के लिए पाश्चात्य साहित्य का ऋणी न होकर, अपनी प्राचीन परम्परा में ही विकसित हुआ होता। लेकिन इतिहास की गति से ऐसा न हो सका और आधुनिक उपन्यास-साहित्य पाश्चात्य साहित्य के सम्पर्क में जन्मा और विकसित हुआ, उसमें अब किसी विवाद की गुंजायश नहीं है।

उपन्यास-साहित्य का विकास

आधुनिक काल में जिस समय हमारे देश में पाश्चात्य साहित्य और संस्कृत के सम्पर्क के कारण राष्ट्रीय जागरण की एक देशव्यापी लहर उत्पन्न हो रही

थी और राष्ट्रीय जागरण में अपने उत्तरदायित्व की महती भूमिका को अदा करने के लिए हिन्दी-गद्य और उसकी विभिन्न विधाओं का जन्म हो रहा था, उसी समय हिन्दी-गद्य की अन्य विधाओं के साथ-साथ ही हिन्दी-उपन्यासों का भी सूत्रपात हुआ। राष्ट्रीय जागरण में अपने सहयोगी के उत्तरदायित्व की भूमिका को अदा करने के उद्देश्य से आरम्भ से ही हिन्दी-उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना तथा राष्ट्रीय जागरण का तत्व स्पष्ट रूप में मिलता है।

प्रथम चरण

हिन्दी-उपन्यासों का आरम्भ बंगला और मराठी भाषा के उपन्यासों के अनुवाद से आरम्भ होता है। यद्यपि बंगला और मराठी भाषा का साहित्य भी हिन्दी-साहित्य की भाँति आरम्भ में पद्यमय ही था, किन्तु उन भाषाओं में हिन्दी-भाषा की अपेक्षा गद्य-साहित्य का आरम्भ अपेक्षाकृत पहले शुरू हुआ। यही कारण है कि बंगला और मराठी भाषा में उपन्यास-साहित्य पहले शुरू हुआ। यद्यपि उन भाषाओं में भी उपन्यास का आरम्भ पाश्चात्य साहित्य के सम्पर्क से आरम्भ हुआ था और हिन्दी का अपेक्षा बंगला और मराठी भाषायें पाश्चात्य साहित्य के सम्पर्क में पहले आईं, अतः उनमें गद्य की विधाओं का सूत्रपात पहले हुआ। हिन्दी में वह प्रभाव अधिकांशतः बगला और मराठी साहित्य के माध्यम से पड़ा, अतः हिन्दी उपन्यास साहित्य का आरम्भ बगला और मराठी उपन्यासों के अनुवाद से होता है।

भारतेन्दु तथा उनके तत्कालीन लेखकों ने बंगला और मराठी भाषा से अनुवाद करने प्रारम्भ किये। भारतेन्दु एक जागरूक कलाकार थे। राष्ट्रीय जागरण के नाटकों की ही भाँति उपन्यासों की महत्ता को भी उन्होने समझा था और उसके विकास की ओर भी उनका ध्यान गया था, किन्तु साहित्य के इस अंग का सम्बर्द्धन करने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हो न सका। यद्यपि उन्होंने अनुवाद के अलावा एक मौलिक उपन्यास 'कुछ अप बीती कुछ जग बीती' भी लिखना आरम्भ किया था, जो असमय में ही उनकी मृत्यु हो जाने के कारण आरम्भ होकर ही रह गया। हिन्दी के सर्व प्रथम मौलिक उपन्यासकार होने का श्रेय श्री निवासदास को प्राप्त होता है। आपका पहला मौलिक उपन्यास

'परीक्षा गुरु' सन् १८८२ में प्रकाशित हुआ था। श्रीनिवासदास जी के बाद हिन्दी के अनेक लेखकों ने उपन्यास लिखने आरम्भ किए। बाबू रतनचन्द ने 'नूतन चरित्र', रामकृष्णदास ने 'स्वर्ण लता' 'मरता क्या न करता', निस्सहाय हिन्दू', किशोरीलाल गोस्वामी ने 'लवंगलता', 'कुसुम कुमारी' प्रतापनारायण मिश्र ने 'राजसिंह', 'इन्दिरा', युगलांगुलीय', राधारानी' आदि मौलिक उपन्यास लिखे और कुछ बंगला, मराठी आदि प्रान्तीय भाषाओ से अनुवाद किए। इस युग में प० किशोरीलाल गोस्वामी ने सर्वाधिक उपन्यास लिखे। आपके छोटे-मोटे उपन्यासो को मिलाकर संख्या पैंसठ के लगभग होती है।

उक्त सभी उपन्यासों में सामाजिक सुधार की भावना निहित है। विधवाओं की दयनीय दशा, सामाजिक कुरीतियों के परिणाम आदि इनके सामान्य विषय हैं। इस युग में ऐतिहासिक इतिवृत्तों को लेकर भी उपन्यास लिखे गये, जिनमें इतिहास के पृष्ठों से कथा ग्रहण कर लेखकों ने तत्कालीन जीवन पर सुधारवादी प्रभाव डालने के उद्देश्य से उनका सृजन किया था।

इस युग में लिखे गये उपन्यासों की एक दूसरी धारा है—तिलस्मी और ऐय्यारी के उपन्यासों की—इस धारा के उपन्यास सर्वाधिक प्रसिद्ध हुए। इस क्षेत्र में देवकीनन्दन खत्री, दुर्गाप्रसाद खत्री और गोपालराम गहमरी का नाम उल्लेखनीय है।

इस युग के समस्त उपन्यास-साहित्य को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है—आचार, धर्म, नीति, समाज-सुधार आदि की भावना से प्रेरित सामाजिक एवं ऐतिहासिक उपन्यास, जिनमें उपदेश का स्वर अधिक है, तथा शुद्ध मनोरंजन के लिए लिखे गये तिलस्मी और ऐय्यारी उपन्यास।

प्रथम वर्ग के उपन्यासों में तत्कालीन समाज की बदली हुई परिस्थितियों में नये आदर्शों का चित्रण मिलता है, तो दूसरे वर्ग के उपन्यासों में कल्पित राजवर्ग और उससे सम्बन्धित चरित्रों को लेकर षड्यंत्र, तिलस्मी और ऐय्यारी का मनोरंजनपूर्ण एवं रोमांचकारी वर्णन मिलता है।

द्वितीय चरण

हिन्दी-उपन्यास-साहित्य के विकास में द्वितीय चरण का आरम्भ उपन्यास-क्षेत्र में प्रेमचन्द के आगमन से माना जाता है। यद्यपि प्रेमचन्द के

पूर्व से ही हिन्दी-उपन्यासों में कथावस्तु, कथा-गठन, शैली और उद्देश्य आदि की दृष्टि से अन्तर आने लगा था, लेकिन यह अन्तर इतना स्पष्ट नहीं हो पाता था कि स्पष्ट रूप से उसे विकास के दूसरे चरण का द्योतक मान लिया जाय। प्रेमचन्द के उपन्यास-क्षेत्र मे आगमन से यह अन्तर बिल्कुल स्पष्ट हो गया। यही कारण है कि प्रेमचन्द से ही हिन्दी उपन्यास-साहित्य के विकास का दूसरा चरण माना जाता है और विकास के द्वितीय चरण को प्रस्तुत करने का श्रेय प्राप्त है, प्रेमचन्द्र के उपन्यास 'सेवा-सदन' को। 'सेवा-सदन' हिन्दी का पहला उपन्यास है, जिसमें सामाजिक संघर्ष को अपने यथार्थ रूप में कथा-वस्तु का आधार बनाया गया है। इसे हम हिन्दी-उपन्यास-साहित्य के विकास का मूल-स्तम्भ कह सकते हैं।

प्रेमचन्द ने एक नई राष्ट्रीय-चेतना लेकर उपन्यास लिखना आरम्भ किया था। भारतीय राष्ट्रीय-आन्दोलन और राष्ट्रीय चेतना ने एक संगठित शक्ति का रूप ग्रहण कर लिया था। भारतेन्दुकाल में जो राष्ट्रीय जागरण केवल सांस्कृतिक-सुधार तथा भारतीय गौरव के पुनरुत्थान के रूप में आरम्भ हुआ था, वह स्वराज्य-स्थापना का रूप ग्रहण कर चला था। परिणामतः साहित्य में भी हमें वही परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग, किसान वर्ग और मजदूर वर्ग के जीवन की आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ तथा इनके सम्बन्धों से उत्पन्न पारिवारिक एवं व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है। हमारे समाज का पूरा जीवन उनके उपन्यासों में चित्रित हुआ है। उन्होंने हमारी आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं के अतिरिक्त नैतिक, सांस्कृतिक तथा अन्य अनेक व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्ध रखने वाली समस्याओं का सफल समाधान अपने उपन्यासों मे प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनके प्रारम्भिक उपन्यासों मे आदर्श की स्थापना का आग्रह है, ऐसा आदर्श जिसे वह पहले से सोचकर और उसे अपनी कथा के विकास के द्वारा स्थापित करने का निश्चय करके चले। लेकिन 'प्रेमा' से लेकर 'गोदान' तक वह क्रमशः आदर्श से यथार्थवाद की ओर अग्रसर होते हुए जान पड़ते हैं अर्थात् उनके बाद

के उपन्यासों में आदर्श कथा की यथार्थ परिस्थितियों से स्वतः निकलता है। वह कथा के घात-प्रतिघात पर आधारित होता है।

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों के द्वारा उपन्यास-साहित्य के विकास का जो दूसरा चरण प्रस्तुत किया, उसके प्रभाव को लेकर अनेक नये उपन्यासकार उपन्यास-क्षेत्र में आगे आये।

इस युग के उपन्यासकारों और उपन्यासों में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—वृजनन्दन सहाय ('सौन्दर्योपासक' १९१९); जयशंकर प्रसाद ('कंकाल', 'तितली', 'इरावती' अपूर्ण); अवधनारायण ('विमाता' १९२३), शिवपूजन सहाय ('देहाती दुनियाँ' १९२५); आचार्य चतुरसेन शास्त्री ('हृदय की परख', 'व्यभिचार', 'अमर अभिलाषा', 'आत्मदाह', 'नीलमती', 'वैशाली की नगर वधू' आदि); विशम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' ('माँ', 'भिखारिणी' आदि); पांडेय बेचय शर्मा 'उग्र' ('दिल्ली के दलाल', 'चन्द हसीनों के खतूत', 'बुधुआ का बेटी', 'शराबी', 'घटा', 'सरकार तुम्हारी आँखों में' आदि आदि); चण्डीप्रसाद 'हृदयेश' ('मनोरमा', 'मंगल प्रभात' आदि); प्रतापनारायण श्रीवास्तव ('विदा'); राधिकारमण प्रसादसिंह ('तरंग', 'राम-रहीम', 'पुरुष और नारी' आदि); मन्नन द्विवेदी (रामलाल और कल्याणी); जी० पी० श्रीवास्तव ('गंगा-जमुनी', 'दिल जले की आह' आदि); वृन्दावनलाल वर्मा ('गढ़कुण्डार', 'विराटा की पद्मिनी' 'कुण्डली चक्र', 'महारानी लक्ष्मीबाई', 'मृगनयनी', 'माधव जी सिंधिया' आदि) भगवतीप्रसाद बाजपेयी ('मीठी चुटकी', 'अनाथ पत्नी', त्यागमयी', 'प्रेम-विवाह', 'पतिता की साधना', 'दो बहिनें', 'निमन्त्रण', 'चलते-चलते', 'भूदान', 'अधिकार का प्रश्न', 'कर्मपथ' आदि); कृपानाथ मिश्र ('प्यास'); जैनेन्द्रकुमार ('परख', 'सुनीता', 'त्याग-पत्र', 'कल्याणी', 'सुखदा', 'विवर्त', 'व्यतीत' आदि); इलाचन्द्र जोशी ('मृणमयी', 'सुबह की भूलें', 'जिप्सी', 'पर्दे की रानी', 'प्रेत और छाया', 'संन्यासी', 'निर्वासित', 'मुक्ति-पथ', 'जहाज का पंछी' आदि); गोविन्द वल्लभ पन्त ('प्रतिमा', 'मदारी', 'प्रगति की राह' आदि); सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ('अप्सरा', 'अलक', 'लिली', 'निरूपमा', 'प्रभावती', 'बल्लेसुर बकरिहा', 'कुल्लीभाट', 'चोटी की पकड़' आदि)।

प्रेमचन्द्र युगीन तथा अन्य उपन्यासकारों में चेतना तथा प्रवृत्ति की दृष्टि से सामान्यतः तीन वर्ग दृष्टिगोचर होते हैं :

(१) कुछ उपन्यासकारों ने मानव-जीवन की समस्याओं को समाज की भूमिका में रखकर परखा और व्यापक सामाजिक और उभरती राजनीतिक चेतना के प्रसंग में मनुष्य की चारित्रिक विषमताओं तथा सामाजिक वैषम्यों और मनुष्य के राज्य तथा समाज के सम्पर्क को क्रिया-प्रतिक्रिया के सजग चित्रण के द्वारा जन-जीवन के यथार्थ रूप का व्यापक और मानवीय स्वरूप दिग्दर्शित किया।

(२) कुछ उपन्यासकारों ने फ्रायड के मनोविश्लेषण के आधार पर मानसिक रूप से रुग्ण चरित्रों का चित्रण भर प्रस्तुत किया है।

(३) तीसरे प्रकार के उपन्यासकारों ने मनुष्य के सामाजिक जीवन की विषमताओं को साम्राज्य-विरोधी राजनीतिक संघर्ष के प्रसंग में चित्रित किया है।

जहाँ प्रेमचन्द ने व्यापक मानव-जीवन के जित्रण को अपना लक्ष्य बनाया, वहाँ जैनेन्द्र ने व्यक्ति के पारिवारिक संकुचित जीवन में उठने वाली समस्याओं को चित्रित किया। जैनेन्द्र के उपन्यासों में व्यक्ति का चित्रण है, जबकि प्रेमचन्द के उपन्यासों में सम्पूर्ण समाज का। जैनेन्द्र के उपन्यास बंगाली भाभा के प्रसिद्ध लेखक शरत् की परम्परा के उपन्यास है। इनके उपन्यासों में कथा और घटनाओं का आधिक्य नहीं होता। कथा अपने मे सरल और संक्षिप्त होती है, किन्तु पात्रों के चरित्रों के कारण कथा में एक मार्मिक रहस्यात्मकता तथा समस्या की उलझन आ जाती है। उसमें मनोगत भावों और अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण अधिक होता है, जिससे मानव के चरित्र, उसके जीवन की परिस्थितयों और उसकी समस्याओं को समझने की दृष्टि मिलती है।

'उग्र' ने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, गन्दगी और कुत्सा के नग्न चित्रण को अपने उपन्यासों का आधार बनाया। 'उग्र' के उपन्यासों में सामाजिक कुरीतियों का यद्यपि बड़ा ही मार्मिक चित्रण है, किन्तु उनमें मर्यादा का अभाव है, इसलिए उनका प्रभाव विपरीत होता है। इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय,

भगवतीचरण वर्मा आदि ने फ्रायडवादी मनोविज्ञान के सिद्धान्तों के आधार पर मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों की रचना की।

तृतीय चरण

प्रेमचन्द की सजग सामाजिक जीवन के चित्रण की परम्परा को अधिक यथार्थ रूप में लेकर लिखे जाने वाले प्रगतिवादी उपन्यासों से हिन्दी-उपन्यासों के विकास से तीसरे चरण का आरम्भ माना जा सकता है। प्रगतिवादी उपन्यासों में मजदूर, किसान और मध्यवर्ग के आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक संघर्षों का चित्रण है। इनमें निम्न वर्ग में उभरती शक्ति और चेतना को मुखरित किया गया है। इस नयी प्रगतिवादी चेतना को लेकर उपन्यास लिखने वालों में प्रमुख हैं—यशपाल, कृष्णचन्द्र, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', नागार्जुन, रांगेय राघव, श्रीकृष्ण, अमृतराय आदि हैं।

हिन्दी के समस्त उपन्यासों को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि कथावस्तु की दृष्टि से उनके तीन वर्ग हैं—(१) सामाजिक, (२) ऐतिहासिक, (३) पौराणिक। सभी सामाजिक उपन्यासों में यद्यपि मानव के सामाजिक या व्यक्तिगत संघर्षों और समस्याओं का ही चित्रण होता है, लेकिन लेखक के चेतना-भेद तथा दृष्टिकोण-भेद के अनुसार प्रगतिवादी, फ्रायडवादी, गांधीवादी आदि भेद हो जाते हैं। लेखक ने जिस दृष्टि से सामाजिक जीवन और उसकी समस्याओं तथा संघर्षों का चित्रण किया है, उसी से उपन्यास की चेतना और उद्देश्य में भेद पैदा हो जाता है।

उपन्यास टेकनीक के नये प्रयोग

इधर उपन्यासों की टेकनीक में भी कई नए प्रयोग सामने आये है जिनमें ये उल्लेखनीय हैं—राहुल जी का 'सिंह सेनापति', हजारीप्रसाद द्विवेदी का उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा', शिवप्रसाद मिश्र का 'बहती गंगा', धर्मवीर भारती के 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'गुनाहों का देवता', राजेन्द्र यादव का 'प्रेत बोलते हैं' आदि।

पिछले दशक में हिन्दी-उपन्यास ने अभूतपूर्व उन्नति की है। शिल्प, तथा चेतना दोनों ही दृष्टियों से अनेक नये उपन्यासकार पिछले दशक में जन्म लेकर ख्याति प्राप्त कर हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक होने का गौरव प्राप्त कर रहे हैं

जैसे राजेन्द्र यादव, यादवेन्दु शर्मा 'चन्द्र', कमल जोशी, गुरुदत्त, फणीश्वर नाथ रेणु आदि। इस युग के प्रकाशित प्रसिद्ध और सुन्दर उपन्यास हैं— उदयशंकर भट्ट का उपन्यास 'सागर लहरें और मनुष्य' इलाचन्द्र जोशी का उपन्यास 'जहाज का पंछी', रांगेय राघव का 'काका', राजेन्द्र यादव का 'उखड़े हुए लोग' आदि।

हिन्दी का उपन्यास साहित्य बड़ी तेजी से विकास कर रहा है।

यह संक्षेप में हिन्दी के उपन्यास-साहित्य के विकास का इतिहास है। इस विकास में ऐतिहासिक उपन्यास का महत्वपूर्ण हाथ है। आरम्भ में ही ऐतिहासिक उपन्यास के सृजन की ओर लेखकों का ध्यान गया था। श्री किशोरीलाल गोस्वामी गंगाप्रसाद गुप्त, श्री जयरामदास गुप्त आदि अनेक उपन्यासकारों ने हिन्दी-उपन्यास के विकास के प्रथम चरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

उपन्यास-साहित्य के विकास के द्वितीय चरण में श्री वृन्दावनलाल वर्मा के रूप में एक ऐसी प्रतिभा ने जन्म लिया, जिन्होंने हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों के विकास और संवर्द्धन में महत्वपूर्ण योगदान किया। तब से निरन्तर ऐतिहासिक उपन्यास हिन्दी-उपन्यास-साहित्य के भण्डार की वृद्धि करते आ रहे हैं और ऐतिहासिक उपन्यास लिखने का भाव लेखकों में और उन्हें पढ़ने की रुचि पाठकों में निरन्तर बढ़ती जा रही है। यह सत्य हिन्दी के निरन्तर बड़ी संख्या में प्रकाशित होने वाले उपन्यासों से सहज ही सिद्ध और स्पष्ट है।

निष्कर्ष

हिन्दी के नई और पुरानी पीढ़ी के कई प्रसिद्ध उपन्यासकारों ने ऐतिहासिक उपन्यासों के सृजन से हिन्दी-उपन्यास-साहित्य की वृद्धि की—सर्व श्री वृन्दावन-लाल वर्मा, राहुल सांस्कृत्यायन, रांगेय राघव, आचार्य चतुर्सेन शास्त्री, हजारी प्रसाद द्विवेदी, हरिभाऊ उपाध्याय, सत्यकेतु विद्यालंकार, यशपाल, बनकाम सुनील आदि।

सामाजिक उपन्यासों की अपेक्षा ऐतिहासिक उपन्यासों की वर्तमान जीवन के लिए उपादेयता किसी हालत में कम नहीं है। ऐतिहासिक उपन्यास कोरे ऐतिहासिक विवरण मात्र नहीं होते, उनमें वर्तमान को गति देने वाली दृष्टि

से इतिहास को प्रस्तुत किया जाता है। इतिहास की ऐसी कथाओं, ऐसे पात्रों, ऐसी घटनाओं को चुनकर कथा का रूप प्रदान किया जाता है, जो आज भी आज की समस्याओं और जीवन-संघर्ष में हमें आगे बढ़ाते हैं, हमारे मन में साहस और मनोबल का संचार करते हैं, जिनके आलोक में हम अपने वर्तमान जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान करने की दृष्टि प्राप्त करते हैं। वर्मा जी के शब्दों में "हम उनके माध्यम से विवेक द्वारा अतीत को समझते परखते है। वर्तमान में अतीत के अनुभव के आधार पर भविष्य के लिए अपना मार्ग प्रशस्त करते हैं। उनके माध्यम से हमें अपनी परम्परा का ज्ञान प्राप्त होता है और अपने विकास-क्रम का—जिस विकास-क्रम में हम विकास करते हुए आज की स्थिति को प्राप्त कर सके हैं।"

प्रश्न ५—आधुनिक उपन्यासों की विशेषताएँ बतलाइये और प्राचीन उपन्यासों से उनका अन्तर स्पष्ट कीजिए।

स्मृति-संकेत

१. आधुनिक उपन्यासों की अपेक्षा पहिले के उपन्यासों में कथा-विस्तार अधिक था।
२. आधुनिक उपन्यासों में कथा की एकता पर अधिक बल है।
३. आधुनिक उपन्यास देशकाल-निर्दिष्ट की परिधि में सीमित है।
४. आधुनिक उपन्यासों में मनोविज्ञान का विस्तार है।
५. वर्तमान उपन्यासों में देश-काल-विधान, घटनाओं का आधार बना रहा है।
६. निष्कर्ष।

उत्तर—आधुनिक उपन्यासों की अपेक्षा पहले के उपन्यासों में कथा-विस्तार अधिक था :

प्राचीन उपन्यासों की अपेक्षा आधुनिक उपन्यासों में शब्द तथा अर्थ दोनों ही प्रकार की सामग्री का बड़ी मितव्यता से उपयोग किया गया है। विस्तार जहाँ उचित प्रकार की अन्विति में होकर मनोरम प्रतीत होता है, वहाँ अनुचित रूप से फैलकर अव्यवस्था तथा अरसिकता का द्योतक भी बन जाता है। हमारे प्राचीन कलाकारों में विस्तार की यह प्रवृत्ति आवश्यकता से अधिक मिलती

है। जहाँ हम महाश्वेता जैसे परम पावन पात्रों के लिए बाणभट्ट को शतशः नमस्कार करते हैं, वहाँ ही अनेक पृष्ठों को घेरने वाले राजद्वार के वर्णन को पढ़कर खीझ भी जाते है।

आधुनिक उपन्यासों में कथा की एकता पर अधिक बल दिया जाता है

आधुनिक उपन्यासों ने घटना-समुद्र में अपनी उपन्यास-नौका की एक निर्धारित रेखा पर ले जाना ही श्रेयस्कर समझा है, किन्तु इसका यह आशय नहीं है कि प्राचीन उपन्यासकारों की अपेक्षा वह अपनी रचना को कम कठिन समस्याओं के आधार पर खड़ा करता है। नहीं, प्राचीन उपन्यास की अपेक्षा वह न्यून निदर्शनों का उपयोग करता हुआ भी उनसे कहीं अधिक प्रभाविकता के साथ अपने पात्रों का चरित्र-चित्रण करता है। जहाँ वह घटनाओं के विस्तार में अतीत के कलाकारों से पीछे है, वहाँ घटनाओं के उचित निर्वाचन में वह उनसे आगे बढ़ गया है और एक बार हस्तगत की गई कतिपय घटनाओं के माध्यम में से ही अभिलाषित परिणाम लाकर उपस्थित करता है। आधुनिक कलाकार को उपन्यास को पहले से कहीं अधिक संकुचित सीमा में रखना पड़ता है और इसलिए उससे अधिक बलवती परिभाषा की परिधि में काम करना पड़ता है। इंग्लैण्ड में 'लिली' के दिन से लेकर और हमारे यहाँ 'कादम्बरी' से आरम्भ करके अब तक की कहानी को दार्शनिक टीका, देशीय चित्रण, ऐतिहासिक तथ्य तथा अन्य प्रकार की अनेक बातों से सुसज्जित करके दिखाया जाता रहता है। कथा के चहुँ ओर फैली इस घास को न लाकर आधुनिक कलाकार ने केवल अपने ध्येय ही को पहले की अपेक्षा कहीं अधिक निर्धारित तथा निश्चित बनाया है। साथ ही उससे अद्भुत होने वाली कथा की एकता को भी पहले से कहीं अधिक बलवती कर दिखाया है।

आधुनिक कलाकार का प्रमुख चिंतन अपने निरीक्षण को देशकाल-निर्दिष्ट की परिधि में सीमित करता रहता है :

इसी उद्देश्य से वह अपनी कला के विकास के लिए किसी प्रान्त को अथवा तहसील को चुनता है। इसमें सन्देह नहीं कि प्राचीन कलाकारों की रचनाओं में भी कहीं-कहीं इस प्रकार का नियन्त्रण दीख पड़ता है, किन्तु

जहाँ उनकी रचनाओं में यह नियन्त्रण विधिवसात् स्वमेव आ गया है, वहाँ आधुनिक रचनाओं में सिद्धान्त रूप से इसे स्वीकार किया जाता है।

जहाँ प्राचीन रचनाओं में देश-काल का व्यापक वर्णन होता था, वहाँ आधुनिक उपन्यासों में मनोविज्ञान का विस्तार हो रहा है।

आधुनिक उपन्यासों में देश-काल के बाल की खाल को चीरने वाले विस्तृत वर्णन नहीं मिलते, जिनसे प्राचीन उपन्यास आद्योपांत भरे रहते थे, किन्तु जहाँ आधुनिक कलाकार मनुजत्व के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध न रखने वाली बाह्य पद्धति के अनावश्यक वर्णन से विमुख हो चुके है, वहाँ उनमें मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पात्रों का विश्लेषण करने की परिपाटी सी चल पड़ी है। जिस सीमा तक आधुनिक कलाकार मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा अपनी कथा को विज्ञान के चक्रव्यूह में डाल रहा है, उसी सीमा तक वह उपन्यास के उन प्रारम्भिक जटिल रचयिताओं का समकक्ष बनता जा रहा है, जो देश और काल की सूक्ष्म पच्चीकारी में पड़कर अपनी कथा को भुला दिया करते थे।

वर्तमान उपन्यासों में देशकाल-विधान घटनाओं का सार बना रहा है

आधुनिक कलाकारों ने प्राचीन उपन्यासों में पाई जाने वाली अनावश्यक वृद्धि को काट-छाँट कर ही सन्तोष नहीं किया, उन्होंने देश-काल के विधान को अपनी कथा का आंशिक उपकरण ही बना लिया है। यों तो देश और काल दोनों ही प्राचीन उपन्यासों मे भी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान रहते थे, किन्तु जहाँ प्राचीन उपन्यासों में उनका उपयोग मुख्यतया अलंकारिणी पार्श्व-भूमि के रूप में होता था, वहाँ आजकल के उपन्यासों में इन दोनों का स्वत्व निकाल कर उपन्यास के पात्रों को उसमें रंग दिया जाता है। आज देश-काल उपन्यास-वर्णित घटनाओं की पार्श्व-भूमि न रहकर उसके पात्रों का अवयव अथवा सार बनकर हमारे समक्ष आता है। प्रेमचन्द और भगवतीप्रसाद बाजपेयी के उपन्यास इस बात के श्रेष्ठ निदर्शन हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त कथन का सार यह है कि आधुनिक कलाकारों ने उपन्यास को चेतन संगठन का रूप देने का प्रयत्न किया है। जिस प्रकार उनके पात्र चेतन

हैं और घटनाओं के रूप में अपने आप प्रस्फुटित होते चले जाते हैं, उसी प्रकार उनकी रचना भी चेतन है, वह अनायास ही अपने पटलों में फूटती चली जाती है। संक्षेप में :

आज उपन्यास का ध्येय हो गया है, कथा कहना और उसे परिमित के साथ कहना। उपन्यास डरता है—देशकाल का निदर्शन करने से, अथवा चित्र-पट का फोटोग्राफर बनने से, और मनोविज्ञान का विशेषज्ञ बनने से।

प्रश्न ६—भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् हिन्दी-उपन्यास क्षेत्र में विषयवस्तु और शिल्प की दृष्टि से प्रगति तथा नवीन उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।

स्मृति-संकेत

१. स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत के साहित्य और संस्कृति पर व्यापक आदान-प्रदान के कारण बहुत प्रभाव पड़ा और उपन्यास-साहित्य को भी नई दिशा और नई प्रगति मिली।

२. स्वतन्त्रता से पूर्व भी गोर्की, हार्डी, चैखव, ताल्स्ताय, अनातोले आदि उपन्यासकारों से हिन्दी-उपन्यास प्रभावित हैं। स्वतन्त्रता के बाद बड़े पैमाने पर हिन्दी के उपन्यासों का रूसी आदि में तथा हिन्दी मे विदेशी उपन्यासों का व्यापकता से अनुवाद हुआ।

३. गत वर्षों में यथार्थवादी दृष्टिकोण का सर्वाधिक प्रभाव हिन्दी-उपन्यास पर दीख पड़ा। हिन्दी में यथार्थवादी-कला और जीवन के यथार्थवादी चित्रण का दृष्टिकोण प्रगतिवादी विचारधारा के यथार्थवादी चित्रण का दृष्टिकोण प्रगतिवादी विचारधारा के प्रभाव से उत्पन्न हुआ था।

४. स्वाधीनता से पूर्व हिन्दी-उपन्यास-साहित्य का वस्तु-क्षेत्र विदेशी दासता से मुक्ति और प्राचीन रूढ़ियों और परम्पराओं, अंधविश्वासों आदि की मुक्ति की अदम्य लालसा और उसके लिये संघर्ष की दृढ़ता को समेटे हुए था।

५. स्वाधीनता के पश्चात् विदेशी दासता से मुक्ति का प्रश्न हल हो

गया, परन्तु अन्य परिस्थितियाँ ज्यों की त्यों बनी रहीं। स्वाधीनता के बाद के उपन्यास-साहित्य में स्वाधीनता के बाद की परिस्थितियाँ हैं—जैसे नारी-स्वाधीनता, नारी-अधिकार, नारी-शिक्षा, विधवा-विवाह, छुआछूत, जाति-पाँति, आर्थिक-विकास, राजनैतिक स्थिरता, समाजवादी समाज की स्थापना आदि की समस्याएँ।

६. आजादी के बाद संकुचित जातिवाद और साम्प्रदायिकता ने भी उपन्यास पर प्रभाव डाला। आज के उपन्यास मे जोवन, समाज और राष्ट्र की इन्हीं परिवर्तित परिस्थितियो को स्थान दिया गया है।

७. स्वतन्त्रता के पश्चात् देश के सामने आर्थिक और सांस्कृतिक नव-निर्माण की अनेक समस्यायें उठी। देश उनको हल करने का प्रयत्न कर रहा है। इन सभी को उपन्यास न ग्रहण किया।

८. स्वतन्त्रता के पश्चात् हिन्दी-उपन्यास का वस्तुगत, चारत्रगत, शैली तथा रचना-तंत्रगत नवीन-उपलब्धियाँ प्राप्त हुई है।

उत्तर—स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय-साहित्य पर विश्व-साहित्य का **प्रभाव :**

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत का सम्मान विदेशो में बढ़ा। भारत के सांस्कृतिक मिशन विदेशो में जाते है और विदेशो के भारत मे आते है। इस प्रकार भारत का साहित्यकार दूसरे देश की संस्कृति और साहित्य के सम्पर्क मे आया। पहले भी हिन्दी-उपन्यास-साहित्य गोर्की, हार्डी, चेखव, ताल्स्ताय, अनातोले आदि अनेकों विदेशी उपन्यासकारों से प्रभावित रहा। स्वाधीनता के पश्चात् विदेशी भाषाओं के प्रसिद्ध उपन्यासो का हिन्दी में अनुवाद हुआ। गत वर्षो मे जीवन के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण का प्रभाव सबसे अधिक दीख पड़ता है। हिन्दी मे यथार्थवादो कला और जीवन के यथार्थवादी चित्रण का दृष्टिकोण प्रगतिवादी विचारधारा के प्रभाव से उत्पन्न हुआ था। आज चाहे गांधीवादी विचारधारा हो, चाहे आदर्शवादी जीवन का चित्रण हो और चाहे फ्रायडियन कुण्ठावादी मनोविश्लेषणात्मक चित्रण हो, उपन्यासकार

अपने हर प्रकार के चित्रण को यथार्थवादी चित्रण कहने का आग्रह करता

वस्तु-चयन में नवीनता—स्वाधीनता के पश्चात् उपन्यासों ने नवीन विषयवस्तु को ग्रहण किया। स्वाधीनता-प्राप्ति से पहले हिन्दी-उपन्यास-साहित्य का वस्तु-क्षेत्र विदेशी दासता से मुक्ति और प्राचीन रूढ़ियों एवं परम्पराओं, अन्धविश्वासों के प्रति संघर्ष की भावना को लेकर आता था। इस प्रकार उपन्यासों का मूल स्वर विदेशी सत्ता से मुक्ति और साथ-साथ प्राचीन संस्कारों और अन्धविश्वासों से मुक्ति था। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् दासता से देश की मुक्ति का प्रश्न हल हो गया, किन्तु अन्धविश्वासों, जातिवाद, ऊँच-नीच की भावना के प्रति संघर्ष और आर्थिक विकास एवं जन-कल्याण के प्रसार आदि के प्रश्न बने रहे। स्वाधीनता के पश्चात् देश में साम्प्रदायिक दंगे हुए, जिनसे देश के समक्ष बहुत बड़ी समस्याएँ उपस्थित हो गईं। देश में सामाजिक और राजनीतिक महत्व के कुछ ऐसे परिवर्तन हुए जिन्होंने जनता के दृष्टिकोण, मनोभावों, विचारों, मान्यताओं, आदर्शों, रहन-सहन, जीवन-स्तर आदि में परिवर्तन उपस्थित किये। देश में समाजवादी समाज की स्थापना का सिद्धान्त स्वीकार किया गया। व्यक्ति की स्वाधीनता, समानता और अधिकार के प्रश्न उभर कर सामने आये। आजादी के पश्चात् संकुचित जातिवाद और साम्प्रदायिकता ने भीषण रूप धारण किया। स्वाधीनता से पूर्व सारी जनता के सामने एकमात्र लक्ष्य आजादी प्राप्त करना था, परन्तु अब ऐसा कोई एक ध्येय नहीं रहा, जो सभी को एक सूत्र में बांध सके। आज हिन्दी का प्राय: प्रत्येक उपन्यासकार यथार्थवाद को अपनी कथावस्तु का आधार स्वीकार करता है।

नवीन उपलब्धियाँ—स्वाधीनता के पश्चात् हिन्दी-उपन्यासों की नवीन उपलब्धियाँ निम्नलिखित है :

१. वस्तुगत नवीन उलब्धियाँ।

२. पात्र या चरित्र-चित्रणगत नवीन उपलब्धियाँ।

३. शिल्पगत नवीन- उपलब्धियाँ।

वस्तुगत नवीन उपलब्धियाँ—विषयवस्तु की दृष्टि से हिन्दी के उपन्यासों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता हैं। एक प्रकार के उपन्यासों में व्यक्ति के माध्यम से या स्वतन्त्र रूप से सामाजिक जीवन और समस्याओं का चित्रण होता है। दूसरे प्रकार के उपन्यासों में प्रेम-प्रधान वैयक्तिक अनुभूति, कुण्ठा, आत्म-पीड़ा, मानव विकृतियों तथा व्यथित मन का मनोविश्लेषण पूर्ण चित्रण होता है।

प्रथम प्रकार के उपन्यासो में समाज की वर्तमान गतिविधियों, समस्याओं बदलती हुई नैतिकता और जीवन-मूल्यों का वर्णन होता है। कुछ उपन्यासों में व्यक्ति के माध्यम से युग-जीवन की जटिलताओं और समस्याओं का चित्रण किया गया है। इनमें संघर्षों के बीच से नये जीवन की लालसा की गई है। नागार्जुन का 'बलचनवाँ', इलाचन्द जोशी का 'जहाज का पक्षी' अमृतलाल का 'बूँद और समुद्र' ऐसे ही उपन्यास हैं। कुछ उपन्यासों में व्यापक रूप से वर्तमान युग-सत्यों को विषय-रूप में ग्रहण किया गया है। इनमें जीवन की विविध समस्याओं, उसके विकास में बाधक शक्तियों और उनके विरुद्ध व्यक्ति के संघर्ष का चित्रण किया गया है। यशपाल का 'झूठा-सच', आचार्य चतुरसेन शास्त्री का 'गोली' आदि ऐसे ही उपन्यास हैं। कुछ उपन्यासों में व्यापक रूप से युग-चित्रण की प्रवृत्ति से आंचलिक उपन्यास लिखे गये। इनमें अंचल विशेष के जीवन और संघर्षों का चित्रण हुआ है। फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आंचल' और 'परती परिकथा' तथा नागार्जुन के 'बाबा बटेश्वरनाथ', 'नई पौध', 'वरुण के बेटे' और 'दुःखमोचन' प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास हैं। उपर्युक्त वर्ग के उपन्यासो में वर्तमान जीवन की गति-प्रगति, समस्याओं और विकासोन्मुखी प्रवृत्तियों, आर्थिक एवं सांस्कृतिक नव-निर्माण की आकांक्षाओं की नई दिशा का निर्देशन हुआ है, यही इनकी विषयगत उपलब्धि कही जा सकती है। दूसरे प्रकार के उपन्यासों में विषयवस्तु का चयन इस प्रकार किया गया है कि मनुष्य परिस्थितियों का दास बना हुआ उनसे भुगतने को विवश हो रहा है। नागार्जुन के 'उग्रतारा' की नायिका 'उगनी' परिस्थितियों के अनुसार चलने को विवश हो जाती है।

नितान्त निजी वैयक्तिक जटिलताओं, प्रेम, कुण्ठाओं आदि को लेकर भी व्यापक सामाजिक चेतना के उपन्यास लिखे गये हैं। ऊँच-नीच जाति-पाँति, प्रान्तीयता, अमीरी-गरीबी, सामाजिक रीतियाँ, संस्कार आदि अनेक वर्तमान समाज की स्थितियाँ आज के उपन्यासों मे चित्रित की गई हैं। राजेन्द्र यादव का 'उखड़े हुए लोग', अमृतलाल नागर का 'बूँद और समुद्र' तथा यशपाल का 'झूठा सच' ऐसे ही उपन्यास है। अनेक उपन्यासकारों ने समाज की विभिन्न स्थितियो मे व्यक्ति की मनोदशाओं और प्रतिक्रियाओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। 'गुनाहों के देवता' तथा 'नदी के द्वीप' आदि उपन्यासों में व्यक्ति की स्वातन्त्र्यवादी दार्शनिकता का रूप सामने आया है। इस प्रकार स्वतन्त्रता के पश्चात् वस्तु की दृष्टि से दो धाराएँ उभर कर सामने आईं—एक धारा मनुष्य को व्यक्ति रूप मे परिकल्पित करके उसके उपचेतन और अचेतन मन की जटिल ग्रन्थियों को सुलझाने मे तल्लीन हो गई और दूसरी धारा उसकी समष्टि को सामान्य इकाई मानकर उससे सम्बन्धित स्वभाव की व्याख्या करती रही।

चरित्रगत नवीन उपलब्धियाँ—आजादी के पश्चात् मनुष्य शक्ति के साथ जी उठा है। अपने जीवन-विकास के प्रति उसकी आस्था बलवती हो गई है। नये विश्वास की दृढ़ता के साथ अपने सुखद जीवन को गढ़ने में वह संघर्षरत है। आजादी के पहले जिन स्वप्नों को लेकर देश के युवकों ने आजादी के लिये अनवरत संघर्ष किया था, उनके लिए आज मनुष्य दूने वेग से बढ़ रहा है। आज का मनुष्य युग के अनिवार्य संकटों को दूर करने के लिए कृत-संकल्प है। आज का मानव अपनी समस्याओं से जूझते हुए निराश भी होता है, पथ-भ्रष्ट भी होता है और पतित से पतित भी होता है। उसके चरित्र में दुर्बलता आ गई है और उसके जीवन-मूल्यों में विघटन हो रहा है। युवक-युवतियों की प्रवृत्तियाँ अनुशासनहीन, वासनात्मक, कृत्रिम और दिखावे से ग्रस्त हो गई हैं। हमारे अधिकांश उपन्यासकारों ने इनका चित्रण किया है

तथा समस्याओं को अभिव्यक्त करके वर्तमान को समझने-परखने की दृष्टि दी है, जिससे आधुनिक जीवन की विकृतियों के प्रति जागरूकता बढ़ती है। इनके पात्र विषमताओं से मुक्ति पाने के लिये छटपटाते हैं और उनसे संघर्षरत होते हैं। वे उनसे निकलने के निरन्तर प्रयास में लगे दिखाई पड़ते हैं। आज के उपन्यासों के चरित्रों में नये संघर्ष और क्रान्तिरत मानव के भी दर्शन होते हैं।

शैली-शिल्प तथा रचना-तन्त्र की नवीन उपलब्धियाँ—स्वतन्त्रता के पश्चात् हिन्दी-उपन्यास-क्षेत्र में शैली-शिल्प और भाषा की दृष्टि से अनेक नवीन प्रयोग हुए हैं। शैली-शिल्प के नये प्रयोगों की दृष्टि से 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'सोया हुआ जल', 'डूबते मस्तूल', 'चाँदनी और खण्डहर', 'परन्तु' 'द्वाभा', 'बहती गंगा', 'बाबा बटेश्वरनाथ', 'उखड़े हुए लोग', 'सपना बिक गया', 'हुजूर', 'मैला आँचल', 'नागफनी का देश', 'बारहखम्भा', 'ग्यारह सपनों का देश' आदि उल्लेखनीय उपन्यास हैं।

'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास में श्री धर्मवीर भारती ने कथन-शैली और शिल्प का एक नवीन प्रयोग किया है। इसमें 'अलिफ लैला' और 'पंचतन्त्र' की तरह कहानी में से कहानी निकलती चलती है। यह एक प्रतीकात्मक उपन्यास है। इसमें समाज रूपी छः घोड़े निकम्मे हो गये हैं, किन्तु भविष्य का सातवाँ घोड़ा आशा का प्रतीक है। सर्वेश्वरदयाल के 'सोया हुआ जल' उपन्यास में सिनेरियो-शिल्प के छोटे-छोटे स्नैपसॉट, प्रतीकात्मक प्रभाव और फैण्टेसी के धरातल पर कथानक विकसित होता चला गया है। नरेश मेहता के 'डूबते मस्तूल' उपन्यास में कथा-अवधि कुल एक दिन और एक रात के दो बजे तक की है। इसी प्रकार गिरधर गोपाल के 'चाँदनी और खण्डहर' के कथानक की अवधि भी कुल २४ घण्टे की है। प्रभाकर माचवे के 'परन्तु' में परन्तु की प्रतीकात्मक व्यंजना है, इसमें विविध कहानियों के माध्यम से उपन्यास की रचना का प्रयास किया गया है। 'द्वाभा' में डायरी-शैली, वर्णन-

शैली, चिन्तन-प्रवाह-शैली के मिश्रण के सहारे उपन्यास-शिल्प का निर्माण किया गया है। शिवप्रसाद मिश्र रुद्र के 'बहती गंगा' उपन्यास में कोई व्यक्ति नायक न होकर बनारस शहर ही नायक है। नागार्जुन के 'बाबा बटेश्वरनाथ' में नायक गाँव का प्राचीन विशाल बटवृक्ष है। इसमें बटवृक्ष का मानवीकरण किया गया है। 'प्रेत बोलते हैं' उपन्यास में रेडियो-प्रसारण-शैली का प्रयोग किया गया है। भगवतीप्रसाद बाजपेयी के "सपना बिक गया' उपन्यास में विभिन्न पात्रों की स्वगत-कथन शैली के माध्यम से कथानक को विकसित किया गया है। लक्ष्मीकांत वर्मा के 'खाली कुर्सी की आत्मा' उपन्यास में सारी कथा कुर्सी के माध्यम से चलती है। डॉ० रांगेय राघव ने 'हुजूर' में एक कुत्ते की आत्म-कथा के माध्यम से अँग्रेजी नौकरशाही के अत्याचारों, देशी-रईस-उमरावों की चाटुकार प्रवृत्ति और राष्ट्रीय आन्दोलन की घटनाओं को प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया गया है। फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला आँचल' नायक-हीन उपन्यास है, इसमें कोई एक पात्र पूरी कथा का केन्द्र-बिन्दु नहीं बनता। 'नागफनी का देश' और 'हाथी के दाँत' प्रतीकात्मक शैली के उपन्यास हैं। 'बारहखम्भा' और 'ग्यारह सपनों का देश' एक नये ढंग के प्रयोगशील उपन्यास हैं। सामूहिक प्रयास-शैली का प्रयोग इनमें अपने ढंग का निराला है। एक लेखक कहानी आरम्भ कर जहाँ समाप्त करता है, दूसरा लेखक वहाँ से आगे उसे बढ़ाता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी-उपन्यासों के इस युग में वस्तु, पात्र और शैली-शिल्प ने अभूतपूर्व प्रगति की है। नई पीढ़ी के अनेक नये उपन्यासकार उभर रहे हैं। हिन्दी-उपन्यास का भविष्य उज्ज्वल और आशाप्रद है। आज के हिन्दी-उपन्यासों का वर्णन संक्षेप में निम्न प्रकार किया जा सकता है।

१. हिन्दी के समस्त उपन्यास-साहित्य को कथावस्तु की दृष्टि से—

१. सामाजिक और २. ऐतिहासिक श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है :

२. सामाजिक उपन्यासों के निम्न वर्ग हैं—

(क) निर्वैयक्तिक सामाजिक उपन्यास—इनमें व्यक्ति के सन्दर्भ में समाज और समाज के सन्दर्भ में व्यक्ति के जीवन का चित्रण होता है।

(ख) आँचलिक सामाजिक उपन्यास—इनमें अंचल विशेष के संदर्भ में समाज तथा व्यक्ति के जीवन का व्यापक चित्रण होता है।

(ग) व्यक्तिवादी वैयक्तिक मनोविश्लेषणात्मक सामाजिक उपन्यास इनमे व्यक्ति को केन्द्र बनाकर उसके जीवन की व्यक्तिगत समस्याओं का व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से मनोविश्लेषणात्मक चित्रण होता है।

३. ऐतिहासिक उपन्यास—इनको कथावस्तु की दृष्टि से निम्न उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

(१) वे उपन्यास जिनकी कथावस्तु इतिहास की किसी सत्य घटना पर आधारित होती है।

(२) वे उपन्यास जिनकी कथावस्तु ऐतिहासिक वातावरण के संदर्भ में कल्पना-प्रसूत होती है।

(३) कुछ ऐसे भी उपन्यास हैं, जिनकी कथावस्तु में ऐतिहासिक सत्य और कल्पना का मिश्रण रहता है।

आज हिन्दी का उपन्यास बहुमुखी होकर विकसित हो रहा है। आज के उपन्यास के कथानक मनुष्य और समाज से सम्बन्धित होते हैं। समाज का सजीव यथार्थ चित्रण किया जाता है। कहीं-कहीं आदर्श पात्रों की योजना भी की जाती है। कथानक, भाव, भाषा, लेखन शैली सभी दृष्टियों से नूतन प्रयोग भी किये गये हैं। इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी उपन्यास का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है।

कथावस्तु

कथावस्तु पर आलोचनात्मक दृष्टि

उपन्यास पूरा पढ़ चुकने के बाद मन पर बहुत गाढ़ा प्रभाव छूटता है। कितनी ही घटनाएँ और कितने ही पात्र बहुत गहरी छाप छोड़ जाते हैं, लेकिन पीछे मुड़कर देखने पर ऐसा लगता है कि यह मोर्चेबाजी, सत्याग्रह, अनशन, जलूस, लाठी चार्ज वाला हिस्सा ही सबसे कमजोर छूट गया है, यही नहीं, वरन् दोनों प्रमुख पात्र रानी और रमेश ही शायद अन्य पात्रों की अपेक्षा अधिक वायवीय लगते हैं। सारे सामूहिक हलचल, आन्दोलन, लड़कों का अनशन और प्रतिक्रिया में पुत्ती गुरू का अनशन, राजनीतिक दाँवपेंच—इन सबका उतना प्रभाव नहीं छूटता, जितना इस प्रसंग में उस एक अकेले डरपोक और बाद में प्रतिहिंसा से पागल छैलू की जीवन कथा और उसके अग्निकाण्ड का छूट जाता है।

यह उस संघर्षशील, जीवन्त आधुनिक भारतीय मानसिकता का स्वर है, जिसने भारतीय समाज में व्याप्त शताब्दियों की पराजय भावना और पतनोन्मुखता से विद्रोह किया था, स्वतत्रता की लड़ाई लड़ी था और कतिपय मूल्यों के लिए त्याग किए थे। स्वतन्त्रता के बाद जो खोखलापन, अकर्मण्यता, मानसिक दासता और मूल्यहीनता का दौर शुरू हुआ है, जो प्रतिक्रांति प्रारम्भ हो गयी, उससे यह मानसिकता समझौता नहीं कर पाती और यह एक शुभ लक्षण है। यही व्यग्रता उसे ठेल-ठेलकर उस अकर्मण्यवादी छद्म आध्यात्मिकता के चक्रव्यूह में से निकालकर आगे ले जाती है, जिसमें बहुधा भारतीयता के नाम पर थके और चुके हुए दिमाग आश्रय खोजने लगते हैं। इसीलिए मैंने शुरू में कहा था कि नागरजी के संदर्भ में मुझे हेमिंग्वे के मछुवारे के बजाय वह दूसरा बिम्ब अधिक उपयुक्त लगता है, जिसका जिक्र उपन्यास के अन्तिम वाक्य में उन्होंने किया है : "धुर बचपन में मुझे ढकेल-ढकेलकर अपने साथ दौड़ा ले चलने वाला मेरा अनन्य साथी बिछड़ा।"

—धर्मवीर भारती

प्रश्न ७—अमृत और विष की कथावस्तु लिखिये ?

उत्तर—परिचय—श्री अमृतलाल नागर का 'अमृत और विष' सन् १९६६ ई० में प्रकाशित यह नवीनतम उपन्यास है। यह उपन्यास एक वृहदाकार है। इसमें लेखक ने हमारे समाज के यथार्थपरक रूप का चित्रण किया है।

'अमृत और विष' डायरी शैली में लिखा गया है और यह डायरी लेखक अरविंद शंकर की है जिसमें एक पृथक् कथा-सूत्र को लेकर एक उपन्यास समाहित कर दिया है।

'अमृत और विष' की कथावस्तु दुहरी है। एक ओर लेखक अरविन्द शंकर की आत्मकथा चली है जिसमें उनके परिवार की पूरी कथा आती है। दूसरी कथा मुख्य उपन्यास की है जो उनकी आत्मकथा के साथ-साथ धारावाहिक रूप में चलती है। यह कथा अपने में सुगठित और सुसम्बद्ध है। इस कथा में समाज के उज्ज्वल और कलुषित दोनों पक्षों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के शीर्षक का यही सकेत है।

'अमृत और विष' एक वृहदाकार उपन्यास है, जिसमें विभिन्न स्तरों और वर्गो के अनेक पात्रों और उनके कथा-प्रसंगों का सुन्दर गुम्फन किया गया है। उपन्यास की कथा का केन्द्र मुख्य रूप से लेखक अरविंद शंकर की आत्मकथा है। यहाँ 'अमृत और विप' उपन्यास का कथानक संक्षेप में प्रस्तुत है :

कथाँश—१. प्रातः काल की सुनहरी धूप अवनी में फैल चुकी थी। सूर्य उदय हो चुका था। प्रातः होते ही लेखक अरविंद शकर जो कि अभी तक सो रहे थे। उनके कानों के पास अलार्म इतनी जोर से घनघना उठी कि दोनों कानों के पर्दे दर पर्दे हिल उठे। उनकी धर्मपत्नी माया ने आते ही कहा—"उठिये श्रीमान उमर के साठ बज गये हैं।"

मजाक ही मजाक में बता दिया कि आपकी उम्र के साठ साल पूरे हो गये। यानी आज लेखक अरविंद का जन्म-दिवस है। इकसठवाँ जन्म दिवस भी उसके लिए मनोवैज्ञानिक आसन बिछाने लगा।....साठ वर्ष इस दुनियाँ में बिता दिये जीवन के अनुभव अविराम गति से उनके मन-पटल पर दृश्य के समान अवतरित होने लगे। वह सोचते हैं कि मैं स्वय आत्म-कथा लिख डालूँ और साथ में पिछले दो वर्षों से एक उपन्यास लिखना है। उसे भी पूरा कर दूँ। पर

कैसे पारिवारिक समस्या चैन नहीं लेने देती। विशेषकर लेखक अरविन्द शंकर की आर्थिक समस्या विकट है।

कथाँश—२. ८ मई को जन्म लेने वाले रवीन्द्रनाथ ठाकुर के उपलक्ष्य में आज सारे देश मे उत्सव किये जायेंगे। इसी उत्सव में लेखक को उसके इकसठवें जन्म-दिवस में सामाजिक सम्मान प्रदान किया जायेगा। "लेखक स्वयं सोचता है कि जिस प्रकार से कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पुरखों का इतिहास एक प्रदेश के इतिहास का गौरव है····लेकिन मेरे पुरखों का इतिहास भी रोचक है, सुन्दर है, लिखने लायक है····। "पुरखों का इतिहास"

भारत जिस समय गुलाम था और मलिका विक्टोरिया का शासन था। उस समय फकीर मुहम्मद और राधेलाल का काम बहुत ऊँचा जा रहा था।

राधेलाल मथुरा के सम्पन्न साहूकार परिवार में उत्पन्न हुये थे। उनके पिता वल्लभ कुल के वैष्णव थे। पिता को सट्टा खेलने का रोग लग गया। और सम्पूर्ण पूँजी बरबाद हो गई और अन्त में दुखी होकर वैराग धारण कर लिया। लाला राधेलाल और दीन मुहम्मद को कसरत कुश्ती का शौक था। सन १८५१ में दीन मुहम्मद बीमार होकर स्वर्गवासी हो गये। पिता दिवाला निकलने के कारण सन्यासी हो गये हैं। राधेलाल अपने परिवार को लेकर आगरा आ गया आगरा में राधेलाल नौकरी करने लगा। सन १८६१ ई० में राधेलाल ने शेखमुहम्मद के संयोग से फकीर मुहम्मद राधेलाल फर्म की स्थापना की। भाग्य ने साथ दिया व्यापार चल निकला। थोड़ी सी शका के कारण लाला राधेलाल अन्तिम समय में शेख मुहम्मद को उसकी सम्पत्ति वापस करने लगा। शेख मुहम्मद ने कहा कि मेरी कोई औलाद नहीं है। तुम ही मेरी औलाद या मेरे छोटे भाई हो। मुझे धन की आवश्यकता नहीं, परन्तु राधेलाल ने जिद करके धन वापिस किया। इससे शेख को आघात लगा और स्वर्गवासी हो गये। बाद में लाला राधेलाल फिर अपने ही प्रेत बनकर रह गये।

कथाँश—३. लाला राधेलाल के तीन पुत्र और एक पुत्री थे। तीसरे पुत्र सदानन्द लाड़ले होने से बदचलन हो गये। उन्हें जितना समझाया जाता उतने ही नासमझ होते जाते थे। अतः पिता लाला राधेलाल के जीवन अस्त

होने पर वसीयतनामे में उनको हक नहीं दिया गया। अत: अपनी पत्नी बतासो और पुत्र किशोरीलाल को छोड़कर लखनऊ चले गये और छोटे ननिया-ससुर के पास रहने लगे। यहाँ पर सदानन्द जी सोने-चाँदी की दलाली करने लगे। तकदीर ने साथ दिया और अच्छा-खासा धन प्राप्त किया। अपने पुत्र किशोरीलाल को अँग्रेजी स्कूल में अध्ययन के लिये भेजा और किशोरीलाल ने अपने विद्यार्थी जीवन का नाम कमाया।

यही मेरे पुरखों का पूर्ववृतान्त है। आज ८ मई १६६० को आयु के साठ वर्ष पूरे होने पर बुढ़ापे में पुरखों की याद आई और स्मृतियों के आधार पर यह लिखा।

कथाँश—४. लेखक अरविन्द शंकर के इकसठवें जन्म दिवस पर उनका सामाजिक सम्मान करके अभिनन्दन पत्र प्रदान करने की तैयारी हो रही है।

हॉल खचाखच भरा था। द्वार से लेकर मंच तक साठ नर-नारी ने लेखक को हार अर्पित करते हुए स्वागत किया। इकसठवाँ हार प्रदेश के राज्यपाल द्वारा पहनाया गया। लेखक की सामाजिक राजनीतिक सेवाओं का भाषणो के द्वारा मूल्यांकन किया जा रहा था। प्रशसा में भाषण हो रहे थे, परन्तु लेखक बैठा हुआ मानसिक तर्क-वितर्क में उलझा हुआ है। अरविंद शंकर के मन में आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। पारिवारिक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं और सोचता है कि मैंने जीवन के साठ साल पूरे कर लिये परन्तु मैंने पाया क्या ? दिया क्या ? देने के नाम पर छोटी-बड़ी अड़तीस किताबें है। इस तरह अपने कर्मों का मन ही मन चिन्तन कर रहे हैं जबकि सभा में उसको शतायुष्मान होने का आशीर्वाद दिया जा रहा है।

सार्वजनिक समारोह के अन्तिम समय में लेखक अरविन्द शंकर ने समाज का एवं राजनैतिक नेता का यथार्थ-चित्रण अपने भाषण में किया। जिससे कुछ लोग नाराज हो गये। फिर जनता ने उनके भाषण की प्रशंसा की और लोग प्रभावित भी हुए।

कथाँश—५. लेखक के भाषण का प्रभाव सरकारी नेताओं पर अच्छा नहीं पड़ा। घर वापिस आने पर अनेकों अभिनन्दन तार प्राप्त हुए। अकादमी पुरस्कार में पाँच हजार प्राप्त हुए।

अत: अरविन्द शंकर को अधिक हिम्मत मन में हुई और निर्णय कर लिया कि अपने पुत्र भवानीशंकर की पत्नी और बच्चों को बुला लूँगा और उपन्यास भी लिखूँगा। पुत्री वरुणा को पढ़ाऊँगा। ठीक ऐसे समय में उसका छोटा पुत्र उमेश आई० ए० एस० परीक्षा देने और आफीसर बनने के उद्देश्य से घर छोड़कर चला गया। आघात अवश्य लगा फिर लेखक ने धैर्य धारण किया। कभी मन में सोचता जिस प्रकार मेरे पिताजी समाज से तंग आकर आत्महत्या कर गये उसी प्रकार मुझे भी इस पारिवारिक समस्याओं के कारण आत्महत्या कर लेना चाहिए।

कथाँश—६. मेरे पिता मास्टर किशोरीलाल बी० ए० पास करके इलाहाबाद चले गये और अपनी धर्मपत्नी को अँग्रेजी पढ़ाने के लिए अध्यापक नियुक्त किया। बाद में पढ़ाई पारिवारिक कारणों से वन्द हो गई। किशोरीलाल जी अपने अधिकारियों की सेवाएँ भी करते थे। एक पता जो गोपनीय था। दूसरों के हाथ लग जाने से नौकरी चली गई फिर अध्यापक बन गये। और दुःखी होकर अन्त में आत्महत्या कर ली।

अत: लेखक कल्पना करता है कि मैं भी क्यों न पिताजी की लीक पर चलकर जीवन लीला समाप्त कर दूँ। ऐसी ही कल्पना में उसे अपना बाललीला याद आती हैं। ऐसा ही सोचते हुए अपने जीवन के बारे में विचार करता है। तथा राजनैतिक आन्दोलनों के समय जेल जाना एवं परिवार की आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न होना आदि विचार मन में पैदा होते हैं। ठीक ऐसे समय में बूढ़ा मछेरा की जीवन की घटनाएँ सामने आती हैं और उसको बूढ़ा मछेरा से प्रेरणा प्राप्त होती है। कर्म की ओर अग्रसर होने की सोचता है और बारात का दृश्य तथा दो नव युवक के आधार पर अपने उपन्यास का श्री गणेश करता है।

समीक्षा—अत: अभी तक के कथानक में लेखक श्री अमृतलाल नागर जी ने अरविन्द शकर की जीवनी के वृतान्त का ही वर्णन किया है। इसमें विशेषता यह है कि—मनोवैज्ञानिक तरीके से मानसिक भावनात्मक विचारों द्वन्द्व तथा मार्मिक प्रेरणा का वर्णन जीवन में हुआ है। मानव कर्म पर लेने के बाद किस प्रकार अपने जीवन के बारे में एकान्त में सोचता है। आत्मा बुरे कर्म के लिए

धिक्कारती है और सद्‌कर्म के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। यह लेखक अरविन्द शकर के जीवन-वृतान्त से प्रत्यक्ष हो जाता है।

लेखक की डायरी से मुख्य घटना का वर्णन होता है—इसमें ही उपन्यास का मुख्य कथानक आता है—

कथाँश—१. सहालग के दिन है। गर्मी का मौसम। बेटी वालों के लिए बावले दिन आये हैं। पुत्ती गुरु की लड़की का व्याह है। उनका लड़का रमेश अपने मित्र लच्छू के साथ तीन चौथाई शहर नापकर निराश लौट रहा है; कहीं भी शादी के सामानों की व्यवस्था नही हुई, जनवासे की समस्या आदि बातों की चिन्ता रमेश को है। सड़क पर एक बरात उन दोनों के पास से होती हुई आगे बढ़ती है। रमेश और मित्र लच्छू सड़क पर खड़े होकर सिगरेट पीने लगते हैं। रमेश चिन्ता और निराशा में लच्छू से कहता है कि—भाई बहिन की शादी की व्यवस्था कैसे की जाय। लच्छू उसको उपाय बताता है और ऐन-केन प्रकारेण प्रकार से दोनों मित्र मिलकर शादी की पूरी व्यवस्था करते है।

कथाँश—२. पुत्ती गुरू अपने पुत्र रमेश पर नाराज हो रहे हैं। पुत्ती गुरू अपना गुस्सा अपनी पत्नी और पुत्र रमेश पर निकाल रहे है। शादी की व्यवस्था को लेकर।

रमेश अपनी माँ को समझा देता है किस-किस प्रकार से व्यवस्था पूरी हो गई है और दूसरे दिन से रमेश और लच्छू दोनों शादी की व्यवस्था में लग जाते हैं और पूरी योजना बना लेते हैं। बाद में पिताजी को भी समझा देते है। और वह खुश हो जाते हैं।

कथाँश—३. व्याह के छः दिन पहले से ही घर में झंझड़ फैलने लगा। पूरी व्यवस्था की देखरेख रमेश की माँ करती हैं। जनवासे की व्यवस्था बारा-दरी के खण्डहर में होती है। बरात आती है और उसकी देखरेख की व्यवस्था होती है। कुछ अव्यवस्था के कारण बलचाल भी हो जाती है। फिर सब ठीक हो जाता है।

कथाँश—४. लच्छू जब रमेश के घर आया तब कन्यादान हो रहा था। रमेश और लच्छू की आपस में बातचीत होता है पढ़े-लिखे नवयुवकों के नखरो

पर । शादी की सम्पूर्ण रस्म हँसी मजाक और आनन्द में पूरी होती है । ऐसे ही समय में रानी और रमेश की आँखें चार होती हैं । आँखों ही आँखों एक-दूसरे को अपना लेते हैं । रानी रमेश की बहन की सहेली है और बाल-विधवा है। विदाई के समय रानी रमेश के पास खड़ी है । आँसू भरी आँखों से रमेश बहिन को विदा करता है और रानी के पास होने पर खुश भी है ।

कथाँश—५. अरविन्द शंकर विचार करते है—ब्याह बरात के दृश्य पूरे हुए । कथा का जो सूत्र लेकर उपन्यास आगे बढ़ा था, वह चूक गया । न सोचते हुए भी नायक रमेश और नायिका रानी को मिला दिया । अन्त-र्जातीय विवाह और वह भी विधवा विवाह—दो क्रान्तिकारी पहलू सामने आ गये, प्रेम ने दो अनजानों को एक रिश्ते की पहचान करा दी ।....अरविन्द शंकर लेखक सोचते हैं कि मेरा पुत्र भवानीशंकर भी प्रेम का शिकार हुआ था । एक से नहीं दो से । एक शादी की और बाद में छोड़ दिया, और दूसरे से बिना शादी के उसके पास रहने लगा । भवानीशंकर अपनी पत्नी और दो पुत्रों को अपनी ससुराल छोड़ आया । लेखक के पास इतनी सामर्थ नहीं कि अपनी बहू और दोनों पुत्रों का पालन-पोषण करे । पुत्र भवानी दिवाने होकर अपने जीवन को बरबाद किए हुए हैं ।

ऐसे ही वातावरण में सूचना प्राप्त होती है कि उमेश आई० ए० एस० पास हो गया है और खुशी में दावत को व्यवस्था होती है ।

पुत्री वरुणा की शादी न करके उसको डाक्टर बनाने की अरविन्दशंकर ने सोच ली ।

पुनः वह उपन्यास लिखने की व्यवस्था करते हैं । रद्धूसिंह जो कि रानी-बाला राठौर के पिताजी हैं से उपन्यास प्रारम्भ करने का विचार करते हैं ।

इसी दिन इण्टरमीडिएट का परीक्षाफल अखबार में प्रकाशित होता है । विद्यार्थियों की संख्याएँ चौराहे पर दिखाई देती है । रमेश रानी को पास होने की बधाई देने के लिए गया । क्यों गया ? बस गया मन की बात जो है....।

कथाँश—६. रानीबाला के बाबा शहर कोतवाल थे । अँग्रेजी राज में ठाकुर रघुवीरसिंह ने बड़ा नाम पाया था । इनके एक ही पुत्र रद्धूसिंह थे ।

लाड़-दुलार में पलकर बिगड़ गये, किसी लायक नहीं बन सके। पिता के मरने के आठ-दस साल में रद्धू सिंह ने पूरी जायदाद बेच डाली और लखनऊ आकर रहने लगे। यहाँ पर धन्धा किया। थोड़ा बहुत चला। रानीबाला की शादी की। मगर साल भर बाद विधवा हो गई। भतीजे ने व्यापार को मिटा दिया। रानीबाला की माँ के मरने पर पुत्र लालच से दूसरी शादी की। रद्धू दिनोंदिन चिड़चिड़े होते गये। रानीबाला की सौतेली माँ गर्भवती है। रद्धू सिंह नौकरी के वास्ते मारे-मारे फिर रहे हैं। घर में खाने को दाने नहीं हैं। रद्धू सिंह निराश मन से घर आये।

घर पर खुशी का वातावरण बना हुआ है क्योंकि रानी फर्स्ट आई है। रद्धू सिंह अपनी माँ से पाँच रुपये माँगता है। हनुमानजी को प्रसाद अर्पित करने हेतु। इतने में ही रमेश घर में प्रवेश करता है और रानी को आवाज देता है। रानी पिताजी से रमेश का परिचय कराती है। रमेश अपनी बहिन की शादी की बात पर रानी की प्रशंसा करता है तथा रद्धू सिंह को सलाह देता है कि रानी को आगे पढ़ाओ और इण्डिपेण्डेण्ट एडिटर खन्ना साहब नौकरी दिलवा देने की बात भी बताते है। रमेश स्कॉलरशिप दिलवा देने की बात बता देता है।

इसी दिन रानी के घर पर डाकुओं का घेराव होता है और कोतवाल शत्रुघ्नसिंह डाकुओं को पकड़ लेते हैं। रानी इसी कारण से रमेश के घर नहीं जा पाती।

कथांश—७. राधारमण के मन्दिर में सावन की झांकियों और कीर्तनों की बड़ी धूम रहती है। मन्दिर के प्रतिष्ठापक लाला राधेरमन पुराने करोड़ पति हैं। संगमर्मर का यह मन्दिर अभी पाँच-छः साल पहले ही बनवाया है, इस लिये यहाँ जैसे उत्सव नगर भर में नहीं होते भक्तमण्डली हरिकीर्तन की प्रतीक्षा में बैठी हुई जग चर्चा में लीन हो रही है। दालान में एक तरफ व्यास गद्दी है। एक तरफ पुरुप वर्ग विराजमान हैं और तीसरी तरफ स्त्री वर्ग। रद्धू सिंह भी हाथ जोड़े बैठे हैं। कुँवर रद्धू सिंह खोए हुए से बैठे हैं। सन्ताप भरा वर्तमान और ऐश्वर्य भरा भूतकाल अलग-अलग दो आततायियों की तरह खड़े होकर भाले घोंप रहे थे। रद्धू सिंह बड़े-बड़े ओहदेदार और निकटतम सम्बन्धियों के

बंगलों पर अर्दलियों के साथ तिपाई पर बैठ कर, उनके बाहर निकलने की, उनके रूखे उत्तर सुनने की प्रतीक्षा में सारा दिन बरबाद करके थके हारे साँझ को घर लौटे—वह घर कि जिसमें बड़ों के उपवास का आज दूसरा दिन है। भूखे पेट और टूटे मन में घर भर की भूख करारे मुक्के सी लगी—आगे कैसे चलेगा ? पत्नी का यह तीसरा गर्भ है। रद्धू यह सभी बातें सोच रहे हैं।

तभी सेठजी और उनके परिवार के लोग भक्तराज मधुर जी के साथ पधारे सभामण्डल में शान्ति हो गई।

भक्तराज मधुर जी व्यास गद्दी पर बिठलाये गये। हारमोनियम लाकर उनके पास रख दिया गया। भक्तराज मधुरजी अट्ठाइस उन्तीस वर्ष के हैं। मधुर जी का व्यक्तित्व मधुर ही बना है। साल-दो-साल से मधुर जी नगर के भक्तजनों में बड़ी प्रसिद्धि पा रहे हैं। चर्चा धार्मिक स्त्री पुरुषों में व्याप्त है कि इस छोटी सी आयु में ही भगवान के दर्शन पा लिये हैं। कहते हैं कि किसी स्त्री से इनका प्रेम हो गया था, उसने दुत्कार दिया। ये वहाँ से लौटते समय राधाकृष्ण जी के मन्दिर में पहुंच गए। यहीं पर उन्हें वैराग्य की प्रेरणा प्राप्त हुई और हरिकीर्तन में लग गये।

भक्तराज मधुर जी घण्टे डेढ़ घन्टे तक फिल्मी कीर्तन सुनाते रहे और एकाएक बेहोश हो गये। लोग बाग मधुर जी के व्यक्तित्व में चैतन्य महाप्रभु के दर्शन करने लगे। रद्धू बाबा पकड़े गये, उनसे भजन के लिए कहा गया। पेट भूख से कुढ़मुड़ा रहा था, मन चिन्ताओं के मारे उड़ा जा रहा था। कीर्तन करने बैठे तन, मन की थकान को करुणामय की प्रार्थना में लय करते हुए अगम पीड़ा से करुण होकर वे इतने भावावेश में आ गए कि सचमुच बेहोश हो गये। रद्धू बाबा के तन मन की शरण के दो ही स्थल हैं—घर और भगवान। लाख खीझे होने पर भी इन्हें छोड़कर और कहाँ जाएँ ''''घर के द्वार पहुँ- चते ही मन की, भक्ति जनित शाँति कपूर सी जल उठी। अपनी दयनीय अव- स्था के कारण मन-ही-मन कहते हैं कि—'कभी तो बेरी में भी फल लगेंगे।' फिर एक-एक को देख लूँगा।

वे जैसे ही ऊपर कमरे में पहुँचे, तो माँ ने बतलाया कि आज बहू की तबीयत ठीक नहीं है, न जाने कब शुभ घड़ी आ जाए। रद्धू सिह चिन्ता ग्रस्त बिस्तर पर बैठे हैं। पत्नी की प्रसूति की चिन्ता में वे जड़ीभूत हो गये थे। रात के दो बजे के आस-पास माँ ने रद्धू सिंह को झिझोड़ दिया। दाई को बुलवाने को कहा। रद्धू बाबा को काटो तो खून नही। सोचते है कि कैसे होगा। घर में झंझो कौड़ो नहीं है। माँ बताती है कि रानी बहिन जी से रुपये माँग लेगी। रुपयों की व्यवस्था हो जायगी। पुत्र प्राप्ति की लालसा से रद्धू बाबा रात को दाई को लेने जाते हैं। ऐसे अभागे समय में रद्धू बाबा को पुत्र रत्न प्राप्त हुआ।

कथाँश—८ रद्धू सिह का चरित्र इतने आकस्मिक रूप से लिखते हुए विकसित हो गया कि इसकी कल्पना स्वयं लेखक अरविंद को भी नही थी। लेखक पिछले चार दिनो से बराबर लिख रहा रहा है कि सिर्फ एक शाम और एक दिन का हर्ज हुआ। मगलवार को दिन में ढाई तीन घण्टे तक लिखा, फिर शिक्षा मन्त्री शिवकुमार जी एवं राजकिशोर बाबू उमेश को लेकर बधाई देने पधारे। खातिरदारी और उमेश से बातचीत में समय व्यर्थ हो गया।

मन-ही-मन लेखक सोचता है—मेरा पुत्र उमेश सेवा तथा विजय से सबको मोहित कर लेता है और अपना काम कर लेता है। यदि यह गुण मुझमें होता तो मैं भी किसी प्रदेश का मुख्य-मंत्री होता।

सन् १९३१ ई० में हिदायत अली, डा० नारायण और शिवकुमार के साथ राजनैतिक आन्दोलनों में भाग लेना एव जेल जाना। ऐसी ही अन्य बातें लेखक सोचता है। राजनैतिक जीवन के बाद पारिवारिक जीवन के बारे में कल्पना करता है। मेरा एक पुत्र भवानी पतन के मार्ग पर चला गया और एक लड़की वीणा राजरोगिणी हो गयी। खैर होगा, सब भाग्य ही भाग्य की बात है।

कथाँश—९. कल रात की गाड़ी से उमेश अपने भतीजे और भावज को लेने सातापुर गया है। अपने पोतो के आने की प्रतीक्षा में मेरा मन उल्लसित हो रहा है। फिर भी मेरा जीवन इतना व्यस्त है कि इन लोगों के बीच अधिक समय नही दे सकता मेरे देखते ही देखते नया जमाना आ गया है। पुरानी दुनियाँ बडा तेजी से गायब हो रही है। फिर स्वयं लेखक अपने सम्पूर्ण जीवन के बारे में विचार करता है। बचपन की बातें, आय समाज की स्थापना,

राजनैतिक-आन्दोलन की घटनाएँ कांग्रेस का देश की आजादी के लिए प्रयत्न आदि पुरानी बातें याद करते हैं और उसी में लीन हो जाते हैं तथा सोचते हैं आज जमाना कितना बदल गया है। आज देश आजाद हो गया है। आज समाज का अनेकों नई माँगं हैं, उसी के नारे लगाये जाते हैं। स्वयं हमारे भी कुछ कर्तव्य हैं जिन्हें पूरा करने की बात दिमाग से एकदम भुला दी जाती है।

भवानी की पत्नी उपा और उसके पुत्र आ गये हैं घर बच्चों से भरा हुआ है बहू उपा के प्रति तो श्रद्धा है। दुःखी हूँ कि इतनी योग्य पत्नी होते हुए भी भवानी उसे छोड़ कर चला गया। मेरा बेटा ही नालायक है। कुण्ठित और असन्तुलित अभिलाषाएँ न जाने कितने अच्छे भले लड़कों को तबाह कर देती हैं। कैसी अजीब बात है कि मेरा भवानी अच्छी भली राह पर जाते-जाते एकाएक प्रेम के चक्कर में पड़कर गलत रास्ते पर मुड़ गया। हमारी सामाजिकता एवं जातिगत बन्धनों से भी नौजवान लड़के लड़कियाँ अधिकतर सनसनाए थर्राए रहते हैं। यह विपरीत परिस्थितियां यदि हमारे समाज से चली जायँ तो मेरे भवानी जैसे अनगिनत जवानों को इस तरह विकृत विद्रोही बनने की नौबत न आये।

खैर मुझे तो अपना उपन्यास पूरा करना है। मन में अपने उपन्यास को युगल जोडी रानी और रमेश की कल्पना जाग उठी। अपने उपन्यास का नया परिच्छेद लिखने की इच्छा भी जाग उठी।

कथांश—१०. रमेश गौड़ पास होने की बधाई देने के बहाने रानी से मिलकर तथा उसके पिता और दादी को 'बहन जी' से रानी को आगे की पढ़ाई के लिए सरकारी या गैर-सरकारी सहायता दिलाने का आश्वासन देकर सीधे खन्ना साहब के घर गया।

श्री आनन्द-मोहन खन्ना सुप्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक "इण्डिपेण्डेण्ट" के सम्पादक, शहर की एक मानी जानी हस्ती है। प्रदेश के सर्वमान्य नेता और इण्डिपेण्डेण्ट के संस्थापक—डॉ० आत्माराम के दाहिने हाथ हैं। उनके घर पर प्रति रविवार नवयुवकों का अध्ययन चक्र चलता है। रमेश पिछले डेढ़ वर्षों से उसमें बराबर सम्मलित होता है। श्रीमती कुसुमलता खन्ना चूँकि निःसन्तान

हैं, इसलिए उनका वात्सल्य भाव उमड़ कर हर नोजवान लड़के-लड़कियों को सहज ही प्राप्त होता है ।

रमेश ने 'बहन' जी से कहा कि—मेरी बहन की सहेली है । बडी सुशील, बड़ी प्रतिभावान, एकदम भारतीय नारी का प्रतीक, सदा फर्स्ट सेकेण्ड आने वाली बाल-विधवा है बेचारी और गरीब तो इतनी है कि पूछिये मत ।

बहनजी बोलीं—"जान पड़ता है कि श्रीमान गौड़ साहब को उस लड़की से प्रेम हो गया है, तभी जनाव कविता मे उसकी वकालत कर रहे हैं ।"

शर्म के मारे रमेश का चेहरा लाल हो उठा, खन्ना साहब भी वहीं बैठे थे । उनकी उपस्थिति से भय की सकपकाहट के कारण उनके माथे और होठों पर पसीने की बूँदें झलक आई, उत्तर देते न बना, "नही बहन जी, नहीं बहन जी" करने लगा ।

बहन जी बोली—"प्रेम जेसी पवित्र चीज भला अपने माँ बाप से छिपानी चाहिए ।" ऐसी बातें छिपाई जाने के कारण ही हमारी सोसाइटी में इतनी गन्दगियाँ फैल रही हैं । मैं उन गन्दगियों के मुहाने बन्द कर देना चाहती हूँ । ये गन्दगी तभी दूर होंगी जबकि हमारे लड़के लड़कियाँ झूठी शर्म का ढकोसला तोड़कर खुले आम अपनी दोस्ती को आत्मसम्मान की भावना के साथ बढ़ावा दें ।

अतः रमेश सोचने लगा कि—ठीक ही तो है । मैं रानी के प्रति अपने इस पवित्र भाव को सामाजिक चोरी या मानसिक पाप की वस्तु क्यों बनाऊँ ? अन्तर्जातीय विवाह या विधवा विवाह अभी हमारे समाज में बुरे तो माने जाते हैं फिर भी ऐसी शादियाँ होती है । हमारा धर्म निहायत ही गन्दी मनोवृत्तियों से अपने अनुयायियों की आत्माओ का हनन करने में ही मदद देता है····।

यहाँ से रमेश रानी के घर गया । वहाँ पर रानी के पिता रद्धू सिंह सबको बड़े शान से डाकू पकड़े जाने की घटना बता रहे थे । इस तरह बातें करते थे कि मानों उन्होंने स्वयं डाकू को पकड़ लिया हो । रमेश के सामने भी रद्धू बाबा अपने पूर्वजों से लेकर डाकू घटना का वर्णन शान से करने लगा । बीच-बीच में रमेश प्रोत्साहित करता रहा । रानी के बारे में पूछने पर बताया कि उनको चाचा के यहां भेज दिया है । डाकुओं को पकड़ने के कारण ।

फिर रमेश ने बताया कि—उसने श्रीमती खन्ना यानी बहिन जी से रानी की छात्रवृत्ति के बारे में बातें की हैं। उसको देना स्वीकृत कर लिया है। साथ में अलग से पच्चीस या तीस रुपये की रकम भी दे देगी।

यह बातें सुनकर रद्धू बाबा भावावेश में आ गये और खुशी में रमेश को अपने कलेजे से चिपका लिया।

दूसरे दिन रानीबाला अपनी दादी के साथ बहिन जी से मिलने गयी। बहिन जी ने कहा कि रानी अगर शाम को दो घण्टे उनकी एक संस्था के कागज-पत्र संभाल दिया करे तो वे उसे पच्चीस या तीस रुपये की रकम छात्र वृत्ति के अलावा और दिला दिया करेंगी। अन्धे को आँखें मिल गयीं रमेश को अपने श्रम का पुरस्कार मिल गया। रानी को बहन जी के घर जाने से रमेश को एक लाभ यह हुआ कि प्रति शनिवार को रानी से मुलाकात हो जाती।

एक शनिवार के दिन रमेश जामुनों का दोना लेकर खन्ना साहब के घर गया। भाग्य से रानी अकेली है। रमेश रानी के पास बैठ गया।

रानी के घर में पैसों के अभाव से फाके की नौबत आ गयी थी। रानी को भूखी ही काम पर आना पड़ा था। रानी का कलेजा मुँह तक आया और फिर लौट गया। जामुनों को देखकर अपनी अर्न्तपीड़ा को अधिक बढ़ाने की तनिक इच्छा न हुई। रमेश से आँखें चार हुईं और भावनाओं में खो गयी। जब रमेश ने एकदम कहा कि—तुम उदास हो। तब रानी एक दम संभल गयी। रमेश ने अपने हाथ से एक जामुन आग्रह करके खिला ही दिया। तो रानी अपनी भूखपीडा को छिपाकर जामुन की प्रशंसा करने लगी।

इतने में आगन्तुक चावला और जुनेजा के आने की आवाज आई। दोनों सावधान हो गये। रानी नाश्ता लेने चली गयी इतने में रमेश बहाना बनाकर चला गया। रानी भूखी थी। वह रमेश को नाश्ता देकर, अपनी भूख मिटाना चाहती थी अतः वह अपने हाथ से पकौड़े बनाकर चाय के साथ लायी, तो देखा कि रमेश चला गया है। इसलिये उसने भी चाय तक नहीं ली और भूखी ही वापिस घर चली गयी।

उसी रात उसका सौतेला भाई होने वाला था अम्मा को दर्द उठने

लगे। घर में पैसे कौड़ी तक नहीं। इसलिए दादी को समझा कर रात को ही डेढ़ बजे रानी बहन जी के घर गयी।

कथाँश—११. रद्धू सिंह की अम्मा पौत्र उत्पन्न होने की खुशी में मंगल-गीत गा रही है। इतने में प्रातः साढ़े आठ बजे के आसपास बहन जी रानी के घर आई दादी बहन को देखकर खुशी में कहने लगी—"आइये-आइये, बड़े भाग कि आपके चरण हमारे यहाँ पड़े।"

दार्शनिक सिद्धान्तों के द्वारा बहनजी दादी अम्मा को समझाती हैं और फिर सम्पूर्ण ग्रहस्थी का और प्रसूती का सामान देती है। १५ दिन का राशन भी देती है तथा रद्धू सिंह को नौकरी दिलाने का आश्वासन देती है और चली जाती हैं बहन जी रद्धू सिंह के घर में संजीवन बूटी को लाईं और सबमें प्राण डालकर चली गयीं।

रद्धू सिंह प्रातः से ही भूखा प्यासा नौकरी की तलाश में चला। सभी तरफ निराशा ही मिली। दुःखी और खिन्न होकर वापिस घर आया। जब घर पर सभी व्यवस्था देखी तो बहनजी की आर्थिक मदद ने रद्धू सिंह के प्राण ही ला दिये। रद्धू सिंह अपने इष्टदेव बजरंग से प्रार्थना करने लगा।

कथाँश—१२. रमेश, लच्छू और उसके दोस्तों ने एक विद्यार्थी संघ की स्थापना की है। स्थान बारादरी का खण्डर है। पन्द्रह अगस्त को उत्सव का आयोजन था। रमेश के आग्रह से इस वर्ष लड़कियों के प्रोग्राम भी रखे गये। 'बहनजी' के बिना स्त्रियों का कोई कार्य-क्रम सफल हो ही नहीं सकता, इसलिए रमेश खन्ना साहब के घर गया।

खन्ना साहब ने रमेश से कहा—"रमेश बेटे एक बहुत बढ़िया चांस आया है। डा० आत्माराम को एक आदमी की जरूरत है। उसके साथ कार्य करोगे?"

डा० आत्माराम का नाम बिजली के करेण्ट की तरह छूकर मन को स्फूर्ति से भर गया। फिर भी रमेश ने कहा एम० ए० का आखिरी वर्ष है फिर भी मैं काम करूँगा। माँ-बाप से सलाह लेकर आपको बताता हूँ।

रमेश के मानों पंख उग आये थे—खुशी-खुशी सबसे पहले रानी के घर गया। भाग्य से रानी से बातचीत करने का अवसर मिला। रानी को सभी

बातें बता दीं रमेश ने। लेकिन रानी के चेहरे पर चमक न आई। वह गम्भीर हो गयी। रानी बोली—नौकरी करके अपना कैरियर बिगाड़ रहे हो। माना कि डॉ० आत्माराम महान् आदमी हैं; परन्तु ईश्वर तो नहीं हैं। यहाँ रहोगे तो एक दूसरे की मदद से दो जिन्दगियाँ सुधरेंगी, तुम्हारी बदौलत मैं भी पढ़ जाऊँगी। मेरी बड़ी साध है। और जैसा तुम सोचो।

रानी की बातों से रमेश को झटका लगा। उसके मन का रंगीन शीशमहल टूट गया। और बोला''''अच्छा।''' तुम्हारी इच्छा ही मेरी इच्छा। हम दोनों पढ़ जायेंगे तो ज्यादा नफे मे रहेंगे फिर यहाँ रहने पर कम से कम तुम तो मेरी आँखों के आगे रहोगी।

रानी के घर से निकलकर रमेश लच्छू के घर गया और लच्छू को सभी बातें बता दीं और नौकरी न करने की इच्छा भी जाहिर कर दी तथा कहा कि—तुम नौकरी कर लो। डॉ० आत्माराम के यहाँ पर नौकरी भाग्य वालों को मिलती है। लच्छू ने नौकरी करना स्वीकार कर लिया और रमेश तथा लच्छू दोनों ही खन्ना साहब के घर गये। खन्ना साहब ने लच्छू को सारस लेक भेजना स्वीकृत कर लिया।

कथाँश—१३. लच्छू उर्फ लक्ष्मीनारायण खन्ना अपने पूरे साधन के साथ रामगंज स्टेशन पहुँच गया। सारस लेक यहाँ से सात मील दूर है। पानी मूसलाधार गिर रहा है। सामान रखने को जगह नहीं। लच्छू के सभी कपड़े गीले हो गये है। स्टेशन मास्टर ने लच्छू का अपमान किया। गीले कपड़ों से डाक-गाड़ी की राह देखने लगा।

बहुत देर बाद स्वयं डॉ आत्माराम आये और लच्छू को साथ ले गये। सारस लेक मे भव्य-आलीशान भवन डॉ० आत्माराम का बना था। सारस लेक प्राकृतिक सुन्दर जगह है। एक कर्मचारी ने लच्छू को उसका फ्लैट दिख-लाया। यहाँ पूरा वातावरण अँग्रेजी का है। प्रत्येक व्यक्ति अंग्रेजी ढंग से रहता है और अँग्रेजी बोलता है पूरी व्यवस्था अंग्रेजी वातावरण की है।

पढ़ौसी पण्डित राजकिशन बाबू ने बताया कि—डॉ आत्माराम के पिता सर शोभाराम अपने समय के बहुत बड़े इंजीनियर थे। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति पाई थी एवं तीन-चार करोड़ रुपया कमाया। उनकी प्रायवेट सेक्रेटरी

भी एक अँग्रेज सुन्दरी थी। डॉ आत्माराम की माँ का स्वर्गवास हो जाने के बाद अँग्रेज सुन्दरी से शादी कर ली। किस्मत की बात है फिर उसके दो लड़के हुए और दोनों ही मर गये, इसलिये सम्पूर्ण सम्पत्ति डा० आत्माराम को प्राप्त हुई। इस तरह सम्पूर्ण जानकारी लच्छू को मिली। सभी से जान-पहचान भी हो गयी।

मि० माथुर के नाम एक निजी पत्र श्रीमान खन्ना साहब ने दिया था इसलिए माथुर साहब से अधिक सम्बन्ध हुआ। परन्तु लच्छू उर्फ श्रीमान् लक्ष्मीनारायण खन्ना का दुर्भाग्य था कि—मिसिज माथुर के धोखे भरे व्यवहार में फँसकर चरित्र में आखिरकार दाग लगा लिया।

कथाँश—१४. लेखक अरविन्द की डायरी—बहुत चाहने पर भी इधर अपने उपन्यास को अधिक नहीं बढ़ा सका। कभी-कभी अकारण ही मेरी कल्पना शक्ति काम करने से इन्कार कर देती है। इस शक्ति के विकेन्द्रित होते ही मेरा मन एक असीम आकाश में उडने वाले पक्षी की तरह लगातार मँडराता ही रहता है।

इन दोनों से मुझे बड़े बेटे चि० विनयशकर की याद आ गयी। मस्त मौला, मेरे प्रति विद्रोह नही है, पर कोई लगाव भी नही है। उन्हें लगाव केवल अपनी पत्नी और अफसर से अधिक है। धन से लगाव है। रेलवे में काम करते हैं। बड़े बाबू बने है। होम्योपैथी के डाक्टर बने हैं। महाजनी का धन्धा करते है।

उमेश मन्सूरी में प्रशासन की शिक्षा पा रहा है। पत्र भेजा है। उसमें लिखा है कि दिल्ली के एक बड़े आई० सी० एस० अफसर श्री पुरी उससे खुश हो गये हैं। अपनी छोटी बेटी से उसका विवाह करना चाहते है। उमेश राजी हो जायगा।""""होगा, मुझे क्या वह खुश रहे बस।

आजकल नगर में गोमती की बाढ़ आई हुई है। उमेश नहीं, रमेश मान लो इस बाढ़ में फँसे!""मगर कैसे? पुत्ती गुरू फँसे और रमेश उन्हें बाढ़ से मुक्त कराके लाये!""""""चलो, यहीं से आरम्भ करता हूँ नया अध्याय""।

कथाँश—१५. पुत्ती गुरू कल सबेरे बड़े तड़के ही एक ठाकुर साहब

के नये मकान की वास्तु शान्ति कराने के लिए गौघाट के आगे किसी गाँव में गए थे। दुर्भाग्य से रातों रात गौघाट हुसैनाबाद के भाग में बाढ़ आ गई और पानी बढ़ आया। रमेश अध्ययन कर रहा था। दोपहर को माँ ने बताया कि पिता जी अभी तक नहीं आये। बाढ़ में फँस गये हैं। किसी तरह से अपने पिताजी को लेकर आओ।

रमेश तो सनाका खा ही गया, उसके साथी भी दुश्चिन्ताओं से अछूते बच न सके। रमेश और उसके साथियों ने इधर-उधर जाकर बड़ी कठिनाई से अपने पिताजी के जिजमान और गाँव का पता लगाया।

रमेश और उसके साथियों ने किसी नाव वाले का प्रबन्ध किया। नाव में बैठकर पिताजी को लेने गये। गोमती नदी में बाढ़ के कारण अत्यधिक पानी था। सन् १६२३ ई० की बाढ़ से भी ज्यादा विनाशकारी बाढ़ थी। चारों तरफ हा-हाकार मचा हुआ था। जनता अपनी सम्पत्ति छोड़कर जान बचाकर शहर आ रही थी। उसकी नाव कई बार मँझधार में फँसते-फँसते बची। नाव गऊघाट से आगे निकल चुकी थी। रमेश और उसके साथियों के लिए यह जगह अनजान थी। जिधर देखो उधर गाँव के गाँव पानी में डूब चुके थे। आदमी औरतें बालक सभी टीलों के ऊँचे भागों पर थे। पानी रात में ऐसी जोर से गरजता और दौड़ता हुआ बढ़ा कि चारों ओर हा-हाकार मच गया। गाँव के गाँव एक घण्टे के भीतर ही करीब-करीब खाली हो गये। रमेश और उसके साथियों की नाव आगे बढ़ती हुई गाँव में पहुँच गई। पूरा गाँव पानी मे डूब चुका था। बड़ी कठिनाइयों के बाद नाव ठाकुर अजयपाल सिंह के यहाँ पहुँची। नाव पर पुत्ती गुरू, बचान महाराज, ठाकुर साहब के भाई, उनका लड़का और सामान रखकर विदाई ली। बाकी लोगों को बचाये जाने का वचन दिया। दो मोटर बोट भेजने का आश्वासन दिया।

कथांश—१६. अपने पिता और बचान महाराज को बाढ़ग्रस्त क्षेत्र से निकाल लाने पर रमेश अपने क्षेत्र का हीरो बन गया। संयोग से उसी दिन खन्ना साहब ने किसी काम से उसे शाम को बुलवाया था और बाढ़ग्रस्त इलाके में उसके जाने की बात सुनकर उन्होने दोबारा उसके घर पर सन्देश भिजवाया कि रमेश जैसे ही घर आये, वैसे ही उनके पास भेज दिया जाय।

रानी बाला को खन्ना साहब के घर पर ही यह सूचना मिली थी और उसी समय से उसकी चिन्ता का पार न रहा था बहन जी के घर काम-काज में उसका मन नहीं लगा। छुट्टी लेकर रमेश के घर चली गयी।

रमेश की अम्मा अपने पति और बेटे की चिन्ता में फीकी-फक्क पड़ गई। आस-पास की औरतें उनके पास बैठी हुई सहानुभूति के बहाने बातों में अपने भयजनित अशुभचिन्तन को गति दे रही थीं। इधर-उधर की बेतुकी अशुभ घटनाओं का वर्णन कर रही थीं।

रानी को इन सब बातों पर अनायास ही क्रोध आ गया। अपने शान्त, गम्भीर और अनुशासन प्रिय स्वभाव के बावजूद, अपने चिन्ता-जंजाल ग्रस्त मन को अशुभ आशंकाओं में भटकाने वाली बातों ने उसे पाँच छः मिनटों में भीतर ही भीतर इतना तपाया कि वह अपना संतुलन खोकर भड़क उठी, उसने तेजी से कहा "जिनके मन मे भगवान पर विश्वास नहीं होता, उन्हीं के मन में ऐसी अशुभ बातें भी आया करती हैं। अगर भगवान मेरे भी हैं तो मैं कहती हूँ कि अभी राजी खुशी से आते होंगे ये लोग।" रानी का आवेश रमेश की अम्मा के चहरे पर विश्वास ही बनकर चढ़ गया। बूढ़ा गुलकन्दी चाची की आँखों मे क्रोध झलका वह रानी पर बरसने ही वाली थी कि नीचे के किवाड़ धड़धड़ाकर खुले और हर्ष की जोशीली हँफनों से फूले स्वर में सुरेश ने कहा : "बाबू आ गये अम्मा।"

अम्मा और रानी लपककर छज्जे पर आईं, नाम लेते ही जो दोनों के प्राणनाथ आ गये। सुरेश ने कहा "अम्मा बाबू की सिलौटी बिलौटी जल्दी से धोय-धायकर रक्खो, उन्हें भाँग की बड़ी जोर की तलब लगी हैगी।"

'और भैया कहाँ है तुम्हारे ?' रानी ने पूछा, 'भैया' शब्द जोर से कहा और 'तुम्हारे' दबे स्वर में। इसी समय अम्मा ने भी पूछा रमेश कहाँ है। सुरेश बोला "अरे, भैया के तो ईत्ती बिरियाँ वो ठाठ हैं कि पूछो मत। रुप्पन चाचा ने दस का नोट इनाम में दिया है, परन्तु रमेश ने वह रुपये बाढ़ग्रस्त शरणार्थी के चन्दा में जमा कर दिये।"

अम्मा तो भाँग बनाने यानी ठंडाई बनाने चली गयी और रानी अम्मा से पूछकर चाय बनाने लगी। रानी में इस समय बड़ा उत्साह था। रानी रसोई-

घर में गई। रानी के जी में आया कि चाय के साथ 'नाश्ता' भी बना सकती तो कितना अच्छा होता पर अम्मा से कैसे कहे ? वह भूखे थके मारे आ रहे हैं। कह ही दे। इस समय अम्मा के मन में कोई शक हो ही न सकेगा। इस आत्मविश्वास के साथ रानी ने पूछा 'अम्मा, बेसन हो तो लाइये थोड़े से पकौड़े भी................'

"हाँ हाँ। अरे बारी मेरी बिटिया ! तू सचमुच रानी है।" अम्मा ने कहा और बता दिया कि सामान कहाँ रखा है ?

पास वाले दालान में पुत्ती गुरू की पत्नी अपने पति की सेवा में दत्तचित थी। रमेश घर में आया। रानी हर्ष और लाज के अतिरेक में अपनी जगह से हिल न सकी। रमेश को तो ऊपर आकर स्वर्ग मिल गया। रानी रमेश को अकेलापन मिला और आपस में बातचीत हुई। फिर सभी ने साथ से चाय और नाश्ता किया। रमेश को अपने इस घरेलू दृश्य में आज जो आनन्द वैभव मिला, वह अपूर्व था।

रमेश अम्मा के कहने पर रानी को घर छोड़ने जाने लगा ! श्रीमान खन्ना साहब से भी रमेश को मिलना था रानी के कहने के अनुसार रमेश ने रास्ते में रानी को पन्द्रह रुपये का नया पेन भेंट किया। पहले तो रानी ने लाज के कारण मना किया बाद में ले लिया और मजाक में कहा, "मैं भी आपको शेफर्स पैन प्रेजेण्ट करूँगी।" दादी से रानी की ढेरों तारीफें करके रमेश खन्ना साहब के घर चला गया।

कथाँश—१७. शहर में जगह-जगह शरणार्थियों के कैम्प पड़े हुए थे। पानी बराबर बढ़ता ही जा रहा था। बाढ़ नगर के एक भाग की गलियों तक पहुँच चुकी थी। आज रात तक राम जाने, कैसे न बीते।

तरुण छात्रसंघ के सभी बड़े सदस्यों में इस समय कुछ कर गुजरने की तड़प बहुत तेजी पर थी। रमेश, जयकिशोर, शामराव गोडबोले, कम्मी मोहन और हर्रो आदि आपसी सभा करके योजना बनाने लगे। आपसी बातचीत भी हुई। चन्दा प्राप्त किया जाने लगा। प्रत्येक सदस्य बाढ़-ग्रस्त नर-नारी को बचाने में लग गया। शरणार्थियों की सेवा की जाने लगी। ये नाव के माध्यम से सभी की सेवा करते थे। मोहन की नाव ने अनहोने कार्य करके इन लोगों

को दिखा दिये। सभी जनता आश्चर्य करती और प्रशंसा करती तरुण छात्र-संघ को जनता के द्वारा आर्थिक मदद भी मिलती।

कथांश—१८. पूरे अठारह घन्टों तक अनवरत रूप से काम करते रहने के बाद रमेश जब अपने साथियों के द्वारा आराम करने के लिए घर गया। उसका दिल और दिमाग अब भी पानी भरी गलियों में घिरे हुए लोगों के अन्दर ही रमा हुआ था। उसे बड़ा सन्तोष था कि वह और उसके साथी असम्भव को सम्भव बना सके। इसी समय रानी का ख्याल आते ही चार चाँद लग गये। रानी से मिलने की आशा से वह खन्ना साहब के घर गया।

खन्ना साहब और बहन जी ने रमेश का सम्मान किया और वात्सल्य से अपने पास बिठा लिया। सम्पूर्ण कार्यों की रिपोर्ट बनाकर समाचार-पत्र में दे दी गयी। रानी के दर्शन भी रमेश को हो गये।

कथांश—१९. अपने काम से तरुण छात्र-संघ के लड़कों ने बड़ा नाम कमाया। लखनऊ विश्वविद्यालय के कई छात्र और प्राध्यापक भी बड़ा काम कर रहे थे। ऐसे महान् जन-संकट के समय बहुतों के दिलों में कर्त्तव्य और इन्सानियत की दिव्य ज्योति जगमगा उठी थी। इस ज्योती के टार्च के समान गोल दायरे के इर्द-गिर्द संकीर्ण स्वार्थों का अँधेरा उस समय भी ज्यों का त्यों मौजूद रहा।

रमेश खन्ना के घर गया। रानी से मुलाकात हुई रानी ने कहा, "आज सबेरे हम घर गये थे। नई अम्मा कहने लगी कि बाबू और दादी को हमारा यहाँ रहना नही सुहाता। कहते है, इससे घर की इज्जत जाती है।"

रमेश ने कहा "शादी के समय चार-पाँच दिन जब तुम हमारे यहाँ रही थी तब ?"

रानी ने कहा "शादी ब्याह का भरा-पूरा घर था। बाबूजी इज्जतदार आदमी हैं। असली बात यह है कि एक दिन मम्मीजी ने दादी के सामने विधवा विवाह की बात उठाई थी। मैं समझती हूँ कि मेरे और आपके सम्बन्ध पर ही मना किया है।" सुनकर रमेश गम्भीर हो गया, बोला: "यह तो निश्चित मानो रानी कि हमारे इस सम्बन्ध पर हम दोनों के घर वाले डटकर विरोध करेंगे।"

दोनों चुप रहे ! आपस में मौन वार्ता हो गयी। आत्मिक शांति प्राप्त हुई। फिर रानी ने कहा : "आज तुम गये नहीं कैंप में ?"

"अरे, क्या बताऊँ, आया था कि मम्मी जो मिलेंगी तो कोई काम पूछूँगा उनसे। सुबह का समय पढ़ने लिखने में ही लगा लिया है।"

"ये बहुत अच्छा किया तुमने।" अब तो तुम्हारे एम० ए० होने पर ही सारा दारोमदार है। काम तो पापा जी दिला ही देंगे। और एक बात कहूँ बहिन जी को और खन्ना साहब को हमारे तुम्हारे बारे में पूरा शक है।"

"अरे, वो तो मैं जानता हूँ। मम्मी जी मुझे कई बार पापाजी तक के सामने छेड़ चुकी है। परसों जो मेंने शरणार्थी कैम्पों की रिपोर्ट लिखकर दी थी, उससे बड़े खुश हुए। कहने लगे, तुम चाहो तो अच्छे जर्नलिस्ट बन सकते हो।"

"हाँ तुम्हारे जाने के बाद ही इन्होंने मम्मीजी से यह भी कहा था कि इस लड़के को चाँस देना मैं अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझता हूँ। तुम्हारी बड़ी-बड़ी तारीफें कीं—बड़ा परोपकारी है, बड़ा मेहनती है, बड़ा इण्टेलिजेण्ट है—मैं खड़ी-खड़ी गुटुर-गुटुर सुनती रही।"

"तुम्हें जलन हो रही होगी हमारी तारीफें सुन-सुनके।"

"हाँ उसी जलन में तो मैंने खड़े खड़े यह तय कर डाला कि तुम दो चार बढ़िया-बढ़िया रिपोर्टिंग और कर डालो। ताकि पापाजी का यह भाव तुम्हारे लिए और मजबूत हो जाये तो बस फिर हमारा बेड़ा पार लग ही जायगा।"

"बड़ी स्वार्थिन हो। अपने स्वारथ के लिए मुझसे खन्ना साहब की खुशामद करना चाहती हो।"

"स्वारथ ही सही, पर ये स्वारथ क्या छोटा है ? घरबार बसाने वाली युवती को सब कुछ सोचना पड़ता है।"

रमेश प्रसन्न हो गया और बोला : "जो रानी जी सोचें वही ठीक, हम तो सेवक ठहरे। जो हुक्म देंगी वही मानेंगे।"

रानी ने कहा : "एक ब्राह्मण देवता के साथ ही मेरा जीवन बँधेगा इसलिए ये सब (नान वेजेटेरियन) छोड़ दिया है। मेरे कारण घर छोड़ने में तो तुम्हें दुःख होगा।"

"और मेरे कारण तुम्हें भी यही दुख होगा।"

"अब तो मेरा सारा दुख सुख तुम्हीं में समा गया है। भले ही स्वार्थी कहले कोई, लेकिन तुम्हें पाने के लिए सब कुछ छोड़ सकती हूँ।"

रानी के इस वाक्य ने रमेश को आनन्द विभोर कर दिया।

समीक्षा : उपन्यास के मुख्य कथानक का विकास प्रणय की ओर अग्रसर हो रहा है, एक के बाद एक घटनाएँ उत्पन्न हो रही हैं और हर नये पात्र का चरित्र भी स्पष्ट होता जा रहा है। साहित्यिक भाषा और जन भाषा का मिश्रण है। सामाजिक एवं पारिवारिक घटनाओं का सजीव वर्णन हुआ है। पात्रों में खन्ना साहब, श्रीमती कुसुमलता खन्ना (बहन जी), रमेश, रानी, लच्छू और रद्धू सिंह का चरित्र-चित्रण सुन्दर बन गया है। मानवीय विचारों का आदान-प्रदान मार्मिक, भावात्मक तथा हृदय को छू जाये ऐसा बन गया है। इन्ही विशेषताओं के साथ कथानक की संघर्षमयी घटनाओं का विकास अब आगे होगा। घटनाओं के संघर्षमयी वातावरण ने उपन्यास में जान डाल दी है। यथार्थ घटना प्रधान उपन्यास बनता जा रहा है।

घटनाओं के वर्णन में रोचकता और आकर्षण है। भाषा म सजीवता एवं प्रवाह है। पाठकों को प्रभावित करने की शक्ति है। वह उसके मन में अमिट छाप छोड़ देती है।

कथांश—२०. लेखक अरविन्द की डायरी—इधर तो मेरा उपन्यास डर्बी के घोड़े की तरह दौड़ा है। ये बाढ़ के दृश्य यदि मुझे—मेरी सारी चेतना को—बाँधे रखते तो जो अपमान और आघात मुझे (और माया को) इन दिनों सहना पड़ा, वह मन में तड़पा तड़पाकर मुझे दीवाना बना देता।

आज छः दिन हुए, सुबह की डाक से एक निमन्त्रण-पत्र मिला। ज्ञात हुआ कि उमेश की शादी श्रीमान् पुरी की पुत्री से हो रही है। आश्चय और दुःख भी हुआ कि हम से पूछा तक नहीं। मात्र सिर्फ एक निमन्त्रण-पत्र। माया को भी आघात लगा। समधी ने उन्हें समधी की तरह पूछा तक नही। उमेश ने भी आपत्ति नहीं उठायी यानी "जब अपना ही सिक्का खोटा है तब और को क्या कहें?"

हमारी नई पीढ़ी में इस समय दो तरह के लोग हैं। एक सक्रिय महत्वाकांक्षी हैं, और दूसरे हसाकांक्षी। महत्वाकांक्षियों की सक्रियता आजकल

(या शायद सदा) खुशामद, तिकड़म, दाँवपेच, और स्वार्थ भरी बदमाशियों की दिशा में रही। उनकी आकांक्षा का महत्व केवल उसी तक सीमित है—और इसलिये यह वर्ग अकेली लड़त लेता है और दूसरा हस्ताकांक्षी वर्ग कोल्हू का बैल है।

हमारे समाज में दो वर्ग है। पूँजीपति वर्ग और दूसरा निम्न वर्ग। निम्न वर्ग न्याय एवं ईमानदारी के लिए विद्रोह करता है।

अभी बाढ़ के बाद ही कई विश्वविद्यालयों में छात्र-विद्रोह हुए। हमारे यहाँ पर भी हुए थे। सोचता हूँ उन्हें चित्रित करूँ। क्यों न इन लड़कों का यह सत्य विद्रोह इस बार मोहल्ले की पृष्ठभूमि पर किया जाय? इन आर्थिक योजनाओं के जमाने में क्यों न एक बड़े असत्य के मोर्चे पर अपने जवानों को देखूँ।··· एक ऐसे ही विद्रोह की पृष्ठभूमि मेरे मन में आ रही है।

हाईस्कूल और इन्टर की परीक्षाएँ अब लबेदम आ लगी हैं, यूनीवर्सिटी के इम्तहान भी सर पर भूत की तरह नाचने लगे है। राजा केशोराय की बारहदरी में स्थित तरुण छात्रसंघ के लड़कों की तीन चार टोलियाँ अलग-अलग कौनों में बैठी सामूहिक अध्ययन कर रही हैं।

तभी छैलू दौड़ता हुआ आया, "रमेश, रमेश, हमारी बारादरी गई हाय।" और फिर शान्ति से पूरी बात सुना दी। सुनकर सभी गम्भीर हो गये। जय-किशोर ने कहा—"तुम्हारी आत्माराम वाली योजना का क्या होगा मित्र।"

रमेश क्रोध में भरा था। उसके अन्दर अपने पिता के विरुद्ध ज्वाला भड़क उठी थी। उसकी योजना पर बज्रपात उन्हीं के कारण हुआ है। तरुण छात्र संघ ने डॉ० आत्माराम को मानपत्र अर्पित किया। डॉ० आत्माराम ने पुस्तकें खरीदने के लिए अपनी ओर से एक हजार रुपये देने का वचन दिया तथा बारादरी में सुधार करके छात्रसंघ का पुस्तकालय एवं अध्ययन शाला का निर्माण किया जाएगा। इसके लिए चन्दा भी इकट्ठा किया जा रहा है। गत दस वर्षों से बारादरी पर छात्रसंघ का अधिकार है।

डॉ० आत्माराम ने बताया था कि नगर सुधार योजना में यहीं से एक नयी सड़क निकाली जा रही है।

और इधर रमेश के पिता ने बताया कि—रूपचन्द्र सेठ यानी रुप्पन चाचा ये टोला और बारादरी धर्मशाला और मन्दिर की खातिर ले रहे हैं।

रमेश सेठ रूपचन्द्र से घृणा करता है, क्योंकि वह गरीबों का शोषण करता है और पुत्ती गुरू के कोई मित्र हैं तो रुप्पन।

रमेश टीला और बारादरी किसी भी हालत मे देने को तैयार नहीं है। राजा केशोराय की लावारिस जमीन को यह रुप्पन हड़पना चाहता है। धर्म-शाला और मन्दिर की आड़ में।

इतने में सेठ रूपचन्द्र, रमेश के पिता तथा हरिविलास वकील आदि बड़े-माने लोग आये।

रमेश और उनके साथियों का इनसे वाद-विवाद हो गया। रूपचन्द सेठ धर्मशाला एवं मन्दिर के लिये जोर दे रहे हैं और इधर रमेश आदि लोग सरस्वती देवी का मन्दिर (अध्ययनशाला) पुस्तकालय, वाचनालय स्थापित करने के लिए जोर दे रहे हैं। सेठ रूपचन्द ने कहा कि आप लोग अपनी योजना दूसरी जगह बना लें। परन्तु बारादारी हमें दे दें। तब रमेश ने कहा कि आप धर्मशाला दूसरी जगह क्यों नहीं बना लेते। हम नहीं देंगे तो नहीं देंगे। बाप-बेटे में काफी गर्मा गर्मी हो गई। दोनों तरफ के लोग बारादरी को ही अपना मान-अपमान मान बैठे।

कथाँश—२१. धार्मिक आस्था से शिवरात्रि का उपवास और जागरण व्रत करने वाले हिन्दू घरों मे दूसरे दिन कढ़ी का भोग लगता है। पहले जोगियों को खिलाया जाता है, फिर घर के लोग भोजन करते हैं। पहले गली-गली अनेक अलफी खप्परधारी फकीर 'जोगी बम भोले नाथ' के नारे लगाते हुए गलियों में घूमते थे। पन्द्रह बीस वर्षों में इसकी संख्या प्रायः कम हो चली है। प्रचलित धारणा यह थी कि भीख माँगने के लिये आज के दिन अनेक मुसलमान गुण्डे भी जोगियों का भेष बनाकर गली मोहल्लों मे घूमते हैं। इस-लिये लड़कों ने कुछ मजाक और कुछ सुधारवादी जोश में उन्हें भीख देने के बहाने बुलाकर कोठरियों और सन्डासों में बन्द करना शुरू कर दिया लड़के उन्हें दन भर इसी तरह सताकर भूखा रखकर रात के आठ नौ बजे खोला करते तथा सताकर भगा देते।

संयोग की बात थी एक जोगी वहाँ आ निकला। संघ के बड़े लड़के नहीं थे। छोटे लड़कों ने उन्हें पकड़कर बारादरी की कोठरी में बन्द कर दिया।

जोगिया गरज गरजकर शाप देने लगा। मोहल्ले वालों ने मिलकर उसको खोला तथा क्षमा माँगी।

जोगिया ने कहा—इस क्षेत्र का नाश निश्चित है। सभी लोग सघ वालों को बदनाम कर रहे हैं।

रुप्पन सेठ ने मौके का लाभ उठाकर बारादरी पर कब्जा कर लिया। लड़कों में आनन फानन ही इस बात को लेकर बड़ी उत्तेजना फैल गई। वे रमेश के घर पहुँचे। रमेश ने तैश में रुप्पन लाला और उनके मन्दिर बनवाने के संकल्प को बुरा-भला कह दिया।

पुत्ती गुरू भड़क पड़े—"ब्राह्मण का पुत्र होकर मन्दिर का विरोध करता है।"

"ये मन्दिर नही ढोंग है। धर्म नहीं, अधर्म है, पाप है। ये मन्दिर हरगिज नही बनेगा मैं आमरण अनशन करूँगा।"

पुत्ती गुरू ने तैश में कहा : "पापात्मा, अधम, राक्षस ! कर तू अनशन ! याद रख इस घर मे नहीं घुसने दूँगा।"

"अब घर में मेरी लाश ही आयेगी बाबू।"

रमेश की माता तथा भाई-बहिन सभी रोने लगे। परन्तु रमेश सभी कुछ त्याग कर चला गया।

कथाँश—२२. बारहदरी के फाटक पर रमेश, कम्मी, छैलू, गोडवाले, पम्मी और जयकिशोर चुपचाप शान्तिपूर्वक बैठे हुए थे। पोस्टर के नारे मौन प्रदर्शन का हुल्लड़ बनकर बोलने लगे : "मन्दिर पर मन्दिर नहीं बनेगा", "पूँजीपतियों को जनता की मिलकियत हजम करने का अधिकार नहीं है।" "हमारा अनशन बड़ों की अवज्ञा नहीं, वरन सत्य और न्याय की माँग के लिए है।" आदि-आदि।

इस प्रकार नवजवानों का पूरा वर्ग एक तरफ हो गया तथा पूरी तरह सभी कुछ कर लेने की सोचने लगे।

बुजुर्ग वर्ग की लाला रूपचन्द के यहाँ पर पंचायत लगी। लाला रुप्पन कह रहे थे : "मैं तो कहता हूँ, ये हवा ही बुरी है और अगर हमने स्थिति को न संभाला तो आगे चलकर यह हम सभी के लिये दुखदायी हो जायगी। ये मैं

पहले ही से चिताये देता हूँ।" इन्हीं की आपसी बातचीतों से कुछ लोग लाला रुप्पन के पक्ष में हो गये और कुछ लोग विपक्ष में हो गये। विशेषकर पं० गणेश गोविन्द गोडबोले रुप्पन लाला से नाराज हो गये।

रुप्पन ने कहा : "कल तक तो मैं इनका चाचा था और पूँजीपति बन गया। जैसे आपके लड़के वैसे मेरे भी फर्क क्या है ? मैं मोहल्ले का सुधार करना चाहता हूँ। राधारमन से भी भव्य मन्दिर बनाना चाहता हूँ। ये लड़के मुझे पूँजीपती बताकर मेरा अपमान कर रहे है। भला मैं चुप क्यों रहूँ ? क्यों बारहदरी छोड़ दूँ ? आपसे मेरा अनुरोध है कि—आप सब लड़कों का अनशन बन्द कराइये, नहीं तो मैं भी धरम की रक्षा के लिए कल से अनशन करूँगा।"

लाला रूपचन्द के अनशन करने की बात एटमबम की तरह मोहल्ले वालों पर पड़ी। मोहल्ले में पूर्णतय तनावपूर्ण वातावरण निर्मित हो गया। जो लोग लाला के कर्जदार थे, तथा उनसे धन की आशा थी, वह वर्ग लड़कों को समझाने लगा।

पहले तो लड़के गम्भीर हो गये। फिर उन्होंने कहा—"चाहे जान चली जाए मगर बारहदरी नहीं छोड़ेंगे। हम लोग कोई गलत काम नही करते। संघ के छात्र अध्ययन करते हैं। समाज सेवा का काम करते है। हम धर्म के विरोधी नहीं पूँजी की शक्ति से उनकी तानाशाही नहीं होने देंगे।" उनको अनशन करना है तो हमारे सामने करें देखें सत्य पर वह हैं या हम। घर के अन्दर तो वह कुछ भी कर सकते हैं। यानी बात नहीं बनी। दोनों पक्ष अपनी आन पर आ गये। बहरहाल यह निश्चित हो गया कि मोहल्ले में तनातनी बढ़ेगी।

लड़कों ने विराट् आम सभा का आयोजन किया एवं शहर में खबर फैल गयी। बस फिर क्या था ?

कथांश—२३. रमेश के अनशन की खबर रानी के लिए एक और नया चिन्ता ले आई। "आखिर इन्हें बैठे बिठाये ये क्या सूझी ? इम्तहान सिर पर है, भविष्य का प्रश्न सामने है, फिर क्या कर डाला इन्होंने।" रानी को चिन्ता से अधिक क्रोध था। वह जानती है अब रमेश बात मानने वाला नहीं है।

खन्ना साहब लड़कों का पक्ष ले रहे है तथा अनशन चालू रखने में मदद कर रहे है। 'हाय राम क्या करूँ, बड़ी अभागी हूँ।' रानी कॉलेज के लिए घर से निकली, पर रमेश के घर गयी। पुत्ती गुरू सन्यास लेने से पहले शाम की भाँग घोट रहे थे। पूछने पर नाराज होकर बोले—"भाड़ में गई तुमरी चाची ससुर लड़का, मर जाए। तुमरी चाची भी अनशन करने गई।"

रानी यहाँ से बारहदरी की तरफ गयी। बारहदरी के फाटक पर अत्यधिक भीड़ थी। रानी भीड़ मे घुसती हुई फाटक के पास पहुँच गई। देखा कि रमेश और उसके साथी अनशन पर बैठे है। रानी चुपचाप उसकी माँ के पास चली गयी। रमेश ने रानी को देख लिया। रमेश के साथी ने मजाक किया।

रमेश अम्मा के पास गया। रानी ने कहा—"मैं भी अनशन करूँगी।" रमेश ने कहा—"तुम अनशन मत करो, बहन जी से मिलकर एक लड़कियों का संघ बनाओ और प्रचार कार्य में लग जाओ। खन्ना साहब से सम्पर्क रखो। जो भी खबर हो मुझे लाकर दो। खन्ना साहब को कुछ लिखकर रानी को दिया तथा कहा—तुम जाओ और यह कागज दे देना, व अपने कर्त्तव्य में लग जाओ।"

सबको मालूम हो गया कि मन्नूसिंह की बेटी को रमेश ने कुछ लिखकर कही भेज दिया। औरतों का वर्ग भी रमेश के साथ हो गया। रानी और रमेश की अम्मा के कारण।

फिर लाखों की भीड़ में आम सभा हुई रमेश का बहुत ही प्रभावशाली भाषण हुआ। अन्य लड़कों का भी भाषण हुआ तथा शाम तक पूरे शहर में प्रचार हो गया। जिधर देखो उधर ही अनशन की घटनाओं की चर्चा हो रही है।

पूरा का पूरा जन-मत लड़कों ने अपने पक्ष में कर लिया।

कथांश—२४. मन्दिर न बनने देने का निश्चय अनेक लोगों के मनों में जग चुका था। खासतौर से श्यामराव गोडबोले के पिता वैद्य पण्डित गोविन्द जी गोडबोले बड़ों में से इस आन्दोलन के अगुवा बन गये।

गणेश जी गोडबोले पूरे प्रदेश में जाने-माने वैद्य है। धन-दौलत की कमी नही है। लक्ष्मी देवी व सरस्वती माँ दोनों प्रसन्न है। बैठक मे आपसी बात-

चीत हो रही है। योजना बनी कि—अत्याधिक सत्याग्रही, पर धन-लोलुप रूपचन्द तथा धर्म की आड़ में अधर्म करने वालों के विरुद्ध सामाजिक लेख समाचार पत्र में छापे जायें। पढ़े-लिखे प्रसिद्ध लोगों ने रातों रात लेख लिखकर 'इण्डिपेण्डेण्ट' को भी भेज दिया और बारहदरी की उन्नति के लिये हजारों रुपये का चन्दा भी कर लिया। देने वाले लोगों के नाम भी अखबार में प्रकाशित करने के लिये भेज दिये।

प्रात:काल पूरे शहर के समाचार-पत्रों में हलचल मच गयी। इसके जवाब में दिन के दस बजे ग्यारह लालची ब्राह्मण लाला रुप्पन के कहने पर अनशनकारी लडकों के सामने अनशन करने बैठ गये। एक दूसरों ने विरोधी नारे भी लगाये, अफवाहें फैलने लगी। पुलिस वर्ग भी आ गया। इससे अफवाहों में नया जोश आ गया। नया नारा यह था—'रूपचन्द्र के लट्टू हे—भई क्या नाचे। ये ब्राह्मण किराये के टट्टू हे—भई क्या नाचे।'

थोड़ी देर बाद दोनों दलों में क्रोधान्ध का वातावरण बन गया और आपस में मारने मरने पर अमादा हो गये। लड़ाई शुरू हो गयी, पत्थर, लाठी, भाले आदि अस्त्र निकल आये मैदान में पूरा वातावरण युद्ध का बन गया। हा-हाकार मच गया।

पुलिस वाले बड़े लड़कों को पकड़ कर ले गये छोटे लडके भाग गये। बड़े लडकों में छन्नू गायब हो गया। पूरी बारहदरी में पुलिस का कब्जा हो गया और मुहल्ले में पुलिस तैनात कर दी गई।

जितने लड़के पकड़े गये थे। उनके माँ-बाप चिन्तित हो गये। रमेश की गिरफ्तारी की खबर पुत्ती गुरू को मिली परन्तु पुत्ती गुरू किसी से भी नहीं बोले। ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। रमेश की अम्मा मातम मनाने लगी। सभी दुखी हो गये। इस घटना का प्रभाव पुत्ती गुरू पर यह हुआ कि उनका मन लाला रुप्पन सेठ से फिर गया। वे लाला रुप्पन को अपना शत्रु मानने लगे पुत्ती गुरू लाला रुप्पन के घर गये। रुप्पन सेठ नहीं थे। लालाइन से बातचीत की और शाप देकर अनशन करने की कह आये।

छैलू खन्डहर मस्जिद में जा छिपा और योजना बनाने लगा। अपने साथियों को कैसे छुड़ाए। रुप्पन लाला से बदला लेले की सोचने लगा। रात मे

छैलू लुक छुप कर मोहल्ले मे आया। गोडबोले के मकान के पीछे गया। गोड-बोले के नौकर रघुवीर से बातचीन की—रघुवीर ने कहा कि पुलिस किसी को भी जमानत पर नही छोड़ रही है। फिर रातों रात योजना बनी।

वैद्य पं० गोडबोले और उनके साथी लड़कों को जेल से छुड़ाने की कोशिश में लगे परन्तु सरकार ने मना कर दिया। मिलने तक नहीं दिया। खन्ना साहब ने डा० आत्माराम को टेलीफोन कर दिया। हाईस्कूल और कॉलेज बन्द हो गये। हाईस्कूल के छात्रों ने सेठ रुप्पन लाला के भवन में पथराव किया।

शाम को मुख्य मन्त्री आए। रुप्पन लाला के यहाँ बैठक हुई। बैठक में मुख्य-मन्त्री ने कहा कि "नयी सड़क बनने से लोगों को लाभ होगा। बारहदरी में मन्दिर बनेगा। लड़कों को सजा दी जाएगी। उनकी माँग तभी मानी जाएगी जब बारहदरी छोड़ देंगे और माँफी माँगेगे।"

छैलू को गुस्सा आ गया। सबसे बदला लूँगा। रात के ढाई तीन बजे के समय लगभग दस बारह मोहल्लो मे आग-आग-आग की आवाज सुनाई दी। चारों तरफ आग दिखाई देती आग मन्दिरों में भी लगी थी और रुप्पन की कोठी के पीछे भी आग लगी थी। छैलू और रघुवीर गायब हो गये।

कथांश—२५. सारी रात इधर मोहल्लों में जगार रही। गली मोहल्लों के बीच में आठ दस जगहों की आग बुझाने में फायर ब्रिगेडवालों के छक्के छूट गये। सुबह से सारा शहर इस क्षेत्र की ओर उमड़ पड़ा। इतने धर्मस्थानों का जलाया जाना शहर की सबसे बड़ी चर्चा का विषय बन गया। लोग बात कहने लगे कि, "जोगी के शाप के कारण ही ऐसा हुआ। सन् १९६२ ई० में अष्टग्रही की प्रलय आने वाली है। सो क्या ऐसे ही आ जायगी।"

छैलू के नाम वारण्ट कट गया। हर्रो को पकड़ लिया। लाला रूपचन्द्र अब प्रबल क्रोध मे तमाम लड़कों से बदला लेने पर तुल गया। लाला रुप्पन ने सभी मन्त्रियों को फोन किया। मन्त्रियों ने विशेष कदम का आदेश नहीं दिया तथा रुप्पन की बातें नहीं मानीं।

तब रुप्पन लाला ने योजना बनाकर साम्प्रदायिक विरोध फैलाने की कार्यवाही की। मुसलमान लड़कों को भड़का दिया। वैद्य पं० गोडबालों के

मकान में आग लगा दी। विद्रोह की लहर फैला दी। धन के बल पर सब किया गया।

बारहदरी को गिराकर धर्मशाला की नींव डालने की भी योजना बनाई।

रात को आठ बजे लाला रुप्पन के घर बैठक हुई। प्रदेश के मन्त्री तथा गणमान्य व्यक्ति व सेठ लोग थे।

मुसलमान लड़कों के विरोधी कामों से जनता लाला रुप्पन सेठ की विरोधी हो गई; सरकार भी रुप्पन के विरोध में हो गई। पासा लाला के हाथ से आधा निकल चुका था।

दूसरे सेठ वर्ग लाला रुप्पन की धर्मशाला को पंचायती रूप देना चाहते थे। लाला रुप्पन के लड़के ने विरोध किया। लाला राधारमन सेठ के वर्ग ने रुप्पन को जाल में फँसा लिया। इस प्रकार बनियों ने बनिये को काटा।

निर्णय यह हुआ कि राजा किमोराय के टीले पर बारादरी पर पुस्तकालय व अध्ययन शाला बनाई जाएगी। बीच के भाग में दुकानें बनवा देंगे जिससे पुस्तकालय का खरचा चलता रहे। व्यायाम शाला भी बनेगी। इस प्रकार छात्र-संघ की माँगें स्वीकृत हो गयीं।

लाला रुप्पन की पतंग कट चुकी सभी लोग मिलकर पुत्ती गुरू का अनशन तोड़ने गये।

कथांश—२६. लच्छू (लक्ष्मीनारायण खन्ना) भाग्य से पहली बार विदेशी रूस देश की यात्रा करने गया। श्रीमती उषा माथुर की कृपा से यह सौभाग्य लच्छू को प्राप्त हुआ। रूस के सभी बड़े शहरों की यात्रा लच्छू ने की और विदेशी सस्कृति का परिचय प्राप्त किया। अनेकों नये अनुभव किये। लच्छू का व्यक्तित्व अभी दोहरा नहीं था लेकिन अगर सारस लेक के शैतानी चलन से उसका सम्बन्ध न टूटा तो एक दिन उसका व्यक्तित्व भी दोहरा हो जायगा—फिर तिहरा, चौहरा—अन्ततः बिखराव हो जायगा।

कथांश—२७. रमेश की परीक्षाएँ पूरी हो चुकी थीं। वह खन्ना साहब की कृपा से 'इण्डिपेण्डेण्ट' अखबार में नौकरी भी पा चुका था।

इसी समय रानी की सौतेली मां ने रानी का मन देखकर उसके पिता से ब्याह की बात चलाई। रद्धूसिंह सुनकर बिगड़ उठे। सौतेली माँ बोली कि

यदि पुरुष विधुर होने पर दूसरा ब्याह करने का अधिकारी है, तो स्त्री को भी अधिकार है। इस बात पर पति-पत्नी में इतना झगड़ा बढ़ा कि उनमें आपसी बोलचाल तक बन्द हो गई।

अपना रहस्य खुल जाने पर रानी ने रमेश से विवाह करने का अपना दृढ़ निश्चय पिता और दादी को बतलाकर घर छोड़ दिया तथा खन्ना साहब के घर में शरण ले ली।

रद्धूसिंह रमेश से लड़ने उसके घर पहुँचे तो पुत्ती गुरू को भी पता लग गया। उनको इस सूचना से गहरा आघात लगा। पर दोनों ही पिता नये समय के आगे विवश थे।

रमेशचन्द्र गौड़ और रानीबाला राठौर का विवाह समारोह अलक्ष्य में राजनीति से जुड़कर नगर के उद्योगपतियों, कुछ अफसरों, मन्त्रियों, महापालिका के सभासदों और कुछ राजनीतिक व्यक्तियों के लिए भी महत्वपूर्ण हो गया। संयोग से ही ऐसे बानक बन गये थे।

विवाह के बाद रमेश को अपने लिए एक घर की आवश्यकता थी। रमेश ने खन्ना जी से कहा, खन्नासाहब ने उसे एक पत्र देकर नगर के प्रसिद्ध उद्योग पति और मकानपति हाजी नबीबख्श के पास भेज दिया।

हाजी नबीबख्श साहब को शादी का निमन्त्रण मिल चुका था। हाजी साहब से रमेश की बातचीत हुई और रमेश को मकान मिल गया।

हाजी साहब ने खन्ना साहब को फोन करके यह कहा कि चूँकि सड़क वाले मामले के लिए महापालिका की मीटिंग इस शादी से एक ही दिन बाद होने वाली है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि जलसे में मुख्य-मन्त्री, हरिकिशनदास और दस-पाँच खास-खास लोगों के नाम भी आप जोड़ लीजिए। इन लोगों का लाना मेरा काम होगा।

खन्ना साहब तुरन्त राजी हो गए। हाजी साहब हमेशा डॉ० आत्माराम को समाजवादी कामों में तन-मन-धन से उनका साथ देते थे। इस जलसे की आड़ में हाजी साहब अपने प्रतिद्वन्द्वी को एक अत्यन्त नाटकीय कूटनीतिक पराजय देने के लिए, अपनी एक चाल को अन्तिम सांस्कृतिक चरण के रूप में ढाल देना चाहते थे। खन्ना साहब भी उसी क्षेत्र के एक नायक और श्रमजीवी

पत्रकार को शादी के बहाने अपनी सहानुभूति भरी पब्लिसिटी लेने के लिए ललक उठे।

इधर हाजी साहब ने हवा फैला रखी थी कि डॉ० आत्माराम और मुख्य मन्त्री की बातें हो चुकी हैं। राजधानी होने के कारण यहाँ की 'इण्डस्ट्रियल' इस्टेट का विशेष महत्व है।

उधर नगर के सबसे बड़े धनपति लाला राधेरमन ने गहरे में रुपया बँटाई की थी। रुपया बँटाई और खातिरदारी दोनों ओर इतनी हुई कि सभासदों की नैतिकता किसी भी स्तर पर न रह सकी थी। हाजी साहब और लाला राधेरमन दोनों ही पक्ष स्वयं अपने फेंके हुए जालों के भ्रम में बँध गए। यह कहना कठिन था कि कौन किस पक्ष में अपना वोट देगा। हाजी साहब इस पार्टी में इन सभासदों, लखपतियों और आम जनता को एक बड़े रहस्यवादी मौन ढंग से यह प्रभाव देना चाहते थे कि मुख्यमन्त्री, अखबार साम्राज्य डा० आत्माराम उनके साथ हैं। हाजी साहब तो यहाँ तक चाहते थे कि लड़के के धर्म पिता बनाकर लड़के की बरात लेकर खन्ना साहब के घर जायें पर खन्ना साहब को यह पसन्द न था।

गोडबोले के घर सभी जा रहे हैं। छात्रसंघ के सभी साथी हैं। छैलू और लच्छू को छोड़कर। रमेश की अम्मा, बहन, बहनोई, मुन्ना, रानी की सहेली और रमेश की बहन, रद्धू सिंह आदि।

महापालिका के सभी सदस्य, मुख्य-मन्त्री व मन्त्रीगण, उद्योगपति पूँजी-पति वर्ग, सरकारी अफसर, लाला रुप्पन सेठ, आदि सभी महान् व्यक्तियों ने शादी में भाग लिया। हर वर्ग के सदस्यों ने आपसी वार्तालाप भी किया। आपस में बातें भी हुईं। रमेश और रानी को आशीर्वाद भी दिया। मुख्यमन्त्री डॉ० आत्माराम आदि गणमान्य व्यक्तियों ने सार्वजनिक रूप से भाषण दिया। विधवा विवाह व अन्तर्जातीय विवाह का महत्व भी बताया गया।

रमेश ने अपनी अम्मा को बता दिया कि—हुसैनाबाद में अलग मकान ले लिया है। इस पर अम्मा को आघात लगा।

समीक्षा—मुख्य कथानक के घटना-चक्र से स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार से पूँजीपति वर्ग, सरकारी नेतागण तथा समाज सुधारक और धार्मिक

वर्गअपनी कूटनीति व राजनीति देश में फैलाते हैं तथा अपना स्वार्थ पूर्ण करते हैं।

कथांश २८—रमेश और रानी अपने लोगो से बिदा होकर हाजी साहब की एक गाड़ी में, अपने नये घर की ओर चज दिये। सारा गृहस्थी का सामान पहले ही पहुँचा दिया था। रमेश और रानी अपने माँ-बाप क दुःख के बारे में सोचने लगे।

रमेश व रानी रात में अपने जीवन के बारे में अनेकों प्रकार की बातें करते हुए सो गये। प्रातः उठे। रमेश चाय पीने के बाद खुदायार खाँ के हाते में रात को मचने वाले शोर का पता लगाने गया। रानी नहाने धोने लगीं। इतने में कुँवर रद्धू सिंह आये।

अपनी बेटी के लिए साड़ी और ब्लाउज का कपड़ा तथा दामाद के लिए एकसोने की अँगूठी औरमिठाई लाये। रानी से अपना रोना रोने लगे: तुम्हारी नई अम्मा ने तो जैसे जनम भरही के लिए बैर साध लिया। उसे समझाओ न, तुम्हारे ब्याह की खातिर ही उससे हमारी कहासुनी हुई थी। अब तो ब्याह भी हो गया और देखो, हम राजी भी हो गये। अपने बाल-बच्चों से भला किसी का वैर हो सकता है ?'

पिता के दुःख पर रानी को मन ही मन हँसी के साथ दया भी उपजी! प्रकट रूप से कहा कि आज ही नयी अम्मा को समझाएगी।

साढ़े नौ-दस के लगभग खन्ना साहब का नौकर खबर लाया कि—'पुत्ती गुरू सवेरे मोहल्ले के कुँए में आत्महत्या करने के लिए कूद पड़े थे। लोगों ने बचा लिया। पुत्ती गुरू कह रहे थे कि मेरे लडके व बहू हुसैनाबाद में मुसलमान बनने के लिए गये हैं, जान दे दूँगा!' आप दोनों वहाँ हो आवें।

रमेश दफ्तर चला गया। रानी रमेश के घर यानी ससुराल चली गई।

कथांश २९—श्रीमती उमा माथुर का विशेष कृपापात्र होकर लच्छू रूस तो अवश्य घूम आया, पर सारसलेक आते ही उसकी नौकरी भी खत्म हो गई।........'दुनियाँ भर के चक्कर खाये, लौट के 'बुद्धू' लच्छू घर को आये।'

घर आने की खुशी है, पर उसकी तह में एक अफसोस भी है। जो आराम, सुविधा सारसलेक मे थी, वह गरीब घर में कहाँ से प्राप्त हो ? भाई, भाभी, छोटे भाई-बहिन, पिताजी को रूस से जो वस्तुएँ लाया था, अलग-अलग भेंट स्वरूप दीं। अनेकों प्रकार की बातचीत हुई। मोहल्ले की बातें भी मालूम हुई। लच्छू अपने साथियों से मुलाकात करना चाहता था। पर घर के ही सभी लोग उसके पास थे। रात के सुख-दुख के अनुभवों की कल्पना करता रहा। लच्छू अब बड़ी आमदनी चाहता है।

कथांश ३०—लच्छू सुबह झटपट उठकर तैयार हो गया। दोस्तों के उपहार जेब में रखे और बगैर चाय पिये ही घर से निकल पड़ा। जयकिशोर के घर गया, उसे सिगरेटकेस दिया। हरों को बुलवाया। फिर तीनों शामराव गोड-वाले के यहाँ पहुँचे। कम्मी बुलवाया गया। लच्छू को पाकर हर मित्र मगन था। पाँचों मित्र अब रमेश के घर पहुँचे।

दो घण्टे बड़ी मौज बहार के बीते। घड़ी पाकर रानी बेहद मगन थी। लच्छू यहाँ के हाल जानने को उत्सुक था और यार लोग रूस के। छैलू का गायब हो जाना सबके लिये दुखदायी हो उठा।

शामराव गोडबोले को अमीरोंकी छात्रवृत्ति मिल चुकी है। गोडबोले अपनी दवाओं का काम ही आगे बढ़ायेगा और इसी के लिए अमेरिका शिक्षा लेने जा रहा है। पासपोर्ट के लिये दौड़ धूप कर रहा। कम्मी अफसरी चाहता है। इसलिये आजकल कांग्रेस के नेताओं की खुशामद में लगा है।

हरों इधर-उधर नौकरी के लिए अर्जियाँ देता फिर रहा है। जयकिशोर अपनी विधवा सास के द्वारा ससुराली कारखाने पर कब्जा करने में लगा है। इस तरह लच्छू ने देखा कि सभी साथियों में परिवर्तन हो गया है। सिर्फ हरों वैसा का वैसा है। सभी के जाने के बाद रमेश और लच्छू में बातचीत हुई। लच्छू ने नौकरी छूटने का कारण बताया। भावी भविष्य के बारे में अभी वह कोई निर्णय नहीं कर सका है।

लच्छू दो दिनों के बाद ही घर में बेगानापन अनुभव करने लगा। उसका घर दो भागों में विभाजित हो चुका है। एक में माँ-बाप व भाई-बहन और दूसरे में भाई-भाभी व उनके लड़के थे।

लच्छू ने भाभी से कहा कि मैं घर का हिस्सा नही माँगूँगा। मैं अलग-अलग रहूँगा। किसी धन्धे में पैर जमाऊँगा। भाभी अपने देवर को अलग करना चाहती थी। इसलिए लच्छू के लिए अच्छे कमरे की व्यवस्था भी कर दी।

दोनों भाइयों में आपसी बातचीत हुई। भाई ने कहा—'लच्छू हजरत-महल पार्क में एक कॉफी प्लांट और एक क्वालिटी की आईसक्रीम—'हर काम में सिर्फ पूँजी ही नहीं, अकल भी चाहिए। लाला राधेश्याम आजकल रोजगार योजना चला रहे हैं।'

वीरचन्द मुलायमचन्द दोनों को पटाओ तुम्हारी तो बचपन की जान-पहचान है। लाला रुप्पन के दोनों लड़कों ने बँटवारा करा लिया है। मुलायमचन्द हाजी साहब के साथ हैं और वीरचन्द राधेश्याम का पल्ला पकड़े है।

लच्छू (श्रीयुत लक्ष्मीनारायण खन्ना) ने अपने गृह-प्रवेश और अपने मित्र गोडवोले के अमरीका पढ़ने जाने की खुशी में एक पार्टी दी। पार्टी में रुप्पन लाला के दोनों बेटे राधारमन के बड़े पुत्र, हाजी साहब के बेटे खोखा मियाँ, खन्ना साहब और रमेश आदि उपस्थित थे।

कथांश ३१—लच्छू एक के बाद एक हर सेठ से मिला, परन्तु किसी ने भी हाथ नहीं रखने दिया। वह सेठों से निराश हो गया, पर फिर विचारों के मन्थन से लच्छू को एक नई सूझ मिली। सोचने लगा कि जब तक इन बड़ों से अपना ठेंगा न पुजवाऊँगा तब तक काम न बनेगा 'लगा तो तीर, नहीं तुक्का तो है ही।' और तीर चल गया। यूनियनों के नेताओं का पता लगाकर उनसे जान-पहचान करके अपनी ओर मिला लिया। फिर होटल एवं सुविधा के लिए आन्दोलन शुरू करा दिया। कारखानों में मजदूरों ने हड़ताल कर दी।

अन्त में लच्छू की विजय हुई। उद्योगपुरी में 'पैराडाइज' रेस्ट्राँ का उद्घाटन सन् इकसठ में हुआ। उद्घाटन के दिन रमेश, रानी, बड़े भैया, माया भाभी, लच्छू के पिताजी, कम्मी, रुप्पन, बँजू लाला, गोडवोले वैद्य जी आदि सम्मानित गण आये।

इस तरह से लच्छू का काम आसानी से हो गया।

कथांश २२—नये वर्ष का पहला दिन है। सुबह के आठ बजे हैं, हाजी नवीबख्श की कोठी में शहर के दो-ढाई सौ सम्भ्रान्तों और प्रतिष्ठितों की भीड़ थी। आज हाजी साहब पुराने सर्राफे बाजार के पास से होकर उद्योगपुरी जाने वाली नई सड़क के निर्माण-कार्य का उद्‌घाटन करने जा रहे थे! एक महीने पहले महापालिका ने बहुमत से उनका प्रस्ताव पास किया था। इसलिए उनकी कोठी में दावते हो रही हैं। हाजी-साहब के तीनों साहबजादों के चेहरे खुशी और अभिमान से दमक रहे थे। (अब्बू मियाँ, नादिर मियाँ व खोखा मियाँ) हाजी के तीन बेटे हैं।

हाजी साहब के प्रतिद्वन्द्वी वर्ग—लाला राधारमन सेठ को गंगाजल-तुलसी दिया जाता है। वे अब तक हैं। उनके बेटे रेवतीरमन द्वारा उस मार्ग-योजना के असफल हो जाने पर, हाजी साहब के विलास और अनीति की कमाई के इतिहास को लेकर बड़ा घिनौना और बड़ा ही जोरदार प्रचार अभियान चलाया था। अब्दुल हसनखाँ छोटी बेगम लखतेजिगर के बेटे, नादिरबख्श, शादी शुदा औरत के बेटे, और खोखा मियाँ एक बंगालिया तवायफ के बेटे हैं। इस प्रकार हाजी साहब की एक पत्नी व दो रखैल यानी उप पत्नियाँ हैं। इस तरह हाजी साहब का प्रारम्भिक जीवन-चरित्र अच्छा नही था। आज हाजी की कलंक-गाथा भी फिर से चाँद के कलंक की तरह सुहानी बन गयी। आज उनकी खुशी का दिन है।

परन्तु इस सारे आलम में स्वयं हाजी साहब मन ही मन दु:खी हैं। उनका हक में ईमान और इंसानियत की सचाई के प्रति एक अगम खोखलापन नजर आने लगा था।

बात बनाने का अन्तिम यश लच्छू को अचानक ही मिल गया। लच्छू दुनियादारी की आदत के कारण रेवतीरमन से मिला था। रामलीला कमेटी में हाजी साहब से इक्कीस हजार रुपया नजर करवाया था। इससे विरोधी भी हाजी साहब के पक्ष में हो गये और हाजी साहब की माँग को महापालिका ने स्वीकृत कर दिया। उसी कारण से यह उद्‌घाटन आज हाजी साहब करने वाले हैं।

कथांश ३३—नई सड़क के निर्माण-कार्य का उद्‌घाटन न हो सका। हाजी साहब जैसे ही सभा-मण्डल में पहुँचे, वैसे ही शोक-समाचार दिया गया कि सेठ राधारमन अब नहीं रहे।

लाला राधारमन सेठ मरते-मरते हाजी साहब के मुँह चूना लगा गया। सभी सम्भ्रान्तों को शवयात्रा में जाना है। कइयों ने सुझाव दिया कि इस सड़क का नाम राधेरमन मार्ग रक्खा जाय।

सभी वर्ग के लोग सेठ राधारमन के यश-अपयश की सामजिक गाथाओं में खो गये। सभा विसर्जित हुई, भीड़ निकली।

रमेश और उसके साथी लच्छू के घर गये। यहाँ पर हर्रो से मजाक करने लगे। बातचीत में लच्छू ने हर्रो को नौकरी से अलग कर दिया। जयकिशोर और रमेश में वाक्-युद्ध हो गया। अन्त में किसी हद तक एक दूसरे से चिढ़कर दोनों ओर से बहस समाप्त कर दी गई। मित्र गण अपने-अपने घरों के लिये चल पड़े।

कथांश ३४—रमेश ने घर में हर्रो के परिवार की चर्चा चलाई तो पुत्ती बोले श्यामबाबू के बाप मनुष्य की देह में राक्षस रहे। जनम भर दूसरों की आहे, कराहे ही बटोरीं। आप तो सारे पाप करके भी सुख-चैन से मरे और गऊ समान विचारे बेटे को बाप के पाप भागने पड़ रहे हैं।

रमेश साठ रुपया महिना बाप को देता है! पचास रुपया महिना बन्नो के ब्याह के लिये अम्मा की डाकखाने वाली पास-बुक में जमा कराता है और दस रुपये सुरेश की पढ़ाई के देता है। अभी अलग हुए छह महीने ही हुये हैं फिर अम्मा, बाबू, भाई, बहन, सभी के कपड़े बनवा दिये हैं। खर्च भी दिया है।

रानी की सौतेली माँ अब रानी से खर्च नहीं माँगती। फिर भी रमेश के कहने से रानी अपने सौतेले भाई-बहिन का खर्चा उठा रही है और अपना घर-खर्च करने के बाद भी रमेश पचास रुपये हर महीने श्रीमती रानी बाला गौड़ के हिसाब में बैंक में जमा करता है। इस प्रकार रमेश अपने घर और ससुराल दोनों का ध्यान रखता है।

लच्छू अपने परिवार का ध्यान नही रखता। उसे तो सिर्फ अपनी ही परवाह रहती है। कम्मी और गौडबोले तो बड़े बाप के बेटे हैं। जयकिशोर ससुराल के माल से लक्ष्मीनारायन बने हुए हैं।

रमेश के सामने जीवन का स्पष्ट लक्ष्य है। अपनी उन्नति करने के साथ ही साथ वह सामाजिक उन्नति के लिए कर्मशील होना चाहता है। रानी ने रमेश को व्यावहारिक मति-गति और मुक्ति दी है। रमेश यों तो रानी से अनुरक्त था ही, पर शादी के बाद अन्धभक्त हो गया है। रानी और रमेश खन्ना साहब के उत्तराधिकारी होना चाहते है। इसलिए तन, मन, धन से खन्ना परिवार की सेवा करते हैं। खन्ना साहब और बहिन जी भी दोनों को अपने पुत्र के समान रखते हैं।

नवम्बर ही में आम चुनाव होने वाले हैं। इसलिए डा० आत्मारामने अपने सभी अखबार-सम्पादकों को निर्देशित किया कि सभी महान् व्यक्तियों, मंत्री गणो, पूंजापतियों आदि की पोलें सप्रमाण खोली जाएं।

रमेश आजकल उसी में लवलीन है। रानी कहती है, जैसे बाढ़ में लड़ाई थी, वैसा ही चमत्कार अब भी दिखला दो, तो विदेश-यात्रा कर ले।

जिधर देखो उधर रमेश का नाम है। क्योंकि वह पिछले पखवारे चार सनसनीखेज समाचार दे चुका है।

ठण्डक अधिक है। रमेश ससुराल पहुँचा। यहाँ सुमित्रा यानी रानी की सौतेली माँ से बातचीत हुई। रमेश और रानी घर जाने लगे। रानी उदास है। उसके पिता के घर में अशान्ति है। कुंवर रद्धू सिंह व सुमित्रा का तनाव अब अन्तिम सीमा पर पहुँच गया है। रद्धू सिंह बैंजूलाला और उनकी उपपत्नी वहीदन के साथ अधिकतर रहते हैं। अब रद्धू सिंह के पास अधिकतर रुपये रहते है। पता नहीं बैंजूलाला व रद्धू सिंह क्या करते हैं। सुमित्रा अपने बाल-बच्चों को लेकर नीचे के भाग में रहती है। पति से एक रुपया भी नहीं लेती थी। कुछ रुपये मेहनत से कमाती है तथा रानी थोड़ी बहुत मदद कर देती है। सुमित्रा जब काम पर जाती तो अपने पुत्र बजरंगसिंह को बहन जी के घर नौकर बिदादीन को दे जाती है।

एक दिन रद्धू सिंह अपने पुत्र बजरंगसिंह को ऊपर ले गये। सुमित्रा को

काम पर जाना था। बहुत देर हो गई, कहा भी फिर भी, उसके पति पुत्र को नहीं छोड़ गये। तो सुमित्रा बिदादीन के पास गई। सभी बातें बता दीं। बिदादीन आधा घण्टे में बजरंगसिंह को ले आया। दूसरे दिन जब रद्धूसिंह पुत्र को लेने लगा, तो सुमित्रा से हाथा पाई हो गई। माँ ने पुत्र नहीं दिया। रात को पी के बहीदन के घर से सुमित्रा को बहुत कुछ कहा। सारी रात बहीदन के यहाँ पर रहे।

रानी ने सारी बातें रमेश को बता दीं। रमेश ने कहा। ये जुए का अड्डा शायद बैजूलाला का है। तुम कल घर जाना और नई अम्मा से कहना कि—"बैजूलाला से कहें कि—आप मेरे पति को दिन रात वाही-तबाही बकने से रोक दीजिए, नहीं तो मैं अपने जेठ कोतवाल के पास जाऊँगी।"

इस उपाय से शायद सुमित्रा का घर में रहना सम्भव हो पायेगा।

कथांश ३५—"चौधरी" सुगन्धियों की दुनियाँ में जाना माना एक ऊँचा नाम है। इत्रों, सेंटों और शृंगार-प्रसाधनों का कारोबार है और लाखों रुपये साल का बिजनेस अब तक होता है। चौधरी साहब गोलोकवासी हो गये।

उनकी विधवा श्रीमती चारुलता चौधरी चालीस पैंतालीस वर्ष की हैं। बड़ा लड़का बाईस-तेईस वर्ष का है। फ्रांस में काम सीखने गया है। चौधरियों का कारखाना एक प्राइवेट लिमिटेड संस्था के आधीन है। मंझले चौधरी को मरे कुछ वर्ष हुए हैं। उनके सभी लड़के नालायक निकले, उन्हीं के हिस्से हथिया-कर लाला रेवतीरमन इस धन्धे में घुसे। रेवती रमन ने श्रीमती चारुलता चौधरी को अपने कब्जे में कर रखा है। श्रीमती चौधरी अपने आप को आर्थिक सुरक्षा से बचाने की कोशिश में हैं। बनर्जी चौधरी के जनरल मैनेजर है। बनर्जी कुर्सी पाकर अब अपना जाल फैला रहे थे। चौधरी की लड़की उनके कहने में थी। यहाँ तक श्रीमती चौधरी को भी वह अपनी तरफ करना चाहते थे। ताकि पूरा व्यापार उनके हाथ में आ जाये। लाला रेवती रमन भी बनर्जी की चाल को जानते थे। परन्तु परिस्थितियाँ विपरीत थीं। एकाएक बनर्जी को निकाल नही सकते थे। इधर मिसेज चौधरी पूरी बेबसी को हालत में रेवती रमन के पिंजरे की चिड़ियाँ हैं, किसी तरह से उनसे मुक्त होना चाहती है।

इसलिए बनर्जी की तरफ ध्यान दे रही है। रेवतीरमन के पास उनकी काली कमाई की कुंजी है।

लच्छू किसी हद तक इस किस्से को जानता था, इसलिए रेवतीरमन लाला से मिला। रेवतीरमन ने कहा तुम श्रीमती चौधरी से मिलो और अपनी तरफ से उसे एम० पी० के चुनाव मे खड़ा कर दो तो मेरा और तुम्हारा दोनों का काम हो जायगा।

लच्छू ने जाल फेंका और श्रीमती चारुलता चौधरी लच्छू (श्री लक्ष्मीनारायण खन्ना) के चक्कर में आ गई और चुनाव में कांग्रेस पार्टी की तरफ से खड़ी हो गई।

लाला रेवतीरमन, श्रीमती चौधरी और लच्छू एक तरफ हो गये। लच्छू की दूकानदारी चालू हो गई।

दूसरी खोखाँ मियाँ ने श्रीमान् बनर्जी को श्रीमती चौधरी के विरुद्ध चुनाव में खड़ा किया। पी० एस० पी० पार्टी से टिकट मिल गया। दोनों तरफ से चुनाव की योजना बनी। रेवतीरमन और खोखा मियाँ दोनों पूँजीपतियो के बीच में लच्छू अपनी शतरजिया गोट बिछा देता है। भाग्यशाली बनने के जुनून मे उसे दीन-दुनियाँ का होश न था।

कथांश ३६—चुनाव के प्रचार हो रहे हैं। लच्छू को अब पलक मारने का भी अवकाश न था। दोनों तरफ से नैतिक, सामजिक, आर्थिक तथा व्यक्तिगत आदि तरह से चुनाव-प्रचार हो रहा था।

खोखा मियाँ ने लच्छू को 'पैराडाइज' से निकाल दिया। लच्छू के पास चुनाव में चार-पाँच हजार रुपये अनैतिक साधन से हो गये थे उसने श्रीमती चौधरी की फोर्ड गाड़ी ले ली। लच्छू हाजी साहब के पास गया। सब बातें बता दीं। हाजी और खोखा मियाँ यानी बाप-बेटे में अनबन हो गई। रेवतीरमन ने अपना स्वार्थ पूरा करके लच्छू से सम्पर्क समाप्त कर दिया। इस चुनाव में लच्छू खोखा मियाँ के आठ होटलों की समाप्त कर चुका था, यानी आग लगा दी थी अब श्री लक्ष्मीनारायण खन्ना चारो कौने चित हो गये हैं।

श्रीमती चौधरी चुनाव जीत गई हैं।

कथांश ३७—मुहर्रम के दिन शहर में दंगा हो गया। पुराने सर्राफे बाजार में दो सौ गुण्डों की भीड शाम को चार-पाँच बजे एकाएक घुस आई।

कत्ल होने लगे, दूकानें लुटने लगी और सुना गया कि रूपचन्द लाला की कोठी को जलाने की कोशिश भी की गई। लाला बैजू व रद्धूसिंह के घरों में भी आग लगाने की कोशिश की गई। मन्दिर भी तोड़े गये।

रमेश उस समय लोहामण्डी में था। उसे रेलवे से चुराये गये लोहे के सामान के एक बहुत बड़े गुप्त गोदाम का पता दिया गया था। भेदिया बशीर खुद साथ था। बशीर को मुसलमानी क्षेत्र की सरहद पर छोड़कर रमेश पुराने सर्राफे के पास पहुँचा तो पुलिस ने पूछताछ की, रमेश ने अपनी जानकारी दी, क्योंकि शहर में कर्फ्यू है। रमेश इस समय ससुराल में था। इसलिए ससुराल से चला गया। रद्धूसिंह ने कहा रानी बहिनजी के यहाँ है। घर पर मकानों में आग आदि लगाने पर बातचीत हुई।

लाला बैजूलाला की बैठक पर सभी लोग बैठे हैं। बातचीत हो रही है। लाला ने कहा कि—"ये हिन्दू मुस्लिम दगा नहीं है, बल्कि किसी और चाल-बाजी के लिये यह खून खराबा हुआ ?"

दंगे की वास्तविक घटना यह है—लाला रूप्पन का छोटा लड़का मुलायम और खोखामियाँ का बेटा रफअत दोनों एक लड़की को चाहते थे। लड़की बदचलन है। मुलायम और रफअत दोनों कुछ दिन इकट्ठे उसे साथ लेकर घूमे। बाद में लड़की आई मुलायम के कब्जे में। दोपहर में यूनिवर्सिटी के पास वाले बस-स्टैण्ड से एक मोटर उसे जबर्दस्ती खींच कर उड़ा ले गई। मुलायम को मालूम हो गया। उन्होंने गुर्गे छोड़े। लड़की (कु० गोपी) की लाश रात को साढ़े ग्यारह बजे खोखामियाँ के बँगले से डेढ़ मील दूर तालाब के पास मिली। पुलिस पहुँची। भारी जाँच हुई। रात को खोखामियाँ की कोठी में आग लगा दी गई। रफअत को बचा लिया गया। मगर खोखामियाँ ने उसी का बदला लेने के लिए आज नगर में रूप्पन लाला की कोठी में आग लगवाई और इस हिन्दू-मुस्लिम दंगे का नाटक रचा गया। रमेश के मन प्राण यह सुन-कर विद्रोह कर उठा। रमेश खन्ना साहब के घर गया।

खन्ना साहब के दफ्तर में सुप्रतिष्ठितों का मजमा लगा हुआ था। हाजी नबीबख्श साहब, लाला बैजू, लाला, रूपचन्द और डा० अशरफ आदि उपस्थित थे। दंगा शान्त कैसे हो ? इस पर बातचीत हो रही है। हाजी साहब बोले—"एक

ही तरीका है, खन्ना साहब, कल किसी तरह मेरा और लाला रूपचन्द साहब का यह स्टेटमेण्ट छप जाए कि ये जो मामला है, उसे हिन्दू-मुसलमान ही क्या, दुनिया का हर धर्म-मजहब बुरी से बुरी बात मानता है। हिन्दू-मुसलमानों दोनों को मोर्चा बनाकर रोकना चाहिए न कि आपस में लड़ जाना चाहिए।"

गरीबों की सहायता की गई। दंगा शान्त हुआ।

कथांश ३८—बिना पेट्रोल की पचर पहियों वाली मोटर की तरफ लच्छू अपने कमरे में निकम्मा पड़ा था। लच्छू इन सब पैसे वालों से बदला लेना चाहता है। खोखामियाँ से उसने तो किसी हद तक अपना बदला भी लिया है। गोपी की हत्या का बदला भी।

लच्छू सोचता है कि—डॉ० आत्माराम से मिलकर छोटी पूँजी का उद्योग खोला जाये। अतः वह सारसलेक भी जाता है। परन्तु सेन साहब उसको डॉ० आत्मारामसे नहीं मिलने देते। योजना पूरी नही होती। सेन साहब लच्छू को दुत्कार कर भगा देते हैं।

कथांश ३९—हाजी साहब ने खोखामियाँ और रफअत मियाँ को कानून के शिकजे से बचा लिया। खोखामियाँ ने देख लिया कि वे किसी की भी सहानुभूति और सहयोग नही पा सकते। हाजी साहब ने स्पष्ट कह दिया कि हमारे लिये तुम और तुम्हारे लिए हम अब मर चुके है। खोखामियाँ अब सारी दुनियाँ से नफरत करने लगा। उसके पास एक होटल और दो रेस्ट्राँ हैं, बस। बाकी बरवाद हो गया। सभी कुछ इधर-उधर करके बावन हजार रुपया रोकड़ बनाई। वह अपने पिता को अपना शत्रु मानता था। खोखामियाँ की योजना दोरुखी थी। एक ओर अपने शत्रुओं को आपसी झगड़ो में उलझाये रखना चाहता था और दूसरी ओर अपनी व्यावसायिक गतिविधि को जमाने की आँखों से दूर, गाँवों के बाजारों के एक नव संगठन से अपने नियंत्रण में लेना चाहता था। दुनियाँ में ऐसी कोई शक्ति नहीं, जिसे युक्तियों से विभक्त न किया जा सके।

खोखामियाँ ने नये रूप में समाज में प्रवेश किया। "ॐ राष्ट्रीय दुग्धालय" का साइनबोर्ड टाँगा। अन्दर ताड़ी बेची जाने लगी। काले धन को जिन उपायों से उजला बनाया जाता है, उन्हीं उपायो से काले आदमियों, अपराधी, जरायमपेशा लोगों को भी उजला बनाकर एक दिन ऊँचे स्थानों पर पहुँचाकर सफेद-

पोशी बना दिया। खोखा मियाँ देखते ही देखते चमक गये। पर भद्र समाज में प्रतिष्ठा न मिल सकी। सभी डाकू आदि खोखा के साथ हैं।

खोखा को प्रतिष्ठा की आवश्यकता थी। किसी प्रकार चतुराई से डा० आत्माराम से सम्बन्ध स्थापित किया और चेम्बर ऑफ कॉमर्स के सदस्य बन गये। इस प्रकार थोड़े समय में खोखा का नाम चारों तरफ हो गया।

हाजी साहब ने डा० आत्माराम को व्यक्तिगत रूप से सभी कुछ बता दिया। खोखा से सावधान रहने को भी कहा। डा० आत्माराम ने उनकी बातों की तरफ ध्यान नहीं दिया।

खोखा के संयोग से—आये दिन गाँव, शहर व कस्बों आदि में डाके, लूट-मार, चोरी और झगड़े होने लगे। कोई भी व्यक्ति खोखा पर शंका नहीं कर सकता था। उनके इन दो रूपो की एकता को कोई भी न जानता था।

संयोग से सबसे पहली जानकारी रमेश ही को मिली। वह किसी काम से सट्टीमल जम्बू परशाद की आढ़त मे पहुँचा। वहाँ खोखा मियाँ बैठे थे। इसके पहुँचने के दो ही मिनट बाद खोखामियाँ उठकर चले गये। लाला ज्ञानचन्द्र उन्हें बाहरतक विदा करने गये। खोखामियाँ की कुर्सी के पास एक छोटी डायरी पड़ी हुई थी। रमेश ने उठा ली। आजकल जाँच-पड़ताल का काम कर ही रहा है। एक बड़े आदमी को डायरी को झाँकने की बात-चीत हो आई। तभी बाहर आवाजों की हलचल हुई और वह डायरी दाहिने से जेब मे गई और बाँये हाथ से सामने पड़ा हिन्दी दैनिक उठा लिया। खोखा मियाँ डायरी खोजते हुए आये थे। चिन्तित चेहरा लेकर वापस लौट गये।

उस रात घर आकर खोखा मियाँ की डायरी पढ़ना शुरू की। अधिकतर लोगों से मिलने-जुलने या विभिन्न कार्यालयों के प्रोग्राम और समय लिखे थे, कहीं उन्ही तारीखों में कुछ संकेताक्षरों, व अन्य भाषाओं में कुछ लिखा हुआ है। डायरी की पिछली जिल्दबाजी पुश्त पर दो जगह अपने ससुर का नाम देखकर रमेश को खास दिलचस्पी हो गई।

"१४ जुलाई बाईस सौ रुपये, लाल साहब को रद्धू सिंह की मार्फत। पाँच अक्टूबर, पाँच सौ रुपये, रद्धू सिह।"

रद्धू सिह और बैजूलाला को रमेश जानता है। रजिस्टर्ड क्लब के बहाने जुए का बड़ा भारी अड्डा चलाते है। उसकी सौतेली सास सुमित्रा अपने

बच्चों को लेकर अलग रहती है। रानी की दादी परलोकगत हो चुकी है। वहीदन खुले आम रद्धूसिंह के साथ रहती है। इसलिए रमेश अपने ससुर रद्धू-सिंह से घृणा करता है। लाला साहब व वहीदन से पहले से ही घृणा करता है।

रमेश सोचता है कि इन लोगों के नाम के आगे रकम क्यों लिखी ? किस काम के लिए रकम दी गई। वहीं पर एक तरफ अंग्रेजी में लिखा है (आई०, एन०, डी० दिवस। पहला म० आक्रमण।के०।)।

इस वाक्य से रमेश अत्यधिक चिन्तित हो गया। अवश्य ही दाल में काला है। वह मनन करते-करते सावधान हो गया। आई० एन० डी० से अर्थ "इन्डिपेण्डेण्ट" से ही होगा। ता० २७ है रानी को समझाकर रमेश रात के एक बजे के आस पास खन्ना साहब के पास चला गया। साथ मे रानी को भी ले गया।

कथांश ४०—सत्ताइस अक्टूबर की रात। साढ़े ग्यारह के आसपास का समय ! 'इण्डिपेण्डेण्ट' कार्यालय के पीछे के भाग मे डॉ० आत्माराम, श्री आनन्द मोहन खन्ना, श्री लक्ष्मीनारायण खन्ना उर्फ लच्छू। सबके सब उदास बैठे है। कोई बात नहीं कर रहे है। सब घड़ी की तरफ देख रहे हैं।

डा० आत्माराम ने कहा— 'मशीन ! मशीन—"

"वह चल रही है और चलती रहेगी। रमेश ने बखूबी से हैण्डिल कर लिया है। दो सादीवर्दी के कांस्टेबल भी हैं। पूरा प्रेस सचेत हैं, जोश में है, रोष में है। अभी गद्दारों के नाम नहीं मालूम हो सके ! ईश्वर चाहेगा तो अखबार कल समय पर निकलेगा।"

"यानी ! यानी !! तुम जानते थे कि—"

"लगभग एक हफ्ते से।"—"मुझे क्यों नहीं बताया ?"

"बताया आदमियों को जाता है। देवता कब सुनते हैं ?"

खन्ना साहब ने तेजी में कहा ! मैने २० और २१ ता० दो दिन सेन साहब को सूचना भेजी थी। आपके जन्म-दिन के ही दिन सम्पूर्ण कम्पनी का नाश हो जाता। हजारों कर्मचारियो के सौभाग्य व ईश्वर-कृपा से बच गये। पूरा श्रेय रमेश को है।

डा० आत्माराम ने कहा—'खोखा मुझे खत्म करना चाहता है। उसने मुझे मिलकर मारा। मैं इन बदमाशियों का अन्त करके ही रहूँगा। ये समाजवादी क्षेत्र का काला बाजार है।"

लेकिन लड़ेंगे कैसे ? देवता बनकर राक्षस से लड़ेंगे ! सभी तरफ की टेलीफोन की लाइनें काट दी गई हैं। यहपूरा छापा मारा है। अभी और होना बाकी है। चौकीदार ने कहा—पोर्टियों में खड़ी एक मोटर जल रही है। डा० आत्माराम, लच्छू देखने गये। लच्छू का एक मात्र वैभव जल रहा है। लच्छू विवश खड़ा देख रहा था। खन्ना साहब को चिन्ता है। वे मोर्चे-मोर्चे पर दौड़ने लगे।

डाँ० साहब बोले—लच्छू तुम्हें खोखा ने अपने साथ गद्दारी करने की ये सजा दी है।

लच्छू ने बताया कि—सारस लेक से नौकरी छूट जाने से लेकर आज तक का अपना पूरा जीवन डा० आत्माराम को बता दिया और फिर रोने लगा।

डा० आत्माराम सेन के बारे में, लच्छू के बारे में और अनेकों प्रकार की बातों में विचार करने लगे और लच्छू को समझाने लगे। इतने में खन्ना साहब रमेश को लेकर आए।

खन्ना साहब ने कहा—'आपको बधाई देता हूँ डा० साहब ! कुदरत ने आज आपके दो कीमती रत्नों को दुश्मन के हाथों नष्ट होने से बचा लिया—मोटरी और रमेश।

डा० साहब और लच्छू ने आश्चर्य के साथ रमेश की ओर देखने लगे।

रमेश के खोखा मियाँ की डायरी पाने से लेकर अब तक का पूरा विवरण डॉक्टर ने सुना। क्लब सम्बन्धी लेख, उसके कारण क्लब पर पुलिस का छापा पड़ना, वहीदन का गायब होना। इन कई गम्भीर आरोपों के कारण खोखा मियाँ ने रमेश को ठिकाने लगाने की योजना बनाई थी। स्वयं इसके ससुर रुद्धूसिंह भी इनको समाप्त करना चाहते थे। लेकिन बाद में दामाद के लिए दया आ गयी। रुद्धूसिंह ने अपने चचेरे भाई, शहर कोतवाल शत्रुध्नसिंह को सारी बातें बतलादीं। खोखा की डायरी तक पुलिस के पास सहुँच चुकी थी।

रद्धू सिंह से कोतवाल साहब को मालूम हुआ कि—२७ अक्टूबर की रात को रमेश की हत्या की जायेगी। पुलिस ने अपना जाल बिछाया।

रमेश को ठीक समय पर मैंने लोगों की नजरों से हटा लिया। रमेश को खन्ना जी ने साइकिल पर नियमित मार्ग पर ही एक सज्जन के घर पर जाने का आदेश दिया। वहाँ से इनकी डमी बनकर एक सादी बर्दी कास्टेबल साइकिल पर आगे बढ़ा। लाला साहब दस मीटर भारी गाड़ी में अपने गुण्डों, का पूरा बौझ लेकर एक निश्चित स्थल से बेतहाशा स्पीड में दौड़े और पुलिस जाल में आगे जाकर फँस गये। गुण्डों को आत्म-समर्पण करना पड़ा, लाला ने आत्महत्या कर ली।

इसके बाद खन्ना साहब ने श्री सेन साहब के तार डा० साहब को दिये। मद्रास में प्रेस और अखबार का दफ्तर जल गये। पटना, कलकत्ता, बेजवाड़ा, बम्बई और अहमदाबाद से भी आगजनी के ही समाचार आये हैं। बम्बई और मद्रास में सबसे अधिक नुकसान हुआ है। सारस लेक की टेलीफोन लाइनें भी कटी हुई हैं।

डॉ० आत्माराम का भव्य दिव्य मुखमण्डल बर्फ की तरह सफेद और मुर्दे की तरह निस्तेज हो गया....। बीते इतिहास से खुद अपने लिए भी कुछ खैर सीख लेनी चाहिए थी। पश्चाताप करना पाप है। खन्ना, मैंने आदर्शों के लिए अपना सारा जीवन निछावर किया गलतियाँ बहुत की हैं मैंने, मगर ओछेपन, कायरता और किसी तरह की मानसिक शर्म से मैं कभी पीड़ित नहीं रहा, तुम जानते हो और आज भी नहीं रहूँगा। मैं ठण्डे और साफ दिल से यह घोषित करता हूँ कि लड़ने ही की तमन्ना है तो फिर लोहे से लोहा बजेगा।'

डा० साहब और खन्ना साहब की बहस और बातचीत हुई। फिर डा० साहब ने लच्छू और रमेश से पूछा।

'एक ही सर', रमेश उत्तेजित स्वर में बोला—'युद्ध, हर मोर्चे पर युद्ध।'

डा० साहब ने कहा—'ठीक है। विवेक बुद्धि और शक्ति तुम्हारी सहायक हो।' आगे कहा—(लच्छू की ओर इंगित कर) मैंने एक सही आदमी को

खोने की गलती की है। सेन से कहकर मेरे और उसकी भी इस गलती को सुधरवा देना।

उस रात खन्ना साहब के आदेश से रमेश और लच्छू दफ्तर की अतिथि-शाला ही में सोये।

पन्द्रह—आज उनतीस की रात्रि। उपन्यास पूरा हुआ मानों सन्तोष का झरना छूट गिरा।····लेकिन मैं अभागा क्यों ? मुझे तो काम पूरा करने से आस्था मिली है। मेरी सृजन शक्ति और उसकी क्रीड़ा सहज उल्लास अब तक ताजा और तेजवान है। मैं अपने मानस को और ऊँचे नैतिक वैचारिक सौन्दर्य के स्तर तक गति देने का साहस करता हूँ।

इस उपन्यास में सभी क्षेत्र का वर्णन कर दिया। मैंने पड़ बाबा से लेकर जीवन के जमाने तक का वर्णन किया।

उन दिन लिखते-लिखते रुक जाना पड़ा। अचानक माया मेरे कमरे में आ गई। उन्हे बेहद उदास और बेचैन देखा। मालूम हुआ मेरे तीसरे बेटे उमेश ने आत्महत्या कर ली।

इस बार आधुनिक सभ्यता की आसुरी लिप्सा ने मेरा हृदय रौंदा है। करीब-करीब तोड़ ही डाला है। उमेश ने ग्लानि भरा पत्र भजा था।

'जड़ चैतनमय, विष-अमृतमय, अन्धकार-प्रकाशमय जीवन में न्याय के लिए कर्म करना ही गति है। मुझे जीना ही होगा, कर्म करना ही होगा। यह बन्धन ही मेरा मुक्ति भी है। इस अन्धकार ही में प्रकाश पाने के लिये मुझे जीना है।'

उपन्यास के तत्वों की कसौटी पर

प्रश्न ३—उपन्यास के तत्वों और विशेषताओं के आधार पर 'अमृत और विष' उपन्यास की समीक्षा कीजिए ?

उपन्यास के तत्व हैं—कथावस्तु, पात्र और चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देशकाल-चित्रण, उद्देश्य और भाषा-शैली।

उत्तर—'अमृत और विष' उपन्यास कलात्मक प्रौढ़ता को प्राप्त है। नागर जी सामाजिक यथार्थ के कुशल चितेरे हैं। इस उपन्यास में भारतीय

समाज के विविध वर्गो का—अपनी कुशल और स्वस्थ चित्रण-शक्ति-द्वारा—सजीव चित्र प्रस्तुत किया है।

सामाजिक रूढ़ियों और अनाचारों, समाज की दुर्बलताओं और सीमाओं का विश्लेषण करके एक नवीन सांस्कृतिक युग का निर्माण किया है।

'अमृत और विष' उपन्यास समाज के उज्जवल और कलुषित दोनों पक्षों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है। उपन्यास के शीर्षक का यही संकेत है। दो पीढ़ियों पुरानी और नई का संघर्ष यहाँ प्रमुख रूप में सामने आया है। देश का राजनीतिक और सामाजिक जीवन इस उपन्यास में विचित्र हो गया है।

उपन्यास-कला का मूल्यांकन करने के लिये हमें निम्नलिखित दो बातों पर विचार करना अपेक्षित है :

कथावस्तु—उपन्यास की कथावस्तु सामाजिक और राजनैतिक व पारिवारिक है। कथा वस्तु दुहरी है। एक ओर लेखक अरबिन्द शंकर की आत्म कथा चलती हैं, जिसमें उनके परिवार की पूरी कथा आती है। लेखक ने अरविन्दशंकर की आत्मकथा या डायरी के रूप में एक लेखक की समाज के प्रति प्रतिक्रिया और उसकी लेख-प्रक्रिया का अच्छा परिचय दिया है।

इसकी कथा मुख्य उपन्यास की है। यह उपन्यास लेखक अरविन्दशंकर की रचना है और उनकी आत्मकथा के साथ-साथ धारावाहिक रूप में चलती है। यह कथा अपने में सुगठित और सुसम्बद्ध है। मूल कथा के साथ छोटी-छोटी प्रासगिक कथाएँ भी हैं जो उसी का अंग बनकर आई है। इसका कथा विस्तार व्यापक है, फिर भी कथानक की एकसूत्रता बनी रहती है।

उपन्यास की संक्षिप्त कथावस्तु इस प्रकार है। उपन्यासकार ने स्वयं एक उपन्यासकार की कल्पना की है, जिसका नाम है अरविन्दशंकर। जिसका जीवन बहुत कुछ असाधारण, बहुत घटनापूर्ण नहीं रहा और न जिसका पारिवारिक जीवन ही बहुत सन्तोषप्रद है। अपनी संगिनी माया से पूर्ण सहयोग और सदभावना पाने पर भी अपने बेटों और अपनी बेटी को जीवन-स्थितियों से उसको निराशा ही है। फिर भी उसका साहित्य-क्षेत्र में मान है और नगर में उसकी षष्ठिपूर्त्ति का आयोजन मनाया जा रहा है। उसी षष्ठिपूत्ति के दिन वह अपने पूर्वजों और अपने जीवन के अनुभवों के बारे में सोचता है और यहीं से

उपन्यास का ताना बाना शुरू हो जाता है। अरविन्द का पुत्र उमेश आई० ए० एस० की परीक्षा के अध्ययन के लिए मंसूरी चला जाता है।

फिर मुख्य कथावस्तु का निर्माण होता है। इस उपन्यास की शुरूआत तो पुत्ती गुरु की लडकी के ब्याह और बारात वाले अंक के वर्णन से होती है।

उपन्यास के प्रमुख युवा-पात्र अपने भीतर जिस तरह के मानसिक संघर्ष लिए सामने आते हैं। वे केवल कल्पित पात्र नहीं हैं, मन से गढ़ी हुई कठ-पुतलियाँ नहीं हैं, साइकिल लेकर ट्यूशन करते, बाप से लड़ते, गलियों में चुराकर बीड़ी पीते, प्रेम के सपने देखते। रमेश, लच्छू जैसे लड़के न केवल लखनऊ में, वरन् पूरे भारत के हर शहर में देखने को मिल जायेंगे।

उपन्यास के नायक रमेश और लच्छू अपनी बहिन की शादी की व्यवस्था करते हैं। पुत्ती गुरु की लड़की मन्नों का ब्याह है। चार भागों में पुत्ती गुरु की लड़की के ब्याह का सुन्दर, सजीव, कलात्मक और प्रभावशाली ढग से वर्णन किया है।

इस समग्र उपन्यास की नायिका रानीबाला राठौर जो मनो की सहपाठिनी है और ठाकुर रद्धू सिंह की बेटी है, उससे रमेश की आँखें चार हो जाती हैं। तथा वे आपस में एक-दूसरे के प्रति अपनत्व की भावना रखते है।

अरविन्दशंकर को प्रेरणा केवल अपने राजनीतिक दृष्टिकोण से अथवा सामाजिक विचारों से ही नहीं मिलती, उनकी प्रेरणा का मूल स्रोत है, भावात्मक। इस भावात्मक प्रतिक्रिया से ही उपन्यास की कथावस्तु को गति मिलती है।

पुनः लेखक अरविन्द का परिवार सामने आता है। लेखक के पुत्र भवानी शंकर उषा के प्रेम-चक्कर में पड़कर अपना जीवन बरबाद करता है। अन्त में वह अपने माँ-बाप, पत्नी उषा, उसके पुत्रों को छोड़कर किसी और के साथ जीवन-यापन करता है।

हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट कॉलेज के परीक्षा-फल प्रकाशित होते हैं। रमेश रानी को बधाई देने जाता है।

रानी के परिवार का परिचय होता है। रानी के दादा कोतवाल थे। उन्होंने लाखों रुपये तथा मान-सम्मान प्राप्त किया। परन्तु रद्धू सिंह ने सब बरबाद कर दिया। पहले एक शादी की। जिससे पुत्री रानी हुई। पत्नी

मर गई। दूसरी शादी सुमित्रा से की। दो पुत्री और अन्त में एक पुत्र हुआ। अब रद्धू सिंह बहुत गरीब है। नौकरी के लिए मारा-मारा फिर रहा है। रानीबाला विधवा है। इण्टर की परीक्षा पास की है।

रमेश रद्धू सिंह को कहकर रानी को खन्ना साहब और श्रीमती खन्ना से छात्रवृत्ति दिलाकर तथा नौकरी दिलाकर आगे पढ़ाने की व्यवस्था करता है।

रमेश, लच्छू और उसके साथियों ने तो तरुण छात्रसंघ की स्थापना की है। वे बारहदरी (स्व० केसोराव का खण्डर) पर ही सारे कार्यक्रम करते हैं। बारहदरी पर छात्रों का अधिकार है।

एक दिन पुत्ती गुरु गाँव में एक ठाकुर साहब के नये मकान का उद्घाटन कराने के लिये गये हैं। रमेश के द्वारा लच्छू को सारसलेक मे डॉ० आत्माराम के यहाँ नौकरी मिल जाती है। पन्द्रह अगस्त के दिन डॉ० आत्माराम छात्रसंघ को एक हजार रुपये दान देते हैं।

कथानक का विकास और वस्तु-विन्यास :

मुख्य कथा पूर्णरूप से विकास की ओर अग्रसर हो चुकी है। हाँ! तो पुत्ती गुरु गाँव गये है। गोमती मे रातो-रात बाढ़ आ गई। गाँव के गाँव जलमग्न हो गये। रमेश और उसके साथी अपने पिता को बचाकर लाते हैं। फिर छात्रसघ के सभी-साथी बाढ़-ग्रस्त नर-नारी को बचा-बचाकर लाते हैं। उनकी सेवा करते है।

बाढ़ का वर्णन लेखन ने सजीव किया है। पूरा वर्णन आँखों के सामने चल-चित्र के समान स्पष्ट हो जाता है। नाव तेजी से आगे बढ़ी। तीन-तीन मुहानो में बँटकर भी पानी में बला की गति थी। अँधेरा, घुटन और कुछ-कुछ सड़ाँध भी, जो आगे बढ़ने के साथ ही बढ़ती गयी। पहल पाला मकड़ी के घने जालों से पड़ा।

यहाँ बहुत ही सटीक यथार्थवादी चित्रण तथा साथ ही अद्भुत प्रतीक व्यंजना है।

यह एक उपन्यास है, जिसका गठन एक संघर्ष को लेकर हुआ है। यह संघर्ष समाज के रूढ़िवादियों, पुरानपन्थियों, भारतीय संस्कृति का दम्भ करने वाले ढोंगियों, पूँजीपतियों, उनके दलालों तथा नयी पीढ़ी के रास्ता खोजते हुए, अपने अधिकारों के लिए लड़ते हुए जनता की सेवा करने वाले एवं अपने ही भीतर पुराने संस्कारों से जूझते हुए नयी पीढ़ी के युवकों के बीच है।

ठीक ! अभी तो बाढ़-ग्रस्त स्थिति का वर्णन शान्त ही नहीं हुआ कि नया संघर्ष उत्पन्न हो गया। अधिकारों के लिए। नयी पीढ़ी के युवकों और पूँजीपतियों के बीच।

तरुण छात्र संघ के अधिकार में बारहदरी का स्थान है। परीक्षा का समय आने से छात्र-वर्ग अध्ययन करते हैं कि सेठ लाला रूपचन्द धर्मशाला और मन्दिर के नाम पर बारहदरी पर कब्जा करना चाहते हैं। छात्र-वर्ग उसे छोड़ना नहीं चाहते। संघर्ष शुरू हो जाता है। छात्र-वर्ग आन्दोलन व अनशन करते हैं। पूरे शहर में तनावपूर्ण वातावरण निर्मित हो जाता है। धर्म के ठेकेदार भी धन के लालच में अनशन करते हैं। संघर्ष होता है। पुलिस वाले रमेश आदि को पकड़कर ले जाते हैं। छुँलू रात को मन्दिरों में आग लगाता है। हिन्दू-मुसलमान छात्रों का संघर्ष होता है। बनियों को बनियों ने काटा। हीरा ही हीरों को काटना है। संघर्ष समाप्त होता है। छात्र वर्ग को सफलता मिलती है।

लच्छू (श्री लक्ष्मीनारायण खन्ना) श्रीमती उमा माथुर की कृपा से रूस देश की यात्रा करके आते हैं। फिर उसकी नौकरी चली जाती है और फिर वह दुनियाँ में अपनी दुनियादारी फैलाने के चक्कर में रहते हैं।

रमेशचन्द्र गौड और रानीबाला राठौर का विवाह-समारोह होता है। यह विवाह बाल-विधवा-विवाह, प्रेम-विवाह और अन्तर्जातीय-विवाह है। यह विवाह समारोह अलक्ष्य में राजनीति से जुड़ जाता है। उद्योगपति नबीबख्श हाजी साहब नई सड़क की योजना को अपने पक्ष में करने के लिए नाटकीय कूटनीतिक चाल चलते हैं।

नई सड़क की योजना को लेकर हाजी नबीबख्श गुट और लाला राधारमन गुट में गुट-प्रतिद्वन्द्वता की भावना अंतिम सीमा तक आ जाती है। दोनों ही गुट पूँजीपती हैं। दोनों ही वर्ग एक दूसरे के ऊपर आरोप-प्रतिआरोप, व सामाजिक और व्यक्तिगत दूषित वातावरण बनाते हैं। अन्त में हाजी साहब की माँग सरकार स्वीकृत कर लेती है।

हाजी साहब के द्वारा नई सड़क के निर्माण-कार्य का उदघाटन होने वाला है। ठीक समय पर सेठ राधारमन लाला स्वर्गवासी हो जाते हैं।

लाला मरते-मरते भी हाजी साहब को चूना लगा गया....।

राधारमन लाला के बेटे, रेवतीरमन लाला और हाजी साहब के बेटे, तथा खोखामियाँ अपने-अपने व्यक्ति को आम चुनाव में विजय श्री दिलाना चाहते हैं। लच्छू अपनी दुनियादारी के द्वारा लाला रेवतीरमन के चक्कर में आकर, श्रीमती चारुलता चौधरी को कांग्रेस-पार्टी से विजय श्री दिलवा देता है और खोखा मियाँ के उम्मीदवार चुनाव हार जाते हैं। खोखा मियाँ लच्छू को अपने रेस्ट्रां (होटल) से अलग कर देता है। लाला रेवतीरमन भी अपना स्वार्थ पूर्ण हो जाने पर लच्छू को इस प्रकार निकाल देता है, जैसे दूध में से मक्खी निकाल दी जाती है।

अभी चुनाव का वातावरण समाप्त ही हुआ था कि एक नयी दुःखदायी दंगे की घटना शहर में हो गई। हुआ यह कि—गोपी नामक एक बदचलन लडकी कालेज में पढ़ती थी। वह लाला रूपचन्द्र के बेटे मुलायम चन्द्र और खोखा मियाँ के बेटे रफअत मियाँ दोनों से प्रेम करती थी। साथ-साथ दोनों उसे लेकर घूमते थे। बाद में गोपी ने सिर्फ मुलायमचन्द्र से सम्पर्क रखा। इस पर एक दिन रफअत मियाँ गोपी को उठा कर ले गया। बाद में उसकी हत्या करदी गयी। इस कारण से मुलायम ने खाखा मियाँ की कोठी पर आग लगवा दी। खोखा मियाँ ने बदले की भावना से हिन्दू-मुसलमानों के दंगे करवा दिये। पैसे वालो की विलासता के पीछे निर्दोष जनता की जानें गयीं। माल लुटे, नुकसान हुआ।

श्रीमान् खन्ना साहब, लाला रूपचन्द्र और हाजी साहब ने मिलकर इस साम्प्रदायिक दगे को शान्त किया।

अब कथावस्तु का अन्तिम चरण शुरू होता है। संघर्ष होता है। खोखा मियाँ अपने पिता से अलग हो जाते हैं। गोपी-हत्याकांड से समाज में उनकी प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती है। लच्छू अपना बदला लेकर उनके आठ होटल व रेस्टाँ को नष्ट कर चुका था। अत: खोखा मियाँ सफेदपोश बनकर डाकू, हत्यारे, चोर आदि से सम्पर्क स्थापित करके थोड़े से ही समय में लाखों रुपयों का मालिक बन जाता है। फिर समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के डा० आत्माराम से सम्पर्क स्थापित करता है। तथा कॉमर्स चेम्बर का एक सदस्य भी बन जाता है। उसके काले कामों को कोई भी नहीं जानता है। खोखामियाँ डा० आत्माराम को समाप्त करना चाहता है।

डा० आत्माराम देश के महान् नेता हैं। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त हैं। पूरे देश में १०० से भी अधिक समाचार-पत्र की शाखा हैं। सारस-लेक उनका मुख्य स्थान है। सम्पूर्ण भारत उनको सम्मान देता है। वे समाजवादी हैं और नेहरू व गाँधी के सिद्धान्तों को मानते हैं।

संयोग से रमेश को खोखा मियाँ की व्यक्तिगत डायरी हाथ लगती है। डायरी के द्वारा खोखा मियाँ के काले कामों का पता लगता है।

रमेश, रद्धू सिंह, लच्छू और श्रीमान खन्ना साहब व पुलिस के संयोग से अपने-आपको बचा लेते है। २७ अक्टूबर को डा० आत्माराम के समाचार 'इंडिपेंडेंट' को नष्ट करने और रमेश की हत्या करने की योजना थी। बड़े-बड़े शहरों के कार्यालय व प्रेस पर आक्रमण होता है। आग लगा दी जाती है। लखनऊ मे आग लगती है। पर प्रेस श्री खन्ना साहब व रमेश के द्वारा बच जाता है। इस तरह खोखा मियाँ ने मिलकर डा० आत्माराम को मारा।

डा० आत्माराम, श्री खन्ना साहब, रमेश और लच्छू सभी खोखा मियाँ से बदला लेने की सोचते हैं।

इस प्रकार मुख्य कथानक यही पर समाप्त हो जाता है और अन्त में लेखक अरविंद शकर का मत है—"समाज में विष और अमृत दोनों हैं। मानव को कर्मशील बनना चाहिए। धैर्य व संतोष से विष को अमृत में बदल देना ही मानवता है।

३. **पात्र-योजना और चरित्र-चित्रण**—अमृतलाल नागर के उपन्यासों में पात्रों की विविधता, चरित्र-चित्रण में सूक्ष्म-पर्यवेक्षण और सूक्ष्म अभिव्यक्ति तथा मानव-मनोविज्ञान मे गहरी पैठ—आदि विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं। पात्रों की विविधता सभी उपन्यासों में है। चरित्र के निर्माण में सजीवता, उनकी अन्तवृत्तियों का उदघाटन, उनके अन्तंबाह्य व्यक्तित्व का सजीव अंकन कुल मिलाकर पात्रों की सजीवता नागर जी की कला की चरम उपलब्धि है।

चरित्र-चित्रण में अन्तंद्वन्द्व का चित्रण-अमृतलाल नागर चरित्रों की गुत्थियों को, उनके अन्तंतम को, अन्तंद्वन्द्व या मानसिक चिन्तन-प्रक्रिया द्वारा ही सुलझाते हैं। मन: स्थिति का सजीव अंकन भी नागर जी ने बड़ी कुशलता से किया है।

उपन्यास के प्रमुख पात्र—रमेश चन्द्र गौड़ की सारी घटनाएँ कथानक से सम्बन्धित है। वही उपन्यास का नायक है। रानी बाला राठौर उपन्यास की नायिका है। लेखक अरविन्द शकर, श्री आनन्द मोहन खन्ना, श्रीमती खन्ना, डा० आत्माराम, पुत्तीगुरू, रद्धू सिंह, खोखा मियाँ, लाला रूपचन्द आदि अन्य पात्र है।

इन पात्रों का सम्पूर्ण उपन्यास की घटनाओं एवं एक-दूसरे पात्र की चरित्रगत विशेषताओं को उभारने घात-प्रतिघात दर्शनों, सवेदना और विरोध को प्रकट करने में महत्वपूर्ण योगदान है।

शेष पात्र—लच्छू, (श्री लक्ष्मी नारायण खन्ना) श्रीमती सुमित्रा, लाला रेवतीरमन, हाजी साहब, रमेश शकर, भवानी शकर, श्रीमती माया, वैद्य गोडबाले, जय किशोर, हर्री गोडबाले, बम्मो आदि हैं, जिनकी उपस्थिति कथानक की प्रगति के लिए आवश्यक है।

अमृत और विष उपन्यास के पात्र यथार्थवादी हैं। इनका चरित्र-चित्रण मनोवैज्ञानिक आधार पर हुआ है। संक्षेप मे पात्रो का सूक्ष्म मनोविश्लेषण हुआ है और वे जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हुए हमारे हृदय में करुणा का संचार कर सवेदना जाग्रत करते है।

अमृत और विष, घटना-प्रधान और पात्र-प्रधान उपन्यास है :

अमृत और विष उपन्यास में मूल-कथावस्तु सूक्ष्म है, परन्तु धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक कथा-प्रसगों की विविधता ने कथानक को अत्यधिक विकसित कर दिया है। अनेक कथा-प्रसंगों को एक मे सूत्रबद्ध कर दिया है। इसके साथ एक भारतीय लेखक के जीवन का वास्तविक वर्णन भी हुआ है।

एक मध्यवर्गीय परिवार व रमेश और लच्छू के जीवन के उद्देश्यों को लेकर समाज का गुण-दोष भरा चित्र प्रस्तुत किया गया है। अतएव समाज बहुत बहुविध है। पात्रो की रूपरेखा और चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन भी बड़ कौशल और सूक्ष्मता स किया गया है। पात्रो का चरित्र-विश्लेषण उनका चिन्तन, अन्तर्द्वन्द्व, अन्तर्विवाद—से उपन्यास भरा पड़ा है।

३. **कथोपकथन**—पात्रो के सवाद के माध्यम से कथानक मे घात-प्रतिघात, नाटकीयता और मार्मिकता प्रस्तुत की जाती है। पात्रो क सूक्ष्म मनोभावो और

प्रतिक्रियाओं का संकेत न केवल पूर्ण कथनो से बल्कि स्फुट-अस्फुट कथनों, अपूर्ण और संदिग्ध वाक्यों द्वारा भी बड़ी खूबी से किया जाता है। पात्रों की विवशता और परिस्थितियों का उद्‌घाटन एव कथानक के विकास में कथोपकथन महत्व-पूर्ण है। इनके अभाव में उपन्यास निर्जीव हो जाता है। उपरोक्त पूर्ण विशेषता अमृत और विष उपन्यास में प्राप्त है।

रमेश और रानीबाला का आपसी कथोपकथन, लच्छू और रेवतीरमन का चुनावी कथोपकथन, रमेश और लाला रूपचन्द का धर्मशाला-विवाद आदि में लेखक ने वास्तविकता उत्पन्न करदी है। 'अमृत और विष' मे संवादों का विस्तार है। स्वागत या मनः चिन्तन का प्रयोग है। जैसे अरविन्द शंकर स्वय अपने परिवार के बारे में मनः-चिन्तन करता है।

अति संक्षिप्त संवाद योजना भी है—रानी और रमेश के संवाद अधिकतर अति संक्षिप्त-संवाद है। थोड़े से मे ही अधिक भाव दृष्टव्य होता है।

इस प्रकार अमृत और विष उपन्यास मे सवाद-योजना प्रायः संक्षिप्त, कलात्मक, सहज-स्वाभाविक, मार्मिक, प्रसगानुकूल और पात्रानुकूल बन पड़ी है। संवादों की भाषा तो उनकी बोल-चाल का सहज रूप है ही। उपन्यास सवाद-योजना की दृष्टि से पूर्णरूपेण सफल बन पड़ा है। इसमें सन्देह नहीं।

४. **वातावरण-निर्माण और देशकाल**—इस उपन्यास में भूतकाल व तत्कालीन राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक स्थिति का चित्रण हुआ है। पारिवारिक समस्याओं का चित्रण हुआ है। वर्तमान समाज की समस्याओं व नई पीढ़ी की समस्याओं का सजीव, वास्तविक चित्रण हुआ है।

घटनाओं और परिस्थियों का चित्रण—इस उपन्यास में शुरू से लेकर अन्त तक एक के बाद एक घटनाओं का चित्रण हुआ है। रद्धूसिंह और लच्छू के जीवन की परिस्थितियों का सजीव चित्रण है।

पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण—उपन्यास के प्रारम्भ और अन्त में लेखक अरविन्द शंकर की मानसिक स्थिति का इतना यथार्थ चित्रण है कि पाठक के सामने अरविन्द का जीवन चलचित्र के समान है।

प्रकृति-चित्रण—गोमती नदी के बाढ़ का वास्तविक चित्रण है। सारस-लेक का स्वाभाविक प्राकृतिक वर्णन है।

राजनैतिक परिस्थितियाँ—हाजी साहब, आम-चुनाव, आत्माराम का समाचार-पत्र व उनका आदि में राजनैतिक परिस्थितियों का चित्रण है ।

सामाजिक परिस्थितियाँ, धार्मिक-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ, आर्थिक और पारिवारिक परिस्थितियों का वर्णन सजीव है ।

अतः हम कह सकते हैं कि वातावरण और देशकाल के चित्रण में यह उपन्यास सफल है ।

५. **भाषा-शैली**—उपन्यास की भाषा सरल सुबोध एवं प्रवाहमयी है । वाक्यों के गठन में कलात्मक सृष्टि है । कथा-वर्णन और सवाद दोनों में भाषा का बड़ा सोद्देश्य, अर्थ-गर्भित, व्यजनापूर्ण, पात्र और प्रसंग के अनुकूल प्रयोग मिलता है । घटनाओं का क्रम सूत्रबद्ध एवं यथास्थान है । भावी घटना का सूत्र मिलते ही नवीन घटना उपस्थित हो जाती है । एक कथन या चिन्तन प्रवाह में नवीन घटना अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत होती है ।

'अमृत और विष' वर्णनात्मक शैली में लिखित एक उत्कृष्ट उपन्यास है । डायरी-शैली का यह उपन्यास है । डायरी-शैली पर लिखे हुए उपन्यास हिन्दी में एक-दो ही प्राप्त होंगे ।

६. **उद्देश्य**—नागर जी का यह उपन्यास अपने उद्देश्य में महान् है । यहाँ भारत देश की महत्वाकांक्षाओं का चित्रण किया गया है । दूसरी ओर इसमें अन्तर्जातीय प्रेम-विवाह और विधवा-विवाह की समस्या को उठाया गया है । आज का तरुण-वर्ग नयी मान्यताओं की स्थापना करना चाहता है । निराश होने पर वह आत्म-हत्या करता है ।

अरविन्द लेखक—"इन अज्ञान के प्रतीकों से जूझे बिना ही रह जाऊँ, विश्राम करूँ या मर जाऊँ....जड़-चेतनमय, विष-अमृतमय, अन्धकार-प्रकाश-मय, जीवन में न्याय के लिए कर्म करना ही गति है ।" यही इस उपन्यास में लेखक का सन्देश है ।

कथोपकथन

प्रश्न ४—'अमृत और विष' के कथोपकथन पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर—कथोपकथन उपन्यास का महत्वपूर्ण तत्व है। इसके माध्यम से घटनाक्रम को विकास देने के लिए, चारित्रक विशेषताओं के उद्घाटन के लिए एवं पात्रों के भावों के प्रकाशन के लिए, लेखक के उद्देश्य को स्पष्ट करने तथा उपन्यास में रोचकता बनाये रखने के लिए अत्यावश्यक है।

'अमृत और विष' उपन्यास में इन सभी बातों के लिए सटीक उपयोग किया गया है।

अति-संक्षिप्त संवाद-योजना—अनेकों स्थानों में संवादों का विस्तार-भार प्रायः अति संक्षिप्त है। एक-एक वाक्य, कभी-कभी उससे भी कम का प्रयोग बड़ी कलात्मकता के साथ लेखक ने किया है। विशेषता यह है कि अति संक्षिप्त संवादों में भी लेखक पात्रों के चारित्रक उद्देश्य आदि का बड़ा कुशल चित्रण करता है।

जैसे—"मेरे कारण घर छोड़ने में तो बड़ा दुख होगा।"

"और मेरे कारण तुम्हे भी यही दुख होगा।"

"अब तो मेरा सारा दुख-सुख तुम्हीं में समा गया है। भले ही स्वार्थी कहले कोई, लेकिन तुम्हें पाने के लिए सब छोड़ सकती हूँ।" रानी के वाक्य ने रमेश को आनन्द विभोर कर दिया।

रमेश और रानी के इन अति-संक्षिप्त संवादों में भी बड़ी मार्मिकता और अर्थ-व्यंजना है। रानी का चरित्र और उद्देश्य दोनों स्पष्ट हो जाते हैं।

दीर्घ संवाद-योजना—इस प्रकार के संवादों में विस्तार थोड़ा अधिक है। यहाँ सुदीर्घ संवाद होने पर भी बातचीत का सा आनन्द मिलता है। नागर जी की संवाद-योजना कहीं भी बोझल नहीं है। संक्षिप्त संवाद-योजना तो बड़ी चुटीली तथा बातचीत का सहज स्वाभाविक गुण है। उदाहरण :

"तुम्हे जलन हो रही हमारी तारीफे सुन-सुनके ।"

"हाँ उसी जलन हो में तो मैंने खड़े-खड़े यह भी तय कर डाला कि तुमसे कहूँगी कि ऐसी ही दो चार बढ़िया-बढ़िया रिपोर्टिंग और कर डालो। बस, ऐसे ही, जो कोई दूसरा न कर सकता हो । पापाजी का यह भाव तुम्हारे लिए और मजबूत हो जाय तो बस फिर हमारा बेड़ा पार लग ही जायगा ।"

"बड़ी स्वार्थिन हो । अपने स्वारथ के लिए मुझसे खन्ना साहब की खुशामद कराना चाहती हो ।"

"स्वारथ ही सही, पर ये स्वारथ क्या छोटा है ? घरबार बसाने वाली युवती को सब कुछ सोचना पड़ना है ।"

स्वागत या मनः-चिन्तन का प्रयोग :

'अमृत और विष' उपन्यास में स्वागत या मन-चिन्तन संवाद-योजना का प्रयोग बहुत ही कलात्मकता के साथ हुआ है । लेखक अरविन्द शंकर के अनेक चिन्तन अत्याधिक विस्तार में है । फिर भी इनमें लेखक ने इनमें मानव-चरित्र का बड़ा सुन्दर विश्लेषण किया है और ऐसे चिन्तन-प्रसग भी न तो कथात्मकता में बाधक हुए है, न उनमें कही नीरसता आई है । जैसे :

उपन्यास के प्रारम्भ ही में—लेखक अरविन्द अपनी आर्थिक अवस्था का मनः-चिन्तन करता है । कर्ज व परिवार की चिन्ता करता है ।

फिर अपने पूर्वजों का पुराना इतिहास मनः-चिन्तन के द्वारा स्पष्ट करता है । षष्ठी समारोह मे भी मनः-चिन्तन होता है ।

और उपन्यास के अन्त में भी मनः-चिन्तन के द्वारा उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट होता है।

जैसे—"धुर बचपन में मुझे ढकेल-ढकेलकर अपने साथ दौड़ा ले चलने वाला मेरा अनन्य साथी बछड़ा ।

"आज की विश्व-चेतना में खुले आम, ईमान और हक के जोम के साथ बीते इतिहास के दिनों की तरह मनुष्य गुलाम बन कर नहीं बेचा जा सकता । मनुष्य अन्तरिक्ष में उड़ने लगा है । फिर भी ये अफसर, नेता, मुनाफाखोर, संकीर्ण स्वार्थो और मृत धार्मिकता के ठेकेदार, ये तमाम जड़-बन्धक मौजूद हैं ।

आवश्यक गुणों की दृष्टि से संवादों की समीक्षा :

'अमृत और विष' उपन्यास में आवश्यक गुणों का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। उपयुक्तता, अनुकूलता, सबद्धता, स्वाभाविकता संक्षिप्तता, उद्देश्य-पूर्णता और मार्मिकता के आधार पर संवाद योजना का निर्माण हुआ है। सम्पूर्ण उपन्यास के सवाद इन गुणों से भरे पड़े है।

उद्देश्य की दृष्टि में सम्वादों की समीक्षा :

उपन्यासों में संवादों का उद्देश्य कथा-गति को अग्रसर करना, पात्रों की व्याख्या करना, वातावरण की सृष्टि करना और लेखक के उद्देश्य की अभि-व्यक्ति करना होता है। इस प्रकार सवादों म उद्देश्य पूर्णता आता है।

(अ) **वातावरण की सृष्टि में**—पुत्तो गुरु की लड़की का ब्याह, लाला रूपचन्द्र के विरुद्ध अनशन होना और गोमती नदी में बाढ़ आना आदि वाता-वरण में सवाद चल-चित्र के समान बन गए है।

(व) **उपन्यास का उद्देश्य**—मन: चिन्तन संवाद के द्वारा उपन्यास का उद्देश्य पाठकों के सामने स्पष्ट करना। ऐसे सवाद उपन्या बहुत कम मिलते है।

सम्वादों की भाषा :

इस उपन्यास मे सवादो की भाषा में पात्रानुकूल विविधा मिलती है। जैसा पात्र है, वैसी ही भाषा का प्रयोग हुआ है। शहरी-ग्रामीण बोली का प्रयोग हुआ है।

अत: हम उपरोक्त समीक्षा से स्पष्ट कह सकते है कि कथोपकथन की दृष्टि से 'अमृत और विष' उपन्यास पूर्णरूपेण सफल बन पड़ा है।

नामकरण की सार्थकता

प्रश्न ५—उपन्यास के 'अमृत और विष' नाम की सार्थकता पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर—'अमृत और विष' उपन्यास उज्ज्वल और कलुषित समाज के दोनों पक्षों को यथार्थ रूप से प्रस्तुत करता है।

जहाँ तक शीर्षक की उपयुक्तता का सवाल है, वह लेखक के उद्देश्य से

सम्बन्धित होता है। श्री नागर जी एक सामाजिक साहित्यकार हैं। उनके उपन्यासों में निम्नलिखित विशेषताओं का समावेश मुख्य रूप से होता है।

समाज में अमृत और विष दोनों हैं :

विष—अरविन्द शंकर कहते हैं—"मेरे आस-पास चारों ओर झूठे और निकम्मे धर्म के सड़े पानी में कीड़ों की तरह बिलबिलाने वाला हिन्दू-मुसलमान समाज अब भी मौजूद है।"

यहाँ भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण है। भारत आजाद हो गया। पर भारतीय समाज मे से यह गन्दगी क्या समाप्त हुई? नहीं....। यह चित्रण उपन्यास का विष है।

'जिन्दगी, परिवार और दुनिया से परेशान, थका-हारा, खीझभरा अरविन्द शंकर का जीवन है।' क्या उसके जीवन का यह विष नही है?

रानी बाल-विधवा है, गरीब है, बाप रद्धू सिंह गरीबी के कारण कुकर्म करता है। माँ सौतेली है। वह भारतीय समाज में मगल-कार्य में प्रवेश नहीं कर सकती है। पुनः विवाह में दादी और बाप का विरोध होता है। जवानी में वैधव्य पूर्ण जीवन। क्या यह उसके जीवन का विष नही है? रद्धू सिंह अपने बाप के समय से ही बद्‌चलन है। गरीबी ने उसको कही का भी नहीं रखा। न घर का न बाहर का। यह उसके जीवन का विष हो गया।

खोखा मियाँ देश व समाज के कलंक है। ऐसे व्यक्ति देश के विष होते है।

नायक रमेश को समाज के विष को अमृत में बदलने के लिए शुरू से अन्त तक संघर्ष करना पड़ता है।

'हमारी पीढ़ी में इस समय दो तरह के लोग हैं। एक सक्रिय महत्वाकांक्षी हैं और दूसरे हताकांक्षी। महत्वाकांक्षियों की सक्रियता आजकल (या शायद सदा) खुशामद, तिकड़म, दाँवपेंच और स्वार्थभरी बदमाशियों की दिशा में रही है। उनकी आकांक्षा का महत्व केवल उसी तक सीमित है—और इसीलिए वह वर्ग अकेला झगड़ा लेता रहता है और दूसरा हताकांक्षी वर्ग कोल्हू का बैल है। उसे जो चाहे काम में जोत ले, जहाँ चाहे जोत ले।'

लच्छू (लक्ष्मीनारायन खन्ना) का जीवन भी उपरोक्त पंक्ति से विदित होता है। जीवन-पर्यन्त दुनिया में अकेले ही लड़ता रहा है। यहाँ भी जीवन के विष को अमृत में बदलना है।

उपन्यास में समाज, देश, पारिवारिक और व्यक्तिगत कलुषित पक्षों का जो यथार्थ चित्रण है, वह विष है।

विष के रूप जो समस्याएँ हैं—उपन्यास में मुख्यरूप से अन्तर्जातीय प्रेम-विवाह, विधवा-विवाह और सामाजिक अनाचार की समस्याओं को सामने रखकर इन्हें राजनीतिक परिप्रेक्ष्य रूप में प्रस्तुत किया गया है।

उपन्यास का अमृत—समाज में, परिवार में, जाति में, धर्म में, देश में और व्यक्ति के चरित्र में जो कलुषित विचार, परिस्थितियाँ हैं, वह उससे संघर्ष करके उस पर विजय प्राप्त करता है। दुःख को सुख में बदलता है। इन्हीं विचारों को लेकर यह उपन्यास घटना-प्रधान बन गया है।

लेखक अरविन्द—जिन्दगी से, परिवार से तथा दुनिया से परेशान हो जाने के बाद भी एक उपन्यास को पूरा करता है।

वह अपनी साहित्य-साधना में इस प्रकार मग्न हो जाता है, जिस प्रकार से एक साधु ईश्वर में अपने-आपको लगा देता है। वह उपन्यास पूरा हो जाने के बाद भी सोचता है, मुझे जीना है, कर्म करना है। विष को ही अमृत मानना है।

रानी बाला—अपने जीवन से संघर्ष करती है। परिवार, सौतेली माँ, भाई-बहन, समाज और रमेश का ध्यान रखती है। वह स्वयं कहती है। 'मैं सब कुछ त्यागने को तैयार हूँ, केवल आपको अपनाने के वास्ते।' अन्त में वह रमेश को पा जाती है। रमेश हर काम उसकी राय से करता है। जीवन अमृत में बदल जाता है।

रद्धू सिंह जो बचपन में बदचलन था, उसे गरीबी ने कुकर्म करने की प्रेरणा दी। बाद में रद्धू अपने दामाद और बेटी के लिए मानवता की ओर अग्रसर हो जाता है।

रमेश—अपने विद्यार्थी-जीवन से ही समाज की सेवा व मानवता के लिए संघर्ष करता है। अन्त में भी डा० आत्माराम को संघर्ष चालू रखने को कहता है। धैर्यवान हर परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति रखता है।

लच्छू—समाज में अपनी दुनियादारी, बुद्धिमता और होशियारी से पूँजी-पतियों से संघर्ष करता ही रहता है। वह एक महत्वाकांक्षी जवान है।

बाढ़ग्रस्त जनता की सेवा के समय कलुषित वर्ग का वर्णन किया गया है और यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

पूँजीपती वर्ग किस तरह से स्वार्थ व अपने यश को बनाये रखने के वास्ते जनता पर कुनीति का जाल फैलाते हैं। उसकी वास्तविकता स्पष्ट करके समाज के कलंक को मिटाया जाय।

राजनैतिक नेता अपनी सत्ता को बनाये ही रहते हैं। उनकी योजनाएँ जनता के लिए, बल्कि पूँजीवर्ग के वास्ते होती हैं।

आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया गया है तथा समाज के उज्ज्वल प्रक्ष को विकसित करने के भाग को अमृत रूप दिया है।

अतः संक्षिप्त में यह है कि—समाज के दोनों पक्षों का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में है। समाज के उज्ज्वल पक्ष को अमृत और कलुषित पक्ष को विष, लेखक ने बताया है।

पात्रों के वंश का इतिहास बताकर आर्थिक परिस्थितियों के सुखी व दुखी जीवन का वर्णन किया है। गरीबी को जीवन का विष और धन को अमृत व्यक्त किया गया है।

व्यक्ति को पारिवारिक सुख प्राप्त हो जाता है, तो सभी कुछ प्राप्त हो जाता है। परन्तु दुर्भाग्य, परिवार की समस्याएँ व्यक्ति को पंगु बना देती हैं। जैसा लेखक अरविन्द के परिवार का वर्णन है। परिवार में एक घटना अमृत की वर्षा करती है, तो दूसरी घटना विष प्रदान करती है।

पूँजीपति वर्ग के द्वारा जहाँ समाज की आर्थिक उन्नति होती है, तो वहाँ पूँजी की शक्ति से अनैतिकता का विकास होता है। धन का लोभी क्या नहीं करता। धन विष और अमृत दोनों है।

सामाजिक रीति-रिवाज, रूढ़ियाँ और धार्मिक नियमों में मानव बँधा है। यह संघर्ष ही जीवन का अमृत-विष है।

इस प्रकार से उपन्यास का नाम 'अमृत और विष' पूर्णरूपेण उचित है।

उद्देश्य-सन्देश

प्रश्न ६—लेखक श्री नागर जी 'अमृत और विष' में उद्देश्य और सन्देश में कहाँ तक सफल हुए हैं ?

अथवा

प्रश्न ७—"मानव को कर्मशील बनाना और मानवतावादी सिद्धान्तों की रक्षा करना है। यही उपन्यास का सन्देश है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—हर साहित्यकार का एक उद्देश्य होता ही है। सभी साहित्य का सृजन मानवता के आदेश-सिद्धान्तों को लेकर होता है। लेखक श्री अमृतलाल नागर जी का भी आदर्शवादी दृष्टिकोण है। उनके सभी उपन्यासों के अध्ययन के बाद यही पता लगता है कि :

"समाज में क्रान्ति हो और आदर्श-समाज की स्थापना हो। मानव इन्सानियत की जिन्दगी से जीवन-यापन करे। समाज का हर प्राणी अपना कर्तव्य करे। फल की आशा न रखे।

'अमृत और विष' उपन्यास में समाज का यथार्थवादी वर्णन करके, आदर्शवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है :

कर्म का सन्देश—लेखक अरविन्द ने कहा—"मैं साठ साल की उम्र में सठिया नहीं गया हूँ, पठिया गया हूँ। मुझे एक तपस्वी के समान कर्म में लीन होना है। कर्म से मुझे आत्मिक सन्तोष प्राप्त होता है। मुझे एक उपन्यास लिखना है। अवश्य लिखूँगा।" उपन्यास के प्रारम्भ में ही यह वाक्य है। यह वाक्य ही मानव को सन्देश देता है।

"जीवन में अनेकों बार ऐसे मौके आते हैं ! जब कर्म-फल की अच्छी इच्छा की जाती है और फल बुरा मिलता है। 'नेकी करे और बदनेकी ले', की कहावत चरितार्थ हो जाती हैं। पर मानव वह है, जो धैर्य से हँसते हुए सब कुछ सहन करके कर्म में लगा रहे। अरविन्द के परिवार में ऐसा ही है।

उपन्यास की प्रमुख घटनाएँ अधिकतर नायक रमेश से सम्बन्धित हैं। रमेश विद्यार्थी-जीवन में तरुण छात्र-संघ की स्थापना करता है, समाज-सेवा करता है। हर वर्ष प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता है। अपनी बहन की शादी के समय, बाढ़-ग्रस्त के समय, अनशन और आन्दोलन के समय, अपने परिवार के प्रति, पत्रकार होने के कारण समाज के प्रति और अपने जीवन के उद्देश्य के प्रति संघर्ष शील है। जीवन को आदर्शमय बनाने में प्राण की बाजी तक लगा देता है। यह कर्म और आदर्श का उज्जवल उदाहरण है।

आज का तरुण बहुत कुछ चाहता है। वह अपने अस्तित्व के लिये तड़प रहा हैं। वह बेसहारा है, बेकार है, इसलिए कहीं पथ-भ्रष्ट भी हैं। नई पीढ़ी महत्वाकांक्षी हैं। आज का तरुण-वर्ग नई मान्यताओं की स्थापना करना चाहता है और कर भी रहा है। निराश होकर आत्म-हत्या भी कर रहा है।

यथार्थ-समाज में आदर्श की स्थापना करना एवं मानवता के सिद्धान्तों की स्थापना करना ही प्रमुख ऊद्देश्य है। इसीलिये पुरानी और नयी दो पीढ़ियों का संघर्ष यहाँ प्रखर रूप में सामने आया है।

दूसरी ओर इसमें अन्तर्जातीय प्रेम-विवाह और विधवा-विवाह की समस्या को उठाया गया है। इसमें स्त्री-पुरुष में नैतिकता की स्थापना होगी।

जैसे—अरविन्द ने कहा—'हमारी सामाजिकता में लड़के-लड़कियों का दोस्त बनकर रहना बुरा माना जाता है। जातिगत-बन्धनों से भी नौजवान लड़के-लडकियाँ अधिकतर सनसनाये थर्राये हुए रहते हैं। यह विपरीत परिस्थितियाँ यदि हमारे समाज से चली आएँ तो मेरी भवानी जैसे अनगिनत जवानों को इस तरह विकृत विद्रोही बनने की नौबत न आये।....क्या करूँ, कि ऐसा सुनहरा दिन हमारे समाज में जल्दी से आ जाए।'

उपरोक्त कथन स्पष्ट रूप से यही बताता है कि आज जवान नर-नारी में जो अनैतिक सम्बन्ध स्थापित होते हैं, उसके लिए समाज उत्तरदायी है। क्यों न वह इसे दूर कर दें।

जहाँ पर लेखक ने समाज को दोषी ठहराया है, वहाँ पर नयी पीढ़ी को भी मानवता का सन्देश दिया है।

श्रीमती कुसुमलता ने कहा—'प्रेम जैसी पवित्र चीज भला अपने माँ-बाप से छिपानी चाहिए।' ऐसी बातें छिपाई जाने के कारण ही हमारी सोसाइटी

में इतनी गन्दगियाँ फैल रही हैं। मैं उन गन्दगियों के मुहाने बन्द कर देना चाहती हूँ।'

"ये गन्दगी तभी दूर होगी जबकि हमारे लड़के लड़कियाँ झूठी शर्म का ढकोसला तोड़कर खुले आम अपनी दोस्ती को आत्म-सम्मान की भावना के साथ बढ़ावा दें।"

रमेश सोचता है कि—"मैं रानी के प्रति अपने इस पवित्र भाव को सामाजिक चोरी या मानसिक पाप की वस्तु क्यों बनाऊँ?" काश ऐसा हर नवयुवक नर-नारी सोचे तो कितने ही घर व जीवन बरबाद होने से बच जाएँगे और समाज में नैतिकता का विकास होगा।

श्री नागर जी अपने उद्देश्य-संदेश में यहाँ पूर्णरूपेण सफलता प्राप्त की है।

कर्म का उद्देश्य— उपन्यास के अन्त में लेखक अरविन्द का मनः-चिन्तन— "आज की विश्व-चेतना में खुलेआम, ईमान और हक के जोम के साथ बीते इतिहास.... तमाम जड़ बन्धन मौजूद हैं। इन अज्ञान के प्रतीकों से जूझे बिना ही रह जाउँ, विश्राम करूँ या मर जाऊँ? तब तो मैं हेमिंग्वे के बूढ़े मछेरे से हार जाऊँगा। जड़-चेतनमय, विष-अमृतमय, अन्धकार-प्रकाशमय जीवन में न्याय के लिये कर्म करना ही गति है। मुझे जीना होगा, कर्म करना होगा। यह बन्धन ही मेरी मुक्ति भी है। इस अन्धकार ही में प्रकाश पाने के लिए मुझे जीना है। इस समय भी मेरे दो जीवनाधार तो है ही—धुर बचपन में मुझे ढकेल-ढकेलकर अपने साथ दौड़ा ले चलने वाला मेरा अनन्य साथी बछड़ा और दूसरा वह औपन्यासिक नायक मछेरा।"

इस कथन का संक्षिप्त भावार्थ यह है कि विश्व उन्नति के शिखर पर पहुँच रहा है। तब मानव पुरानी रूढ़ियों, अनैतिक सिद्धान्तों से मानव को गुलाम बनाना चाहता है, अपने स्वार्थ, अधिकार और सत्ता के वास्ते। मानव इस बन्धनों को अब स्वीकार नहीं कर सकता है।

जो जड़ है, वही चेतन है। विष जीवन में अमृत है, अन्धकार प्रकाश है।

मानव के आदर्श सिद्धान्तों के द्वारा जीवन में प्रकाश होगा। जीवन के विष को कर्म से अमृत बनाया जा सकता है। स्वयं लेखक को जीवन में जिन्दा रहने और कर्म करने की प्रेरणा मिलती है—"कर्म करने मे पीछे न रह जाऊँ।"

अमृत और विष उपन्यास में—मानवतावादी सिद्धान्तों और कर्म की प्रेरणा मिलती है।

समाज का अमृत और विष सचमुच ही इस उपन्यास में मूर्त रूप से चित्रित हुआ है।

(१) नई पीढ़ी को नव-जागरण की प्रेरणा प्रदान करता है।

(२) समाज की पुरानी मान्यताओं को समाप्त करके नई मान्यताएँ स्थापित की जाएँ। धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक सुधार।

(३) जीवन में कर्म और मानव सिद्धान्तों का आदर्श जीवन।

(४) प्रेम को सामाजिक चोरी और मानसिक पाप न समझें। तथा नर-नारी उचित सम्बन्ध स्थापित करें और समाज उनको मान्यता दे।

(५) अन्तर्जातीय-विवाह, विधवा-विवाह और प्रेम-विवाह को समाज स्वीकृत करे।

(६) संघर्ष ही जीवन है।

ऐसे अनेकों प्रेरणाप्रद मानवी-सन्देश इस उपन्यास में हैं। उपन्यास की मानवीय विशेषताओं के कारण ही श्री अमृतलाल नागर जी को पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

घटना-प्रधान या चरित्र-प्रधान

प्रश्न ८—"अमृत और विष' उपन्यास घटना-प्रधान और चरित्र-प्रधान उपन्यास हैं।" समीक्षा कीजिए ?

उत्तर—'अमृत और विष'—उपन्यास में मूल कथावस्तु सूक्ष्म है, परन्तु धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक कथा-प्रसंगों की विविधता ने कथानक को अत्यधिक विकसित कर दिया है। अनेक कथा-प्रसंगों को एक में मूलवद्ध कर दिया है।

इसके साथ ही एक भारतीय लेजक के जीवन का वास्तविक वर्णन भी हुआ है।

यह उपन्यास एक मध्यवर्गीय परिवार व रमेश और लच्छू के जीवन के उद्देश्यों को लेकर समाज का गुण-दोष भरा चित्र प्रस्तुत करता है। अतएव समाज में जितनी भिन्नता है, उतनी भिन्नतामय पात्रों का समावेश भी इसमें किया गया है। विभिन्न पात्रों की रूपरेखा और चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन भी बड़े कौशल और सूक्ष्मता से किया गया है। पात्रों का चरित्र-विश्लेषण उनका चिन्तन, अन्तर्द्वन्द्व, अन्तर्विवाद आदि से उपन्यास भरा पड़ा है।

घटना-प्रधान-उपन्यास—उपन्यास में कथावस्तु, उसके उपादानों, विशेषतः घटनाओं की प्रधानता होने पर उसे घटना-प्रधान उपन्यास कहा जाता है।

'अमृत और विष' की कथावस्तु दुहरी है। एक और लेखक अरविन्दशकर की आत्म-कथा चलती है, जिसमें उनके परिवार की पूरी कथा आती है। मनः-चिन्तन और संवादों में अरविन्द के पूर्वजों का इतिहास धारावाहिक घटना प्रधान हो गया है। एक के बाद एक घटना का वर्णन है। फिर षष्ठि-समारोह में लेखक स्वयं की आर्थिक व पारिवारिक घटनाओं का वर्णन करता है, जिसमें

वरुणा को राजरोग, उमेश को आई० सी० एस० की परीक्षा के लिए घर छोड़ना और भवानी की पत्नी व पुत्री आदि की घटनाएँ आती ही जाती हैं।

प्रमुख कथा—पुत्ती गुरु की बेटी के ब्याह-वर्णन की घटनाएँ एक के बाद एक क्रमबद्धता के साथ आती हैं। पुत्ती गुरु के पुत्र रमेश और लच्छू से घटनाओं का श्री गणेश होता है। ब्याह का वर्णन बड़ा सजीव हुआ है। यहीं पर रमेश और रानी का मौन प्रेम सम्बन्ध स्थापित होता है। इसके बाद हाईस्कूल और कॉलेज का परीक्षाफल प्रकाशित होना, रमेश का रानी के घर जाना, श्रीमती खन्ना से कहकर रानी को आर्थिक सहायता दिलवाना, तरुण छात्र-संघ की स्थापना, गोमती नदी की बाढ में प्राणों की बाजी लगाकर सेवा करना, लच्छू को सारस-लेक में नौकरी दिलवाना, बारहदरी की जगह के लिए अनशन, आन्दोलन और आगजनी आदि की घटनाएँ।

रमेश की शादी और नई सड़क-योजना को लेकर कूटनीतिक दाँवपेच की घटनाओं का होना, फिर आम चुनाव होना। आम चुनाव के बाद खोखा मियाँ का डॉ० आत्माराम को समाप्त करने की योजना बनाता है, रमेश से उसका संघर्ष होना आदि।

इस तरह देखते है कि उपन्यास में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक एक के बाद एक घटनाएँ घटित होती हैं। समाज में जितना बहुबिध है, उससे भी अधिक घटनाएँ होती है। पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक व व्यक्तिगत घटनाएँ भी घटित होती है। अतः यह घटना प्रधान उपन्यास है।

पात्र-प्रधान-उपन्यास—उपन्यास में जब लेखक का ध्यान विशेषतः पात्रों के चरित्र-चित्रण पर ही केन्द्रित रहता है और अन्य तत्व गौण हो जाते हैं, तो पात्र-प्रधान उपन्यास कहा जाता है। मनोवैज्ञानिक चित्रण या विश्लेषण को लेकर चलने वाले उपन्यासों में प्रायः पात्रों की ही प्रधानता रहती है।

'अमृत और विष' उपन्यास घटना-प्रधान और पात्र-प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास में जितनी घटनाएँ घटित होती हैं, उतने पात्र सामने आते हैं।

नागर जी की प्रतिभा और कथा-शैली की यह उपलब्धि है कि अपने शिल्प और पात्रों को गढ़ने की सारी प्रक्रिया को पाठक के समक्ष बिल्कुल उद्‌घटित कर देने के बाद उन्होंने न केवल उससे और भी आत्मीयता और अन्तरंगता

स्थापित करली, वरन् कथा को एक नए स्तर पर वास्तविकता और प्रामाणिकता का स्वाद दे दिया ।

यदि समाज के विशाल पट की दृष्टि से इस उपन्यास के कथा-फलक को देखें, तो वर्गो, परिस्थितियों और पात्रों का वैविध्य हमे आश्चर्य में डाल देता है ।

इस उपन्यास में अनेकों पात्र है—पत्रकार रमेश, रानीबाला, लच्छू, लाला साहब, डॉ० आत्माराम, सम्पादक खन्ना, श्रीमती खन्ना, रानी, रानी के पिता ठाकुर रद्धूसिंह, खोखा मियाँ आदि । इस प्रकार यह पात्र प्रधान उपन्यास हैं । पात्रों के वर्णन द्वारा ही वह समाज का मध्यवर्गीय नागरिक समाज का, उसके विभिन्न वर्गो और स्तरों का चित्र प्रस्तुत करता है । समाज के हर क्षेत्र के पात्र इसमें है । सिर्फ मजदूर वर्ग का कोई पात्र नही है ।

चरित्र-चित्रण-प्रधान उपन्यास है—औपन्यासिक चरित्र-चित्रण में जिन गुणों का होना आवश्यक है, वे इस प्रकार है—अनुकूलता, स्वाभाविकता, सप्रमाणता, सहृदयता ओर मौलिकता । अतः यह चरित्र-चित्रण सापेक्ष्य घटना प्रधान उपन्यास है ।

'अमृत और विष' घटना प्रधान यथार्थवादी उपन्यास है । सामाजिक उपन्यास होने से अनेको पात्रों का समावेश है । प्रत्येक पात्र का अपना चित्रण, है, उसके जीवन का उद्देश्य है । हर पात्र का चरित्र अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । उसका चरित्र अपनी जगह महान् है ।

तरुण युवक लच्छू (लक्ष्मीनारायण खन्ना)—बेकार, असहाय, विद्रोही, भविष्य के लिए चिन्तित और सुखद स्वप्नों में खोया हुआ, चरित्र-चित्रण के रूप में सामने आता है । वह आज के तरुण वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है ।

पत्रकार के उत्तरदायित्व और मानवता के सिद्धान्तों की रक्षार्थ अपने जीवन की आहुति देने वाला रमेश का चरित्र सामने आता है ।

भारतीय नारी के रूप में रानीबाला का चरित्र प्रस्तुत है । सम्पादक के रूप में तथा समाज-सेवक के रूप में श्री आनन्द मोहन खन्ना का चरित्र सामने आता है । समाज के महान नेता के रूप में डॉ० आत्माराम का चरित्र भी सुन्दर बन पड़ा है ।

समाज व देश-द्रोही के रूप में खोखामियाँ का चरित्र-चित्रण रोचक बन पड़ा है।

पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व हाजी करने वाले साहब, लाला राधारमन, लाला रूपचन्द्र आदि पूँजीपतियों का वर्णन उपन्यास में हुआ है।

मध्यमवर्गीय परिवार के रूप में रद्दू सिंह का चरित्र है। धर्म-गुरु के रूप में पुत्ती गुरू का चरित्र सामने आता है। जयकिशोर, छैलू, पम्मी, कम्मी, हर्रो आदि तरेण युवक के रूप में समाज के सामने उपस्थित होते हैं।

पात्रों के अन्तरंग तथा वहिरंग चरित्र-चित्रण के लिए उपन्यासकार जिन रीतियो का प्रयोग करता है, उन्हें चरित्र-चित्रण की विधियाँ कहा जा सकता है। अमृत और विष निम्नलिखित विधियो का प्रयोग किया है।

(१) विश्लेषणात्मक पद्धति। (२) संवादात्मक पद्धति।

मनोवैज्ञानिक पद्धति—(अ) अन्तः प्रेरणाओं का चित्रण, (आ) अर्न्तद्वन्द्व का चित्रण, (ई) अन्तर्विवाद का चित्रण, (फ) मनोविश्लेषण, (द) वृत्तात्मक प्रणाली।

उपरोक्त विधियों के द्वारा प्रत्येक पात्रों का चरित्र-विकास किया गया है। वृत्तात्मक प्रणाली से अनेकों पात्रों के चरित्र को विकास किया है।

श्री नागर जी को मानव के चरित्र का चित्रण करने में विशेष सफलता प्राप्त हुई है और चरित्र-चित्रण की प्रधानता घटना-प्रधानता पर हावी हो गई है।

प्रश्न ९—'अमृत और विष' उपन्यास की मुख्य कथा और सहायक कथाओं के संगठन की समीक्षा कीजिये।

अथवा

प्रश्न १०—'अमृत और विष' उपन्यास में वस्तु-सविधान की समीक्षा कीजिये।

उत्तर—मुख्य कथा रमेश की है। रमेश की बहन और पुत्ती गुरू की लड़की का ब्याह है। इसी ब्याह में रमेश और रानी एक दूसरों को प्रेम करने लगते हैं।

दूसरी कथा—लेखक की आत्म-कथा है। लेखक अरविंद शंकर परिवार की समस्यओ से संघर्ष करता हुआ उपन्यास की रचना करता है।

मुख्य कथा-सूत्र—'अमृत और विष' में रानी व रमेश के कथा भाग के साथ अनेकों कथा-सूत्र सम्मिलित हैं।

(१) लेखक अरविन्द के पूर्वजों का इतिहास, लेखक का षष्ठि-समारोह और लेखक के परिवार की समस्याएँ। एवं आर्थिक समस्याएँ।

(२) रानी और रमेश का प्रसंग।

(३) रद्धू सिंह और उनके परिवार का प्रसंग। और श्रीमती सुत्रित्रा की समस्या।

(४) लच्छू (श्री लक्ष्मीनारायण खन्ना) का कथा-सूत्र।

(५) श्री आनन्द मोहन खन्ना और श्रीमती कुसुमलता खन्ना का प्रसंग।

(६) डॉ० आत्माराम—'इंडिपेंडेण्ट' के संस्थापक और समाज के नेता का प्रसंग।

(७) खोखा मियाँ—उद्योगपति व देश-द्रोही का प्रसंग।

(८) गोमती में बाढ़ की घटना का प्रसंग।

(९) बारहदरी के लिए अनशन व आन्दोलन का प्रसंग।

(१०) लाला साहब व हाजी साहब का प्रसंग 'नई सड़क योजना' में।

(११) रमेश व रानी के विवाह का प्रसंग।

(१२) श्रीमती चारुलता चौधरी का आम चुनाव प्रसंग।

(१३) सारस-लेक का प्रसंग।

उपन्यास में यह सभी कथा-प्रसंग मूल कथा से सम्बन्धित है। इन सब कथाओं के माध्यम में एक विस्तृत कथा का निर्माण हुआ है।

प्रासंगिक कथा-सूत्र—मुख्य कथा सूत्रों के अलावा अनेक प्रासंगिक कथा-सूत्र गुँथे हुए हैं।

(१) रमेश की आई० ए० एस० की परीक्षा का प्रयत्न व आत्म-हत्या।

(२) उषा और भवानी का प्रेम-प्रसंग।

(३) गोपी-हत्याकाण्ड।

(४) बाढ़-ग्रस्त शरणार्थी प्रसंग!

(५) छैलू का अग्नि-काण्ड प्रसंग।

(६) बैजू लाला का प्रसंग।

(७) श्री बनर्जी का प्रसंग।

(८) पुत्ती गुरु का प्रसंग।

(९) राधा रमन मंदिर का प्रसंग।

(१०) लच्छू का रूस-गमन प्रसंग।

अन्तर्कथाएँ

मुख्य और प्रासंगिक कथा-सूत्रों के अतिरिक्त उपन्यास में अन्तर्कथाओं का समावेश भी हुआ है।

(१) लेखक अरविंद के पिता, पितामह, मातामही व परदादा का कथावृत्त।

(२) रद्धू सिंह के बचपन का प्रसंग।

(३) डॉ० आत्माराम के पिता शोभाराम का प्रसंग।

(४) हाजी साहब का पूर्व प्रेम-प्रसंग व जीवन-प्रसंग।

(३) **वस्तु-विन्यास :**

वस्तु-विन्यास-सम्बन्धी सुविधा के लिए निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दिया गया है।

(१) मुख्य कथा-सूत्रों की परस्पर सम्बद्धता और एक सूत्रता का निर्वाह किया गया है। एक कथा को दूसरी कथा के साथ जोड़ा गया है। कथा-सूत्रों में आपस में एकता है।

(२) प्रासगिक कथा-सूत्रों से सम्बद्धता।

प्रासगिक कथा और मुख्य कथा इस प्रकार मिला दी गई है कि पता तक नहीं चलता कि प्रासगिक कथा कहाँ से कहाँ तक है ?

(३) अर्न्तकथाओं का वस्तु-विन्यास मे स्थान दिया गया है—उपन्यास में लेखक अरविन्द, रद्धू सिह, डॉ० आत्माराम के पिता आदि को वस्तु-विन्यास के अन्तर्गत स्थान दिया गया है।

(३) **कथा-विकास की स्थितियाँ :**

प्रायः उपन्यासों के कथा-विकास को तीन भागों में बाँट जाता है :

(१) प्रारम्भिक भाग। (२) मध्य या उत्कर्ष भाग। और (३) अन्त उपसंहार या निगति भाग।

(१) प्रारम्भिक भाग :

उपन्यास की कथा-विकास मे प्रारम्भिक भाग उपन्यास की समस्या, उद्देश्य और पूर्व पीठिका प्रस्तुत करता है। 'अमृत और विष' उपन्यास में—लेखक अरविन्द का षष्ठि-समारोह, तथा पूर्वजो की अन्तंकथाएँ आती हैं। मुख्य कथा में पुत्तो गुरु की लड़की का ब्याह-प्रसंग तक प्रारम्भिक भाग आता है।

(२) मध्य या उत्कर्ष :

रमेश व रानी के प्रसग और लच्छू सिंह के चरित्र-चित्रण के साथ उपन्यास के कथा-विकास का उत्कर्ष प्रारम्भ हो जाता है। रमेश व रानी मौन रूप से एक दूसरे को स्वीकार कर लेते हैं। बाढ़-ग्रस्त शरणार्थियों की सेवा लच्छू का सारस-लेक जाना, डॉ० आत्माराम का परिचय, अनशन व आन्दोलन यहाँ तक कथानक का उत्कर्ष सामने आ जाता है।

(३) अन्त, उपसंहार या निगति :

रमेश व रानी के विवाह प्रसंग से लेकर 'अमृत और विष' की कथा निगति की ओर चलती है। इस भाग में आकर लेखक ने घात-प्रतिघात का वर्णन किया है। अनेकानेक मुख्य कथा-सूत्रों, प्रासंगिक कथा-सूत्रों आदि का जमघट है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि लेखक ने सभी मुख्य कथाशों का प्रारम्भ, उत्कर्ष और अन्त समानान्तर बिकास की स्थितियों में किया है। इससे सम्पूर्ण कथानक में एक सुनिश्चित संगठन, सुसम्बद्धता, एकसूत्रता और एकान्विति का होना प्रमाणित हो जाता है।

'अमृत और विष' उपन्यास का कथा-शिल्प पूर्णरूपेण सफल और नितान्त उत्कृष्ट कहा जा सकता है।

देशकाल और वातावरण

प्रश्न ११—देशकाल और वातावरण-चित्रण की दृष्टि से 'अमृत विष' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—विषय-प्रवेश—उपन्यास में विविध घटनाओं, पात्रों और उनके क्रिया-कलापों की पृष्ठभूमि, उनका पर्यावरण, जिसमें वे रहते हैं और काम करते है, वातावरण कहलाता है। इस तत्व का चित्रण उपन्यास में चित्रित जीवन को स्वाभाविक और सम्भाव्य बनाने के लिए आवश्यक होता है।

देशकाल वातावरण का बाहरी रूप है। वातावरण आन्तरिक या मानसिक भी हो सकता है। पात्रों की मानसिक स्थितियों के चित्रण में या उनके वाह्य पर्यावरण के वर्णन में प्रकृति का समावेश भी उपन्यास में किया जाता है, इस प्रकार वातावरण का चित्रण उपन्यास में आन्तरिक और वाह्य इन दो रूपों में होता है। देशकाल या वातावरण का चित्रण किस सीमा तक स्वाभाविक सुन्दर और कलात्मक बन पड़ा है, इसका विचार भी उपन्यास में हमें करना होता है।

इस उपन्यास में भूतकाल व तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और सामाजिक स्थिति का चित्रण हुआ है। पारिवारिक समस्याओं का चित्रण हुआ है। वर्तमान समाज की समस्याओं का व नयी पीढ़ी की समस्याओं का सजीव, वास्तविक चित्रण हुआ है।

देशकाल या वातावरण चित्रण की समीक्षा करते ससय हमें निम्नलिखित बातों पर विचार करना चाहिए :

(१) आन्तरिक वातावरण :

(अ) घटनाओं और परिस्थितियों का चित्रण

उपन्यास में घटनाओं और परिस्थितियों के चित्रण में एक प्रकार का आन्तरिक वातावरण निर्मित होता है, जो परिस्थितियों को स्वाभाविक बनाता

है। पाठक उनमें अपने को रमा सकता है और उसकी घटना-विशेष या परिस्थिति-विशेष का सम्पूर्ण आन्तरिक वातावरण मूर्त रूप मे हमारे सामने आता है।

'अमृत और विष' उपन्यास मे लेखक अरविन्द के षष्ठि-समारोह व पुत्ती गुरू की लड़की के ब्याह के वर्णन से लेकर अन्त में लेखक अरविन्द के पुत्र उमेश की आत्महत्या तक की सारी घटनाओ और परिस्थितियो मे उनकी पृष्ठभूमि का विशेष ध्यान रक्खा है और इसलिए वातावरण का तत्व बड़ा सजीव बन पड़ा है।

(ब) पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण :

'अमृत और विष' उपन्यास मे पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण बड़े विस्तार स और सूक्ष्म विश्लेषणपूर्वक हुआ है। इस चित्रण मे पात्रों का सम्पूर्ण मानसिक वातावरण मूर्त्त हो जाता है।

लेखक अरविन्द, रानी बाला, लच्छू और रद्दू सिंह आदि पात्रों की मनः स्थिति का विश्लेषण इसी मूर्त्त विधायिनी प्रणाली पर किया गया है।

उमेश के मनः स्थिति का उदाहरण :

"....पराये पापो का दण्ड भुगतने का क्षण जब आया, तब मेरे बेटे ने सोचा कि.... मैं उन अपराधो की सजा क्यो भोगूँ जो मैने नही किये। मैने केवल एक ही पाप या अपराध किया कि पुरी साहब की बेटी से ब्याह किया और यह अपराध मैने स्वयं अपने ही प्रति किया है। इसके लिए मुझे ही दण्ड देने का अधिकार है और मुझे ही दण्ड भोगने का भी।.....एक ही अरमान लेकर जा रहा हूँ, माँ जैसी माँ और आपके समान पिता पाकर भी इस जन्म में; मन में रहते हुए भी आप लोगों की कोई सेवा न कर सका, इसलिए चाहता हूँ कि मेरा एक जन्म आप दोनों की सेवा में अवश्य बीते।"

कितना सुन्दर मार्मिक और हृदयस्पर्शी वाक्य है। मानसिक स्थिति का अति सुन्दर उदाहरण है। इस प्रकार के अनेक वातावरण निर्मित हुए हैं। पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण करने में नागर जी कुशल हैं।

(२) वाह्य वातावरण की दृष्टि से :

(अ) स्थानीय रग :

स्थानीय वातावरण का चित्रण दो रूपों में होता है—स्थानीय वाह्य वात

वरण के रूप में और प्रकृति-चित्रण के रूप में। इस उपन्यास में दोनों प्रकार का चित्रण मिल जाता है।

स्थानीय बाह्य वातावरण।

स्थान-विशेष का बाहरी वातावरण, जन-जीवन, प्रकृति, सबका मिला-जुला रूप—उपन्यास में स्थान-स्थान पर चित्रित हुआ है, जो सम्पूर्ण सामाजिक जीवन के चित्रण का अंग है।

उदाहरण—अरविन्द शंकर कहते हैं, 'मेरे आस पास चारों ओर झूठे और निकम्मे धर्म के सड़े पानी में कीडों की तरह बिलबिलाने वाला हिन्दू-मुसलमान समाज अब भी मौजूद है।"

इस प्रकार वर्तमान भारतीय समाज का सजीव चित्र उपस्थित हो गया है।

प्रकृति-चित्रण :

प्रकृति के वर्णन संक्षिप्त है और उतने ही है जितने घटना-प्रसंग की पृष्ठ-भूमि या समय बताने के लिए आवश्यक हुए है। इस उपन्यास में सिर्फ सारस-लेक का ही वर्णन है।

इस उपन्यास मे लखनऊ की बाढ़ का विस्तृत वर्णन है। उस सैलाव में हर गन्दगी बहती-उतराती नजर आती है।

"गाढ़ा मटमैला तैरते हुए झागों और कूड़े कतवार से भरा हुआ अपेक्षाकृत शान्त जल देख-देखकर मन मे एक अजब मनहूसियत और मौत के रेगिस्तान-सा भास मन में होता था।........"

नाव तेजी से बढ़ी। तीन-तीन मुहानों में बँटकर भी पानी में बला की गति थी। अंधेरा घुटन और कुछ-कुछ सड़ाघ भी, जो आगे बढ़ने के साथ ही बढ़ती गई। पहला पाला मकड़ी के घने जालों से पड़ा। ऊपर की गोल दीवाल की कुछ उखड़ी हुई ईंटों वाली दो जगहों में चिमगादड़ों की महा घुटन वाली बदबूदार चूँ-चूँ भरी बस्तियाँ मिलीं।"

बहुत ही सटीक यथार्थवादी चित्रण, साथ ही अदभुत प्रतीक-व्यंजना।

(आ) सामाजिक परिस्थितियाँ :

सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण सर्वाधिक विस्तार से इन उपन्यास में

हुआ है । समाज के आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-नीति, समाजिक कुरीतियों आदि का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है।

"विक्टोरिया के युग से लेकर आज तक भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों का उत्थान और पतन उसके अन्तर्गत पनपने वाली राजनीतिक सांस्कृतिक, नैतिक और आर्थिक मान्यताएँ और प्रवृत्तियाँ, उन सबके आधार पर गठित चारित्रिकता और इन तमाम चीजों का मानवीय प्रकृति में प्रतिफल यह सब नागर जी की औपन्यासिक कला के महत्वपूर्ण उपकरण बनकर आए हैं।"

—धर्मवीर भारती

सामाजिक परिस्थितियों के चित्रण में नागर जी को विशेष सफलता प्राप्त हुई है।

(ब) धार्मिक-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ :

धर्म और संस्कृति सामाजिक जीवन के अंग हैं, ये दोनों भी रूढ़िगस्त हो गये हैं। मन्दिरों मे पूजा नाममात्र को है, पाप अधिक है। धार्मिक जीवन का अस्तित्व ही वास्तव में नहीं रहा है। जनता नास्तिक है, पर वह आस्तिकता आन्धी है। संस्कृति के नाम पर जो परम्पराएँ हैं—विवाह की रीति-रिवाजों की, वे भी दूषित हो चुकी है। 'अमृत और विष' उपन्यास में धार्मिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों और विकृत परम्पराओं पर करारे व्यंग्य किए गए हैं।

(स) राजनीतिक परिस्थितियाँ :

'अमृत और विष' उपन्यास सामाजिक घटना प्रधान उपन्यास है। इसलिए राजनैतिक परिस्थितियों का चित्रण संक्षिप्त है। अप्रत्यक्ष रूप रानी विक्टोरिया के युग से आज तक राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन किया गया है।

लाला रेवतीरमन और लच्छू ने जो श्रीमती चारूलता चौधरी को आम चुनाव में विजय दिलाने की कोशिश की है, वह स्वार्थ की भावना से किया गया प्रयास है। पूँजीपति वर्ग और राजनैतिक पार्टियाँ जनता की दुर्बलताओं का लाभ उठाती हैं, उनकी अरथी पर अपना स्वार्थ-साधन करतीं हैं।

(द) आर्थिक परिस्थितियाँ :

'अमृत और विष' उपन्यास में देश और जनता की आर्थिक परिस्थितियों का वास्तविक चित्रण हुआ है।

लेखकों की स्थिति दयनीय है। अरबिन्द लेखक का जीवन दयनीय है। अपनी पुत्र वधू उषा और पौत्रों का पालन-पोषण नहीं कर सकता है। अपनी बेटी वरुणा को पढ़ा नहीं सकता है। रद्धू सिंह के घर का वर्णन अति दयनीय रूप में सामने आता है। रद्धू सिंह गरीबी और बेकारी के कारण कुकर्म करने को मजबूर है।

देश में गरीबी है, भुखमरी है, बेरोजगारी है। सामान्य व्यक्ति पीड़ित हैं, शोषित हैं।

(३) देशकाल-वर्णन या वातावरण-चित्रण :

'अमृत और विष' उपन्यास में देशकाल या वातावरण का वर्णन यथार्थ व सटीक है। रानी विक्टोरिया के युग से लेकर आज तक वर्णन किया है। इस उपन्यास में निम्नलिखित गुणों की विशेषता है :

१. चित्रण की सूक्ष्मता और गहनता।

२. चित्रण की यथार्थता और स्वाभाविकता।

३. वर्णन शैली की प्रभावात्मकता, सानुपातिकता और सोद्देश्यता।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निःसंकोच रूप से कहा जा सकता है कि देशकाल और वातावरण के चित्रण में 'अमृत और विष' उपन्यास सफल है।

भाषा–शैली

प्रश्न १२—भाषा-शैली की दृष्टि से 'अमृत-विष' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—विषय-प्रवेश—'अमृत और विष' उपन्यास में साधारण बोलचाल की बड़ी अर्थ-गर्भित और व्यंजनापूर्ण भाषा का जैसा प्रयोग श्रीअमृतलाल नागर ने किया है, वह उनकी उपन्यास-कला की विशिष्ट देन है। कथा-वर्णन हो या पात्रों की बातचीत अथवा पात्रों का मनःचिन्तन और चरित्र-विश्लेषण, लेखक की भाषा सर्वत्र बड़ी सुन्दर, कलात्मक, प्रवाहपूर्ण, पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल तथा लेखक के भावों, विचारों और उद्देश्य एवं पात्रों के चरित्र-विश्लेषण में अत्यधिक सूक्ष्म दीख पड़ती है। इसीलिए अमृत और विष जैसा वृहदाकार उपन्यास अतीव रोचक और आकर्षक बन पड़ा है।

उपन्यास की भाषा सरल, सुबोध एवं प्रवाहमयी है। वाच्यों के गठन में कलात्मक सृष्टि है। कथा-वर्णन और संवाद दोनों में भाषा का बड़ा सोद्देश्य, अर्थ-गर्भित, व्यंजनापूर्ण, पात्र और प्रसंग के अनुकूल प्रयोग मिलता है।

'अमृत और विष' उपन्यास में भाषा का प्रयोग अति कलात्मक दृष्टि से किया गया है। भाषा के निम्नलिखित गुण हैं :

(१) सरल-स्वाभाविक बोल-चाल की भाषा का प्रयोग है।

(२) अलंकृत और काव्यात्मक भाषा का भी प्रयोग है।

(३) गम्भीर चिन्तन-प्रधान भाषा।

(४) भाषा में सरलता, रोचकता और प्रवाहपूर्णता है।

(५) भाषा में प्रसंगानुकूलता है।

(६) भाषा में भावाभिव्यक्ति की अपूर्व क्षमता है।

(७) भाषा में वर्णनात्मकता और विवरणात्मकता है।

(८) चित्रणात्मकता तथा मूर्ति विधायिनी क्षमता है।

(९) वाक्य संक्षिप्त तथा चुस्त है।

(१०) वाक्य प्रभावात्मक और कलात्मकता से पूर्ण हैं।

(११) वाक्यों में शब्द सरल, परिष्कृत तथा कलात्मक है।

(१२) प्रसंगानुकूल लोक-वाणी की स्वाभाविकता का समावेश होता है।

'अमृत और विष' उपन्यास की भाषा में उपयुक्त गुणों का समावेश है। अतः भाषा की दृष्टि से उपन्यास सफल है।

शैली—उपन्यासकार जिस ढंग से कथा, पात्र और अपने विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है, उसे शैली कहते हैं। शैली उपन्यास का शिल्प-विधान है।

'अमृत और विष' उपन्यास की शैली वर्णनात्मक शैली में लिखित एक उत्कृष्ट उपन्यास है। डायरी शैली का यह उपन्यास हिन्दी-साहित्य का उज्ज्वल नमूना है।

इस उपन्यास की शैली में निम्नांकित गुण हैं :

(१) सरलता और स्वाभाविकता है।

(२) रोचकता, सरसता और मार्मिकता है।

(३) चित्रण-कौशल है।

(४) प्रवाहपूर्णता एवं भावपूर्णता है।

(५) चमत्कार और नवीनता है।

(६) प्रभावात्मकता का समावेश है।

(७) प्रत्येक पात्र की भावनाओं की अभिव्यक्ति करती है।

(८) भावों, विचारों और उद्देश्य की अभिव्यक्ति करती है।

(९) वातावरणपूर्ण शैली है।

(१०) इनकी शैली से पात्रों की रूपरेखा, उनके व्यक्तित्व, उनकी मनःस्थिति आदि का वर्णन स्पष्ट हो जाता है।

सामाजिक यथार्थ

प्रश्न १३—सामाजिक यथार्थ की दृष्टि से अमृत-विष उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

अथवा

प्रश्न १४—सिद्ध कीजिए कि 'अमृत और विष' एक यथार्थवादी सामाजिक उपन्यास है।

उत्तर—विषय-प्रवेश—अमृत और विष उपन्यास में सामाजिक यथार्थता है। सम्पूर्ण उपन्यास सामाजिक है। इस उपन्यास का कथानक भी सामाजिक घटनाओं से सम्बन्धित है। समाज के यथार्थपरक रूप का चित्रण किया गया है। लेखक श्री नागर जी का उद्देश्य ही समाज के उज्ज्वल और कलुषित पक्षों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करना है। इसी के आधार पर उपन्यास का नाम 'अमृत और विष' है। अतः यह उपन्यास पूर्णरूपेण सामाजिक है। इस उपन्यास में निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं :

(१) नवीन सामाजिक चेतना (जन-चेतना) का जागरण :

नागर जी जन-चेतना के सजग कथाकार हैं। उन्होंने जन-मानसजन-चेतना को झकझोर कर जाग्रत किया है, सामाजिक क्रान्ति की प्रेरणा प्रदान की है। इस उपन्यास में सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आन्दोलनो को पृष्ठभूमि के रूप में अंकित कर, उन्होंने जन-मानस को जगाने का प्रयत्न किया है। इसी उद्देश्य के अनुरूप उनके पात्र विविध बौद्धिक और सामाजिक वर्गो का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस उपन्यास में मुख्य रूप से अन्तर्जातीय प्रेम-विवाह, विधवा-विवाह और सामाजिक अनाचार की समस्याओं को सामने रखकर इन्हें राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही में तरुण युवकों को अपनी मुक्ति और स्वच्छन्दता के लिए प्रयत्नशील दिखाया गया है। दो पीढ़ियो पुरानी और नयी

का संघर्ष यहाँ प्रखर रूप में सामने आया है। यह उपन्यास क्रान्ति की प्रेरणा प्रदान करता है।

(२) व्यक्ति-चेतना और सामाजिक चेतना का सामंजस्य :

नागर जी सामाजिक चेतना के कथाकार हैं, परन्तु वे वैयक्तिक चेतना की उपेक्षा न कर वैयक्तिक चेतना के साथ सामाजिक चेतना का सामंजस्य करते हैं। उनकी दृष्टि में व्यक्ति और समाज दोनों का अपना-अपना महत्व है—दोनों की कलात्मकता या सामंजस्य में संसार के विरोधाभास का समाधान हो सकता है।

लच्छू और रमेश का चरित्र इसी भावना को स्पष्ट करता है। डॉ० आत्माराम के सारस लेक में जो समाजवादी व्यवस्था है, वह इसी भावना और उद्देश्य की पूर्ति करती है।

तरुण छात्र-संघ में रमेश द्वारा अध्ययन की जो व्यवस्था है। वह भी व्यक्ति और समाज के उद्देश्य को पूर्ण करती है।

(४) मानवतावादी मूल्यों की प्रतिष्ठा :

व्यक्ति और समाज के सामंजस्य को नागर जी ने मानवतावादी दर्शन कहा है। उनमें कोई रूढ़िवाद या परम्परागत मूल्यों की संकीर्णता नहीं है। वे जीवन की वस्तु-स्थिति द्वारा समर्पित मूल्यों, यथार्थ जीवन मूल्यों का मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था व्यक्त करते है और मानव-सत्य और मानवीय संवेदनाओं का सम्प्रसारण ही उनकी उपन्यास-कला का उद्देश्य है।

लेखक अरविन्द ने अन्त में कहा—"मुझे जीना ही होगा, कर्म करना ही होगा। यह बन्धन ही मेरी मुक्ति भी है। इस अंधकार ही में प्रकाश पाने के लिए मुझे जीना है। कर्म करना ही गति है।"

"पूँजीवाद के सूत्रों से व्यष्टि और समष्टि दोनों बँधे हुए हैं। समाज-मन्थन में अभी विष ही ज्यादा प्रकट हो रहा है किन्तु अमृत का नितान्त अभाव नहीं है।

—डॉ० रामविलास शर्मा

(४) सामाजिक यथार्थ का वास्तविक चित्रण

'अमृत और विष' उपन्यास में सामाजिक यथार्थ का वास्तविक चित्रण हुआ है। उदाहरण :

लेखक अरविन्द ने बताया—"मेरे आस-पास चारों ओर झूठे और निकम्मे धर्म के सड़े पानी में कीड़ों की तरह बिलबिलाने वाला हिन्दू-मुसलमान समाज अब भी मौजूद है।' समाज के यथार्थ का सटीक वर्णन है।

नागरजी सामाजिक यथार्थ के चितेरे हैं। उन्होंने समाज का यथार्थपरक, ज्यों का त्यों चित्र प्रस्तुत किया है। सामाजिक रूढ़ियों और अनाचारों पर करारे प्रहार किये हैं।

(५) सहज यथार्थ मानवीय चरित्रों का निर्माण :

सामाजिक यथार्थ के अनुरूप नागर जी के पात्र भी सहज यथार्थ हैं। लेखक ने मानव-चरित्र की यथार्थता का उद्घाटन कर सहज मानवीय मनोभावनाओं का सजीव और मार्मिक अंकन किया है। मानव-मनोविज्ञान में नागर जी की गहरी पैठ है।

इसीलिए उनके पात्र पूर्णरूपेण यथार्थ बन पड़े हैं।

'अमृत और विष' उपन्यास में लेखक अरविन्द, रद्धू सिंह, लच्छू और रमेश का चरित्र पूर्णरूपेण यथार्थ बन पड़ा है।

(६) अद्वितीय चित्रण-कौशल और प्रतिपादन-सौष्ठव :

कला के अभिव्यक्ति पक्ष में नागर जी का अद्वितीय चित्रण-कौशल और चित्रणात्मकता तथा मूर्तविधायिनी क्षमता अपूर्व है। अपनी इस प्रतिभा का परिचय इस उपन्यास में दिया है। भाषा की यथार्थता, व्यंग्य और अभिव्यक्ति की क्षमता के बल पर पात्रों और वातावरण को सजीव कर दिया है। कथा में एक विचित्र संगति और यथार्थता भर दी है। जैसे :

"गाढ़ा मटमैला तैरते हुए झागों और कूड़े कतवार से भरा हुआ अपेक्षाकृत शांत जल देख-देखकर मन में एक अजब मनहूसियत और मौत के रेगिस्तान सा भास मन में होता था।...."

'नाव तेजी से बढ़ी। तीन-तीन मुहानों में बँटकर भी पानी में बला की गति थी। अँधेरा, घुटन और कुछ-कुछ सड़ाँध भी, जो आगे बढ़ने के साथ ही बढ़ती गयी। पहला पाला मकड़ी के घने जालों से पड़ा। ऊपर की गोल दीवाल की कुछ उखड़ी हुई ईटों वाली दो जगहों में चिमगादड़ों की महा घुटनवाली बदबूदारी चूँ-चूँ भरी बस्तियाँ मिली। साँस लेना दूभर पड़ गया, उजाले के

घेरे दोनों ओर बराबर दूरी पर जिस समय दिखलाई पड़ने लगे, उस समय तो बदबू का अन्त ही ना रह गया था।"

यहाँ बहुत ही सटीक यथार्थवादी चित्रण के साथ ही अद्‌भुत प्रतीक व्यंजना है। नागर जी यथार्थवादी और आदर्शवादी लेखक हैं। 'अमृत और विष' उपन्यास में समाज की यथार्थता का वर्णन किया गया है।

नागर जी भारत में अँग्रेजों के आगमन से लेकर स्वतंत्र भारत के चौथे चुनाव से पहले तक के समाज की गतिविवि को समेट सकने में सफल हो जाते हैं।

पाश्चात्य जीवन-प्रणाली के आघातपूर्ण साक्षात्कार ने भारतीय समाज की नीवों को जिस तरह हिला दिया था, हमारे चिर प्रचलित सत्य जिस प्रकार एकाएक झूठे पड़ गये थे, व्यवसाय-वृत्ति ने लोकमानस को जिस प्रकार व्यस्त और विक्षुब्ध कर दिया था, दार्शनिक और सामाजिक मान्यताएँ जिस प्रकार ओछी, व्यर्थ और अवरोधक सिद्ध हो गयी थीं, उनका एक सरल चित्र देने मे नागर जी को सफलता मिली हैं।

यह उपन्यास का एक आयाम है। दूसरा आयाम है अरविंद द्वारा रचित वह उपंयास है जो वर्तमान समाज की हलचल और उथल-पुथल को वर्तमान के ही स्तर पर अंकित करता है। यह समाज स्वतंत्रता-प्राप्ति के उपरांत का शहरी समाज है, जिसमें व्यक्ति के मन पर से आदर्शों का पानी उतरता जा रहा है। राजनीति के नारे थोथे होते जा रहे हैं, और आर्थिक कष्ट, अभाव एवं त्रास के कारण जन साधारण अत्यन्त कुण्ठित और निराशा अनुभव करता है। क्षुद्र स्वार्थो एवं भ्रष्ट आचरणों ने इस समाज को इतना विशृंखलित और दिशाहीन कर दिया है कि युवा वर्ग अपने आपको निस्सहाय और अकेला अनुभव करता है। वह जान चुका है कि हर प्रचारित सिद्धान्त धोखे की टट्टी है, हर नेता स्वार्थी और पदलोलुप है और हर योजना किसी एक ही व्यक्ति अथवा क्षुद्र वर्ग के एकान्त लाभ के लिए प्रस्तावित है।

इन दो आयामों को साथ-साथ बढ़ाकर नागर जी ने 'अमृत और विष' द्वारा अपने समाज का अत्यन्त विस्तृत और विवरणपूर्ण महाचित्र रचने का प्रयत्न किया है।

इसी उद्देश्य से उन्होंने एक नगर के एक मोहल्ले को अपना केन्द्र बनाकर न जाने कितने परिवारों की वंश-गाथा और कितने पात्रों की झांकियाँ प्रस्तुत की हैं। एक मजदूर वर्ग को छोड़कर प्राय: सभी वर्गों के प्रतिनिधि चरित्र इस वृहद उपन्यास में समाये हैं।

इस प्रकार 'अमृत और विष' उपन्यास यथार्थ समाजवादी और आदर्श समाजवादी हैं।

चरित्र-चित्रण

प्रश्न १५—"जो शत्रुता करने आता है, वह शत्रु वेश में न आकर मित्र रूप में आता है।" इस कथन के आधार पर खोखा मियाँ का चरित्र बिश्लेषण कीजिए।

अथवा

प्रश्न १६—"समाज द्रोही और देश द्रोही समाज में सफेद पोशों के रूप में सामने आते हैं।" इस कथन के आधार पर खोखा मियाँ का चरित्र-चिवण कीजिए ?

उत्तर : विषय-प्रवेश—हाजी नबीवख्श नगर के प्रसिद्ध उद्योगपति और मकानपति है। हाजी साहब की एक पत्नी और दो उप-पत्नियाँ हैं। ढाके की एक बंगालिन तवायफ जोकि हाजी साहब की उपपत्नी है, उसका बेटा नूरवख्श उर्फ खोखा मियाँ है। पिता के धन-दौलत में उसका भी हिस्सा है। प्रारम्भ में हाजी सहाब खोखा मियाँ को बहुत चाहते थे। परन्तु पिता इच्छा के विपरीत आचरण करने से बाप बेटे में अनबन हो गई। बाद में खोखा मियाँ अपने पिता को पहला शत्रु मानने लगे और बाद में पूरे समाज को अपना शत्रु मानने लगे।

लोभी एवं स्वार्थी

खोखा मियाँ के पास लाखों की सम्पत्ति है, फिर वह धन का लालची है। धन कमाने के उद्देश्य से उसने लघु-उद्योग-संस्था का निर्माण किया था।

समाज को बताने के लिए सहकारिता एवं मध्यवर्ग की उन्नति के लिए संस्था का निर्माण किया था, परन्तु उसका आर्थिक लाभ खोखा मियाँ को प्राप्त होता था।

मजदूरों की हड़ताल होने पर सहकारिता के आधार पर उद्योगपुरी में एक विशाल रेस्टोरेण्ट 'पेरेडायिज' का निर्माण किया गया। परन्तु स्वामित्व खोखा मियाँ का रहा है।

धन की शक्ति से खोखा मियाँ ने आम चुनाव में अपना उम्मीदवार खड़ा किया, परन्तु चुनाव हार गया। खोखा मियाँ ने चुनाव प्रचार में लाखों रुपये खर्च कर दिये।

महत्वाकांक्षी—खोखा मियाँ लाखों पति बनना चाहता है। वह नीति-अनीति हर साधन से धन कमाता है। वह खुद कहता है कि ईमानदारी से धनवान नहीं बना जा सकता। दुर्भाग्य से गोपी हत्याकाण्ड में उसके पुत्र के कारण उसकी आठ होटलें नष्ट हो जाती हैं।

समाज व देश-द्रोही के रूप में :

खोखा मियाँ ने शहर में चारो तरफ डोल-डोलकर देख लिया कि इस समय वह किसी की भी सहानुभूति और सहयोग नही पा सकता। खोखा भी सारी दुनियाँ से नफरत करने लगा। खोखा मियाँ धुन्नी की हेकडी मे आ गये। बावन हजार रुपया रोकड़ बनाकर सोचने लगे कि समाज की डोर किस तरह से अपने हाथ में की जाय।

कुनीति—"खोखा मियाँ की योजना दोरुखी थी। एक ओर अपने शत्रुओं को वह आपसी झगड़ों में उलझा रखना चाहता था और दूसरी ओर अपनी व्यावसायिक गतिविधि को जमाने की आँखों से दूर, गाँव के बाजारों के एक संगठन से अपने नियन्त्रण में लेना चाहता था।

खोखा मियाँ का कथन है—"दुनियाँ में ऐसी कोई शक्ति नहीं जिसे युक्तियों से विभक्त न किया जा सके।"

"गाँवों की लक्ष्मी का वरण करो और उसकी शक्ति से शहरो की स्त्रियों को लूटो और हथियाओ। यह दो उसके मूल मन्त्र थे। वह आर्थिक, राजनैतिक और मनोवैज्ञानिक हर पहलू से अपनी शक्तियों को रिझाने और अपने शत्रुओं को मारने के लिए मोर्चेबन्दी करने लगा।

थोड़े समय में ही खोखा मियाँ कुछ लोगों के बीच में देवता बन गये और प्रतिष्ठत हो गये । वे कहते हैं—"भीतर ताड़ी ही बेचो पर बाहर 'ॐ राष्ट्रीय दुग्धालय' का साइन बोर्ड टाँगो ।"

काले धन को जिन उपायों से उजला बनाया जाता है, उन्हीं उपायो से थोड़े रूपान्तर के साथ काले आदमियों, अपराधी, जरायमपेशा लोगों को भी उजला बनाकर एक दिन ऊँचे जमाने को भी अपनी मुट्ठी में किया जा सकता है । खोखा अपनी सत्ता चाहता था और उसकी शक्ति थे, कातिल लुटेरे ।

समाज-द्रोह के काम :

शातिरों, डाकुओं के कई गिरोह मिलाकर एक बड़ा गिरोह बन गया। गाँव की मण्डियाँ दूर-दूर तक लूटीं, फिर एक नई आढ़त संस्था जन्मी, जिसमें अनेक पुराने ताल्लुकेदारो, जमीदारों के वे वंशधर लोग थे, जो लूट का मुनाफा खाते थे । खोखा ने क्रमश: व्यवसाय के प्राचीन तन्त्र को छिन्न-भिन्न करके फिर से नई व्यवस्था दी । डाकू सफेद पोश बनकर गाँव की सरपंची और तरह-तरह के नेताई मोर्चे सम्हालने लगे ।

खोखा मियाँ देखते ही देखते चमक पड़ने लगे । छोटे दुकानदारों में कौन-कौन किस-किस के कर्जदार है, यह भेद लेकर कोरे सूदखोरों महाजनों से उन ऋणों को खरीदकर उन दुकानदारों पर नोटिस दावे होने लगे ।

मित्र बन कर शत्रु बना :

सब कुछ हुआ । पर खोखा को भद्र समाज में प्रतिष्ठा न मिल सकी । उसे प्रतिष्ठा की आवश्यकता थी ।

डॉ० आत्माराम की योजना उन दिनों बड़ी प्रतिष्ठा कमा रही थी । उसमें छोटी पूँजी और किसी न किसी रूप में श्रमपूँजी लगाकर अनेक लोग अपनी आमदनी आपसी सहयोग से बढ़ा सकते थे ।

चेम्बर आफ कॉमर्स में डॉ० आत्माराम अब अत्यन्त महत्वपूर्ण नीति निर्माता थे ।

खोखा ने कहा—"हमें अब इन लोगों (सभ्य) में घुसकर इन्हें अचानक तबाह करने की फिक्र करना चाहिए । डॉ० आत्माराम अगर हमारे साथ सध गया तो फिर मैं उसको खुली गालियाँ दूँगा, देख लेना । याद रखो छन्नू एक दिन हम दुनियाँ की हर बड़ी ताकत को तबाह कर देंगे ।"

खोखा मियाँ ने डॉ० आत्माराम को रिझा लिया। दोनों में समझौता हो गया।

फिर खोखा मियाँ ने योजना बनाकर डॉ० आत्माराम के सभी समाचार पत्रों के कार्यालय एवं प्रेस में तोड़-फोड़ व आगजनी करवा दी।

अन्त में डॉ० आत्मा ने कहा—"खोखा मुझे खत्म करना चाहता है। उसने मुझे मिलके मारा ! मिल के मारा !

प्रश्न १७—"लच्छू (श्री लक्ष्मीनारायण खन्ना) का चरित्र आज के युवा पीड़ी का प्रतिनिधित्व करता है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

प्रश्न १८—"लच्छू आज के भारत का तरुण है—बेकार और असहाय, विद्रोही, भविष्य के चिन्तित और सुखद स्वप्नों में खोया हुआ।"—इस कथन की विवेचना कीजिए।

उत्तर : प्रारम्भिक-परिचय—श्री अमृतलाल नागर के 'अमृत और विष' उपन्यास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुरुष-पात्र पाँच है—लेखक अरविन्द शंकर, रमेश, लच्छू श्री खन्ना साहब और डॉ० आत्माराम। उपन्यास में नायक कौन ? इस प्रश्न का सम्बन्ध मुख्यत: लच्छू और रमेश से है। रमेश और लच्छू--इन दो पात्रों में कौन नायक है—यही प्रश्न विचारणीय है।

'अमृत और विष' उपन्यास के मुख्य कथानक के प्रारम्भ से अन्त तक रमेश और लच्छू का चरित्र-चित्रण है। दोनों की तुलना एवं कथावस्तु को ध्यान में रखने पर लच्छू रमेश से बाजी हार जाता है। अर्थात् प्रमुख रमेश है और सहनायक लच्छू है।

सहनायक—लच्छू (श्री लक्ष्मीनारायण खन्ना) इस उपन्यास में सह-नायक है।

जीवन-परिचय—लच्छू के पिता सरकारी कर्मचारी हैं। पारिवारिक जवाबदारी को पूर्णतय निभाते नहीं हैं। इनका परिवार मध्यमवर्गी है। बड़े भाई और भाभी हैं। सास बहू की नहीं बनती है। इसलिए भाई भाभी अलग रहते हैं। उनके बाल-बच्चे हैं। अत: माँ-बाप को आर्थिक मदद नहीं दे पाता हैं।

माँ-बाप और छोटे भाई-बहन हैं। साइकिल लेकर ट्यूशन करते हैं। अपना जीवन बनाते हैं।

लच्छू रमेश का परम मित्र है। लच्छू और रमेश ने तरुण छात्र-संघ की स्थापना की है। अध्ययन करने, व्यायाम करने तथा सामाजिक सेवा करने के लिए संघ का निर्माण किया है। पिछले दस साल से लच्छू छात्रों का नेता है। एम० ए० का छात्र है।

नेता व सहनायक—लच्छू छात्रों का नेता है। इस उपन्यास में सहनायक हैं। मुख्य कथा के प्रारम्भ में रमेश की बहन में रमेश के साथ लच्छू दिखाई देता है। रमेश और लच्छू के बारे में निम्न पंक्ति उनके चरित्र का चित्रण कर देती है।

"साइकिल लेकर ट्यूशन करते बाप से लड़ते, गलियों में चुराकर बीड़ी पीते, प्रेम के सपने देखते, रमेश, लच्छू जैसे लड़के न केवल लखनऊ में, वरन् उत्तर भारत के हर शहर में देखने को मिल जायेंगे।"

सद्‌गुण युक्त—लच्छू गरीब हैं पर ईमानदार भी है। विद्यार्थी जीवन में अपने जीवन का आदर्श उद्देश्य रखता है। वह सेवाव्रती है।

कथा का केन्द्र :

उपन्यास की अधिकांश कथा उससे सम्बन्धित है। मुख्य कथा के प्रारम्भ से अन्त तक घटनाएँ उससे सम्बन्धित हैं। जहाँ-जहाँ उपन्यास में लच्छू का चरित्र सामने आया है, वहाँ उसका वर्णन सटीक बन गया है।

महत्वाकांक्षी :

लच्छू भविष्य के सुखद सुनहरे स्वप्न देखता है। उसके लिए प्रयत्न-शील है।

नीति :

लच्छू एक महत्वाकांक्षी है। अपनी आर्थिक उन्नति के लिए उसकी अपनी नीति है—"महत्वाकांक्षी की सक्रियता आजकल (या शायद सदा) खुशामद तिकड़म, दाँवपेंच और स्वार्थ भरी बदमाशियों की दिशा में रही है। उसकी आकांक्षा का महत्व केवल उसी तक सीमित है—और इसलिए वह वर्ग से अकेला ही लड़ता है!"

लच्छू की दुनियादारी उक्त नीति के आधार पर आधारित है।

रमेश का साथी होने से श्री खन्ना साहब ने उसे डॉ० आत्माराम के यहाँ नौकरी दिलादी। डॉ० आत्माराम के सारस-लेक में आधुनिक समाजवादी व्यवस्था है। इस आर्थिक समाजवादी व्यवस्था से लच्छू महत्वाकांक्षी बन गया।

"मिसेज उमा माथुर के धोखे भरे व्यवहार में फंसकर उस भले नौजवान के चरित्र में दाग आखिरकार लग ही गया। यह दुनिया फरेब से भरी है और अनुभवहीन नवयुवक अक्सर उसमें फँसकर पछताने को वाध्य होते हैं।"

श्रीमती उमा माथुर के कृपापात्र होने से लच्छू रूस देश की यात्रा करके वापिस आया। आने के बाद उसकी नौकरी समाप्त हो गयी।

"दुनियाँ घूम कर बुद्धू घर को आये। अच्छू घर आया। वह अमीर जीवन व्यतीत कर चुका था। अब गरीबी का जीवन नहीं बिताना चाहता है।

यहाँ आकर अपनी दुनियादारी से मजदूर नेता को मिलाकर पेरेडायिस रेस्टोरेण्ट का मैनेजर बन गया। फिर भी उसकी आत्मा को शान्ति नहीं मिली।

इसलिए अपने दाँव पेंच के द्वारा आम-चुनाव में एक मोटर का स्वामी और हजारपति बन गया। पर पूँजीपति वर्ग ने उसकी जीवन रूपी मोटर को बिना पेट्रोल का बना दिया। वह बेकार हो गया। अपनी वेकारी में उसके चरित्र का पतन हो गया।

वह खोखा मियाँ से मिल गया। अन्त में समाचार-पत्र की घटना ने उसके हृदय में परिवर्तन कर दिया। डॉ० आत्माराम को उसने पूरी आत्म-कथा बतादी। आत्म-कथा सुन लेने के बाद डॉ० साहब ने अपना मत इस प्रकार दिया है :

डॉ० आत्माराम—"उनके सामने कुण्ठित नौजवान भारत बैठा था, जो बेकार है, दरिद्रता से नफरत करता है, उन्नतिशील जीवन चाहता है और न मिलने पर, दुतकारे जाने पर अपने कुण्ठित आत्म-सम्मान के लिए, जीवन सुरक्षा के लिए कितना अविवेकी, क्षुद्र और अन्धस्वार्थी हो जाता है। ये अभी अपराधी नहीं, विकृत विद्रोही भर हैं।"

लच्छू का यह विश्लेषण कुल मिलाकर सही है। वय कुण्ठित नौजवान भारत का प्रतिनिधि है, वह क्रान्तिकारी भी बन चुका है, फासिस्ट भी। आज के भारत में हुए लच्छू से अधिक 'टिपिकल' पात्र हिन्दी उपन्यासों में दूसरा मुश्किल से मिलेगा। उसकी वेदना भी गर्भभेदी है। वह अपने चरित्र की सम्भावनाएँ जानता है, फासिस्टवाद और समाजवाद का अन्तर समझता है। इसलिए अधिक व्यथित है। उसकी पीड़ा व्यक्तिगत तो है ही, किन्तु वह एक काफी बड़े युवा समुदाय की पीड़ा भी है।

प्रश्न १९—अमृत और विष उपन्यास का नायक कौन है ? स्पष्ट करते हुए उसका चरित्र-चित्रण कीजिए ?

अथवा

प्रश्न २० —रमेश का चरित्र-चित्रण कीजिए ?

अथवा

प्रश्न २१—"नयी पीढ़ी का निर्माता रमेश है" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—विषय प्रवेश :

श्री अमृत लाल नागर के 'अमृत और विष' उपन्यास में सर्वाधिक पुरुष-पात्र दो हैं—रमेश और लच्छू। अब सवाल आता है कि नायक कौन ? यही प्रश्न विचारणीय है। उपन्यास में नायक का निर्णय करने के लिए हमारे सामने कौन सी कटौती है जिसके माध्यम से नायक का चुनाव किया जा सके।

नायक के गुण :

नायक में निम्नलिखित गुणों का समावेश हो—(१) सदगुणों से युक्त हो (२) शीलवान हो। (३) कथा में महत्वपूर्ण स्थान हो। (४) कथा का नेता हो। (५) उद्देश्य की पूर्ति का साधन हो। (६) उपन्यास के परिणामों का भोक्ता हो। (७) सब कथा-प्रसंगों का केन्द्र हो। और (८) कथा का मुख्य आधार हो।

उपर्युक्त गुणों से युक्त 'अमृत और विष' उपन्यास का नायक श्री रमेशचंद्र गौड़ है।

प्रारम्भिक-परिचय : पुत्ती गुरु का ज्येष्ठ पुत्र रमेश है। रमेश की दो

बहन और दो भाई हैं। पुत्ती गुरू जजमानी व पूजा कर्म करके परिवार का पालन-पोषण करता है। रमेश एम० ए० का छात्र है। तरुण छात्र-संघ का प्रधान नेता है। वह ट्यूशन करके अपनी पढ़ाई करता है। बाद में वह एक सफल पत्रकार बन जाता है।

सद्‌गुणों से युक्त है :

श्री नागर जी के इस उपन्यास में आदर्शवादी कल्पित पात्र नहीं है, बल्कि यथार्थरूपेण समाज के वास्तविक पात्रों का चिणत्र है। चरित्र-चित्रण यथार्थ बना है। एक सामाजिक प्राणी में जो गुण होने चाहिए वह सद्‌गुण रमेश में हैं। वे चरित्रवान, ईमानदार और कर्मठशील व्यक्ति है।

वह प्रेम जैसी वस्तु को पवित्र मानता है। इसलिए उसका रानी के प्रति जा प्रेम है, वह मानवोचित है न कि वासनामय। पूरे उपन्यास में वासनामय प्रेम का वर्णन ही नहीं है।

रमेश समाज-सेवी, परिवार का ध्यान रखने वाला, अपने कर्त्तव्य में सजग और चरित्रवान है। "संघर्ष ही जीवन है।" इस मान्यता को माननें वाला है।

शीलवान : रमेश एक शीलीवान युवक है। शालीनता उसका आभूषण है।

कथा में महत्वपूर्ण स्थान :

प्रमुख कथा में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। रमेश के चरित्र को मुख्य कथा अलग कर दें तो यह उपन्यास ही नहीं बन सकता।

कथा का नेता :

'अमृत और विष' उपन्यास का प्रारम्भ और अन्त दोनों ही रमेश से होता है। पुत्ती गुरू की बेटी की शादी से लेकर खोखा मियाँ का विरोध करते रहने तक में सम्पूर्ण कथा का लगभग वही नेता है।

उद्देश्य की पूर्ति का साधन :

अमृत और विष उपन्यास में नागर जी का उद्देश्य है कि—"**समाज मन्थन में अभी विष ही ज्यादा प्रकट हो रहा है किन्तु अमृत का नितान्त अभाव नहीं है।**" इसी उद्देश्य को लेकर यह सामाजिक घटना प्रधान उपन्यास है। सम्पूर्ण घटनाओं का समाधान रमेश के कार्यो से होता है।

रमेश अन्त में कहता है—"जीवन में संघर्ष करे तो समाज के कलुषित वातावरण को दूर करने के लिए।

इस तरह से रमेश के माध्यम से उपन्यास का उद्देश्य पूर्ण होता है।

उपन्यास के परिणाम का भोक्ता है :

नायक वही होता, जो उपन्यास के परिणाम को ग्रहण करे। खोखा मियाँ की वास्तविकता का सबसे पहले पता वही लगाता है और प्राणों की बाजी लगाकर सामना करता है। जीवन में संघर्ष करने का परिणाम भी उसी पर आता है। वही उज्ज्वल समाज रूपी आकाश का ध्रुवतारा है।

समस्त कथा प्रसंगों का केन्द्र :

'अमृत और विष' उपन्यास के मुख्य कथा का केन्द्र रमेश ही है। सभी घटनाओं का प्रत्यक्ष सम्बंध रमेश से है। रमेश के द्वारा ही सभी घटनाएँ स्पष्ट होती हैं। इसलिए सब कथा-प्रसंगों का केन्द्र रमेश है।

कथा का मुख्य आधार :

'अमृत और विष' उपन्यास का प्रमुख विषय है—अन्तर्जातीय-विवाह, प्रेम-विवाह, विधवा-विवाह। यह समस्याएँ खड़ी होती हैं, रानी और रमेश के प्रेम से। रानी बाल विधवा है, राजपूत जाति की है वह रमेश से प्रेम करती है। रमेश ब्राह्मण जाति का है और दोनों का विवाह भी होता है। यही प्रमुख समस्याएँ जिसके आधार पर इतना विस्तृत उपन्यास लिखा गया है।

परिश्रमी—रमेश सोचता है कि यदि भाग्य पर ही मनुष्य का अस्तित्व निर्भर है तो उसका कर्म करना ही बेकार है। मनुष्य यदि भाग्य का ही गुलाम है तो उसकी स्वेच्छा का प्रश्न भी नहीं बठता।

रमेश अपना, अपने परिवार और रानी के परिवार की आर्थिक सहायता करता है।

"मैं अपने पाँवों पर खड़ा हुआ हूँ। मैंने मेहनत से अपना कैरियर बनाया है। तरुण छात्रसंघ की तेजस्वी आत्मा 'मैं' था बाढ़ में 'मैंने' नेतृत्व दिया। मेरे सामने बढ़बोली हाँकता है। 'मैं' जानता हूँ, समाज क्या है। 'मैं' जानता हूँ समाज के स्वतन्त्र होने के माने हैं व्यक्ति की स्वतन्त्रता।"

अतः हम कह सकते हैं कि 'अमृत और विष' उपन्यास में नायक रमेश है।

वह मानवतावादी, आदर्शवादी, कर्मशील, चरित्रवान, व्यावहारिक, ईमानदार तथा धैर्यवान व साहसी युवक है। महत्वाकांक्षी है।

संघर्ष ही जीवन है। आदि मनोविनोद गुणों का समावेश है।

प्रश्न २२—रानीबाला का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर : विषय-प्रवेश—'अमृत और विष' उपन्यास में नायिका रानीबाला राठौर है। मुख्य रूप से नारी पात्रों में रानीबाला राठौर, सुमित्रा, श्रीमती कुसुमलता खन्ना ही है। परन्तु रानीबाला विशेष रूप से प्रमुख कथानक से सम्बन्धित है। उपन्यास की प्रमुख समस्या, जिसके आधार पर वह रचा गया है— अन्तर्जातीय-विवाह, प्रेम-विवाह, बाल-विवाह रानीबाला से सम्बन्धित है।

प्रारम्भिक-परिचय—रानीबाला राठौर रद्धूसिंह की बेटी है। रानी का जन्म उस समय हुआ, जबकि उसके पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी थी। पर बाद में गरीबी ने घेर लिया। रानीबाला विधवा है। उसकी माँ नहीं है, सौतेली माँ और सौतेले भाई-बहन हैं। रानी पुत्ती गुरु की बेटी की सहेली है।

कथानक निर्माण :

'अमृत और विष' उपन्यास में विधवा-विवाह और अन्तर्जातीय विवाह की समस्या को लेकर रचा गया है। रानी बाल-विधवा है और ब्राह्मण पुत्र रमेश से प्रेम करती है। उसी से विवाह करती है। इसी समस्या पर उपन्यास रचा गया।

नायक की प्रेमिका—नायक रमेश की प्रेमिका है। मुख्य कथा के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक रानी नायक रमेश को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से साथ देती है।

एकनिष्ठ, तेजस्वनी, तपस्वनी प्रेमिका के रूप में सामने आती है।

कथानक का केन्द्र

रानी बाला को उपन्यास की मुख्य कथा से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सम्बन्ध है, एवं प्रमुख कथावस्तु रानी की समस्याओं के चारों ओर निर्मित है। कथावस्तु रानी की व्यक्तिगत समस्या पर बनी है।

उद्देश्य—'अमृत और विष' उपन्यास का जो उद्देश्य व संदेश है, उसका रूप रानी के जीवन से स्पष्ट हो जाता है।

"जीवन-मंथन में अभी विष ही ज्यादा प्रकट हो रहा है। किन्तु अमृत का नितान्त अभाव नहीं है।

माँ है, बहन है, बाल-विधवा है, बाप गरीब व बेकार है तथा स्वयं जवान बनी है। यही रानी के जीवन का विष है। रमेश से प्रेम ही उसके लिए अमृत है।

नारी-पात्रों में प्रमुख :

'अमृत और विष' उपन्यास में नारी पात्र सीमित हैं। लेखक अरविन्द की पत्नी माया, रमेश की माँ, रानी की सौतेली माँ, दादी माँ, श्रीमती कुसुमलता खन्ना, श्रीमती चौधरी। इन सब पात्रों में सबसे प्रमुख पात्र रानी है। रानी से ही उपन्यास की घटनाएँ सम्बन्धित हैं।

मानवोचित गुण :

रानी का गम्भीर स्वभाव है। उसका सरल व सादा जीवन है। वह परिवार व स्वयं की समस्या और परिस्थितियों के अनुसार चलने वाली है। उसका प्रेम आत्मिक व पवित्र है। वह शारीरिक प्रेम नहीं करती। वह सद्‌गुणी और विनयशील है। वह धैर्यशील, कर्मठ व कर्तव्यपरायण है।

उपरोक्त गुणों से स्पष्ट रूप से आदर्श भारतीय नारी के गुण रानीबाला में स्पष्ट होते हैं।

प्रश्न २३—अरविन्द शंकर का चरित्र-चित्रण कीजिए और सिद्ध कीजिए कि वे ही कथानक के केन्द्र-बिन्दु हैं।

अथवा

प्रश्न २४—"अरविन्द शंकर के रूप में उपन्यासकार ने अपने व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा की है"—इस कथन की व्याख्या करते हुए अरविन्दशंकर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

स्मृति-संकेत

१. कथानक के सूत्रधार अरविन्द शंकर हैं।

२. उपन्यासकार ने अरविन्द शंकर के रूप में एक उपन्यासकार की कल्पना की है।

३. वअरविन्द शंकर उपन्यासकार नागर जी के व्यक्तित्व का प्रतिनिधि करते हैं।
४. अरविंद शंकर का बचपन उल्लास एवं आनंदमय रहा।
५. षष्ठि पूर्ति पर उनको कुंठाएँ घेर लेती हैं।
६. अरविंद शंकर मध्यवर्गीय गृहस्थ हैं।
७. उन्होंने जीवन में विषम परिस्थितियों से संघर्ष किया।
८. उनमें जीने की अदम्य लालसा है।
९. वे अहं से रहित हैं।
१०. उनकी प्रवृत्ति दार्शनिक चिन्तन की है।
११. उन्होंने परिवार और समाज दोनों से मोर्चा लिया।
१२. वे अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठते हैं।

उत्तर—अरविन्द शंकर में उपन्यासकार नागर जी के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा—अरविंदशंकर के रूप में उन्यासकार ने अपने व्यक्तित्व को प्रतिष्ठत किया है। अरविंदशंकर की कथानक में स्थिति, व्यक्तित्व एवं चरित्र के सम्बन्ध में निम्न कथन दृष्टव्य हैं :

"उपन्यासकार ने स्वयं एक उपन्यासकार की कल्पना की है, जिसका नाम है अरविंदशंकर। एक मध्यम वर्ग का सद्गृहस्थ, जिसका जीवन बहुत कुछ असाधारण, बहुत घटनापूर्ण नहीं रहा और न जिसका परिवारिक जीवन ही संतोषप्रद है। अपनी सगिनी माया से पूर्ण सहयोग और सद्भावना पाने पर भी अपने बेटों और अपनी बेटी की जीवन-स्थितियों से उसको निराशा ही है। फिर भी उसका साहित्य-जगत में मान है और नगर में उसकी षष्ठि-पूर्ति का आयोजन मनाया जा रहा है। उसी षष्ठि-पूर्ति के दिन वह अपने जीवन के अनुभवों के बारे में सोचता है और यहीं से उपंयास का ताना-वाना शुरू हो जाता है।"

—धर्मवीर भारती

"इस उपन्यास के सूत्रधार अरविंदशंकर उपन्यासकार हैं। हिन्दी का उपंयासकार जब आलोचक बनकर बोलता है, तब उसकी शैली ऐसी ही होती है। आपने शायद नागर जी के दो-एक विचारोत्तेजक लेख पढ़े हों, उनसे अरविंदशंकर के विचार-मंथन को मिलाकर देखिए, दोनों में काफी शैली

साम्य मिलेगा। पाठक को आश्चर्य इस बात पर होता है कि यह 'वेदम' उपन्यासकार अरविन्द शंकर इतने सजीव पात्र गढ़ कैसे लेता है और यह रहस्य की बात है। जिन्दगी, परिवार और दुनिया से परेशान, थका-हारा, खीझ भरा अरविन्द शंकर उपन्यास लिखते समय कुछ दूसरे ही स्तर का व्यक्तित्व बन जाता है।"

—डॉ० रामविलास शर्मा

"अरविन्द शंकर परिवार और समाज दोनों से लड़ता है। वह एक मध्य-वर्गीय गृहस्थ है, उसका जीवन सन्तोषप्रद नही है। उसे अपने परिवार के सम्बन्ध में निराशापूर्ण परिस्थितियाँ झेलनी पड़ती है। वाह्य परिस्थितियों पर क़ाबू पाने की सामर्थ्य उसमें नहीं है। बाहर से वह जर्जरित हो उठता है। किन्तु उसका बड़प्पन उसकी महानता और लेखकोचित गरिमा इस बात में है कि बाहर से टूटते हुए भी वह भीतर से नहीं टूटता, साहस बटोरकर वह कर्मरत रहना चाहता है।"

—डॉ० सत्यपाल

अरविन्द शंकर के चरित्र और व्यक्तित्व का विश्लेषण निम्नलिखित शीर्षकों में किया जा सकता है :

बेफिक्री का आनन्दमय बचपन

अरविन्द शंकर का बचपन आनन्द और बेफिक्री में व्यतीत हुआ। वे पृष्ठ-पूर्ति के अवसर पर अपने उस सुखद जीवन का स्मरण करते हैं। बचपन में पढ़ने जो लगन थी, कार्य में वह लगन अब उनमें नही रही। आज उनकी स्थिति उनके निम्न कथन से स्पष्ट है :

"मुझे अब कुछ भी करना अच्छा नहीं लगता—"कहिनो न कछू, करिबौ न कछू....मरिवो ही रह्यो है।" लगता है कि सारा जीवन खोखला हो गया, न कुछ दिया न लिया।........जीवन भर देश-प्रेम, मानवता, सत्य, न्याय और ईमानदारी को ही भला समझता और समझता रहा, पर अब ये सब बातें निस्सार लगती हैं।"

कुण्ठाओं से ग्रस्त अवचेतन :

अरविन्द ने अवचेतन को विपरीत वातावरण एवं असफलताओं ने कुण्ठाओं से भर दिया है। स्वतंत्रता-आन्दोलन से डरकर कार्य करने पर भी प्रगति में एवं यश पाने में वे उन लोगों से भी पिछड़ गये, जिन्होंने कुछ भी नहीं किया था। यही कारण है कि वे मिनिस्टरी आदि से घृणा करने लगे हैं। आन्दोलन के

समय के उनके सभी साथी मिनिस्टरी पाकर स्वार्थी एवं अहंवादी हो गये हैं। इन लोगों से उनकी पटरी नहीं बैठती। वे स्वाभिमान के कारण मंत्रियों की खुशामद करना पसन्द नहीं करते। अरविन्द शकर जी की यह स्थिति नागर जी के व्यक्तित्व का ही प्रतिरूप है :

"नागर ने कौशल-पूर्वक इसमें स्वयं को प्रदर्शित किया है कि किस प्रकार किसी रचयिता के चेतन-अवचेतन मन, उसकी रचना के रूप में व्यक्त होते हैं।"

विषम-परिस्थितियाँ एवं संघर्षपूर्ण जीवन

अरविन्दसिंह के अवचेतन को घर और बाहर की विषम परिस्थितियों के संघर्ष एवं कुण्ठाओं से भर दिया है। पत्नी सच्ची सहयोगिनी है, पुत्र भवानी श्रमजीवी न होकर शिश्न जीवी है, बड़ा पुत्र विनय बीबी का गुलाम है, वह अपने लेखक पिता के प्रति आक्रोश रखता है। तीसरा पुत्र उमेश स्वार्थी एव अवसरवादी है। वह घर से सम्बन्ध तोड़कर ससुराल का भक्त बन गया है। अपनी अविवेकता एवं अहं के कारण वह आत्मघात करता है। पुत्री मुसलमान प्रेमी के कारण विपत्ति में पड़ जाती है। इतने पर भी अरविन्द शंकर इन सबसे अपनी मोह-ममता नहीं तोड़ पाते :

"अपने बच्चे भले ही कैसे भी हों, मनुष्य के सबसे सबल मोह-पाश होते है। मैं बड़कू, छुरकू, उमेशो, बिही या नन्हों किसी को भी अपने मन से अलग नहीं कर पाता।"

"अरविन्द शकर का हृदय और मन अब घुटन से भर गया है। वे कहते हैं :

"जीवन भर देश-प्रेम, मानवता, सत्य, न्याय और ईमानदारी को ही भला समझना और समझाता रहा, पर य सब बातें निस्सार लगती हैं।"

अरविन्द शकर की स्थिति का यथार्थ नित्र निम्न कथन में देखा जा सकता है :

"ऐसी मानसिक अवस्था मे ही हेमिंग्वे कृत 'बूढ़ा मछेरा और समुद्र' का बूढ़ा मछेरा उसकी बहिर्चेतना पर छा जाता है।·········किन्तु बूढ़े मछेरे की तरह बाहरी परिस्थितियों से हर तरह टूटने और हार जाने पर भी अरविन्द शंकर भीतर से न टूटता है न हारता है। कुण्ठा से दिग्भ्रमित होने पर भी

उसमें दृढ़ता बनी रहती है।……अरविन्द शंकर को एक नई स्फूर्ति मिलती है। जिससे उसकी सारी मानसिक गिरावट चमत्कारी रूप में सम्हल जाती है।" वे कहते हैं :

"लेकिन मैं अभागा क्यों ? मुझे तो काम पूरा करने से आस्था मिली है। मेरी सृजन-शक्ति और तेजवान हैं। अभी मैं अपने मानस को और ऊँचे नैतिक वैचारिक सौन्दर्य के स्तर पर गति देने का साहस कर सकता हूँ।"

अरविन्द शंकर दृढ़ निश्चय करते हुए कहते हैं :

"विश्राम करूँ या मर जाऊँ ? तब तो मैं हेमिंग्वे के बूढ़े मछेरे से हार जाऊँगा। जड़-चेतनमय, विष-अमृतमय, अन्धकार-प्रकाशमय जीवन में न्याय के लिए कर्म करना ही गति है। मुझे जीना ही होगा, कर्म करना ही होगा। यह बन्धन ही मेरी मुक्ति भी है। इस अन्धकार में ही प्रकाश पाने के लिए मुझे जीना है। इस समय भी मेरी दो जीवन-धारा तो हैं ही—"धुर बचपन मुझे ढकेलकर अपने साथ दौड़ाकर ले चलने वाला मेरा अनन्य बछड़ा और दूसरा यह औपन्यासिक नायक 'मछेरा'।"

चिन्तन में दार्शनिकता

अरविन्द शंकर उपन्यास लिखते-लिखते दार्शनिक बन जाते हैं। मास्को में साहित्यकारों के सामूहिक उत्सव में उनको बहुत अधिक सम्मान मिलता है। इसी अवसर पर उनका तीसरा पुत्र उमेश जो आई० ए० एस० है, आत्म-हत्या कर लेता है। इससे उनके हृदय को भीषण आघात लगता है। इतने पर भी बूढ़े मछेरे की तरह वे अपने कार्य मे कटिबद्ध हो जाते हैं। परिस्थितियाँ उनको दार्शनिक बना देती है। पुत्र की आत्महत्या की पीछे की परिस्थितियों पर वे दार्शनिक चिन्तन करते हुए कहते हैं :

"वे मोह और लोभ-लिप्साएँ अब भी विद्यमान है, जिनके कारण मेरे बच्चे को अपनी जान गँवानी पड़ी। इन अज्ञान के प्रतीकों से जूझे बिना ही रह जाऊँ, विश्राम करूँ या मर जाऊँ। तब तो मै हेमिंग्वे के बूढ़े मछेरे से हार जाऊँगा। जड़-चेतनमय, विष-अमृतमय, अन्धकार-प्रकाशमय, कर्म करना ही होगा। यह बन्धन ही मेरी मुक्ति है। इस अन्धकार में ही प्रकाश पाने के लिए मुझे जीना होगा।"

दार्शनिक चिन्तन ही अरविन्द शंकर को अहं से सर्वदा दूर कर देता है। वे अपने षष्ठि-समारोह और उसमें प्राप्त अभिनन्दन पर चिन्तन करते हैं :

"साठ ! साठ ! साठ ! हर भाषण में मेरी आयु के साठ वर्षों पर जोर दिया जा रहा है। मैंने साठ वर्ष पूरे किये, मानो एवरेस्ट की चोटी पर पहुँच गया। आखिर इन साठ वर्षों में मैंने पाया क्या ? देने के नाम पर छोटी-बड़ी अड़तीस किताबें हैं—पहले भावों के उद्यान में लिखी थीं, फिर नाम की महत्वाकांक्षा में, बाद में अपने परिवार के भरण-पोषण की समस्या हल करने के लिए। मुझे फुरसत ही कहाँ मिली जो अपने से उतरकर दूसरों के लिए सोचता।"

अरविन्द शंकर एक दार्शनिक के रूप से मानव-जीवन और जगत के सम्बन्धों पर भी विचार करते हैं :

"मेरे बजपन में सदियों से सोता हुआ राष्ट्र फिर से करवटें बदलने लगा था। परिवर्तन के क्रम में अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनों ही साथ-साथ तेजी से आगे बढ़ रही थी। हम अपने लिए बहुत तेजी से नई दुनियाँ ला रहे थे। ....लेकिन आज ? आजादी मिल गई है, बड़े-बड़े बाँध, नदी-घाटी-योजनाएँ, बड़े-बड़े कल-पुरजे बनाने वाली फैक्ट्रियाँ यह सब कुछ थोड़ा बहुत अवश्य हो रहा है लेकिन आमतौर पर हमारे शहरी बाबू और नौजवान किस कदर निष्क्रिय अस्वस्थ, विचार-शून्य, निकम्मे और परालम्बी हो रहे हैं। मुझे हैरत होती है कि आज सब तरफ माँगें पूरी करने के नारे ही अधिकतर लगते हैं। स्वय हमारे भी कुछ कर्तव्य हैं जिन्हे पूरा करने की बात दिमाग से एक दम भुला दी जाती है।"

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अरविन्द शंकर परिवार और समाज दोनों मोर्चों पर सघर्ष करते हैं। वे एक मध्यवर्गीय गृहस्थ हैं। उनको अपने परिवार के सम्बन्ध में निराशापूर्ण परिस्थितियाँ झेलनी पड़ती हैं। बाह्य परिस्थितियों पर काबू पाने की सामर्थ्य उनमें नहीं है। वे बाहर से जर्जरित हो उठते हैं। किन्तु उनका बड़प्पन, उनकी महानता और लेखकोचित गरिमा इस बात में है कि बाहर से टूटते हुए भी वे भीतर से नहीं टूटते और साहस बटोर-कर कर्मरत रहना चाहते हैं। उनके माध्यम से लेखक ने अपने जीवन को

प्रस्तुत किया है। जो अदम्य साहस वाला, परिस्थितियों से जूझता हुआ और यथार्थवादी है। उसकी अपराजेयता पाठक को प्रभावित करता है। उनके सम्बन्ध में निम्न कथन सर्वथा सत्य है :

"हिन्दी उपन्यासों में नायक परिस्थितियों से जूझता है, भिड़ता है लेकिन अन्त में खोया हुआ, दिग्भ्रमित, टूटा हुआ चित्रित किया जाता है। टूटना और टूटते चले जाना इसका जीवन धर्म बन जाता है। इससे न तो वह अपना कल्याण कर पाता और न समाज का। लोग समझते हैं कि आज के विघटित होते हुए समाज में खो जाना ही आधुनिक धर्म है। कितना गलत दृष्टिकोण ये उपन्यास लेखक देते रहे हैं। मेरा विचार है कि लेखक और कलाकार जहाँ समाज के बिखरव का चित्रण करता है, वहाँ अपने और समाज के बीच सन्तु-लन बनाये रखते हुए समाज के प्रति सर्जनात्मक प्रतिबद्धता का निर्वाह करना भी उसका पुनीत कर्तव्य है। अरविन्द शकर ऐसा नही, आग में तपा हुआ सोना है। उन्होने उसके व्यक्तित्व में चार चाँद लगा दिए हैं। अरविन्द शंकर जैसे संजीवनी शक्ति लिए हुए व्यक्तित्वो की आज समाज में आवश्यकता है। सब कुछ गंवा देने के बावजूद यहाँ तक कि भूख बीमारी और मृत्यु के बाद नागर जी की दृष्टि में वरणीय है, हेय और उपेक्षणीय नहीं।"

अरविन्द शंकर सुख-दुःख की परिस्थितियों से ऊपर उठे हुए वर्तमान युग के कर्मरत महामानव है। उनके रूप में उपन्यास ने अपना ही व्यक्तित्व प्रस्तुत किया है।

"मैं समझता हूँ कि मैं सुख-दुख से बड़ा हूँ।"

प्रश्न २५—कुँवर रद्धू सिंह का चरित्र-चित्रण करते हुए कथानक में उनकी स्थिति के महत्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

प्रश्न २६—"कुँवर रद्धू सिंह का चरित्र और व्यक्तित्व करुणा एवं मार्मिक है। वह हीन भावना-ग्रस्त एवं मार्मिक व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है और यही उसकी स्थिति का महत्व कथानक में है।"—इस कथन की व्याख्या करते हुए रद्धू सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

स्मृति-संकेत

१. रद्धूसिंह केन्द्रीय कथा की नायिका रानीबाला के पिता हैं।
२. वे हीन-भावना से ग्रस्त हैं।
३. उनका चरित्र स्वतन्त्र व्यक्तित्व प्रधान है।
४. रद्धूसिंह रूढ़िवादी है।
५. वे भगवद्भक्ति में शान्ति पाने का प्रयास करते हैं।
६. वे एक निराश जुआरी हैं।
७. उनका हृदय वात्सल्य-पूर्ण है।
८. रद्धूसिंह परिस्थितियों के दास हैं।

उत्तर—कथानक में स्थिति और परिचय

मुख्य कथानक की नायिका रानीबाला के पिता होने के नाते कथानक में रद्धूसिंह की स्थिति महत्वपूर्ण हो गई है। रद्धूसिंह के स्वतन्त्र व्यक्तित्व को निखारने में नागर जी ने विशेष कौशल का परिचय दिया है। रद्धूसिंह यथार्थवादी पात्र है। उनकी हीन-भावना पर मानव के स्नेह-सम्बन्धों की विजय होती है। रमेश के प्रति उनका हृदय आक्रोश से भरा हुआ है, वे खोखा मियाँ से रमेश की रक्षा के लिए डी० एस० पी० को सूचना देते हैं। दुर्बल मन वाले रद्धूसिंह अनेक विषम परिस्थितियों से गुजरते हुए देखे जाते हैं। उनका व्यक्तित्व अत्यधिक दयनीय और कारुणीका हो गया है।

कुँवर रद्धूसिंह 'चुन्नू राजा' के नाम से प्रसिद्ध है। जुआ, शराबखोरी, वेश्यागमन आदि के व्यसन से वे ग्रस्त हैं। अपनी निष्क्रिता और दुर्व्यसन में वे अपनी समस्त पैतक पूँजी गँवा चुके हैं। उनका स्वभाव अब आर्थिक तंगी के कारण चिड़चिड़ा हो गया है। सारा घर उनसे डरता है, वे केवल रानी के प्रति ही सहृदय हैं।

रद्धूसिंह का पालन-पोषण बड़े ऐश-आराम में हुआ, किन्तु आज दरिद्रता ने उन्हे कुण्ठित बना दिया है। वे अपना आक्रोश माँ, पत्नी और बच्चों पर निकालते हैं।

प्रसन्नता और अभिमान

विषम परिस्थितियों में थोड़ी सी सफलता रद्धूसिंह को प्रसन्नता में निमग्न

कर देती है। रानी के इण्टर की परीक्षा में प्रथम आने पर वे फूले नहीं समाते। परन्तु आर्थिक तंगी उनकी प्रसन्नता को दबा देती है। वे अपने चचेरे भाई डी० एस० पी० शत्रुघ्नसिंह को डाकू बूटासिंह को पकड़वाने में गर्व का अनुभव करते हैं। इस बात का बखान बड़े गर्व से करते हैं कि शत्रुघ्नसिंह उनके चाचा के लड़के हैं और उनके पिता ने ही उन्हें नौकर कराया था। इस प्रकार रद्धूसिंह हीनता की भावना को सन्तुष्टि प्रदान करते है। शत्रुघ्नसिंह उनसे बिना मिले ही चले जाते हैं। इससे उनको धक्का-सा लगता है और उनको नीचा दिखाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं :

"शत्रुघ्न साले को इतना घमण्ड हो गया है कि चलते समय शिष्टाचार तक न दिखाया। हे ईश्वर! इस साले का घमण्ड नीचा करना, कभी मेरी भी बेरी के फल लगाना।"

भगवद्‌भक्ति की ओर

रद्धूसिंह शान्ति पाने के लिए मन्दिर में जाने लगते हैं और कीर्तन करने लगते हैं। परन्तु उनके भजन-कीर्तन एवं आँख मूँदकर ध्यान लगाने को लोग ढोंग कहते है और उनकी हँसी उड़ाते हैं। इस प्रकार रद्धूसिंह की स्थिति और अधिक दयनीय हो जाती है।

रूढ़िवादिता

रद्धूसिंह रूढ़िवादी विचारधारा के व्यक्ति हैं। वे अपनी बाल-विधवा पुत्री का पुनर्विवाह करना शास्त्र एवं मर्यादा के विरुद्ध मानते हैं। रमेश और रानीबाला का सम्बन्ध उनको उत्तेजित कर देता है। वे रमेश के घर जाकर उसे गाली गलौज करते है और उसे पीटने की धमकी देते हैं। परन्तु उनका नपुंसक क्रोध कुछ भी कर पाने में असमर्थ रहता है।

जुआ का व्यसन

रद्धूसिंह चारों ओर से निराश होकर जुआरी बन जाते हैं और बैजनाथ के जुआ-अड्डे में सम्मिलित हो जाते हैं। इस प्रकार वे दुर्व्यसन के कीचड में फँसते ही चले जाते हैं। लाल कुँवर बहादुर की वेश्या खुले आम उनके साथ रहने लगती है।

वात्सल्य

अन्त में रद्धू सिंह के चरित्र में परिवर्तन आता है। रमेश को खोखा मियाँ से खतरा देखकर उनका वात्सल्य उमड़ पड़ता है और वे उसकी रक्षा में तत्पर हो जाते हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नायिका के पिता के रूप में रद्धू सिंह की स्थिति का कथानक में महत्वपूर्ण स्थान है। वे अपनी दुर्बलताओं पर विजय पाकर पाठकों की संवेदना अर्जित कर लेते है। रद्धू सिंह परिस्थितियों के दास हैं। परिस्थितियों के घात प्रतिघात मे वे हार जाते हैं। उनका दम टूट जाता है और निर्लज्जता का कवच पहनकर वे जीवित रहते है।

प्रश्न २७—हाजा साहब की स्थिति का कथानक में महत्व बतलाते हुए उनका चारित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—हाजी साहब और खोखा मियाँ आलोच्य उपन्यास के दो प्रमुख पात्र है। हाजी साहब नगर के सुप्रसिद्ध रईश, उद्यागपति तथा राजनीतिक नेता है। वे स्वार्थी और ऐय्यास प्रकृति के रईस थे, परन्तु अब उनके चरित्र में सर्वथा परिवर्तन आ गया है आज वे नगर के उदार, सहिष्णु एवं कर्मठ राजनीतिज्ञ माने जाते है। वे अपने दुष्ट पुत्र खोखा मियाँ के कार्यो से बहुत दुखी हैं। उसके द्वारा कराये गये साम्प्रदायिक उपद्रव, अग्निकांड और अपहरण से वे बहुत दुखी हैं। इसके लिए वे सार्वजनिक रूप में क्षमा-याचना करते हैं।

हाजी साहब एक उदारचेता मुसलमान हैं। लखनऊ के उच्च समाज में दिल खोलकर दान देने के कारण इनका सम्मानपूर्ण स्थान है। वे डा० आत्मा-राम को समझाते हैं कि दुष्ट-प्रकृति से समझौता करना उनके लिए हितकर न होगा। इस प्रकार कथानक में हाजी साहब की स्थिति एक महत्वपूर्ण आदर्श पात्र के रूप में है।

प्रश्न २८—मिस्टर माथुर का चरित्र-चित्रण कीजिये और कथानक में उनकी स्थिति का महत्व बतलाइये।

उत्तर—मिस्टर माथुर का चरित्र और व्यक्तित्व उनके निम्न कथन से स्पष्ट है।

'मान लो ! मैं भी इसी रास्ते पर चला था। एक समय मुझे भी पराई औरतों का इस्तेमाल करने का लोभ था। इसी उमा की मौसी को बरसों अपना गुलाम बनाकर रखा और उसके पति को सदा नीचा दिखाता रहा। मैं इसमें अपनी शान समझता था। मेरी वह शान उमा ने बरबाद कर दी। बड़ा फर्क आ गया। पहले ताकतवर था, अब निर्बल, निर्लज्ज बन गया हूँ।"

क्लीवता एवं हीन-भावना-ग्रस्तता :

मि० माथुर की पत्नी उनकी उपस्थिति में ही नौजवान छोकरो से इश्क लडाती है और उन्हे 'हिर्प्पाटैण्ट' मुर्गा कहती है। उनकी तीसरी बीबी उमा माथुर कहती है—'बट ही इज नो मैन'। पण्डित राजकिशन उनको 'नंबरी भूतिया' कहते है।

निर्लज्जता

बेशर्मी और निर्लज्जता मि० माथुर के व्यक्तित्व का अंग है। वे इस रूप में लच्छू से पूछते हैं :

"क्या यह बतला सकते हो खन्ना कि तुम्हे यहाँ लिवाने के लिये उमा ने उसे बूढ़े गीदड़ सेन को कितने बोसे दिये थे ?"

लच्छू उत्तर देता है :

"यह तो आप ही बता सकेंगे माथुर साहब कि आपकी धर्म-पत्नी अपना काम करवाने के लिये बूढ़ों को क्या और कितनी रिश्वत दिया करती है।"

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मि० माथुर के रूप में एक पतित, निर्लज्ज एवं हीनता-ग्रस्त व्यक्ति का चित्रण हुआ है। वे समाज के एक विशिष्ट वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रश्न २९—लाला कुँवर बहादुर का चरित्र-चित्रण करते हुए कथानक में उनकी स्थिति का महत्व बतलाइये।

अथवा

प्रश्न ३०—'लाल कुँवर बहादुर एक विलासी, पतित व्यक्ति का प्रति-निधित्व करते हैं।' इस कथन की व्याख्या करते हुए लाल कुँवर बहादुर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—गौण पक्ष होते हुए भी लाल कुँवर बहादुर कथानक के रूप बड़े भाग को घेरे हुए है। वे एक घोर ऐय्याशी एवं विलासी व्यक्ति के रूप में सामने आते है। अन्त में उनको अपने जीवन से घृणा हो जाती है। वे घर दामाद बनकर ससुराल में अपने विगत जीवन पर पश्चाताप करते हैं। पत्नी हिंडोलवाली के अतिशय घमण्ड ने ही उनको ऐय्याश, विलासी, क्रोधी और पतित बना दिया है। समग्र रूप मे लाल कुँवर का चरित्र स्वार्थी, नीच, पतित, निर्लज्ज एवं व्यक्ति का यथार्थ चरित्र है।

विलासिता—उपन्यासकार ने लाल कुँवर का विलासी व्यक्तित्व को प्रका-शित करते हुए लिखा है—'तनजेब का [illegible]दार कुर्ता जिसमें हीरे के बटन चमक रहे थे, दोनो बाहों पर बारीक चुन्नटें पड़ी हुई, ऊँचे पाड की दुपलिया, चुनी हुई बारीक धोती, वार्निशदार पम्प शू, दाहिने हाथ की उँगली में बड़े पन्ने की अँगूठी, बाँये में उतना ही बड़ा हीरा ; साँवला रंग, ऊँचा कद, दोहरा बदन ऊँची पेशानी, उभरी हुई पतली ठोढ़ी, रुआबदार मूँछे—हाथ में नाजुक सी छड़ी लिये हुए लालसाहब गाड़ी से बाहर आये।'

निम्न उदाहरण में बाढ़ के प्रसंग में वहीदन के साथ बिलास का उनका घृणित चित्र सामने आता है।

'नशे में धुत्त लालसाहब की मर्दानगी सहसा उबलकर एकदम बलात्कार की मुद्रा मे वहीदा बेगम पर आक्रमण कर उठी।'

× × ×

'बडी देर तक विलासी अतृप्त प्रेमात्माओं का ताण्डव होता रहा है।' लाल कुँवर के लिए ऐय्यासी के बिना जीवन व्यर्थ है।—'ये कम्पयुनिस्टों जैसी बात है हम नहीं मानते, जब दौलत का यों बँटवारा हो जायगा' तो फिर जिन्दगी में मजा ही क्या रह जायगा, अजी ये रईसों की ऐशो-इशरत ही तो है जो इन्सान को लुभाती है। यही जिन्दगी का लुत्फ है।'

निर्लज्जता—निर्लज्जता की चरमसीमा पर पहुँच कर लाल कुँवर अपनी खानदानी स्त्री पर भी झूठी तोहमद लगाते हैं और अपने बेटों को कहार की औलाद कहने में नही चूकते 'हमहूँ भरी कचहरी माँ ई साबित करके दिखाय देब कि हम कोनौं जालसाजी नाही किया बल्कि राजा लखपतराय की बिटिया के तीनो बड़े बरखुरदार एक कहार की औलाद है साले।' नशे की झौंक मे अपने खानदान की इज्जत नौकर चाकरो के सामने उघाड़ देते है—'हम जाके मँगरू का गाँव से यही भेज देंगे, कहेंगे कि बेटा जाओ, अब खुले आम इन्टर-महल में रह के अपनी आशना और बेटों का सुख भोगो।' इस निर्लज्जता के कारण ही उनकी पत्नी विद्रोह कर उठती है और लड़कों से उसके जूते लगवाती है।

लाल कुँवर का अपनी आदतो (निर्लज्जता एवं नीचता) के कारण पत्नी के हाथों घोर अपमान होता है। हिंडोले वाली के निम्नलिखित शब्द उसके नीचतापूर्ण जीवन की परिणति बताते है। वह बबुआ से कहती—"बबुआ पाँच जूते मारौ सारे के। यह हरामी के पिल्ले की अम्मा कहार की रहे। मारौ हरामी। पती अब हम न समझवाई का।'

वह अपने जीवन की विडम्बना का वर्णन करते हुए लाल कुँवर के प्रति अपनी घृणा निम्न शब्दों मे व्यक्त करती है :

'अरे ई झूठ लबार ते ब्याह करिकै हमार सात जनम के पाप उदय भे रहे जौन हम ई राच्छस से साथ ई जनम माँ भोगा है। हमका, सती का, दोस लगाइस ई। अपने बच्चन का बेआबरू करै मां यहि का लाज न आई! सब सहिकै हम देउता की तरह ई दुश्मन का पूजा। अब हमैं यह हरामी की सूरत ते नफरत हुई गई है।'

अन्त में लाल कुँवरबहादुर को जीवन से घृणा हो जाती है वे आत्महत्या तक करने का विचार करने लगते हैं।

निष्कर्ष—लाल कुँवर निरन्तर पतन की ओर बढ़ते जाते है और अन्त में आत्म-हत्या करके अपने घृणित एवं पतित जीवन का स्वय ही अन्त कर लेते हैं। वे एक नीच पात्र हैं लेखक ने उनके चरित्र में पतन की चरमावस्था का निरूपण किया है। 'अमृत और विष' उपन्यास मे लाल कुँवर विष के समान हैं। वे अपने चरित्र से उपन्यास के शीर्षक अमृत की सार्थकता सिद्ध करते हैं।

प्रश्न ३१—डॉ० आत्माराम का चरित्र-चित्रण कीजिए और कथानक में उनकी स्थिति का महत्व बतलाइये ।

अथवा

प्रश्न ३२—"डॉ० आत्माराम के माध्यम से लेखक ने आज के राजनीतिक आन्दोलन और समाज-निर्माण के जोशीले कार्य पर एक तीखा व्यंग्य किया है ।" इस कथन की विवेचना करते हुये आत्माराम का चरित्र-चित्रण कीजिये ।

उत्तर—"डॉ० आत्माराम साहब धनवान होते हुये भी समाजवादी विचार-धारा के पोषक प्रगतिशील व्यक्ति हैं । उपन्यास में उनके गौरवशाली व्यक्तित्व का बहुत सुन्दर ढग से उद्‌घाटन किया गया है । वे नेहरू के अनुयायी और समाजवाद के समर्थक है । लेखक ने उनके चरित्र में युग-सुलभ कमजोरियों का चित्रण करके उनके चरित्र को यथार्थ युगपूरक बना दिया है । वे आभि-जात्य वर्ग के प्रतीक हैं किन्तु अपने जीवन को परिस्थितियों से ऊँचा उठाकर आकर्षण के केन्द्र बने हुए है । आभिजात्य वर्ग में जन्म पाने का अभिशाप—चाकरों की गुलामी —यही उनकी हीनता है । इसी सीमा मे बँधा उनका चरित्र अत्यन्त स्वाभाविक बन पड़ा है ; डॉ० आत्माराम प० नेहरू की याद दिलाते हैं और उनके माध्यम से राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में अमृत से विष बन जाने की बात घटित करते हैं ।'

—डॉ० सत्यपाल

डॉ० आत्माराम इण्डिपेण्डेन्ट पत्र के संचालक हैं। वे राजनीति से अलग और संकीर्ण स्वार्थो से दूर हैं, जिन्हे देवतुल्य माना जा सकता है । उनमें आभिजात्य-वर्ग का गर्व एवं स्वाभिमान है । डॉ० आत्माराम आभिजात्य वर्ग के राजनीतिक हैं—ऐश-आराम से घिरे हुए उनका अपना पत्र साम्राज्य है । पवित्र और महान माने जाने वाले उनके व्यक्तित्व की साया में ही कुत्सित सेक्स-जीवन और दमित यौन-कुंठाएँ सारस-लेक के जीवन को खोखला बना देती है । 'डॉ० आत्माराम पं० नेहरू की याद दिलाते हैं और उनके माध्यम से राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में अमृत के विष बन जाने की बात घटित करते है ।'

—डॉ० वार्ष्णेय

उदार हृदयता—डा० आत्माराम अत्यन्त उदार हृदय के व्यक्ति हैं। जब लच्छू वर्षा में भीगता हुआ सारस-लेक के स्टेशन पर खड़ा मिलता है, तो वह स्टेशन मास्टर की गुस्ताखी पर रौद्र रूप धारण कर लेते है और कहते हैं—'आप इन्सान हैं या हैवान हैं? यदि आपको कोई इस तरह बरसात में खड़ा रक्खे तो आपका क्या हाल होगा? बदतमीज कहीं के।' इस प्रकार डा० आत्माराम अपनी उदात्त मानवता, सदाशयता और उदार हृदय के कारण देवतुल्य माने जाते हैं। उनका अपने मातहतों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार है और उन्हें सभी प्रकार की सुविधायें प्रदान करते हैं।

सहज विश्वासी—डॉ० आत्माराम सहज ही विश्वास कर लेते है। वे खोखा का विश्वास करके धोखा खाते हैं। वे अपनी इस गलती को आनन्दमोहन खन्ना के समक्ष स्वीकार कर लेते हैं कि मैंने गलत आदमियों को चुन करके धोखा खाया है। वे अपनी कमजोरियों को स्वीकार करके उन्हे सुधारने का का प्रयास करते हैं।

क्रान्तिकारी समाजवादी—डॉ० आत्माराम समाजवादी विचार-धारा के व्यक्ति हैं। वे सारे देश में समाजवाद लाने के लिए प्रयत्नशील हैं और इसके लिए क्रान्ति का भी समर्थन करते हैं। वे कहते हैं—'लड़ो, विद्रोह करो ब्यूरोक्रेसी की मशीन से और समाज की अंध रूढ़ियों से लड़ना मर्दों और सूरमाओं का काम होता है। विवेक बुद्धि और शक्ति तुम्हारी सहायक हो।'

निष्कर्ष—डॉ० आत्माराम का व्यक्तित्व प्रभावशाली है। वे सदाशयी उदार मानव हैं। वे इस उपन्यास के गौण पुरुष पात्रों में अपना विशेष महत्व रखते हैं। वे आभिजात्य वर्ग से सम्बन्धित होते हुए भी समाजवादी विचारधारा के समर्थक हैं।

प्रश्न ३३—पुत्ती गुरु का चरित्र-चित्रण करते हुए कथानक में उनकी स्थिति का महत्व बतलाइये।

उत्तर—"पुत्ती गुरु रोचक व्यक्ति हैं और अपने पुराने संस्कारों और पुत्र-प्रेम के बीच झूलते हुए जीवन का आनन्द उठाते।"

—डॉ० सत्यपाल

पुत्ती गुरु यथार्थवादी चरित्र के पात्र हैं। उनमें अन्तर्द्वन्द्व और बहिर्द्वन्द्व दोनों है। उनमें समस्त भारतीय दुर्बलताएँ मिलती है। वे मुख्य कथानक के नायक रमेश के पिता हैं। इस दृष्टि से कथानक में उनकी स्थिति महत्वपूर्ण हो जाती है। उनकी प्रवृत्ति रूढ़िवादी है। वे अपने सहज स्वभाव के कारण बात-बात में गर्म होते देखे जाते हैं। परन्तु वे पाठकों की सवेदना प्राप्त कर लेते है। अलमस्ती, रोज शाम को ठण्डाई पीने की मस्त उमंग उनके जीवन का अनिवार्य अग बन गई है।

भंगड़ी होने के कारण पुत्ती गुरु गलत-सलत बक जाते हैं। उनके स्वभाव में कुछ चिड़चिड़पन भी है। उनकी इस प्रकृति को निम्न उदाहरण में देखा जा सकता है।

'शास्त्रकारों ने झूठ नहीं कहा, ब्राह्मणी महाकुटिला होती है। बड़े-बड़े आचार्यो तक पर शासन किया होगा सालियों ने। ससुरी कहीं की, मैं आया तो मेरे लिए बरफ नही मँगाई। अरी पन्नो ! ओ पन्नो ! बरफ आवै तो पहले पानी बनाय के मुझे पिलाय जाना, सुन लिया।'

पुत्ती गुरु का हृदय वात्सल्य से ओत प्रोत है। वे अत्यन्त क्रोध में होते हुए भी पुत्र के प्रति स्नेह से आपूरित रहते हैं। रमेश के यह पूछने पर 'रबड़ी ले आऊँ बाबू सूखी भाग छानते हैं, गला तड़प रहा होगा।' उनके मन में स्नेह की चिरनाहट आ जाती है। लेखक ने उनके मन के भाव को मार्मिक शब्दों मे प्रस्तुत किया है 'रमेश के नीचे जाते ही पुत्ती गुरु का भोला मन क्रोध त्याग तेवर में आ गया था।' इसी प्रकार रुप्पन लाला के मामले में रमेश की दखलंदाजी देखकर वे क्रोधित हो उठते हैं 'लड़के की उत्तेजना भरी बाते न करो पुत्ती गुरु का अपार क्रोध चढ़ आया। सबेरे छानी हुई बासी भंग के नशे मे क्रोध का प्रभाव पड़ते ही उरकी आँखें गुड़हल के फूल सी हो गयीं। पुत्र को मारने के लिए झपटे 'कुलंगार ! मन्दिर में आग लगायेगा। मैं तेरे प्राण ले लूँगा।'....पुत्ती अहाते में खड़े गरजते रहे—"यही है जी आजकल की शिक्षा। सुसर न बाप की मानें न धरम को मानें न देवता को मानें।"

जब उन्हें रमेश के आन्दोलन का औचित्य समझ में आ जाता है तो उनका हृदय पुत्र-स्नेह से आपूरित होकर रमेश को आशीर्वाद देता है—

"लड़का भी कुछ बेजा बात नहीं कह रहा है। कुल दीपक बनेगा मेरा पुत्र भी भोले की कृपा से। बेकार अपनी झपट में क्रुद्ध हो गया उस बेचारे पर।"

पुत्ती गुरु का ब्राह्मणत्व जाग्रत रहता है। वे जिजमानों के यहाँ पूजा-पाठ करते हैं, उनकी मंगल-कामना करते हैं। रुप्पन के मामले में पहले तो वे रमेश को ही डाँटते फटकारते हैं किन्तु नवयुवकों की हलचल का औचित्य जानकर उनका ब्रह्मतेज प्रकट होता है और वे लाला रुप्पन के यहाँ लालाइन से कहते हैं :

"ईतौ मया सेठानी जी, तुम्हारे यहाँ पाठ करने का आशीर्वाद जो कि हमारा ब्रह्मत्व रहा और अब मैं अपना ब्रह्म बल दिखलाने जाता हूँ। तुम्हारी हवेली के चबूतरे पर बैठकर उल्टी गायत्री जपूँगा और तीन दिन बाद आप से पूछूँगा कि रुप्पन अब बतलाओ कि लक्ष्मी का वाहन बडा है या सरस्वती का हंस। ब्राह्मण के लड़के को गिरफ्तार कराय के रुप्पन ने अपने ही हाथों से अपने पैर में कुल्हाड़ा मारा है, ये जाने रहना।"

पुत्ती गुरु प्राचीन परम्पराओं के उपासक हैं। वे पुरानी पीढ़ी के ब्राह्मण, ब्राह्मण मात्र हैं। उनके चरित्र में रूढ़िवादिता और भक्ति का समन्वय है। वे रमेश के द्वारा रानी के साथ विवाह करने पर दुखी होते हैं, क्योंकि यह प्राचीन परम्पराओं का खण्डन है, किन्तु जब उनके मन में यह भाव आता है कि क्षत्रिय समधी बन गया है तो वे रघुकुलमणि श्रीराम को ही अपना समधी मानकर भक्ति के भाव से गदगद हो उठते हैं। उनका हृदय सरल एवं सरस है।

प्रश्न ३४—आनन्द मोहन खन्ना का चरित्र-चित्रण कीजिए और कथानक में उनकी स्थिति का महत्व बतलाइए।

उत्तर—आनन्द मोहन खन्ना प्रगतिशील विचारक एवं निःस्वार्थ समाज सेवी हैं। वह पत्रकारिता का लक्ष्य समाज के निर्माण में सक्रिय सहयोग मानते हैं। वे पूर्णरूपेण यथार्थवादी हैं। वे राष्ट्र की रक्षा को भारतीय नागरिकों का पवित्र कर्तव्य मानते हैं और इसके लिए राष्ट्र के हर बच्चे को सैनिक बनाना उचित समझते हैं। वह तरुण वर्ग के सच्चे शुभचिंतक नेता हैं, तथा तरुण पीढ़ी के उत्थान के सम्बन्ध में बड़े व्यावहारिक एवं यथार्थ विचार प्रस्तुत करते हैं।

खन्ना जी के व्यक्तित्व का परिचय निम्न प्रकार दिया गया है :

"खन्ना साहब—श्री आनन्दमोहन खन्ना सुप्रसिद्ध अँग्रेजी दैनिक 'इण्डिपेण्डेण्ट' के सम्पादक, शहर की एक मानी जानी हस्ती हैं। प्रदेश के सर्वमान्य नेता और 'इण्डिपेन्डेन्ट' के संस्थापक—डा० आत्माराम के दाहिने हाथ हैं। उनके घर पर प्रति रविवार नवयुवकों का अध्ययन चक्र चलता है।'

उदारता एवं प्रतिशीलता—लखनऊ मे इण्डिपेण्डेण्ट के सम्पादक श्री आनन्दमोहन खन्ना का चरित्र एक बुद्धिमान उदार हृदय व्यक्ति का चरित्र है। वह ईमानदार, परिश्रवी, साहसी और कर्तव्यपरायण हैं। युवक वर्ग में वे अत्यन्त लोकप्रिय हैं। रमेश को आश्रय देकर वह निरन्तर उसकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। वे उसे डा० आत्माराम के पास कार्य करने के लिए सारस-लेक भेजना चाहते हैं। वह रानीबाला और उसके पिता की भी सहायता करते हैं। वे एक स्वतन्त्र एवं प्रगतिशील विचारधारा के व्यक्ति हैं और रानी के साथ रमेश के विवाह का समर्थन ही नहीं संयोजन भी करते हैं। डा० वार्ष्णेय के शब्दों में 'खन्ना और बहन जी निस्पृह एवं प्रगतिशील कार्यकर्त्ता हैं।'

खन्ना जी एक सफल सम्पादक एवं विचारक हैं। वे स्वतन्त्र विचारक हैं। वे डा० आत्माराम को भी उनकी गलती बताने से नहीं चूकते। जब डा० आत्माराम उनसे पूछते हैं कि तुम्हें खोखा का षडयन्त्र का पता था, तो बताया क्यों नहीं? इसके उत्तर में वे कहते हैं—'बताया आदमियों को जाता है। देवता कब सुनते हैं?' खन्ना साहब की आवाज आपरेशन के जैसी थी। डॉ० सम्हल कर टिककर, सिर झुकाकर बैठ गये।' खन्ना जी डा० आत्माराम की बात काटकर अपने स्वतन्त्र विचार व्यक्त करते हैं :

'लेकिन लड़ेंगे कैसे? बराबरी के हथियार कहाँ हैं? शराफत से और देवता बनकर आप राक्षसों से लड़ेंगे?'

उनका विचार है कि जब हमारे देश के लोग सैनिक बन जायेंगे तभी देश का उत्थान होगा—'बुद्धिवादी विचारक हवाई जहाज से तीर्थ-यात्रा करने वालों की तरफ होता है। धरती का मार्ग जटिल है।....गणतन्त्र का हर नागरिक हमारे देश में सिपाही भी हुआ करता है। राजा—गुण्डों की किराये की सेनायें गणतन्त्रों को इसलिए कभी नहीं जीत पाईं। हमारे 'इण्डिपेण्डैण्ट' स्टाफ

प्रश्न ३५— श्रीमती खन्ना का चरित्र-चित्रण कीजिये।

अथवा

प्रश्न ३६—"**श्रीमती खन्ना का व्यक्तित्व उदार एवं हृदय वात्सल्य पूर्ण है। वे जाग्रत नारीत्व की प्रतीक हैं।**"—इस कथन की व्याख्या करते हुए श्रीमती खन्ना का चरित्र-चित्रण कीजिए।

स्मृति-संकेत

१. श्रीमती खन्ना सामाजिक कार्यकर्त्ती हैं।

२. निःसन्तान होने के कारण उनके वात्सल्य का प्रसार प्रत्येक लड़के और लड़की तक है।

३. श्रीमती खन्ना का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक है।

४. वे आधुनिक विचार-धारा की उदार नारी हैं।

५. वे सटीक वाद-विवाद-और बहस में पटु हैं।

६. श्रीमती खन्ना उच्चकोटि की समाज-सेविका और उदार हृदया नारी हैं।

उत्तर—उपन्यासकार ने श्रीमती खन्ना का परिचय निम्न प्रकार दिया है : "श्रीमती कुसम लता खन्ना जिन्हें इस क्षेत्र के सभी छोटे-बड़े आदरपूर्वक बहन जी कहते हैं, अनन्य लगने वाली सामाजिक कार्यकर्त्ती हैं। पिछड़े मुहल्लों की पिछड़ी हुई लड़कियों और औरतों के लिए वे साक्षात् मसीहा हैं। खन्ना दम्पति चूँकि निःसन्तान है इसलिए उनका वात्सल्य भाव उमड़कर हर नौजवान लड़के-लड़की को सहज ही प्राप्त होता है।"

आकर्षक व्यक्तित्व—"घर के ऊपर वाले कमरे में पहुँचते ही रमेश का दोबारा जोरदार स्वागत हुआ। बहन जी वात्सल्य भरे हौसले में आ गयी। उसे देखते ही उन्होंने जिस तरह उठकर पुरानी हिन्दुस्तानी औरतों की तरह दोनों हाथों से उसकी बलैया लेते हुए उसे दोनों बाहों में भरकर अपनी छाती से चिपटाया और पीठ पर अपने दोनों हाथ फेरते हुए जिस तरह असीसा उससे रमेश को मानो माँ ही मिल गई, फौरन ही अपनी माँ का चेहरा ध्यान

में झलक गया। वह अपने जीवन में माँ के प्यार को लेकर दरिद्र नहीं, पर इस पाये हुए मातृत्व को वह अपनी चिरपरिचित अनुभूति से अलग भी नहीं कर सकता—जो अम्मा में है वही हूबहू बहन जी में इस समय मिल गया। समय के जर्रे-दर-जर्रे जितनी तेजी से गुजरे उतनी ही तेजी से मन के पर्दे भी हिल गये। बिम्ब और गूँज के आकार-प्रकार जहाँ निराकार, विशुद्ध अनुभूति बनकर तन मन की चेतना में छा जाते हैं, वहाँ रमेश की अपनी माँ और बहन भी....................उसका दकियानूसी संस्कार भावावेश में खन्ना साहब सहित सारा नयापन भूलकर बहन जी के चरणों मेंअपना सिर टिका बैठा।"

सेवा-भावना—नि:सन्तान श्रीमती खन्ना अपनी आत्म-तुष्टि के लिए बच्चों, लड़कियों औरतों को शिक्षा, सिलाई और उद्योग केन्द्र चलाकर अपने सारे समय को एक विराट वात्सल्य में निरन्तर लय करना प्रारम्भ कर दिया। रमेश के प्रति उनका मातृत्व उनके जीवन का सहज महाभाव बन गया था। इसीलिए रमेश की आँखों में आश्चर्य, स्नेह और भक्ति छा गयी। उन्होंने रमेश और रानीवाला का उसी उत्साह से विवाह किया, जिस उत्साह से एक माँ करती है।

उदारता और आधुनिकता—श्रीमती खन्ना उदार एवं आधुनिक विचार-धारा की स्त्री हैं। वे युवक-युवतियों के प्रेम को बुरा नहीं समझतीं, क्योंकि आज के जमाने में सहशिक्षा के कारण युवक-युवतियाँ एक दूसरे के बहुत निकट आ जाते हैं। रमेश खन्ना दम्पत्ति से रानीबाला की बहुत प्रशंसा करता है और उसे कुछ मदद दिलवाना चाहता है। इस पर श्रीमती खन्ना उससे पूछती हैं—"जान पड़ता है कि श्री श्रीमान गौड़ साहब को उस लड़की से प्रेम हो गया है, तभी तो कविता में उसकी वकालत कर रहे हैं।" जब रमेश लज्जा के कारण इस बात से इन्कार करने का प्रयास करता है, तो वे कहती हैं—"धत्त रे की बैकवर्ड हिन्दुस्तानी लड़का कहीं का। प्रेम जैसी पवित्र चीज भला अपने माँ बाप से छिपानी चाहिए।,, उनका मत है कि ऐसी बातें छिपाई जाने के कारण ही हमारी सोसाइटी में इतनी गन्दगियाँ फैल रही हैं। इसका समा-

धान उनके शब्दों में यह है—"ये गन्दगी तभी दूर होंगी जबकि हमारे लड़के लड़कियाँ झूठी शर्म का ढकोसला तोड़कर खुले आम अपनी दोस्ती को आत्म-सम्मान की भावना के साथ बढ़ावा दें।"

वाद-विवाद में कुशल श्रीमती खन्ना समाज-सेवा का काय करती हैं, अतः उन्हें समाज में बाहर भी आना पड़ता है। उन्हें अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए बहस भी करनी पड़ती है। उनकी अनेक बार अपने पति से ही बहस हो जाती है और वे अपनी बात के समर्थन में जोरदार तर्क प्रस्तुत करती हैं। उपन्यासकार ने लिखा है—"बहनजी ऐसे झड़पदार स्वर में बेझिझक बोलती हैं। उनके तेज के आगे बड़े-बड़े बहसियों के छक्के छूट जाते हैं।"

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आलोच्य उपन्यास में श्रीमती खन्ना का चरित्र अत्यन्त प्रभावशाली है। वह उच्चकोटि की समाज-सेविका एवं उदार हृदया स्त्री हैं। वह समाज के पीड़ित-वर्ग की सहायता करती हैं। नारी-वर्ग तो सहज ही उनकी कृपा का पात्र है। वे विचारों में प्रगतिशील और व्यवहार में सरल हैं। उपन्यास के नायक और नायिका के प्रति वात्सल्य भाव रखने के कारण उनका उपन्यास में महत्वपूर्ण स्थान बन गया है।

प्रश्न ३७— श्रीमती उमा माथुर का चरित्र-चित्रण करते हुए कथानक में उनकी स्थिति का महत्व बतलाइये।

अथवा

प्रश्न ३८ - "श्रीमती उमा माथुर आधुनिक बुर्जुआ समाज की यौन अतृप्त विलासिनी नारी का प्रतिनिधित्व करती हैं।"—इस कथन की व्याख्या करते हुए श्रीमती उमा माथुर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

स्मृति-संकेत

१. उमा माथुर चरित्र-हीन नारी हैं।
२. वह लच्छू जैसे नौजवानों को फँसाकर जबरदस्ती बलात्कार करती हैं।

३. उमा माथुर पति की तीसरी बीबी हैं। वह पति के सामने ही नौजवान छोकरों से इश्क लड़ाती हैं।

४. वह फैशन परस्त हैं।

५. वासना की तृप्ति ही उसके जीवन का लक्ष्य है।

६. संक्षेप में वह भारती नारी का कलंक हैं।

उत्तर—श्रीमती उमा माथुर के रूप में आज यौन-अतृप्त विलासिनी नारी का यथार्थ चित्र सामने आता है। वह कभी किसी एक की बनकर नहीं रहती। वह लच्छू जैसे नौ जवानों को अपने चंगुल में फँसा कर उनके साथ जबर्दस्ती बलात्कार करती है।

चरित्र-हीनता—उमा माथुर चरित्रहीन नारी है। पंडित राजकिशन लच्छू को उसके प्रति सावधान करते हुए कहते हैं—"बरखुरदार' इस छिपकली से जरा होशियार रहियेगा। निहायत ही, कहना चाहिये कि बस अव्वल नम्बर की हरामजादी है। अपने खसम को इसने उल्लू का पट्ठा बना रखा है। तीसरी बीबी है ना।"

पति की उपेक्षा—तीसरी बीबी होने के कारण पति से उसे यौन-तृप्ति नहीं मिलती। वह उसे "इम्पोटेन्ट मुर्गा" कहती है और उसकी कमजोरी का लाभ उटकर उसको आँखों के सामने नौजवान छोकरों से इश्क लड़ाती है।

फैशन-परस्त—उमा माथुर फैशनेबिल तथा अंग्रेजी बोलने में माहिर है। सिर पर डमरू जैसा जूड़ा, चटक लाल लिपस्टिक से रगे होठ, गेहूँआ रग, सींक सलाई-सा बदन और अंग्रेजी के बोलने-चालने के ढंग को अपनाए हुए है।

कामुक नारी—उमा माथुर नौजवान लच्छू पर आसक्त हो जाती है और उसको सामने पाकर अपनी साड़ी का पल्लू कन्धे से कमर तक गिरा देती है। और उसके बदन से अपना बदन रगड़ती हुई निकलती है। निम्न कथन उसकी कामुकता को प्रकट करते हैं।

"और डान्स करना आता है?"

"जी? जी नहीं?"

"हाय ह्वाट ए ट्रेजडी ! इसके सिवा आदमी सोशल कैसे बन सकता है ? खैर मैं सिखा दूँगी।" कह कर मिसेज माथुर ने लच्छू को ऐसी मादक दृष्टि से देखा कि वह सनाका खा गया।"

वह लच्छू को बड़े प्यार से 'सिम्पली ए वेरी स्माल किड माई पुअर डार्लिंग, कहती है। उमा माथुर के चरित्र की पहिचान उसके इन विचारों से भली भाँति हो जाती है :

"औरत-मर्द का मिलन एक शारीरिक जरूरत है। भूख प्यास की तरह 'सेक्सुअर अर्ज' (कामेच्छा) भी एक कुदरती और शारीरिक जरूरत है और उसे पूरा करना ही चाहिये।" और वह बराबर नौजवानों के द्वारा उसे पूरा करती रहती है। लच्छू उससे बचकर एकान्त में आ जाता है तो वहाँ भी पहुँच कर एक प्रकार से जबर्दस्ती से उसे भोग करने को मजबूर कर देती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उमा माथुर भारतीय नारी का कलंक है। वह पाश्चात्य प्रभाव में रंगी आज की उन कल्चर्ड भारतीय नारियों की प्रतीक है जो विलास एवं काम की मूर्ति बनी हैं और बुरी तरह पाश्चात्य सभ्यता को अपनाकर अपना चरित्र बिगाड़ रही हैं।

प्रश्न ३९—"गोपी एक सोसायटी गर्ल है।" इस कथन की सत्यता पर प्रकाश डालते हुए गोपी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—गोपी एक सोसायटी गर्ल-वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। गोपी के चरित्र ने काल-गर्ल का रूप प्रस्तुत किया है। गोपी छद्म वेश्या है। आज के समाज में ऐसी वेश्याओं की बाढ़ आ रही है। उसका पिता आर्थिक विपन्न-भाव के कारण अपने आँखों के आगे उसको रंगरेलियाँ देखता रहता है। फलस्वरूप गोपी एक फाइसा लड़की वन जाती है। पहले तो वह अपने मकान के मालिक डा० प्रेमनारायण शर्मा के साथ नंगा नाचती है और इसके बाद झिझक बन जाती है।

गोपी वेश्या है। वह किशोरी से नल को नीचे लटकाने को कहती है और यह भी इशारा कर देती है कि घर में कोई नहीं और बाहर का दरवाजा बन्द

कर आई हूँ। 'किशोरी ऊपर से नल छोड़ने आया तो आँगन के दृश्य पर अपने रसीले उद्गार प्रकट किए बिना न रह सका। दोनों की बात से लाज भरी समझ लेकर सहदेई मोम की पुतली बन गई।""किशोरी नीचे आ गया, नहाती गोपी को छेड़ता रहा। गोपी और किशोरी सहदेई को दिखा-दिखाकर चिढ़ाते रहे, उसका मजाक उड़ाते रहे।' सहदेई उसके लिए मन में ठीक ही सोचती है—बेशरम रण्डी कहीं की। वह खुले चौक में नग्न हो जाती है और सहदेई के सामने ही अपने चहेते किशोरी के साथ छेड़ छाड़ करती कराती रहती है। आगे चलकर तो वह पूर्ण रूपेण वेश्या का रूप धारण कर लेती है।

गोपी सोसायटी गर्ल से आगे चलकर वेश्या बन जाती है और उसके जीवन का करुण अन्त हो जाता है। गोपी की हत्या कर दी जाती है। वह खोखा मियाँ की वासना तृप्ति का साधन बनती है और वही उसकी हत्या कर देता है।

प्रश्न ४०— पात्र-योजना और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'अमृत और विष' उपन्यास की समीक्षा कीजिये।

उत्तर—'अमृत और विष' सामाजिक उपन्यास है। इसमें पात्रों का चयन समाज के व्यापक क्षेत्र से हुआ है। अन्तर्द्वन्द्व ही पृष्ठभूमि में पात्रों का चरित्र-चित्रण बड़ा सजीव बन पड़ा है। दोहरा कथानक होने के कारण पात्र-योजना में कलात्मकता है। पात्रों की संख्या भी अधिक हो गई है। पात्र प्रायः वर्ग-प्रतिनिधि बनकर आये हैं। प्रमुख पात्र निम्नलिखित हैं :

पुरुष-पात्र

अरविंद शंकर—पहले कथानक के नायक एवं उपन्यासकार अमृतलाल नागर का प्रतीक हैं। वे प्रसिद्ध कथाकार हैं, तथा उसकी बहुत सी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। वह अपनी आयु के साठ वर्ष पूरे कर चुका है। उपन्यास का प्रारम्भ उसके षष्ठिपूर्ति अभिनन्दन समारोह से होता है।

भवानी शंकर—अरविन्दशंकर का मँझला पुत्र है। वह शिश्नजीवी तथा

पत्नी को छोड़कर दूसरी युवती की गुलामी में लगा हुआ जीवन की स्वाभाविक गति से भ्रष्ट व्यक्ति है ।

उमेश शंकर—अरविन्दशंकर का छोटा पुत्र । महत्वाकांक्षी युवक तथा प्रयत्न से आई० ए० ऐस० अधिकारी है, किन्तु व्यक्तित्वहीन, अपनी पत्नी का दास और अन्त में आत्महत्या करता है ।

मास्टर किशोरीलाल—अरविन्दशंकर के महात्वाकांक्षी एवं भावुक पिता । वे सुधारवादी एवं अवसरवादी हैं और अन्त में आत्महत्या कर लेते हैं ।

रमेश—अरविन्द द्वारा लिखित उपन्यास का नायक । साहसी पत्रकार, कर्मनिष्ठ, प्रेमनिष्ठ, उदार एवं बुद्धिमान युवक ।

लच्छू—उर्फ लक्ष्मीनारायण खन्ना भारत के तरुण वर्ग का प्रतीक महत्वाकांक्षी युवक । रमेश का मित्र और सारसलेक की प्रासंगिक कथा का केन्द्र ।

डा० आत्माराम—इण्डिपेण्डेण्ट शृंखला के पत्रों के संचालक, राजनीतिज्ञ, विचारक एवं लेखक । हृदय से उदार एवं व्यवहार में विनम्र ।

आनन्द मोहन खन्ना—इण्डिपेण्डेण्ट के लखनऊ में संचालक । उदार एवं प्रगतिशील व्यक्ति । अपनी पत्नी के साथ समाज-सुधार के कार्य में लगे हुए ।

पुत्तो गुरू—रमेश के पिता, रूढ़िवादी ब्राह्मण वर्ग प्रतिनिधि, भंगड़ ।

सेठ रूपचन्द—नगर के प्रतिष्ठित रईस और मन्दिर-आन्दोलन के केन्द्र । स्वार्थी एवं नेता टाइप के व्यक्ति ।

लाल कुंवर बहादुर—रईस जमींदार, शराबी, वेश्यागामी, जुआरी, पतित एवं खूँख्वार ।

कुँवर रद्धू सिंह—रानीबाला के पिता हैं और एक बिगड़े रईस । मुख्य कथा की नायिका के पिता होने के कारण उनका कथानक में महत्वपूर्ण स्थान ।

स्त्री-पात्र

रानीबाला—दूसरे कथानक की नायिका, रमेश की प्रेयसी एवं पत्नी है । वह जागृत नारीत्व की प्रतीक होकर अपनी नरक जैसी परिस्थितियों से युद्ध करती हुई ऊपर उठने के लिऐ प्रयत्नशील हैं ।

माया—अरविन्दशंकर की पत्नी माया भारतीय नारी, सहज, प्रेममयी एवं उदार है।

वरुणा—अरविन्दशंकर की मार्ग भ्रष्ट कन्या है, जो मुसलमान युवक से प्रेम करके पथ-भ्रष्ट हो जाती है।

श्री मती खन्ना—उर्फ वहिनजी, आनन्दमोहन खन्ना की पत्नी, समाजसेवी, उदार एवं प्रगतिशील विचारधारा की स्त्री हैं।

मिसेज उमा माथुर—सारस-लेक के मि० माथुर की तीसरी पत्नी हैं। यौन अतृप्ति की प्रतीक विलासिनी नारी है, जो पाश्चात्य रंग में रंगी है।

गैहा बानो- नबाब साहब की धेवती है। वह साहसशील शिक्षित युवती है और अपनी जिन्दगी अपने हाथ बनाने में विश्वास करती है।

गोपी और सती- कॉल गर्ल एवं प्रच्छन्न वेश्याएँ हैं।

सुमित्रा—कुँवर रद्धूसिह की दूसरी पत्नी। वह परिस्थितियों से उठने का प्रयास करने वाली बुद्धिमती नारी है।

'अमृत और विष' में कुछ पात्रों का चरित्र विकासशील है, जैसे उमेशशंकर, लच्छू, पुत्ती गुरू। इनके चरित्र में घटना और परिस्थितिवश परिवर्तन होता रहता है। सारस-लेक वाले लच्छू और मोटर जल जाने के बाद वाले लच्छू में बहुत अन्तर है। पुत्ती गुरू पहले रमेश पर नाराज होते हैं, किन्तु युवकों के आन्दोलन का औचित्य समझ लेने पर वे भी प्रगतिशील बन जाते हैं। उमेश-शंकर महत्वाकांक्षी से अवसरवादी, अवसरवादी से बीवी का गुलाम बनकर अन्त में अपने जीवन का अन्त कर लेता है. जो एकदम अप्रत्याशित प्रतीत होता है।

अमृत और विष के चारित्रिक विकास की दृष्टि से स्थिर पात्र हैं—रमेश, डॉ० आत्माराम, रानीबाला, बानो, श्रीमती खन्ना, लाल कुँवरबहादुर, रद्धूसिंह आदि। इनका चरित्र उपन्यास में प्रारम्भ से अन्त तक अपरिवर्तनशील एवं स्थिर है।

पात्रों के चरित्र की रचना-प्रक्रिया—नागर जी ने उपन्यास में अपने पात्रों की चरित्र सृष्टि की रचना-प्रक्रिया का संकेत निम्न प्रकार दिया है :

"लेकिन क्या यह कला पर मेरा आरोपण नहीं हुआ ? मुझे तो नहीं लगता। सृष्टि विभिन्न तत्वों का आधार लेकर ही होती है, लेकिन उस सृष्टि का रूप अपने मौलिक तत्वों से एकदम भिन्न हो जाता है। बाप-बेटे आपस में कितना ही गुण, रूप, साम्य क्यों न रखते हों, लेकिन उनमें एक मौलिक दृष्टि में भेद होता ही है। इसे बेटे की बाप के प्रति अवज्ञा नहीं माना जा सकता और आरोपण तो वह किसी भी तरह है ही नहीं। फिर मेरी रचना-प्रक्रिया में इस प्रकार का दोष नहीं माना जा सकता है।

"पर ये विचार ये कल्पनाएँ एकाएक आती कहाँ से हैं, प्रेमचन्द के बारे में यह विदित है····खुद मैं भी इस सवाल का जवाब नहीं दे सकता। हर छोटे-बड़े लेखक के साथ में कमजोरी होती है जिसे वह यथार्थ जीवन के कुछ चरित्रों, घटनाओं और कुछ भावों से ऐसा बँध जाता है कि नये-नये रूपों में उनको बार-बार विभिन्न परिस्थितियों में पेश करने की बात बना लेता है। कलाकार एक मूल बिम्ब से पचासों और कभी-कभी सैकड़ों विभिन्न पात्र-पात्रियों का सृजन कर डालता है।···क्या यही यहाँ एकता में अनेकता वाला सत्य है ? जी चाहता है कि हाँ कह दूँ, अरविन्दशंकर के उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि नागर जी ने अपने जीवन में आए हुए मित्रों परिचितों और उनके व्यक्तित्वों का आरोपण उपन्यास के पात्रों पर किया है। उपन्यास के कथानक के साथ ही लेखक अपने को भूलकर पात्रों में रमता जाता है। रद्धूसिंह के रूप में कुँवर बच्चूसिंह हैं तो हिदायत के रूप में यूसुफ हैं। नागर जी ने अपने बालमित्र हिदायत के चिन्तन पक्ष का आरोपण भी यूसुफ के माध्यम से उपन्यास में किया है।"

लेखक द्वारा प्रस्तुत चरित्र-विकास के सूत्र—लेखक पात्रों चरित्र,चित्रण एवं चरित्र विकास के सम्बन्ध में सूत्र प्रदान करता है। उसने लिखा है—"युसुफ की कल्पना के पीछे कहीं मेरा बाल मित्र हिदायत तो नहीं ! कैसे आ जाते है ये चरित्र ? कैसे सोवियत संग पहुँच गये लच्छू ? अगर मैं प्लाट गढ़ने बैठता तो निश्चय ही लच्छू ऐसे हीन चरित्र के बजाय रमेश ही को भेजता। रमेश ने रानी के प्रेम में जब सारस लेक की तमन्ना त्याग दी और लच्छू को

वहाँ भेज दिया तो फिर मेरे बस में बात ही कहाँ रही ? यह तो संयोग की बात है जीवन में वैसे ही कथा में भी।"

कथानक में नये पात्र बीच में अनायास आ जाते हैं जैसे यूसुफ। लेखक ने यूसुफ के सम्बन्ध में लिखा भी है—"स्मृति के प्रतिबिम्बों ने लच्छू की रूस यात्रा के बहाने से अपना नक्शा संजोकर आवश्यकतानुकूल यूसुफ को अपने बीच में उगा लिया। हिदायत से उसका कोई स्पष्ट साम्य नहीं। वैसे दोनों ही साफ दिल, ईमानदार और परोपकारी हैं। लेकिन मेरा बधु हिदायत अली (या हजामत अली) तो प्रेम का अवतार है—बड़ा भावुक एवं उद्धत देशभक्त था' तब भी और अब अपने वर्तमान सूफी रंग भी यूसुफ में माशूक खुदा नहीं हो सकता, लेकिन मेरा हिदायत ईश्वर का मजनू है। काल के प्रभाव से अब उसके जैसी आस्था वाले लोग छीजते चले जा रहे हैं। अगली दुनियाँ में शायद इस रंग में लोग न होगें।'

पात्रों की मानसिक परिस्थितियों एवं अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण—नागरजी ने पात्रों की मानसिक स्थिति का सजीव चित्रण किया है। लच्छू की मन:स्थिति का चित्रण अनेक स्थलों पर बहुत सजीव बन पड़ा है। एक स्थल का उद्धरण यहाँ प्रस्तुत है—बिना पैट्रोल की पंचर पहियों वाली मोटर की तरह लच्छू अपने कमरे में निकम्मा पड़ा था। भम्भड़ भरे व्याह समारोह के बाद जैसे हिसाब किताब की विधि मिलाई जाती है, उसी गहरी गर्द के रेगिस्तान में रह-रह कर उसका ध्यान अपने पीछे छोड़े हुए पद-चिन्हों पर जाता था। आज सुबह से यही दशा है। जी में अपने आप ही रहकर घनघोर घुटन एक अदृश्य बिन्दु से फैलते-फैलते पूरे तन-मन बुद्धि सभी पर घटाटोप बनकर छा जाती है और फिर अनबूझी पीड़ा बरसती, जो समझ की सतह पर लाने का प्रयत्न करते ही अपने असफलता के रूप में स्पष्ट उभर आती है।"

उपर्युक्त पंक्तियों में पात्र की मन:स्थति का, आन्तरिक वातावरण का मूर्त चित्रण है।

अन्तर्द्वन्द्व – नागर जी ने "अमृत और विष' में यथार्थ एवं मानवीय पात्रों

के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण करके उन्हें सजीवता प्रदान की है। ये पात्र अपने अन्त द्वंन्द्व से अपनी मानसिक स्थिति का उद्घाटन करते हैं।

"मनुष्य कितना बंधन में है, कितना स्वतन्त्र ? गोसाईं जी गिनकर बताते है कि हानि लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश मनुष्य के वश में नहीं है। फिर वह मरण क्या मेरे उमेशो के अपने हाथों से हुआ है—उसकी दुनिया में समृद्ध सफल और उन्नत जीवन बिताने की विशिष्ट महात्वाकांक्षा क्या असहज थी ?"

कुँवर रद्धूसिंह और उनकी माँ का अन्तर्द्वन्द्व दृष्टव्य है—"कुँवर रद्धू सिंह ने एक दिन के लिए भी अपना मुँह किसीसे न छुपाया बल्कि आठों पहर मन के क्रोध की उबलन में ये अपने आपकों जिन्दा शहीद समझते रहे। रमेश के घर के द्वारे पर गाली-गलीज कर आने के बाद जब घर आए तो देखा; उनकी माता सामने वाले दलाल के खम्भे से टिकी बैठी हुई मौन आँसू बहा रही थी। घर में कोई भी न था। माँ से पता चचा कि रानी बहन जी के यहाँ चली गयी और वह अब न आयेगी। सुमित्रा खाना बनाकर अभी-अभी स्कूल गयी है। रीतू-सीतू कहीं इधर-उधर पड़ोस में होंगी। माँ-बेटे दोनों पास-पास बैठकर अपनी फूटी तकदीर को रोते रहे। खन्ना और बहनजी इस समय दोनों के जनम के बैरी हो रहे थे। दोनों ही को खासतौर पर बूढ़ि माँ को अपने स्वर्गवासी कोतवाल पति की तीखी याद सता रही थी। वह होते तो घर की इज्जत कोई इस तरह ले सकता था। अपने बेटे से भी शिकायत थी, जो अपने आपको एकदम बहू के बस में कर चुका था। अगर शुरू ही से रद्धूलाल कड़ाई से काम लेते तो भला आज उसकी मजाल थी कि इस तरह हठीली बन जाती। ये सारे बिष के बीज उसी के बोये हुए हैं। उसी ने रानी को इस विवाह के लिए उकसाया है। लेकिन रद्धूबाबू यहाँ अपनी माँ से सहमत न थे। उसका दृढ विश्वास था कि रमेश ही इस सारे पाप काण्ड की नींव है। बहनजी और खन्ना जी चूँकि नये नास्तिक मत के हैं इसलिए लड़कियों को फसाने के अड्डे हैं। रानी तो खैर ब्याह करके छुट्टी पा जायेगी ···पर ये सुमित्रों भी जरूर ही किसी की जवानी का बूता पाकर

तुझे ठेंगा दिखा रही है। जानती है मैं कर ही क्या सकता हूँ। मेरी जीवका तक जिस बहनजी के अधीन है वे ही उसकी संरक्षिका भी हैं।

कथोपकथन द्वारा चरित्र का प्रकाश—रमेश और रानी का निम्न संवाद द्रष्टव्य है—

"बहन जी कहाँ ?"

"मीटिंग में गई है।"

"तुम्हारा कारोबार अच्छा चल रहा है ?"

"हूँ—ऊँ···मेरा सी० टी० का फार्म कब लाइयेगा ?"

"लाओगे कहो, तब जवाब दूँगा।"

रानी झेंप गयी, नजर झुकाकर पैर के अँगूठे से चिकना फर्श कुरेदते हुए चेहरे पर हल्की मुस्कान लाकर कुछ मचलने से स्वर में बोली : "मुझसे न कहा जायगा।"

"तब फिर में जबाब भी न दूँगा।

"न दीजिये।

"कब तक जवाब न माँगोगी ?

"जब तक आप न देंगे।

"तुम बेर-बेर मुझे आप-आप कहकर मेरे साथ दुश्मनी करो और मैं जवाब दूँ, ऐसा उल्लू नहीं हूँ।

"क्या ?

उत्तर में आँखें शरारत और मजाक से नाच उठीं, रानी पल्ले से अपनी मुस्कराहट छिपाने लगी।

गोया झेंप मिटाने की नीयत से ही शोखी भरे स्वर में रमेश बोला :

"अपने से पूछो ना, तुम्हीं ने मुझे काठ का उल्लू बना दिया है। लो ये दो और खा जाओ।

"ऊँहूँ···अब न खाऊँगी।

"क्यों ?

उपर्युक्त संवाद में पात्रों के हृदयगत भावों की बड़ी स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है। रमेश का रानी के प्रति आकर्षण और एकान्त में उमड़ती हुई भावुकता तथा रानी का लज्जाशील रूप स्पष्ट व्यक्त हुआ है।

निष्कर्ष—उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'अमृत और विष में नागरजी ने पात्रो के चरित्र का अत्यन्त कलात्मक ढंग से चित्रण किया है। यह चित्रण सर्वथा स्वाभाविक, सजीव एवं चित्रोपम है। लेखक की दृष्टि पात्रों यथार्थ रूप प्रदान करने की रही है।

प्रश्न ४१— सिद्ध कीजिए कि 'अमृत और विष' स्वतन्त्र भारत की तरुण पीढ़ी का प्रतिनिधि उपन्यास है।

अथवा

प्रश्न ४२—"यदि कभी कोई उत्तरी भारत में बड़े पैमाने पर युवकों और छात्रों के संगठन जैसा साहित्यिक काम करता चाहे, तो मैं उससे अनुरोध करुँगा कि 'अमृत और विष' को दो-तीन बार खूब मनोयोग से पढ़ जाये। डॉ० रामविलाल शर्मा के उपर्युक्त कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—'अमृत और विष, हिन्दी का पहला उपन्यास है, जिसमें युवकों की भावनाओं, काकांक्षाओं और संघर्षो को इतने अधिक विस्तार से चित्रण हुआ है। नागर जी का तरुण पीढ़ी में पूर्ण विश्वास है। किन्तु यह पीढ़ी आज कुण्ठाग्रस्त है। युवक लच्छू की स्थिति देखिए :

"उनके सामने कुण्ठित नौजवान भारत बैठा था, जो बेकार है, दरिद्रता से नफरत करता है, उन्नतिशील जीवन चाहता है—और न मिलने पर, दुत्कारे जाने पर अपने कुण्ठित आत्मसम्मान के लिये, जीवन-सुरक्षा के लिए कितना अविवेकी, क्षुद्र और अन्ध स्वार्थी हो जाता है। ये अभी अपराधी नहीं, विकृत विद्रोही भर है।"

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि नागर जी ने इस उपन्यास में भारत की तरुण पीढ़ी का चित्रण किया है। यही चित्रण इस उपन्यास का मूलाधार है। लच्छू और रमेश के माध्यम से लेखक ने तरुण जीवन का चित्रण किया है :

डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने अमृत और विष को स्वतन्त्र भारत की नई पीढ़ी का प्रतिनिधि उपन्यास माना है। डा० वार्ष्णेय के शब्दों में 'पुरानी और नइ दुनिया के बीच एक चौड़ी दरार पड़ती जा रही है। ऐसी हालत में तरुण वर्ग का आगे बढ़ना स्वाभाविक है। ऐसे तरुण भी है, जिनमें कोई उमंग नही।

ऐसे तरुण भी हैं, जो अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए कोई दाँव-पेंच खेल सकते हैं। किन्तु द्वितीय महायुद्ध के बाद की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों से पीड़ित तरुणों का एक ऐसा वर्ग भी है, जो विद्रोह पथ पर अग्रसर है। उनके विद्रोह में दिशाहीनता है, किन्तु उनकी पीढ़ी सच्ची है। वे सच्चाई, ईमानदारी और न्याय की माँग करते हैं। एक ओर यदि लच्छू नौजवान भारत का एक रूप प्रस्तुत करता है तो रमेश, जयकिशोर आदि उसका दूसरा रूप प्रस्तुत करते हैं। रूप कोई सा हो, इतना निश्चित है कि हिन्दुस्तान बदल रहा है।"

लेखक को इस बात की भी चिन्ता है कि आज का नौजवान एक दम निकम्मा होता जा रहा है अरविन्दशंकर के चिन्तन में यह बात इस प्रकार व्यक्त हुई है—"मेरे बचपन में सदियों से सोता हुआ राष्ट्र फिर से करवटें बदलने लगा था। परिवर्तन के क्रम में अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनों ही साथ-साथ तेजी से नयी दुनियाँ ला रहे थे।•• लेकिन आज ? आजादी मिल गयी है, बड़े-बड़े बाँध, नदी घाटी योजनाएँ बड़ी-बड़ी कल पुर्जे बनाने वाली फैक्ट्रियाँ यह सब कुछ थोड़ा बहुत अवश्य हो रहा है लेकिन आमतौर पर हमारे शहरी बाबू और नौजवान किस कदर निष्क्रिय, अस्वस्थ, विचारशून्य, निकम्मे और परावलम्बी हो रहे हैं। मुझे हैरत होती है कि आज हर तरफ माँगें पूरी करने के नारे ही अधिकार लगते हैं, स्वयं हमारे भी कुछ कर्तव्य हैं, जिन्हें पूरा करने की बात दिमाग से एकदम भुला दी जाती है।'

नागर जी ने अपने पारिवारिक जीवन का परिचय देते हुए आकस्मिक ढग से भीड़ में से पात्र चुने हैं और तरुण वर्ग से सम्बन्धित इस उपन्यास का प्रारम्भ हो जाता है। तरुण वर्ग के पात्र समाजवादी विचारधारा की ओर झुके हुए हैं। दूसरा वर्ग अन्ध रूढ़िवादिता का प्रतीक है अतः दोनों में संघर्ष है। तरुण वर्ग बाढ़ पीड़ित नगर में अदम्य उत्साह से सेवा कार्य करके लोकप्रिय हो जाता है किन्तु नवीन संघर्ष का प्रारम्भ कूचा केशोराय में उसकी हवेली के खण्डहर से होता है, जहाँ नवयुवकों का संघ है, तरुण वर्ग अध्ययन करता है, उनका वाचनालय है। इसी खण्डहर पर मन्दिर बनवाने की आड़ में रूपचन्द स्वार्थ की सिद्धि करना चाहता है। वह जात-पाँत का विरोध करता है और पुलिस

से भी टकराता है। तरुण वर्ग में उत्कृष्ट देश-प्रेम की भावना है। तरुणों के इस संघर्ष को व्यापक संघर्ष का प्रतीक समझिए। इसमें पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक सभी संघर्ष घुल-मिल गए है। नागर जी का लक्ष्य इस संघर्ष के द्वारा धर्म और समाज की जीर्ण-शीर्ण परम्पराओं के प्रति विद्रोह की पृष्ठ-भूमि तैयार करना है। रमेश की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, प्रेम का अधिकार और अन्तर्जातीय विवाह वह पृष्ठभूमि है, जिसमें समाज की अवरुद्ध गति में तरुण वर्ग गतिशीलता लाता है। डा० वार्ष्णेय के शब्दों में 'धर्म और संस्कृति राज-नीति और आर्थिक नीति के नाम पर स्वतन्त्र भारत में फैले भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए तरुण वर्ग यदि आगे आता है जो स्वाभाविक है। जीवन के अभावों और अपमानों से यह वर्ग जूझ सकता है।

नागर जी ने अपने उपन्यास में तरुण विद्यार्थियों को चुनकर ठीक ही किया है, क्योंकि जब समाज में प्रगति अवरुद्ध होने लगती है तो तरुण वर्ग ही गतिशीलता का परिचय देता है। डा० वार्ष्णेय के शब्दों में "तरुण वर्ग से सम्बन्धित उपन्यास के ५७ वें परिच्छेद में लच्छू डा० आत्माराम से जो कहता है, वह आज के राजनीतिक आन्दोलन और समाज-निर्माण के 'जोशीले' कार्य पर एक तीखा व्यंग्य है। लच्छू केवल लच्छू नहीं था, वह आज के भारत का नवयुवक है। डा० आत्माराम के सामने वह कुण्ठित नौजवान भारत बैठा था, जो बेकार है, दरिद्रता से नफरत करता है, उन्नतिशील जीवन चाहता है। और न मिलने पर, दुत्कारे जाने पर अपने कुण्ठित आत्मसम्मान के लिए, जीवन-सुरक्षा के लिए कितना अविवेकी, क्षुद्र और अन्धस्वार्थी हो जाता है। इसीलिए डा० आत्माराम उसे रोते देखकर कहते है : "लड़ो, विद्रोह करो। ब्यूरोक्रेसी की मशीन से और समाज की अन्धरूढ़ियों से लड़ना मर्दों का, सूरमाओं का काम होता है, समझे। मशीन गुस्से में आके तोड़ना नहीं चाहिए। उस पर कब्जा करना चाहिए, उसे अपनी तरह चलाना चाहिए। नागर जी ने इस पीढ़ी को कर्मठता का सन्देश दिया है, विष को अमृत में परिवर्तित करने के लिए प्रयत्न करने का आवाहन किया है।

निष्कर्ष—निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि अमृत और विष उप-न्यास में नागर जी ने स्वतन्त्र भारत की नई पीढ़ी का मार्मिक चित्रण किया

है। डा० वार्ष्णेय ने लिखा है—"वास्तव में 'अमृत और विष की कथा साम-यिक भारत के तरुण की वाह्य और आन्तरिक संघर्ष की कथा है। परिस्थितियों के अनुसार घटना-प्रवाह बदलता है और पात्रों के चरित्र में भी परिवर्तन दृष्टि-गोचर होते हैं। यह पहला उपन्यास है जिसने तरुणों की शक्ति को साहित्यिक स्तर पर स्वीकार किया है। काजर की कठोरी में रहते हुए भी नई पीढ़ी कालिमा को मिटा डालने के लिए कटिबद्ध है। इस कालिमा को वे अपने मन की ज्योति और बाह्य संघर्ष से मिटा डालेंगे। डा० वार्ष्णेय ने नागर जी की आशा आस्था की अभिव्यक्ति इन शब्दों में की है। "नई पीढ़ी आज की मान-सिक अराजकता, भ्रष्टाचार, प्रतिक्रान्ति और शब्दाडम्बरपूर्ण अकर्मण्यता के साथ समझौता नहीं कर पा रही। भारतीय संस्कृति के साथ व्यभिचार होते देखकर तरुण विक्षुब्ध है। यह उपन्यास उन्हीं का है। अमृत का विष बना। अब शायद विष अमृत में परिणत हो जायगा। अन्धकार में प्रकाश के लिए सबको जीना है। 'अमृत और विष स्वतन्त्र भारत की नई पीढ़ी का प्रतिनिधि उपन्यास है।

प्रश्न ४३—"अमृत और विष' दुहरे कथानक वाला नवीन टेकनीक का उपन्यास है। इस कथन की विवेचना कीजिये।

अथवा

प्रश्न ४४—'अमृत और विष, उपन्यास दर उपन्यास है। इस कथन की समीक्षा कीजिये।

उत्तर—अमृतलाल नागर का उपन्यास 'अमृत और विष' उत्कृष्ट सामा-जिक यथार्थ का चित्रण प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास हिन्दी-उपन्यास के क्षेत्र में अपने दुहरे कथानक के कारण विशिष्ट है। इसमें उपन्यास दर उपन्यास है। एक ओर लेखक अरविन्दशंकर की आत्मकथा चलती है, जिसमें उनके परिवार की पूरी कथा आती है। अरविन्दशकर स्वयं उपन्यासकार हैं। वह अपनी पारिवारिक आवश्यकताओं के लिए एक उपन्यास लिखते हैं। यह उपन्यास लेखक अरविन्दशकर की रचना है और उनकी आत्मकथा के साथ-साथ धारावाहिक रूप में इसकी कथा भी चलती है। यह कथा अपने में सुगठित

और सुसम्बद्ध है । मूलकथा के साथ छोटी-छोटी प्रासंगिक कथाएँ भी हैं जो उसी का अंग बनकर आई हैं ;

आत्मकथात्मक उपन्यास के नायक एवं प्रमुख पात्र अरविन्दशंकर हैं तथा अन्य पात्र उनके परिवार के सदस्य एवं उनके जीवन में जाने वाले लोग हैं । यह कथा भी कम रोचक नहीं है। इसमें भी घटनाओं के घात-प्रतिघात एवं कार्य व्यापार की बहुलता है । कथा में गति हैं, विकास है । डा० रामविलास शर्मा के शब्दों में "कथा कहने का ढंग सचमुच न केवल असासान्य है, वरन् बहुत साहसिक भी । उपन्यासकार ने स्वय एक उपन्यासकार की कल्पना की है, जिसका नाम है अरविन्दशंकर । एक मध्यवर्ग का सदगृहस्थ, जिसका जीवन बहुत कुछ असाधारण, बहुत घटनापूर्ण नहीं रहा और न जिसका पारिवारिक जीवन ही बहुत सन्तोषप्रद है । अपनी संगिनी माया से पूर्ण सहयोग और सद्भावना पाने पर भी अपने बेटों और अपनी बेटी की जीवन-परिस्थितियों से उसको निराशा ही है । फिर भी उसका साहित्य-जगत में मान है और नगर में उसकी षष्ठि-पूर्ति का आयोजन मनाया जा रहा है । उसी षष्ठि-पूर्ति के दिन वह अपने पूर्वजों और अपने जीवन के अनुभवों के बारे में सोचता है और यहीं से उपन्यास का ताना-बाना शुरू हो जाता है । यह आत्मकथा उपन्यास के अन्त तक चलती है । इसी आत्मकथा के गर्भ में एक दूसरा उपन्यास है, जिसमें स्वातन्त्र्योत्तर काल की तरुण पीढ़ी का चित्रण है । यह दूसरा उपन्यास पहले उपन्यास का आन्तरिक ढाँचा है । यह अरविन्दशंकर द्वारा रचित होने से उनकी आत्मकथा के साथ-साथ धारावाहिक रूप में चलता है । यह दुहरा कथानक अपने में स्वतन्त्र भी है और रचना-प्रक्रिया में सम्बद्ध भी । पूरा उपन्यास एक सुगठित और सुसम्बद्ध कथा-रचना है और उसमें कहीं बिखराव नहीं है ।

डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने लिखा है—"शिल्प की दृष्टि से यह प्रयोग असामान्य है । एक उपन्यास तो आत्मकथात्मक है, जिसमें उपन्यासकार ने अरविन्दशंकर के रूप में स्वयं अपने उपन्यासकार की कल्पना की है । इसमें उन्नीस अध्याय हैं और अन्त में उपसंहार के रूप में अरविन्दशंकर का चिन्तन है ।"

लेखक अरविन्दशंकर उपन्यास लिखने का यह उद्देश्य निश्चित करते हैं—"नौजवानों की आशाओं, आकांक्षाओं और कुण्ठाओं को चित्रित करना, क्योंकि आखिर आने वाली दुनिया है तो उन्ही की। उपन्यासकार अरविन्दशंकर यह निश्चित कर लेता है कि मेरे जीवन भर के अनुभवसिद्ध औपन्यासिक संस्कारों को इन नवयुवक पात्रों के सहारे अपने आप युग-कथा में प्रवेश पाने दो।" दूसरे उपन्यास में सत्तावन अध्याय हैं। डा० वार्ष्णेय ने लिखा हैं कि अपनी आत्मकथा लिखने में लेखक दूसरे सामाजिक उपन्यास की कथा परिकल्पित कर लेता है। उसका कौशल इस बात में है कि वह इन दोनों कथाओं को परस्पर सम्बद्ध कर देता है। एक दिन रिजल्ट के अखबार के लिए युवकों की उत्सुक भीड़ को देखकर वह दूसरे उपन्यास की कथा परिकल्पित कर लेता है। यथार्थ के प्रतीक होते हुए भी उसके पात्र काल्पनिक हैं। एक औपन्यासिक कथा में दूसरी कथा इस खूबी से सहज-स्वाभाविक ढग से फूट पड़ती है कि कहीं भी व्यतिक्रम दृष्टिगोचर नहीं होता। काल्पनिक होते हुए पात्र यथार्थता का आभास देते हैं। यथार्थता ही इस कथा-प्रयोग की सफलता का चिन्ह है। इतना ही नहीं, नागर जी ने अपने जीवन में आए कुछ व्यक्तियों की स्मृति भी पात्रों का चरित्रांकन करते समय उन पर आरोपित की है। कहीं बाहर से पात्रों की परिकल्पना नहीं की। इसलिए उपन्यास में अनेक स्थलों पर संस्मरणात्मकता भी आ गई है। अपने जीवन की कथा, उससे अंगी भाव से गुथी हुई औपन्यासिक गाथा और इन दोनों के पीछे कथा कहने की नागर जी की अपनी शैली, इन तीनों से उपन्यास में एक विचित्र ताजगी आ गई है। सारे उपन्यास में कथा-प्रवाह, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन और भाषा-प्रयोग से वास्तविकता का आभास होता हैं और पाठक के साथ तादात्म्य उपस्थित होता है।" (डा० वार्ष्णेय)

दोनों उपन्यासों के कथनकों की समीक्षा करते हुए डा० वार्ष्णेय ने लिखा है—'यदि दूसरे उपन्यास में स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद पुरानी और तरुण पीढ़ी का संघर्ष, पुराने मूल्यों का विघटन, ढोंग, आडम्बर आदि का चित्रण और तरुण वर्ग की दुनिया को नई दृष्टि से देखने के प्रयास का चित्रण हुआ है, तो आत्मकथात्मक अंश में अरविन्दशंकर विक्टोरिया के राज से लेकर स्वतन्त्रता

प्राप्ति के समय तक एक विहंगम दृष्टि डालता हुआ तत्कालीन राजनीति, सँस्कृति, अर्थनीति, जीवन के मूल्यों और नैतिक आदर्शों और विभिन्न वर्गों की ओर संकेत करता है। कथानक अरविन्दशंकर के षष्ठि-पूर्ति समारोह के आयोजन से प्रारम्भ होता है, किन्तु आई० ए० एस० पदाकांक्षी पुत्र उमेश के सुझाव पर आयोजित षष्ठि-पूर्ति समारोह के अवसर पर अरविन्दशंकर दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक हो जाता है।

''साठ वर्ष इस दुनिया में बिता दिये—अनुभवों का जुलूस दिल्ली में निकलने वाले गणतन्त्र दिवस के रंगारंग दृश्यों की अविराम गति से चल पड़ा। एक विकाल कनवेस पर एक साथ अनगिनत चित्र उभर पड़े, वर्ष; ऋतुएँ, गलियाँ, सड़क, पहाड़, कश्मीर का गुलबर्ग, सोवियत यूनियन के देश, जेल, चरखा, स्वयं सेविका-बाजी, कलकत्ता, कोल्हापुर, मद्रास, बम्बई, घर, मामा, बच्चे, माँ, बाप, बाबा, नाते-रिस्तेदार, दोस्त, अहबाब साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ —विविध अनुभवों भरे सारे जीवन ने एकाएक धावा बोल कर मेरे ध्यान का साम्राज्य जीत लिया। मन भर उठा। आदमी जनम लेकर मरने के दिन तक इतना सारा दुखः सुख भोगता है हजारों चेहरे; रूप रंग वातावरण देखता है, सुनता है सहता है—आखिर किस लिए ? व्यक्ति के जीवन की ढेर सारी उप-लब्धियाँ जिन्हें प्राप्त करने के लिए वह जान लड़ाता है, अन्त में निकम्मी होकर नष्ट हो जाती है। उसमें कितनी ही उपयोगी भी होती हैं।''' सोचता हूँ कि अपनी जीवन कहानी लिख डालूँ। जन्म भर उपन्यास और कहानियों मे दूसरे के देखे सुने और अपने गढ़े हुए किस्से लिखे, एक अपना भी लिखकर रख जाऊँ ''' आत्मकथा के संक्षिप्त नोट्स लिखते-लिखते सम्भव है मेरी सरस्वती फिर से जाग उठे और उपन्यास भी आरम्भ हो जाय। सरस्वती जगी ओर उपन्यास भी शुरू हो गया। बहरहाल आज से कुछ लिखूँगा अवश्य—आत्मकथा, डायरी, उपन्यास।' यह आत्मकथा, डायरी, उपन्यास भारत के मध्यवर्गीय लेखक की टूटती जिन्दगी की कहानी है। अरविन्दशंकर का सम्मान तो होता है कि वह सांसारिक चिन्ताओं से मुक्त नहीं होता। सरकार विरोधी भाषण सुनकर पुत्र उमेश के घर छोड़कर चले जाने से वह और भी दुखी हो जाता है। अपने को; अपनी पत्नी माया को तसल्ली देते हुए भी उसका दम फूल आता है। भारतीय

लेखक वर्ग के प्रतिनिधि अरविन्दशंकर में उदासी, मुर्दनी और घुटन व्याप्त हो जाती है।

इस प्रकार अमृत और विष में उपन्यास में दोहरे कथानक की योजना की गई है। डा० सत्यपाल चुघ ने भी लिखा है—'अमृत और विष' एकांत नूतन शिल्प प्रयोग है। यह उपन्यास-दर-उपन्यास है। इसमें पहली बार उपन्यास की रचना-प्रक्रिया भी स्पष्ट हुई है, इसमें रचना-प्रक्रिया कल्पित उपन्यास से अधिक रचयिता की प्रेरणाओं के अमूल्यात्मक विकास की प्रक्रिया अधिक है। उक्त प्रक्रिया से जो सिद्धान्त स्पष्ट हुए हैं वे अन्य उपन्यासकारों के लिए भी प्रायः सत्य होने के कारण सर्वमान्य सिद्धान्त है।"

नागरजी की उपन्यास-कला

प्रश्न ४५— नागर जी के प्रमुख सामाजिक उपन्यासों का परिचय दीजिये।

उत्तर - नागर जी के प्रमुख सामाजिक उपन्यास निम्नलिखित हैं—

१. महाकाल, २. सेठ बाँकेलाल, ३. शतरंज के मोहरे, ४. बूँद और समुद्र, ५. सुहाग के नूपुर, ६. अमृत और विष।

महाकाल

'महाकाल' उपन्यास सन् १९४७ में प्रकाशित हुआ, इसमें बंगाल की अकाल की पृष्ठभूमि का यथार्थ वर्णन हुआ है अकाल की विभीषिका और विनाश के पश्चात् लेखक ने साँस्कृतिक विकास के एक नये युग की रूपरेखा प्रस्तुत की है।

मध्यवर्गीय

'महाकाल' उपन्यास में नैतिकता का संस्कारबद्ध रूप अपनी सारी परम्परा में चित्रित हुआ है। नागर जी ने अकाल-ग्रस्त जनता के चित्रण के साथ स्वार्थी, भ्रष्ट लोगों का भी यथार्थ चित्रण किया है। नीच बनिया को गाँव के नर-कंकालों को देखकर भी दया नहीं आती। वह लाशों को मेडिकल कॉलेजों को बेचने का घृणित विचार करता है।

सेठ बाँकेमल

'सेठ बाँकेमल' उपन्यास सन् १९५५ में प्रकाशित हुआ। इसमें सर्वथा नई टेकनीक का प्रयोग हुआ है। उपन्यासकार ने विविध रेखाचित्रों को एक स्थल पर सम्बद्ध करके कथानक का गठन किया है। सभी रेखाचित्र सेठ बाँकेमल और पारसनाथ से सम्बन्धित हो गये हैं। इस उपन्यास में अर्द्धशिक्षित अथवा अल्प शिक्षित समाज के दुर्गुणों और दुर्बलताओं का प्रकाश हुआ है। यह उपन्यास मुगलकालीन पृष्ठभूमि में विविध वर्गों की मनोवृत्ति सामने लाता है। उपन्यासकार ने सामाजिक अनाचारों और जर्जर रूढ़ियों पर कठोर प्रहार किये हैं। हास्य व्यंग्य के उपन्यासों में इस उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है।

शतरंज के मोहरे

सन् १९५५ ई० में प्रकाशित नागर जी के उपन्यास में बादशाह गाजीउद्दीन हैदर तथा नासिरउद्दीन के युग से सम्बन्धित कथा में राजनीतिक षड़यन्त्र का वर्णन किया है। ईस्टइण्डिया कम्पनी के अत्याचारों का यथार्थ चित्र सामने आ जाता हैं। इस उपन्यास की कथा लघु है, परन्तु पात्रों की संख्या अधिक है औपन्यासिक शिल्प की दृष्टि से कथानक के गठन में कलात्मकता है।

बूँद और समुद्र

सन् १९५६ में प्रकाशित इस उपन्यास की कथावस्तु लखनऊ के एक मुहल्ले पर आधारित है। नारी-जीवन की विषमता, परम्परा और आधुनिकता आदि का चित्रण महीपाल के माध्यम से किया गया है। यह यथार्थवादी उपन्यास है। इसमें मध्यवर्गीय जीवन की कुण्ठा, उच्चवर्ग में व्याप्त संस्कारगत विकृतियाँ और निम्न वर्ग के जीवन में व्याप्त विडम्बना पूर्ण आर्थिक हीनताओं का विस्तार से वर्णन हुआ है।

सुहाग के नूपुर

सन् १९६० में प्रकाशित सुहाग के नूपुर उपन्यास प्रथम शताब्दी के लिखे गये एक महाकाव्य की कथा पर आश्रित है। इसमे उपन्यासकार ने प्राचीन युग में विशाल भारत के अभिजात वर्ग के कुछ पात्रों के चरित्र को आधार बनाकर कुछ सामाजिक प्रथाओं का वर्णन किया है। इस उपन्यास मे सामाजिक संघर्ष का चित्रण सफलता पूर्वक हुआ है। माधवी और कन्नवी दो स्त्री पात्रों के रूप में वैयक्तिक स्वर पर सामाजिक संघर्ष का सूक्ष्म चित्रण हुआ है। इस उपन्यास में महाकाव्योचित औदात्य है और यह शिल्प की दृष्टि से प्रौढ़ उपन्यास है।

अमृत और विष

'अमृत और विष' उपन्यास की दोहरी कथा के रूप में औपन्यासिक शिल्प का सर्वथा नवीन और मौलिक रूप मिलता है। कथानक के नायक अरविन्द-शंकर अपनी कथा प्रस्तुत करते हैं। उनकी षष्ठि-पूर्ति समारोह का आयोजन धूमधाम से होता है। जीवन के प्रभाव उनकी प्रवृत्ति को अन्तर्मुखी बना देते है। वे अपने अतीत-जीवन में खोये रहते हैं। इसमें लेखक उपन्यास के अन्दर उपन्यास प्रस्तुत करता है। एक ओर अरविन्दशंकर नायक हैं और दूसरी ओर अरविन्दशंकर जो उपन्यास लिख रहे हैं, उसका नायक और नायिका रानी-

बाला है। इस उपन्यास से समाज का विस्तृत पट उपस्थित हो गया है उपन्यास कार ने अन्त में निम्न सन्देश दिया है—

"जड़-चेतनमय, विष-अमृतमय जीवन में कर्म करना ही गति है।

प्रश्न ४६—हिन्दी के प्रमुख सामाजिक उपन्यासकारों में अमृतलाल नागर का स्थान निर्धारित कीजिए।

उत्तर—सामाजिक उपन्यासों का प्रारम्भ प्रेमचन्द से होता है। प्रेमचन्द ने शोषित एवं पीड़ित समाज के प्रति करुणा जगाई है और शोषक एवं पीड़क के प्रति मार्मिक व्यंग्य किया है। उनके उपन्यासों में शोषित ग्रामीण एवं नागरिक समाज की दारुण दशा का चित्रण है। प्रेमचन्द ने नारी की करुण दशा का वर्णन प्रतिज्ञा, सेवासदन, निर्मला, गबन, कर्मभूमि तथा गोदान उपन्यास में किया है। प्रेमचन्द के पात्र समाज के प्रतिनिधि हैं। उनका व्यक्तिगत रूप उभरकर सामने नहीं आता। प्रेमचन्द के सामाजिक उपन्यासों में उनका मानवतावादी दृष्टिकोण उभरकर सामने आया है। उनका विश्वास है कि मानव यदि वर्तमान को विवेकपूर्वक सम्भाल ले तो उसका भविष्य स्वयं ही उसके अनुकूल हो जायेगा।

हिन्दी के अन्य प्रमुख सामाजिक उपन्यासकारों में भगवतीप्रसाद वाजपेयी, उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवतीचरण वर्मा, यशपाल और अमृतलाल नागर प्रमुख हैं।

भगवतीप्रसाद बाजपेयी की अन्तर्भेदिनी दृष्टि द्वारा व्यक्ति और समाज के समन्वय का चित्रण हुआ है। उन्होंने व्यक्ति का विद्रोह प्रदर्शित किया है, उसके प्रति उनके उपन्यासों में करुणा का प्रसार मिलता है, किन्तु साथ ही वे व्यक्ति के नियमन में विश्वास करते हैं। उपेन्द्रनाथ अश्क ने भी सामाजिक उपन्यासों का सृजन किया है। उनमें व्यंग्य, चुहल और उपहास का प्राधान्य है। उन्होंने समाज का यथार्थ चित्रण करते हुए व्यंग्य, चुहल और उपहास से उसकी विषमता का निरूपण किया है। उनके उपन्यास रेखाचित्र-संस्मरणों के समुच्चय हैं। उन्होंने पीड़ित वर्ग को शोषण की विभीषिका भुलाने के लिए आत्म-विस्मृति का सहारा लेते हुए दिखाया है।

भगवतीचरण वर्मा ने जीवन जैसा है, उसकी विविध दिशाओं का चित्रण करते हुए, उन्होंने निरपेक्ष भाव से प्रस्तुत किया है। उन्होंने मनुष्य को व्यक्ति

एवं समाज के अंग दोनों रूपों में प्रस्तुत किया है। व्यक्ति और समाज का वर्मा जी ने समन्वय किया है। इसका कथन है "हम वैयक्तिक धर्म का पालन करते हुए सामाजिक धर्म का पालन करने को बाध्य हैं। यदि सामाजिक व्यवस्था के आगे हमें सिर नहीं झूकाते हम अराजकता के पास भागी होते हैं और सामाजिक प्राणी होने के कारण हम गृहस्थ लोग अराजक बन ही नहीं सकते।' भूले बिसरे चित्र) **यशपाल** के सामाजिक उपन्यासों में भी उनका **राजनीतिक** मत प्रधान है। वे राजनीतिक घटनाओं को पृष्ठभूमि के रूप में नहीं वरन् कथानक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने देश के राजनीतिक एवं सामाजिक गठन का मूलाधार आर्थिक व्यबस्था को स्वीकार किया है। उन्होने वर्ग-संघर्ष के चित्रण को प्रधानता दी है, राष्ट्रीय भावना की उपेक्षा की है। उनके उपन्यासों की कथा नागर तक ही सीमित है।

अमृतलाल नागर की दृष्टि किसी 'बाद' के आग्रह में बँधी नहीं है। वे बुरे की बुराई को सहृदयता पूर्वक समझने का प्रयास करते हैं तथा उसे दूर करने का भरसक प्रयत्न भी। 'बूँद और समुद्र' में उन्होने जीवन की अविराम गति का चित्रण किया है। जीवन में व्यक्ति बूँद है तो समाज समुद्र।

नागर जी ने अपने सामाजिक उपन्यासों में जीवन को भली भाँति देख, सुनकर और उसकी भावी संभावनाओं की दृष्टि में रखकर उसका चित्रण किया है। उनका समाज के सम्बन्ध में व्यवहारिक दृष्टिकोण है 'पुरुष नब्बे प्रतिशत घरों में शक्तिशाली है, स्त्री उसकी छाया मात्र है, चेतन मन से नहीं वरन् जड़ संस्कारवश। स्त्रियों का अपना दिमाग ही नही चलता। आम घरों की स्त्रियों के लिए यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि पेट और काम—ये दो वृत्तियाँ ही उनमें सर्वाधिक सचेत रहती हैं।" (बूंद और समुद्र)

नागर जी के उपन्यास में आंचलिकता है। उनका "अमृत और विष उपन्यास लखनऊ के पुराने मुहल्ले चौक का दृश्य प्रस्तुत करता है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नागर जी के सामाजिक उपन्यास यथार्थ चित्रण में अनुपम हैं। उनमें सामाजिक समस्याओं को अत्यन्त सहज रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार हिन्दी के सामाजिक उपन्यासकारों में नागर जी का दृष्टिकोण सभी से भिन्न एवं अनुपम है। डा० सत्यपाल चुघ के शब्दों में "श्री अमृतलाल नागर हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों के यशस्वी सृष्टा हैं। आज

जब अनेक साहित्यकार आधुनिक जीवन की कुण्ठा, बिसंगति, विषमता आदि के यथार्थ चित्रण-मात्र में अपने लेखन-कर्त्तव्य की इतिश्री समझ बैठे हैं या इनमें बिभ्रमित होकर निराशा की सृष्टि कर रहे हैं, तब उपन्यासकार अमृतलाल नागर अपनी यथार्थवादिता का प्रामाणिक निर्वाह करते हुए भी जीवन के महत् मूल्यों को सुरक्षित तथा आशा-आस्था के स्वरों को अधिक मुखरित कर रहे हैं। वे आस्था के प्रबुद्ध प्रहरी सिद्ध हुए हैं। यह भी कहना अनुचित न होगा कि वे वर्तमान में हिन्दी के शीर्षस्थ उपन्यासकारों में से हैं। नागर जी के उपन्यासों को देखते हुए यह कहना उचित न होगा कि हिन्दी उपन्यास में आज के गतिशील और जटिल जीवन का चित्रण नहीं हुआ है।'

प्रश्न ४७—अमृतलाल नागर की उपन्यास-कला की विशेषतायें बताइये।

उत्तर—"अमृतलाल नागर में बड़ी मौलिक प्रेरणा, सूक्ष्म पर्यवेक्षणशक्ति, सहज अनुभूति, मानव-मनोविज्ञान में गम्भीर पैठ, व्यंजक ब्योरों के द्वारा देश-काल-समाज के चित्रण की असामान्य प्रतिभा तथा विषयानुसार नूतन रूप-विधानों की क्षमता है। उन्होंने सामयिक समाज का अनेक पहलुओं से अध्ययन किया है और सामाजिक समस्याओं का निर्भीकता से चित्रण किया है।"

कथावस्तु—नागर जी ने सामाजिक और ऐतिहासिक दोनों प्रकार के उपन्यासों की रचना की। उनके ऐतिहासिक उपन्यासों में भी तत्कालीन समाज का चित्रण ही विषद रूप में मिलता है। जैसे 'शतरंज के मोहरे' में अवध के नवाबों के तत्कालीन अत्याचारों का यथार्थ चित्रण मिलता है। नागर जी ने 'महाकाल' में बंगाल के अकाल की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की है। 'अमृत और विष" में लेखक ने नई पीढ़ी का चित्रण किया है इसमें पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के संघर्ष का चित्रण है। "पूँजीवाद के सूत्रों से व्यक्ति और समाज दोनों बँधे हैं। समाज मन्थन में अभी विष ही ज्यादा प्रकट हो रहा है किन्तु अमृत का नितांत अभाव नहीं है। जो भी आज के भारत को तरुण समुदाय को, आज की राजनीतिक सामाजिक समस्याओं को सहानुभूति से समझने-परखने का प्रयत्न करेगा, उसे अमृतलाल नागर के इस उपन्यास से वैचारिक उत्तेजना मिलेगी।'

—डा० रामविलास शर्मा

नागर जी प्रमुख रूप से नागरिक जीवन के कलाकार हैं और वे इस जीवन

का कोना-कोना झाँक आए हैं। 'अमृत और विष' नागर जी का श्रेष्ठ सामाजिक उपन्यास है। यह एक समस्याप्रधान सामाजिक उपन्यास है। इसका उद्देश्य स्वातन्त्र्योत्तर भारत की अनेक समस्याओं को प्रस्तुत करना है।

पात्र-योजना– नागर जी के उपन्यासों के सभी पात्र यथार्थ से प्रतीत होते हुए भी काल्पनिक हैं। लेखक को अपने पात्र चुनने में यथार्थ जीवन के साथियों से सहायता मिली है, किन्तु कथानक के प्रवाह में कल्पना की तरंग में उनका रूप बहुत कुछ बदल गया है। वे एकदम नवीन प्रतीत होते हैं। स्वयं लेखक भी उन्हें नहीं पहचान पाता क्योंकि कथानक की आवश्यकता के अनुरूप लेखक ने उन्हें कई मोड़ प्रदान किये हैं। 'अमृत और विष' एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है। इसके अधिकांश पात्र वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले 'टाइप' या प्रतिनिधि या प्रतोक पात्र हैं। रमेश, आनन्दमोहन खन्ना, गोपी-सती उमा माथुर, रानी बाला, सेठ रूपचन्द्र, खोखा मियाँ, रेवतीरमन, आदि अपने अपने वर्ग के प्रतीनिधि पात्र हैं।

पात्रों के चरित्रांकन में नागरजी ने कहीं उद्धरण पद्यति कहीं संवाद पद्धति कहीं डायरी पद्धति का सहारा लिया है। नागर जी ने इन सभी पद्धतियों से पात्रों के चरित्र का चित्रण किया है। उन्होंने चरित्र के बहिरंग और अन्तरंग दोनों रूपों का चित्रण किया है। उमा माथुर के बहिरंग चित्रण की चित्रोपमता देखते ही बनती है।

"सिर पर डमरू जैसा जूड़ा बाँधे चटक लाल लिपस्टिक अपने पतले होठों को रंगे हुए एक सींक सलाई सी युवती ने दरवाजा खोलकर एक बार सिर से पैर तक लच्छू को घूमकर रखा—'हूम डूयू वान्ट ? पूछते हुए उसका साड़ी का पल्ला बाँधे कन्धे से फिसला, जिसे उसने कमर पर हाथ रखकर सिर्फ वहीं तक गिरने दिया और दाहिना हाथ उठाकर अपने डमरूनुमा जूड़े से ठीक लगे हुए काँटों को अपने चटक रंगे हुए नाखूनों वाली उंगलियों में ख्वामख्वाह दबाने लगी।"

नागर जी ने पात्रों के हाव, भाव और अनुभाव का भी सुन्दर चित्रण किया है, जैसे—"मिसेज माथुर ने लच्छू को ऐसी मादक दृष्टि से देखा कि वह सनाका खा गया।"

"इस मजाक और मजाक करने वाली की रसीली चितवन पर मैं रीझ गया। शरीर में जवानी की सी फुर्ती दौड़ गई।"

"विभिन्न मान्यताओं, परम्पराओं और प्रवृत्तियों के घात-प्रतिघात से गठित पात्रों का चित्रण नागर जी की चरित्र-चित्रण पद्धति की विशेषता है। परिस्थितियों और पात्रों के चयन में वैविध्य है और उनके माध्यम में मूल्यों की टकराहट है।"
— डा० वार्ष्णेय

संवाद-योजना—नागर जी के सामाजिक उपन्यासों में कथोपकथन की योजना सफल है। उनमें श्रेष्ठ संवादों के सभी गुण विद्यमान हैं। अमृत और विष के संवादों में नाटकीयता, क्षिप्रता, संक्षिप्तता, वस्तु के अभीष्ट को स्पष्ट करने की क्षमता, पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं एवं अन्तर्द्वन्द्व को अभिव्यक्त करने की सामर्थ्य, कथा को गतिमान बनाए रखने का गुण, पात्रों के अभिनय को उत्पन्न करने की क्षमता और सरल एवं पात्रोचित तथा भावानुकूल भाषा मिलती है।

नागर जी के संवादों की भाषा पात्रानुकूल है। कहीं सरल बोलचाल की भाषा प्रयुक्त है, तो अन्यत्र तत्सम सुसंस्कृत भाषा व्यवहृत हुई है। इसी प्रकार कहीं उर्दू प्रधान भाषा है तो कहीं ग्रामीण पूर्वी भाषा के प्रयोग हैं। भाषा के इन विविध रूपों का स्वरूप निम्नलिखित उदाहरणों में स्पष्ट व्यक्त हुआ है।

संवादों की सरल भाषा बड़ी स्वाभाविक है—

"मेरे कारण घर छोड़ने मे तो तुम्हें बड़ा दुःख होगा।"

"और मेरे कारण तुम्हें भी यही दुःख होगा।"

"अब तो मेरा सारा दुःख सुख तुम्हीं में समा गया है। भले ही स्वार्थी कह ले कोई लेकिन तुम्हें पाने के लिए सब कुछ छोड़ सकती हूँ।"

देशकाल या वातावरण—नागर जी के सामाजिक यथार्थ का चित्र प्रस्तुत करने वाले उपन्यासों में देशकाल का तत्व विशेष मुखर है। उन्होंने समाज के विभिन्न पक्षों का बड़ा ही कुशल-चित्रण किया है। 'महाकाल' में बंगाल के अकाल की विभीषिका के रूप में मानव के चीत्कारपूर्ण वातावरण का सजीव चित्रण हुआ है। नागर जी छोटे-छोटे व्यंजक ब्यौरों के द्वारा वातावरण चित्रण करने में सिद्धहस्त हैं। 'अमृत और विष' के वातावरण चित्रण का एक उदाहरण देखिए—'नावगाड़ी मुड़ चली; बाँध के फाटकों की ओर के पानी का

शोर निरन्तर उठकर भय को गाढ़ा करते-करते मुर्दा बनाने लगा। यहाँ कोई आबादी नहीं। मुर्गी वाली बुढ़िया बोली, इधर चार कोठियाँ थीं—उनकी और उनकी। मगर अब केवल पानी है। एक बरगद के सिवा और पेड़ तक डूबे हुए चारों ओर नजर उठाकर देखो मटमैला समुद्र।"

भाषा-शैली नागर जी यथार्थवादी सामाजिक उपन्यासकार हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक परिस्थितियों एवं घटनाओं के चित्रोपम वर्णन किए हैं। उनकी दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म है और भाषा समर्थ। उन्होंने अनुभूत्यात्मक चित्रण के द्वारा अपने वर्णनों को सजीवता प्रदान की है। आन्तरिक और बाह्य दोनों प्रकार के वातावरण का उन्होंने सूक्ष्मता तथा गहराई से चित्रण किया है।। "सहदेई के कानों में चुम्बन को ध्वनियाँ आ रही हैं, किशोरी के भावरुद्ध कण्ठ से कुछ तड़पते उद्‌गार। कुछ खुली बातें, छेड़छाड़ के सुखमय आभास से भरी गोपी की रस भरी बातें ...।" (अमृत और विष)

उद्देश्य—नागर जी जन चेतना के सजग कलाकार हैं। 'अमृत और विष' हिन्दी का पहला उपन्यास है, जिसमें भारत की तरुण पीढ़ी की भावनाओं, आकांक्षाओं और संघर्षों का इतने विस्तार से चित्रण किया है। डॉ० वार्ष्णेय के शब्दों में 'नई पीढ़ी आज की मानसिक अराजकता, भ्रष्टाचार, प्रतिक्रांति और शब्दाडम्बर पूर्ण अकर्मण्यता के साथ समझौता नहीं कर पा रही है। भारतीय संस्कृति के साथ व्यभिचार होते देखकर तरुण विक्षुब्ध हैं। यह उपन्यास उन्हीं का है। अमृत का विष बना। अब शायद विष अमृत में परिणत हो जायगा। अन्धकार में प्रकाश के लिए सब को जीना है। 'अमृत और विष' स्वतन्त्र भारत की नई पीढ़ी का प्रतिनिधि उपन्यास है।"

निष्कर्ष - उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नागर जी की उपन्यास कला प्रौढ़- सक्षम अभिव्यक्ति, उत्तम वस्तु संगठन एवं सुनियोजित पात्र योजना तथा चित्रोपम एवं सुनियोजित पात्र-योजना तथा सुन्दर एवं सजीव वातावरण-अंकन और सामाजिक यथार्थ से युक्त है।

प्रश्न ४८—"प्रेमचन्द्र ग्रामीण-जीवन के और नागर जी नागरिक जीवन के कलाकार हैं।" विवेचन कीजिए।

उत्तर—प्रेमचन्द और नागर जी दोनों ही सामाजिक उपन्यासकार हैं। यदि प्रेमचन्द ग्रामीण जीवन का चित्रण करने में कुशल है, तो नागर नागरिक

जीवन को प्रतिफलित करने में हैं। प्रेमचन्द ने मध्य और निम्न वर्ग का चित्रण किया है और उन्हीं की समस्याओं को अपने उपन्यासों में प्रधानता प्रदान की है। नागरजी ने मध्य और उच्च वर्ग का चित्रण किया है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में किसान और मजदूरों की समस्याएं प्रधान है, नागरजी के उपन्यासों में मध्यवर्गीय गृहस्थ जीवन तथा उच्चवर्गीय समाज का चित्रण प्रधान है। बहुसंख्या पात्रों का चित्रण करते हुए भी नागर जी में इन सबको पृथक-पृथक रूप में साकार करने की अद्‌भुत क्षमता है। उन्होंने प्रत्येक पात्र को उसके शील-स्वभाव, वर्ग-व्यवसाय, शिक्षा-संस्कृति, मन: स्थिति-परिस्थिति तथा क्षेत्र के अनुकूल अपनी जवान या बोली-वाणी दी है। अमृतलाल नागर ने प्राय: उद्देश्य प्रधान और विषय प्रधान उपन्यास अधिक लिखे है।

"सामाजिक मूल्यों के प्रतिष्ठापन में व्यक्ति की सापेक्षता को अविभाज्य अंग मानकर चलना नागर के उपन्यासों का अभीष्ट है। सामाजिक चेतना की अनिवार्यता को मान्यता देती हुई उनकी दृष्टि प्रेमचन्द की सामाजिक परम्परा का विकसित रूप है। प्रेमचन्द व्यक्ति की महत्ता की स्वीकार करते हुए समाज मंगल के सम्मुख व्यक्ति-हित की उपेक्षा करने से नहीं हिचकते। सामाजिक यथार्थ उनकी कृतियों में प्रधान है व्यक्ति-सत्य गौण। नागरजी के उपन्यासों में व्यक्ति एवं समाज को समान महत्व प्राप्त हुआ है; दोनों एक दूसरे के पूरक बनकर आये हैं। उनकी कला कोरी भावुकता अथवा आदर्शवादिता से जड़ न होकर यथार्थ के ठोस धरातल पर अवतरित हुई है। वह जीवन के निरपेक्ष मूल्यों की अपेक्षा उनकी सापेक्ष वस्तुस्थिति द्वारा व्यक्त मूल्यों के प्रति आस्था का नवीन स्तर निर्माण करने में संलग्न है; वाह्यारोपित आदर्शवादी मूल्यों की अपेक्षा मानव-सत्य और मानवीय संवेदनाओं को अधिक महत्व प्रदान करना चाहती हैं एक ओर वह समाज-विरोधी प्रवृत्तियों तथा वैयक्तिक कुण्ठाओं को आश्रय देने वाली मनोविश्लेषणवादी चिन्तनधारा को अमान्य ठहराती हैं, दूसरी ओर मार्क्सवादी सिद्धातों का विरोध करती है जो व्यक्ति-सत्य की उपेक्षा कर मानव-जीवन की यन्त्रिक बनाते है। उनकी उपन्यास-कला सामाजिक विकृतियों के प्रति ममतामयी न होकर बूंद और सागर—व्यक्ति और समाज दोनों के महत्व को स्वीकार करने में प्रवृत्त हुई है। इस नये विचार-बोध के कारण, यह नवीन जीवन-दृष्टि के उपन्यास-साहित्य में एक नये मोड़ का सूचक

है। उसमें एक नयी व्यवस्था और नयी अभिव्यक्ति की अकुलाहट है। लेखक का विश्वास उस मानब के प्रति है, जो लघु होने के साथ-साथ अपने प्रति जागरूक है। उनके उपन्यासों में चरित्रांकन प्रेमचन्द के चरित्र-चित्रण की अपेक्षा प्रायः अधिक जीवत है। उनकी शैली यथार्थ के अधिक निकट है, उनकी आदर्शवादिता अधिक विश्वनीय है, उनकी आस्था अधिक परिपक्व है। (हिन्दी-उपन्यास-सुषमा धवन पृ० ६१)

डॉ० सत्यपाल चुघ के अनुसार "प्रेमचन्द समस्यामूलक उपन्यासकार थे। उन्होंने अपने समय का पूरा साथ देते हुए जन-जीवन की अनेक समास्याएँ ली थीं। उनके उपन्यासों में अनेक समस्या का विकास भी परिलक्षित होता है। यही स्थिति अमृतलाल नागर के उपन्यासों की भी है। 'महाकाल' में उनके रचनाकाल के एक दो वर्ष पहले हुए भीषण महाकाल और उसके कारण एवं परिणाम में आई अनेक समस्याओं का चित्रण है। 'बूँद और समुद्र' तथा 'अमृत और विष' में स्वातन्त्र्योत्तर भारत की गति विधि का चित्रण हुआ है; उनमें से कुछ ये हैं—अतृप्त एवं दमित काम की समस्या; काम लोलुपता की समस्या; वेश्या समस्या; स्वच्छन्द प्रेम एवं भोग की समस्या; विवाह-प्रथा के औचित्य की समस्या; अनमेल विवाह-जनित पारिवारिक गतिरोध की समस्या, विधवा-विवाह, नारी की सामाजिक-आर्थिक पराधीनता की समस्या, अकाल समस्यां; नारी अधिकार; पूँजीवादियों (जमीदारों महाजनों) के आर्थिक शोषण की समास्या; आर्थिक विषमता एवं निर्धनता की समास्या; जाति-पाति की समस्या; साम्प्रदायिक या हिन्दु मुस्लिन-वैमनस्य की समस्या, दहेज की समस्या विवेकहीन परम्परा-प्रेम, 'अध-विश्वास' और जर्जर रूढ़ियों की समस्या; राजनीतिक संस्थाओं के खोलेपन पद लिप्सा और भ्रष्टाचारी हथकण्डों की समस्या; युवा पीढ़ी के दिशाहीन विद्रोह तथा निराशा की समस्या, आदि।'[१]

डॉ० चुघ के अनुसार 'समग्रतः नागर जी प्रेमचन्द की परम्परा के सम्यक् उन्नायक ही नहीं अपनी पीढी के उपन्यासकारों की सभी मनोवैज्ञानिक, आंचलिक, प्रायोगिक आदि विशेषताओं का संयुक्त करने वाली प्रभावशाली तथा प्रतिनिधि प्रतिभा भी हैं। अपनी अलमस्त आस्था की विशिष्टता से तो वह सबके लिए स्फूर्ति का ज्योति-स्तम्भ बन गए हैं।"

व्याख्या-विश्लेषण

व्याख्या-विश्लेषण

"जीवनसंगिनी जीवन-सर्वस्व पर अपना जादू मारकर चली गई। मन मैदानी नदी-सा हल्के बहाव में उतर तो आया, पर दार्शनिक बन गया। इकसठवाँ जन्म दिवस भी उसके लिए मनोवैज्ञानिक आसन बिछाने लगा।········ साठ वर्ष इस दुनिया में बिता दिए—अनुभवों का जलूस दिल्ली में निकलने-वाले गणतन्त्र दिवस के रंगारंग दृश्यों की भाँति अविराम गति से चल पड़ा।"

संदर्भ—यहाँ अरविन्दशंकर अपने साठवें जन्म-दिन पर विगत जीवन पर चिन्तन कर रहे हैं।

व्याख्या—पत्नी माया के यह कहने पर उन्हें इस शुभ दिन में प्रसन्न देखना चाहती है, कांग्रेसी भेड़ों के प्रति अपना आक्रोश भूलकर एक दार्शनिक की भाँति जीवन और जगत पर विचार करने लगते हैं। वह अपने बीते हुए जीवन पर विचार करने लगते हैं। अतीत जीवन की घटनाओं के दृश्य उसके स्मृति पटल पर उभर आते हैं। जिस प्रकार राजधानी दिल्ली में गणतन्त्रदिवस पर अनेक सुन्दर झाँकियाँ निकलती हैं, उसी प्रकार अरविदशंकर के स्मृत पटल पर उनके विगत के साठ वर्ष के जीवन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ उभर कर आ जाती हैं। वे दार्शनिक की भाँति अतीत की घटनाओं का विश्लेषण करने लगते हैं।

विशेष—१. 'जादू मारना' 'मनोवैज्ञानिक आसन बिछाना' आदि मुहावरों से भाषा अधिक सशक्त बन गई है। २. लाक्षणिक प्रयोगों से भाषा में कलात्मकता आ गई है। ३. 'जीवन संगिनी'····चली गयी मैं दाम्मन्य जीवन की मधुर व्यंजना है।

४. **अलंकार**—उपमा, ५. दृश्य चित्रण सुन्दर बन पड़ा है।

(आदमी जनम से लेकर मरन तक इतना सारा दुख-सुख भोगता है, हजारों चेहरे, रूप, रंग, वातावरण देखता है, सुनता है, सहता है—आखिर किस लिए ? व्यक्ति के जीवन की ढेर सारी उपलब्धियाँ, जिन्हें प्राप्त करने के लिए वह जान लड़ाता है, अन्त में निकम्मी होकर नष्ट हो जाती हैं, उनमें कितनी ही उपयोगी भी होती हैं।)

संदर्भ—प्रस्तुत पंक्तियों में नागरजी के प्रतिनिधि अरविन्दशंकर अपनी आत्मकथा लिखने का विचार कर रहे हैं।

व्याख्या—मनुष्य के जीवन में अनेकरूपता है। इसमें सुख दुख का क्रम चलता रहता है। उसके जीवन में अनेक प्रकार के व्यक्तियों से सम्पर्क होता है, वह विभिन्न वातावरण में रहता है और अनुभव प्राप्त करता है। यदि वह अपने जीवन की समस्त उपलब्धियों का लेखा-जोखा आत्मकथा के रूप में नहीं रखता तो उसके मरने के बाद उनको भुला दिया जाता। जीवन की अनेक उपलब्धियों के लिए व्यक्त प्रयास करता है और जीवन को खतरे में डालता है। इनमें कुछ उपलब्धियाँ एवं अनुभव तो अत्यन्त उपयोगी भी होते हैं। यदि वह उनका लेखा-जोखा आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत कर दे तो वे दूसरों के लिए भी लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

विशेष—यहाँ अरविन्दशङ्कर एक प्रबुद्ध विचारक के रूप में हमारे सामने आता है।

(मुझे लग रहा था जैसे सुखद सपना देख तो रहा हूँ, लेकिन उस सपने में भी मेरे जीवन का कटु यथार्थ अपनी प्रखर चेतना के साथ विद्यमान है और वह मुझे इस नशीले सपने से बहलने नहीं दे रहा।

संदर्भ—अरविन्दशंकर अपने षष्ठि समारोह में जन-समूह से भरे हाल में अभिनन्दन के हेतु पहुँचे तो लोगों ने उन्हें पुष्पमालाओं से लाद दिया। उनकी उस समय की मनःस्थिति का वर्णन यहाँ उपन्यासकार ने किया है।

व्याख्या—अरविन्दशंकर जनता की श्रद्धा अपने प्रति देखकर आश्चर्य चकित हो गये। वे विचार करने लगे कि कहीं यह सुखदायी स्वप्न तो नहीं है किन्तु उसे स्वप्न नहीं कह सकते। वह तो यथार्थ में घटित हो रहा था। उस सपने जैसे सुखद क्षणों में लेखक अपनी अतीत स्मृतियों में खो जाता है। उनको अपने जीवन के कटु क्षण उस समय कचोटने लगे। जीवन भर उन्होंने बड़े दुख सहे, संघर्ष किया, अतः आज का अभिनन्दन उनको स्वप्न सा लगा। अतीत की कटु स्मृतियाँ उनके मानस पटल पर उभर आईं। उनको अपनी स्थिति का स्मरण दिलाने लगी। अतः वह इन सुखद क्षणों को अपने जीवन में स्थायी बनाने की कोई सम्भावना नहीं देखते हैं। उनको यह सुख यह सम्मान, यह अभिनन्दन क्षणिक और स्थायी लगता है, स्थायी तो उनका दुःख और अभावपूर्ण जीवन भी है।

विशेष—अरविन्दशङ्कर की मानसिक स्थिति का यथार्थ चित्रण हुआ है।

"तन के ठेले पर लदा हुआ यह जीवन का भारी बोझ खींचते-खींचते मेरे प्राणों का भूखा अशक्त भैंसा अब बेदम होकर जेठ की चिलचिलाती धूप में तपती हुई सड़क पर गिर पड़ा है; नियति की चाबुकों से उत्तेजित होकर भी अब उसमें उठने की ताव नहीं रही। अब सदा के लिए मेरी आँखें मिच जायँ, मैं लकड़ियों पर सो जाऊँ! मन की आग से भस्मीभूत हो चुका अब मेरे ज्येष्ठ तनय के हाथों यह तन भी फुँक जाय तो अच्छा हो। इससे बड़ा कोई पुरस्कार, कोई सम्मान अब मैं नहीं चाहता!"

सन्दर्भ—अपने षष्ठि पूर्ति समारोह में अरविन्दशङ्कर अपने जीवन की दशा पर विचार करते हुए अपनी तुलना भूखे और अशक्त भैंसे से कर रहे हैं।

व्याख्या—मेरे शरीर को मेरे प्राण निमित्त के बल ढोये चले जा रहे हैं। शरीर के ठेले पर लदा हुआ मेरे जीवन का भारी बोझ खींचने में मेरे प्राण का भूखा अशक्त भैंसा अब बेदम होकर जेठ की चिलचिलाती धूप में तपती हुई सड़क पर गिर पड़ा है अर्थात् मेरे प्राण जीवन की विपरीत एवं विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते-करते जर्जरित हो गये हैं और उनमें जीवन का तनिक भी उत्साह शेष नहीं है किन्तु फिर भी भाग्य में जीना वदा है, इसलिए जीना पड़ रहा है, यद्यपि प्राणों में तनिक भी शक्ति अवशिष्ट नहीं है। मेरी इच्छा है कि मेरी मृत्यु हो जाय और शरीर अग्नि में भस्मसात हो जाय। उन्हें ऐसा लगता था कि मन की अग्नि से वह भस्म हो चुके हैं, अब लकड़ियों पर सोकर सदैव के लिये इस शरीर से भी मुक्ति हो जावे। ज्येष्ठ पुत्र के हाथ से उनकी अन्त्येष्टि क्रिया भी सम्पन्न हो जावे तो अच्छा रहे। अरविन्द-शङ्कर जीवन के घात प्रतिघात एवं संघर्षों से इतने निराश हो गये कि उन्हें अब किसी प्रकार के पुरस्कार अथवा सम्मान एवं अभिनन्दन से प्रसन्नता नहीं होती।

विशेष—१. अरविन्दशङ्कर के मन के अन्तर्द्वन्द्व का यहाँ मनोवैज्ञानिक चित्रण अत्यन्त मार्मिक है।

अलंकार—रूपक।

"पिछड़े हुए समाज की पिछड़ी हुई भाषा का एक साहित्यिक डिमॉक्रेसी के इन कर्णधारों के लिए केवल शतरंज का एक मोहरा भर है, जिसे भूलकर वे विरोधी पक्ष की ओर से पड़ती हुई शह बचा लेते हैं। ये पिछड़ों को अपनी

भव्य उपस्थिति से और पिछड़ा जाते हैं, जैसे अंग्रेज किया करते थे।"

सन्दर्भ—अरविन्दशङ्कर अपने अभिनन्दन समारोह के अवसर पर इन पिछड़ी हुई हिन्दी-भाषा और भारतीय समाज के विषय में चिन्तन कर रहे हैं।

व्याख्या—आज भी स्वतन्त्र भारत में हिन्दी को पिछड़ी हुई भाषा और भारतवासियों को पिछड़ा समाज माना जाता है। ऐसे समाज और भाषा का साहित्यकार आज इन लोकतंत्र के कर्णधारों के लिए केवल शतरंज के मोहरे के समान है, जिसका प्रयोग करके वे विरोधी पक्ष के प्रहारों से अपनी रक्षा कर लेते हैं। वास्तव में इनके मन में हिन्दी के साहित्यकार के लिये कोई सम्मान नहीं है और न ये उनकी रचनाएँ ही पढ़ते हैं। ऐसे समारोहों में आकर एक ओर तो ये लोग साहित्य में अपना दखल सिद्ध करते हैं, दूसरी ओर जनता को यह दिखाते हैं कि उनकी दृष्टि में सब समान हैं। ऐसे समारोहों में मंत्रियों और राज्यपाल के आने का यह प्रभाव होता है कि जनता का ध्यान उन्हीं की ओर आकर्षित हो जाता है। वह उन्हीं को महत्व देती है और उनकी उपस्थिति में साहित्यकार तो जनता की दृष्टि में और भी छोटा हो जाता है। यदि मंत्रिगण उपस्थित न हों, तब जनता साहित्यकारों को अपेक्षाकृत अधिक सम्मान प्रदान करती है। अंग्रेजों के शासनकाल में भी ऐसी ही स्थिति थी। समारोहों में जब वे सम्मिलित होते तो जनता उन्ही का जय-जयकार करती थी तथा भारतीय उपस्थित रहते थे।

विशेष—उपन्यासकार ने लोकतंत्र के कर्णधारों पर बड़ा करारा व्यंग्य किया है।

"मेरे कल के भाषण के प्रति सरकारी रोष से वह अपने आपको बचाना चाहता होगा।........जो भी हो, फिर कुछ पूछने की इच्छा न हुई। माया का चिन्ता-शोक मग्न अन्तर मेरे अन्तर में समाहित हो गया। चाय के घूँट बेहोशी में हलक के नीचे उतरते रहे।........वह प्रेरणा की विद्युत भरी फुर्ती, लिखने का संकल्प बरातों का सीन, वो दो युवक जो मेरे उपन्यास के पात्र बनकर आने वाले थे........उनकी, नवयुवकों की समस्या........लेकिन वही तो है मेरे सामने।"

संदर्भ—अरविंदशंकर के हृदय में उमेश के घर छोड़कर चले जाने से भीषण द्वन्द्व उठ खड़ा होता है।

व्याख्या-- माया से यह जानकर कि उमेश घर छोड़कर चला गया है अरविंद शंकर के मन में यह जिज्ञासा होती है कि वह कहाँ गया। उनके मन में तुरन्त ही विश्लेषण करने लगता है। वे सोचते हैं कि उमेश ने अपने स्वार्थ को ध्यान में रखकर ही घर छोड़ा क्योंकि षष्टि पूर्ति समारोह के अवसर पर उनके आलोचनापूर्ण भाषण से सरकारी वर्ग नष्ट हो गया। अतः आई० ए० एस० बनने के आकांक्षी उमेश का पिता के साथ रहने में अपना अहित लगा। वह नही चाहता था कि सरकारी अधिकारी उसे अरविंदशकर से सम्बद्ध जानकर उसकी उपेक्षा करें। अरविंदशंकर इस सम्बन्ध में अपनी पत्नी से चाहते हुए भी कुछ न कह सके। उनकी पत्नी माया पुत्र के जाने से शोक-मग्न थी। चाय पीते हुए अरविंदशंकर ने उपन्यास लिखने की प्रेरणा उद्भूत हुई और उन्होंने बारातो के दृश्य पर कटूक्तियाँ करते हुए दो नवयुवकों को अपने उपन्यास का पात्र बनाने का निश्चय किया और तरुणों की समस्या चित्रण करने का संकल्प किया यहाँ समस्या उनको अपने घर में दिखाई दी। वह अपने पुत्र भवानी की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने लगे। उसमें बड़प्पन की बू है, फैशन की भूख है, वह बिना मेहनत के तुरन्त ही अपार सम्पत्ति प्राप्त करना चाहता है और वह धन से औरत को ललचाकर अपने वश मे करने का अहंकार रखता है। वह दूसरों के सामने अपने शाही खर्च की शेखी मारता है। उसकी ये प्रवृत्तियाँ, उसे अपने जादू के जाल मे फँसाकर नचा रही हैं।

विशेष—लेखक अपने उपन्यास में आज के तरुणों की समस्या चित्रित करना चाहता है। उसे सारी समस्याएँ अपने पुत्रों में ही दिखाई देती हैं।

"झूठ की मंजिल तक अपने अन्तरसत्य को साधकर घसीटता हुआ मैं ले तो आया, परन्तु सारा श्रम उत्साह निरर्थक और बेदम हो गया। मन कहने लगा, झूठ है। अब तुम थक गये हो, प्राणहीन हो गये हो, कुछ न कर पाओगे। मुझे लगा कि मेरी अनंत कुण्ठाओं को समाप्त करने का केवल एक ही उपाय है, वही जो मेरे पिता ने किया था—आत्महत्या !

संदर्भ—अन्तर्द्वन्द्व एवं गृह की परिस्थितियों से रहता है। ग्रस्त अरविंद-शंकर सोचते हैं कि उनको इनसे छुटकारा आत्महत्या से ही मिल सकता है।

व्याख्या—अपने पुत्रों की समस्याओं से ग्रस्त अरविंदशंकर कर्तव्य की भावना से ही अपना जीवन का भार ढो रहे हैं। वे अपने दुःखी मन को किसी प्रकार बहलाते-फुसलाते हैं, किन्तु इसकी भी एक सीमा है। वह कहाँ तक झूठी

आशाओं में अपने मन को आश्वासन देते रहेंगे और हृदय जिस सत्य को जानता है उसे झुठलाते रहेंगे। उनमें अब अपने मन को समझने का साहस एवं उत्साह भी नहीं रह गया है। उनका मन घोर निराशा में डूबने लगता है, और उनको ऐसा लगता है मानो उनकी अन्तर्हीन कुण्ठाओं को समाप्त करने का एक मात्र उपाय आत्महत्या के द्वारा जीवन से छुटकारा पाना है क्योंकि यही उपाय उसके पिता के द्वारा अपनाया गया था।

विशेष- अरविंदशंकर की घोर निराशा का यथार्थ चित्रण है। आत्महत्या को ही वे समस्याओं का समाधान मान रहे हैं।

खुली दृष्टि के आगे से प्रकाश और बहिर्जगत का पूर्ण लोप हो जाता है—धूल-धुआँसा श्यामवर्ण, न रात न दिन, चारों पहर की सी सूनी कान्ति मेरी आँखों के आगे दमक रही है....घुटन और उसकी प्रतिक्रिया में अमूर्त का मूर्त होना....एक पालदार नाव तैरती हुई, झलकती-ओझलाती, फिर झलकती मेरे दृष्टि तट की ओर बढ़ रही है हेमिंग्वे का बूढ़ा मछेरा और समुद्र....ध्यान का शून्य' जादू सा अलोप! मेरी बहिर्चेतना में अब उक्त उपन्यास का नायक बूढ़ा मछेरा स्पष्ट रूप से विद्यमान था।"

संदर्भ--उमेश के घर से चले जाने से अरविंदशंकर का उदास मन और भी शून्य हो जाता है। वे अपनी मन: स्थिति का चिन्तन करते हैं।

व्याख्या--जब मनुष्य का मन उदास हो जाता है और उस पर किसी विशेष घटना के कारण मनहूसियता छा जाती है, तब वह मन ही मन कुछ खीजता है। उसकी दृष्टि बाह्य प्रकाश और संसार पर नहीं टिकती, धुँधलापन छा जाता है। उसी प्रकार अरविंदशंकर के सामने विस्तृत सूनी कांति छा रही है। उनके मन में घुटन है और निराशा के अमूर्त भाव मूर्त रूप धारण कर रहे हैं। उनके विचारों के अमेरिकन उपन्यासकार हेमिंग्वे के उपन्यास का 'बूढ़ा मछेरा आ जाता है और वह उसी के चिन्तन में डूब जाता है। हेमिंग्वे का बूढ़ा मछेरा और 'समुद्र' नामक दो उपन्यास हैं। उसमें बूढ़े मछेरे का बड़ा मार्मिक वर्णन हुआ है। अरविन्दशंकर बूढ़े मछेरे अपनी वर्तमान स्थिति का सामंजस्य पाकर उसी के चिन्तन में डूब जाता है। वह मछेरा ध्यान के समान शून्य और जादू-सा आलोप था। उसकी उदासी भी गजब की थी।

विशेष—दृष्टान्त के द्वारा चित्रात्मक शैली में सुन्दर मनोविश्लेषण हुआ है:

( )

"ऐसा लगता है कि मनुष्य की कल्पना शक्ति भी चन्द्रमा की तरह घटती-बढ़ती रहती है और उसके लिए अमावस्या भी कभी न कभी इसी क्रम में आ ही जाती है।····इस अमावस्या की बात से ही सहसा यह ध्यान आ गया कि चन्द्रमा तो सदा यथावत् ही रहता है, चन्द्र और पृथ्वी के परिक्रमणों से हमें उसके घटने-बढ़ने का भ्रम-मात्र होता रहता है। मेरे जीवन का यथार्थ और कल्पनाशील व्यक्तित्व शायद इसी क्रम में मेरे काम के लिए पूनम और अमावस लाते ही रहते हैं। जो हो, इधर लिख नहीं पाया, यह वस्तु-सत्य में अपनी आँखों से ओझल नही कर सकता।')

संदर्भ—इस गद्यांश में अरविन्दशंकर का चिन्तन चल रहा है। उनका उपन्यास लिखने का काम पिछड़ रहा है। इसका कारण वे कल्पना शक्ति का उद्दीप्त न होना ही मानते है।

व्याख्या—जिस प्रकार चन्द्रमा की कल्पनाएँ घटती-बढ़ती रहती हैं, उसी प्रकार उनकी कल्पना शक्ति भी कभी बढ़ जाती है और कभी घट जाती है। चन्द्रमा तो हमेशा एक सा ही रहता है किन्तु चन्द्रमा और पृथ्वी परिक्रमा करते रहते हैं इससे हमे यह भ्रम होता है कि चन्द्रमा घट-बढ़ रहा है। वह गोलाकार है और पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाते हुए उसके विभिन्न आकारों में दिखाई पड़ने से ही हम उसे घटता-बढ़ता कहते हैं। अरबिंदशंकर की मनःस्थिति भी कुछ इसी प्रकार की है। उनका व्यक्तित्व यथार्थ और कल्पना के सम्मिश्रण से बना है। ये दोनों तत्व अपेक्षाकृत न्यूनाधिक होते रहते हैं। पूर्णिमा और अमावस्या की भाँति उनके जीवन में भी कल्पना तत्व का आविर्भाव-तिरोभाव होता रहता है। यही कारण है कि उनके उपन्यास आगे नहीं बढ़ सका और वे दुखी हैं।

विशेष—१. उद्धरण शैली में अलंकार है। २. चिन्तन की प्रधानता है। ३. अन्तर्द्वन्द्व का यथार्थ चित्रण हुआ है।

"आर्थिक दृष्टि से निम्नतम घरों में पैदा होने वाले लड़के अपने मन में महत्वाकाक्षाएँ परखने तक के अधिकारी नहीं माने जाते हैं। कुछ तो पुराने अत्यन्ज हैं और कुछ दूसरे महायुद्ध के बाद नये आर्थिक मान्यताओं वाले नये समाज के अत्यन्ज हैं। मैं समझता हूँ कि इन्हीं आर्थिक अत्यन्जों की सन्तानें ही आज विद्रोह पथ पर अग्रसर हो रही हैं। उनका विद्रोह दिशाहीन हो सकता है, उच्छृङ्खलता, औद्वत्य, विचारहीनता आदि कई दोष उसमें गिनाये जा सकते

हैं, पर उनकी पीड़ा सच्ची होती है। उनके विद्रोह के पीछे किसी न्याय की ईमानदारी भरी माँग अवश्य होती है।"

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश में अरविंदशंकर तरुण-पीढ़ी के विद्रोह का कारण आर्थिक अभावों को मानकर ऐतिहासिक विश्लेषण कर रहे हैं।

व्याख्या—वे नवयुवक जो आर्थिक दृष्टि से निम्न घरों में पैदा होते हैं, किसी प्रकार की महत्वाकांक्षा अपने मन में नहीं रख सकते, क्योंकि उनका वर्तमान जीवन अत्यन्त अभावग्रस्त रहता है। इनमें से कुछ तो लम्बे अति से दलित, पीड़ित एवं निम्नवर्गीय बने हुए परिवारों से सम्बन्धित हैं तथा अन्य द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त नवीन आर्थिक मान्यताओं वाले समाज में दलित हो गए हैं। महायुद्ध के बाद, जिन लोगो ने युद्धकाल में अनाप-शनाप धन कमाया था, वे तो ठीक रहे, शेष लोग भयंकर मँहगाई के कारण उन नवीन सम्पन्नों की तुलना में अत्यधिक निम्न हो गए। आर्थिक दृष्टि से दलित एवं पीड़ित लोगों की युवा सन्तान आज विद्रोह के मार्ग पर आगे बढ़ रही है। उनका विद्रोह दिशाहीन होते हुए भी उनकी पीड़ा से परिलक्षित है। उनकी पीड़ा को झुठलाया नहीं जा सकता। उनके निरुद्देश्य विद्रोह को आज उद्दण्डता, अनुशासनहीनता, विवेकहीनता की सजा दी जाती है, किन्तु सच यह है कि उसके पीछे सामाजिक न्याय की सच्ची माँग है। अतः उनका उद्देश्य उचित है किन्तु तत्व सम्बन्धी कार्यवाही में थोड़ी बहुत त्रुटि अवश्य है। समाज के विचारशील वर्ग को निष्पक्ष दृष्टि से इस विषय पर विचार करना चाहिए। तभी समाज में व्यवस्था एवं सुख-शान्ति रह सकती है।

विशेष—लेखक ने तरुण वर्ग के विद्रोह के यथार्थ कारणों पर प्रकाश डाला है।

"कच्चे हिम की पट्टियों से सजे काले पहाड़, किसी अनन्त तेजोमय जोगी फकीर की फटी उधड़ी मैली कंथा गुदड़ी के समान अनोखे शाही ठाठ वाले लग रहे हैं। सुन्दरता का अन्त नहीं—सुन्दरता क्या है ? गूँगे का गुड़....ये देखो मोटी बर्फ की तहों से दूर तक ढँके हुए पहाड़ों के बीच में एक विशाल परात जैसा गोल, काला, मैदान। उसके आस-पास से दूर अन्तरिक्ष तक बर्फीले पहाड़ मानो बादलों की रजाई ओढ़कर सो रहे हैं।)

संदर्भ—वायुयान में रूस जाते हुए लच्छू को हिमालय की प्राकृतिक-सुषमा मुग्ध कर लेती है, वह उसका वर्णन करता हुआ कहता है।

व्याख्या- -प्राकृतिक दृश्यों के सौन्दर्य लच्छू को मुग्ध कर रहे हैं। कच्ची बर्फ की पट्टी से सजे काले पर्वत ऐसे लग रहे हैं जैसे कोई अनन्त तेजस्वी सिद्ध फकीर फटी, उघड़ी और मैली गुदड़ी पहने हों। उनका सौदर्य अनन्त है। गूँगे के गुड़ की भाँति उस सौदर्य की अनुभूति होती है। परन्तु उसका वर्णन कठिन है। हिमाच्छादित पर्वतों के बीच का काला मैदान परात जैसा गोल लग रहा है और उसके आस-पास से अन्तरिक्ष तक बर्फीले पर्वत ऐसे लग रहे हैं मानों रजाई ओढ़कर सो रहे हों।

विशेष—१. अलंकृत शैली।

२. **अलंकार**—उत्प्रेक्षा की मानवीकरण ३. प्रकृति का आलम्बन रूप में सर्जन चित्र प्रस्तुत हुआ है।

"हम लोग, इन बन्द-गली मुहल्लो के नौजवान, आम तौर पर घोंचू ब्राण्ड के प्रेम ही मे पड़ा करते हैं। नाम प्रेम और चाहत किसी और चीज की। रूस ने अपने समाज मे यह अच्छा काम किया है कि चाहत के खेल को बहुत बुरा न कहा। हाँ, प्रेम की बड़ाई जो है सो है ही और प्रेम के माने हैं विवाह, और विवाह के माने हैं कि अब चाहत और प्रेम का एक ऐसा धरातल इंसान को मिल गया, जहाँ से जीवन की दूसरी समस्याओं को समझने और सुलझाने के लिए दिल और दिमाग की शक्तियाँ एकजुट होकर आगे बढ़ने के लिए स्वतंत्र होती है।"

संदर्भ--लच्छू प्रेम के सम्बन्ध में भारत और रूस के वातावरण की तुलना करते हुए, रूस की विशेषता का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या—लच्छू रमेश को रानी जैसी पत्नी प्राप्त करने के उपलक्ष में बधाई देते हुए कहता है कि बन्द गली-मुहल्लों में रहने वाले भारतीय नवयुवकों का हृदय भी संकीर्ण बन गया है। यहाँ के नवयुवक इधर-उधर ताक-झाँक करते रहते हैं और इस चाहत को ही प्रेम का नाम दे-देते हैं किन्तु सत्य है कि हम प्रेम करते हुए भी उसे निभाना नहीं चाहते। हमारे लिए चाहत या प्रेम शारीरिक वासना की तृप्ति का ही दूसरा नाम है। प्रेम का सच्चा रूप उसकी विवाह के रूप मे परिणति है। प्रेम विवाह के रूप में पूर्णतया अपना अस्तित्व प्राप्त करता है और विवाह का तात्पर्य है वह धरातल जहाँ स्त्री-पुरुष परस्पर आकर्षित होकर प्रेम करते हैं और जिस धरातल पर उनके दिल और दिमाग मिलकर आगे बढ़ते हैं, जीवन का निर्माण करने के लिए। रूसी समाज में

शारीरिक आकर्षण को बुरा नहीं कहा जाता किन्तु प्रेम की परिणति विवाह में देखी गई है। विवाह का अर्थ है बौद्धिक और हार्दिक सहवास। वहाँ लोफर किस्म के ताक-झाँक करने वाले मजनू नहीं होते। वहाँ शारीरिक वासना की तृप्ति को बुरा नहीं मानते, किन्तु वहाँ प्रेम का रूप बहुत ऊँचा है।

विशेष—भारत और रूस की प्रेम-प्रणाली पर तुलनात्मक दृष्टि डाली गई है।

"नैतिकता इस बात में नहीं कि आदमी कितना सच्चा, त्यागी, तपस्वी और प्रामाणिक है। प्रश्न यह है कि व्यक्ति को अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और आचार व्यवहार को गति देने में मुक्ति कितनी मिलती है। प्रामाणिकता का आग्रह झूठा और बेकार है।"

संदर्भ—जय किशोर और रमेश में स्वतन्त्रता बनाम नैतिक के प्रश्नों को लेकर विवाद चल रहा है।

व्याख्या—जयकिशोर रमेश के मत का खण्डन करता हुआ कहता है कि एक विशेष ढग का आचरण करने से ही कोई मनुष्य नैतिक नहीं कहा जा सकता। नैतिकता की कसौटी है—स्वतन्त्रतापूर्व आचरण। अर्थात् कोई व्यक्ति अपनी सच्चाई, त्याग एवं तपस्या के बल पर नैतिक नही कहा जा सकता, उसकी नैतिकता इस बात में है कि वह दूसरों की स्वतन्त्रता का हरण न करे। जयकिशोर और लच्छू का मत यह था कि व्यक्ति समाज में रहता है, उसके जिन आचरणों को समाज ठीक मानता है वही नैतिक है। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की रक्षा के नाम पर व्यक्ति के उन्मुक्त आचरण का समर्थन नहीं किया जा सकता। व्यक्ति का समाज के प्रति कुछ दायित्व भी है। इसी आधार पर किसी व्यक्ति की सच्चाई, त्याग, प्रामाणिकता और नागरिकता सम्बन्धी नियमों का पालन उसकी नैतिकता का निरूपक हैं, कसौटी हैं, मानदण्ड हैं। व्यक्ति यदि हिसाब-किताब में सच्चा है, सुख-सुविधा का त्याग करता है, समाज की मर्यादा का पालन करता है तो नैतिकतापूर्ण कहा जावेगा। इस प्रकार जयकिशोर व्यक्ति के उन्मुक्त आचरण की नैतिकता घोषित कर रहा था तो रमेश और लच्छू समाज द्वारा निर्धारित नियमों के पालन में ही नैतिकता की कसौटी घोषित कर रहे थे। दोनों अपने-अपने मतों को ठीक मान रहे थे।

(मनुष्य यदि भाग्य का ही गुलाम है तो उसकी स्वेच्छा और स्वतंत्रता का प्रश्न ही नहीं उठता। अजगर करै न चाकरी पंछी करैं न काम····मगर दोनों

ही अपने पेट और आत्मरक्षा के लिए काम करते हैं। चिड़ा प्रेम में चिड़िया की चाकरी भी बजाता है। हर जगह बन्धन है और मुक्ति भी है। हमें बन्धन और मुक्ति दोनों ही स्थितियों को स्वीकार करना होगा।)

संदर्भ—इस गद्यांश में रमेश का भाग्य और पुरुषार्थ के सम्बन्ध में चिंतन प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या—रमेश चिन्तन करता है कि यदि जो कुछ भाग्य में है, वह अवश्यमेव मिलता हैं तो मनुष्य प्रयत्न क्यो करता है? यदि वह भाग्य का दास है तो फिर उसकी किसी कर्म करने में इच्छा-अनिच्छा का प्रश्न भी नहीं उठता है। वह भाग्य से बँधा होने के कारण स्वतंत्र भी नही कहा जा सकता, न वह स्वतन्त्र चिन्तन ही कर सकता है। भाग्यवाद के समर्थन में यह बात कही जाती है कि अजगर किसी की नौकरी नही करता और पंछी कुछ उद्योग (कृषि-आदि) नहीं करते फिर भी भाग्यानुसार उनका पेट भरने के साधन उन्हें अपने आप उपलब्ध हो जाते हैं। किन्तु यह बात पूर्णत: सत्य नही है। चिड़ा चिड़िया से प्रेम करता है तो उसकी मनुहार करता है इस प्रकार प्रेम मे भी बन्धन है। इस प्रकार जीवन मे भी बधन है और मुक्ति भी। हमे भाग्यानुसार वस्तु प्राप्त होता है, यही बंधन है और हम उद्योग करने मे स्वतन्त्र हैं। इस प्रकार बंधन और मुक्ति के सामजस्य का नाम ही जीवन है। मनुष्य जीवन में भाग्य और पुरुषार्थ दोनों का समन्वय होता है। मनुष्य फल प्राप्ति में भाग्याधीन है तो पुरुषार्थ में स्वतन्त्र है। उसे दोनों स्थिति स्वीकार करके चलना पड़ता है। केवल बंधन मनुष्य को पशुवत् बना देते हैं तो स्वतंत्र आचरण की अति करके मनुष्य राक्षस बन जाता है।

विशेष—भाग्य के स्थान पर कर्म के महत्व का प्रतिपादन किया गया है।

"इन मुखौटों का लगा के चलने वाले लोगों को भी मैने बहुत देखा है। तुम समाजवादियों में कितने असली हैं आज? पहले तुममें बहुत से लोग अपने आपको कम्यूनिस्टों की पक्ति में खड़ा करना पसंद नहीं करते थे, इसलिए ये सहूलियत का शब्द चुन लिया था। फिर अब कम्यूनिस्ट भी धीरे-धीरे सेमर की रुई के तकिये बन गये हैं, इसलिए यह शब्द कांग्रेस से लेकर कम्यूनिस्ट पार्टी तक के महत्त्वपूर्ण लोगों से तरह-तरह की सुविधाएँ देने के वास्ते अब बड़े मुनाफे का शब्द बन गया है।"

संदर्भ—समाजवाद शब्द को कम्यूनिस्ट और काग्रेसी दोनों प्रयोग करते

हैं। यह दोनों ही सच्चे अर्थो में समाजवादी न होकर स्वार्थी हैं। जयकिशोर रमेश को नकली समाजवादी कह रहा है।

व्याख्या—समाजवाद का आवरण मुख पर डाल कर चलने वाले बहुत से लोग देखे है। वे सच्चे अर्थो मे समाजवाद मे समानता लाने वाले समाजवादी नही हैं। तुम लोगो में से बहुत से पहले कम्युनिस्ट कहलाना पसन्द नही करते थे यद्यपि कम्युनिस्ट द्वारा ही कम्युनिस्टो के प्रति समाज में घृणा की भावना थी। इसीलिए उन्होने अपने को समाजवादी कहना प्रारम्भ कर दिया ताकि जनवे की वितृष्णा से बच सके। अब तो कम्युनिस्ट भी सेमर की रुई के तकिये की भांति ढुल-मुल बन गए है, अवसरवादी बन गए हैं। समाजवाद का लेबिल कांग्रेसी और कम्युनिस्ट दोनों ही प्रयोग में लाते है। अतः स्वार्थी लोग समाजवादी हो सकते हैं तो पूँजीवादी लोगो से वह किसी प्रकार भी भिन्न नही कहे जा सकते हैं। उनमे और पूँजीवादिया मे कोई अन्तर नही है। दोनों ही अपने स्वार्थ-साधन के लिए पर-पीड़न करते है। समाजवादी कहने को ही समाजवादी हैं।

विशेष—समाजवाद के नाम पर करारा व्यग्य है।

"भम्भड़ भरे ब्याह-काज के बाद जैसे हिसाब किताब की विधि मिलाई जाती है, उसी तरह गहरी उदासी के रेगिस्तान मे रह-रहकर उसका ध्यान अपने पीछे छोड़े हुआ पद-चिह्नो पर जाता था। आज सुबह से यही दशा है, जी में अपने आप ही रह-रहकर घनघोर घुटन एक अदृश्य बिन्दु से फैलते-फैलते पूरे तन मन बुद्धि सभी पर घटाटोप बनकर छा जाती है और फिर अनबूझी पीड़ा बरसती है, जो समझ की सतह पर लाने का प्रयत्न करते ही अपने सफलता के रूप में स्पष्ट उभर आती है।"

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश में उपन्यासकार ने लच्छू की वर्तमान दशा का अनेक बिम्बो के सादृश्य विधान द्वारा चित्रोपम वर्णन किया है। लच्छू का जीवन अकर्मण्य बन गया है उसके हृदय में अपने अतीत के प्रति एक कसक एवं पीड़ा झलक रही है।

व्याख्या—जिस प्रकार बिना पेट्रोल और पंचर पहियों वाली मोटरकार चल नही सकती, उसे ढकेला भी नही जा सकता और वह एक ही स्थान पर खड़ी रह जाती है, उसी प्रकार लच्छू का जीवन इस समय अकर्मण्य बना हुआ था। उसका कोई लक्ष्य नही था जिसकी प्राप्ति के लिए वह कर्म करे। न कोई

नौकरी न व्यापार, न गृहस्थी, कर्म करने का कोई सिलसिला ही न था। विवाह में बहुत भीड़-भाड़ रहती है, सभी व्यस्थ रहते हैं। विवाह सम्पूर्ण हो जाने पर लोग विवाह-कार्य में खर्च आदि का हिसाब-किताब, लेना देना, लेखा-जोखा मिलाते हैं, इसी प्रकार लच्छू भी अपने अतीत जीवन में किए गये कार्यों पर चिन्तन कर रहा है। इस समय उसके चारों ओर गहरी उदासी छाई हुई है। कहीं कोई आशा की किरण नहीं है। इस समय उसे अपने अतीत का स्मरण हो रहा है। आज सुबह से ही उसके मन में रह-रहकर अतीत की घटनाएँ घुमड़ रही हैं और उनका प्रभाव उसके शरीर, मन और बुद्धि तीनों पर पड़ रहा है। उसे कुछ भी नहीं सूझ रहा है कि क्या करूँ? फिर उसके अभ्यान्तर में अनबूझी पीड़ा बरस रही है, पता नहीं किस कारण वह पीड़ा है, वह उसके जीवन में छाई हुई है। जब वह उस पीड़ा के कारण का विश्लेषण करता है तो उसे स्पष्ट हो जाता है कि जीवन में होने वाली असफलता ही इसका कारण है। उसने इतने दिन तक सभी प्रकार से अपना पतन किया, दूसरों की खुशामद करके अपनी आत्मा को गिराया, दूसरों के कहने से अन्य लोगों के विरुद्ध षड्यन्त्र रचे, बेईमानी से दूसरों का माल छीन लिया। उसे इन समस्त नीच कार्यो को करने के बावजूद क्या प्राप्त हुआ—केवल मोटर और कुछ हजार रुपये। किन्तु इन्हें वह कब तक रख सकता है? स्थायी आमदनी के बिना वह अपने इस स्तर को बनाए नहीं रख सकता, ठीक उसी प्रकार जैसे माली के बिना बाग उजड़ जाता है, अतः लच्छू को अपना जीवन उजाड़ प्रतीत होता है।

विशेष—वर्णन कौशल सशक्त है।

"रो लिए, अच्छा किया। कभी-कभी मेरी भी तबियत होती है। कि दो आँसू बह जायँ और मन हल्का कर दें। मगर ज्यादा रोना और अक्सर रोना आदमी को निकम्मा बना देता है। लड़ो, विद्रोह करो। ब्यूराक्रेसी की मशीन से और समाज की अन्ध-रूढ़ियों से लड़ना मर्दो का, सूरमाओं का काम होता है, समझे। मशीन गुस्से में आके तोडना नहीं चाहिए। उस पर कब्जा करना चाहिए, उसे अपनी तरह से चलाना चाहिए।

संदर्भ—लच्छू को अपने किए पर पश्चात्ताप होता है, वह रोने लगता है। डाक्टर उसे जीवन का दृष्टिकोण निर्माणात्मक बनाने का परामर्श देते हैं।

व्याख्या—लच्छू के रो चुकने पर डाक्टर ने कहा कि रोने से मन हल्का हो जाता है। कभी-कभी उनका मन इस प्रकार हल्ला करने को रोता है, किन्तु अधिक रोना और प्रायः रोते रहने से आदमी निकम्मा दीन-हीन बन जाता है। तुम नवयुवक हो, तुम्हें अपनी विषम परिस्थितियों से जूझना चाहिए, विद्रोह करना चाहिए। नौकरशाही की मशीन से तथा समाज की अन्धी रूढ़ियों से लड़ना वीर पुरुषों का, हिम्मत वालों का काम है। मशीन को तोड़ना बहादुरी नहीं है, वरन् उस पर अधिकार करके उसे अपने विवेक के अनुरूप चलाना उचित और अच्छा कार्य है। निर्माण-परक दृष्टिकोण से ही सफलता मिल सकती है।

विशेष—यहाँ उपन्यासकार ने तरुण-पीढ़ी का मार्ग-निर्देशन करते हुए कहा है कि क्रान्ति का अर्थ विनाश नहीं है, निर्माण है।

"मनुष्य, अपनी अहंता, उसकी सारी सामर्थ्य और बुद्धि चेतना की प्रखरता लेकर भी मूढ़ परिस्थिति के प्रबल प्रवाह में बहने और अपना एकान्त पाने के लिए विवश हो गया। आग लग जाने वाले विमान या डूबते जहाज के यात्रियों जिनमें बड़े योगेश्वर, वैज्ञानिक, धीर-वीर, सत्ता और सम्पत्तिशाली भी हो सकते हैं—तथा बलिवेदी के बकरे और भैंस एक जैसे ही विवश विमूढ़ होते हैं। मृत्यु के आगे दोनों की विवशता में कोई अन्तर नहीं होता।"

संदर्भ· अरविंदशंकर अपना उपन्यास जिसमें रमेश और रानीबाला नायक-नायिका थे समाप्त करने के पश्चात् अपनी आत्मकथा का भी विश्लेषणात्मक उपसंहार करते हुए लिखते हैं कि मनुष्य परिस्थितियों का दास होता है।

व्याख्या—अरविंदशंकर विचार करने लगे कि मनुष्य अहंकारवश अपने कर्तापन का अभिमान करता है। वह अपनी पूरी शक्ति, बुद्धि तथा इच्छा शक्ति के द्वारा जीवन के घटनाक्रम को अपने मन के अनुकूल बनाना चाहता है, किन्तु वह परिस्थिति के प्रबल प्रवाह में बहने लगता है। परिस्थितियों के सामने वह विवश है। वह परिस्थितियों के अनिश्चित परिणाम पाने की प्रतीक्षा में विवश रहता है। किन्तु इतना सब होने पर भी वह अपने को नियन्ता समझने की मूर्खता बराबर करता रहता है। यदि किसी विमान में आग लग जावे या कोई पानी का जहाज डूबने लगे तो उसके समस्त यात्रियों को चाहे वे कितने ही बड़े योगीश्वर, वैज्ञानिक धीर-वीर सत्ता और सम्पत्ति वाले क्यों न हों,

जलने या जल समाधि लेने को विवश होना पड़ता है। मृत्यु के सामने सभी समान हैं।

किसी और की या खुद .... होता है।

संदर्भ—अरविंदशंकर को अपने पुत्र उमेश की आत्महत्या से गहरा आघात पहुँचता है किन्तु जब तक वह उन परिस्थितियों के अत्याचार पर विचार करता है, जिन्होंने उसे आत्महत्या के लिए विवश किया तो उसका दुःख और भी गहरा हो जाता है।

व्याख्या—अरविंदशंकर कहता है कि किसी की हत्या करना या आत्म-हत्या करना दोनों ही महान् पाप हैं किन्तु हत्या से पूर्व दुश्मन या व्यक्ति (जो आत्महत्या कर रहा है) की प्रतिकूल परिस्थितियों के द्वारा किया या पाया जाने वाला अपमान भरा अत्याचार तो हत्या और आत्महत्या के महान् पाप से भी बढ़कर है क्योंकि यही परिस्थितियाँ तो इस दुष्कर्म के लिए उत्तरदायी हैं। जैसे उमेश की पत्नी ने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दीं कि उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँची और उसने आत्महत्या कर ली।

मनुष्यता पर पशुता .... लगता है।

संदर्भ—अरविंदशंकर उपर्युक्त क्रम में विचार प्रकट कर रहा है कि जब कोई पाशविक अत्याचार कहता है और मान्यता पराजित हो जाती है तो व्यक्ति के जीवन में नई जकड़न से ऐसी घुटन-तपन पैदा हो जाती है कि धैर्यशील व्यक्ति भी तड़प उठते हैं। यही बात राष्ट्र के जीवन में चरितार्थ होती है। एक राष्ट्र पर जब दूसरा राष्ट्र पाशविक बल से अत्याचार करता है उसे गुलाम बना लेता है तो उस राष्ट्र के जीवन में नवीन घुटन और तपन आ जाती है।

व्याख्या—ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति या राष्ट्र के निवासी अपने मस्तिष्क का संतुलन खोकर उसी समस्या पर विचार करते हैं। इस प्रकार उस पर पागलपन छा जाता है। जैसे भारतवासियों पर जब ब्रिटिशों के अत्याचार बढ़े तो उनका जीवन एक ऐसी घुटन और तड़पन से पीड़ित होकर विद्रोह कर उठा, उन पर स्वतन्त्रता का भूत या पागलपन-सा सवार हो गया। ऐसी परिस्थितियों में यह स्वाभाविक भी है।

विशेष—लेखक का दार्शनिक चिन्तन व्यक्त हुआ है।

(जड़ चेतनमय, विष अमृतमय, अन्धकार प्रकाशमय जीवन में न्याय के

लिए कर्म करना ही गति है । मुझे जीना ही होगा, कर्म करना ही होगा । यह बन्धन ही मेरी मुक्ति भी है । इस अन्धकार ही में प्रकाश पाने के लिए मुझे जीना है । इस समय भी मेरे दो जीवनाधार तो हैं ही—धुर बचपन में मुझे ढकेल-ढकेलकर अपने साथ दौड़ा ले चलने वाला मेरा असभ्य साथी बछड़ा और दूसरा वह औपन्यासिक नायक मछेरा ।)

सन्दर्भ—उपन्यास की इन अन्तिम पंक्तियों में अरविन्दशङ्कर अमृत-विषमय जगत में दृढ-संकल्प लेकर आगे बढ़ने का संकल्प करते हैं ।

व्याख्या—यह जीवन में जड़ता के क्षण भी हैं और चेतना के भी जीवन में विष भी और अमृत भी जीवन में अंधकार भी है और प्रकाश भी । ऐसे जीवन में हमें निराश नहीं होना है, अकर्मण्य नहीं बनना है वरन् कर्म करते रहना है, कर्म ही ऐसे जीवन की उत्तम गति है । न्याय के लिए कर्म न करने से अन्याय का समर्थन हो जावेगा । मुझे बन परिस्थितियों में भी जब तक जीवन है जीवित रहना है और जीवित रहने पर कर्म करना भी अनिवार्य है । कर्म दो प्रकार के होते हैं । एक वह सकाम कर्म जो बंधन है और दूसरा वह निष्काम कर्म जो मुक्ति का कारण है । जीवित रहने के लिए कर्म करने का बंधन तो मुक्ति के समान है । इस अधकारपूर्ण जीवन में प्रकाश के लिये जीवित रहना आवश्यक है । कर्म से मेरी चेतना विकसित होगी । मुझे हेमिंग्वे नामक अमरीकन उपन्यासकार के 'बूढ़ा और मछेरा' शीर्षक उपन्यास का नायक बूढ़े मछेरे से भी कर्म करने की प्रेरणा देता है । साथ ही बचपन का वह गाय बछड़ा भी जो अपने साथ धकेलकर मुझे दौड़ाकर ले चलता था । इसी प्रकार परिस्थितियों के थपेड़े खाते हुए जीवन में आगे बढ़ने में ही जीवन की सार्थकता है ।

विशेष—१ उपन्यास के शीर्षक अमृत और विष का स्पष्टीकरण है ।

२. मानव-जीवन में सुख-दुःख का संघर्ष है । मनुष्य को निराशता छोड़कर आगे बढ़ते रहना चाहिए ।

३. कर्म की प्रधानता दी गई है ।

४. अरविन्दशङ्कर का चरित्र प्रकाशित हो रहा है ।